द्वादशज्योतिर्लिङ्गदर्पणम्

आचार्य शम्भूदयाल अग्निहोत्री

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणम्

1 से 12 सर्ग पर्यन्तम्

(हिन्दी टीकोपेतम्)

रचनाकार–

आचार्य शम्भूदयाल अग्निहोत्री

साहित्याचार्य,एम0ए0हिन्दी–संस्कृत

सर्वोदय कालेज ,पिपरगाँव

फर्रूखाबाद *(उ0प्र0)*

अनिल दीक्षित

प्रभा स्टेश0 एण्ड प्रिन्टर्स

110/231 जवाहर नगर, कानपुर

फोन:– 540474, 541693

अनुक्रमणिका–

भारतवर्ष में द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों की स्थिति

दो शब्द

करूणामयी भगवती जगज्जननी की असीम अनुकम्पा से मेरी लेखनी से सुप्रसूत अनेकों खण्ड काव्यों एवं महाकाब्यों की रचना के पश्चात मेरे अन्तःकरण में एक नबीन प्रेरणा उत्पन्न हुयी,कि हमारी भारतीय संस्कति की समस्त धरोहर संस्कृत भाषा में ही निहित है तो संस्कृत भाषा का एक महाकाब्य और लिखा जाए । इसी बीच श्राबण कृष्ण प्रतिपदा को सोमबार के दिन रात्रि के समय स्वप्नावस्था में एक भिक्षुक ने आकर मेरे दरबाजे पर आवाज दी भिक्षा दे दो, पंडित जी? मै सशंकित हुआ कि यह कौन भिखारी है जो मुझसे आकर भिक्षा मॉग रहा है। मैने अपनी छोटी बालिका को आबाज दी। बेटी, भिखारी को भिक्षा दे आओ। कन्या भिक्षा लेकर उस भिक्षुक के पास गयी। किन्तु भिक्षुक ने इन्कार कर दिया और हॅसकर बोला–बेटी?भिक्षा तो पंडित जी से लेना है,तुम से नहीं !

इतना सुनकर मैं बिस्तर से उठकर दरवाजे पर पहुॅचा। मैने भिक्षुक को सर्बप्रथम प्रणाम किया और हाथ जोड़ कर निवेदन किया,कि हे देव?आपको मुझसे क्या भिक्षा चाहिए?कृपया आज्ञा दें। भिखारी मुझे देखकर मौन होगया मैं भी उसे देखकर स्तव्ध रह गया क्योकि मैंने ऐसा तेजस्वी ब्राहमण रूपधारी भिखारी कभी देखा ही न था। अन्त में वह भिक्षुक मेरी ओर देखकर हॅसने लगा। तदनन्तर उसने अपना दाहिना हाथ उठाकर मुझे आशीर्वाद दिया और बोला–पंडित जी द्वादश ज्योतिर्लिंग इतना कहकर वह उत्तर दिशा की ओर चला गया।

प्रातःकाल उठकर मैने बिचार किया कि भगवान् भोलेनाथ ने स्वयं आकर मुझसे भिक्षा के रूप में यह प्रेरणा प्रदान की है, कि मैं द्वादश ज्योतिर्लिंड्गों का अपने महाकाब्य में बिवेचन करूँ ऐसा सोचकर मैने बिभिन्न पुराणों का अध्ययन आरम्भ किया। अन्त में द्वादशज्योतिर्लिंड्ग दर्पणम् इस भक्ति प्रधान महाकाव्य की रचना में अनुदिन संलग्न हो गया। भगवान शिव की कृपा से उन्हीं प्राचीन कथानकों का आश्रय लेकर अपनी भाषा में पल्लवित करने में मुझे जिस आनन्द

की अनुभूति हुई उसका वर्णन तो करनां ही कठिन है। उसके फलस्वरूप इस रचना में वहुत ही अल्पकाल में सफलता मिल गयी। यद्यपि द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का चित्रण तो पुराणों में भी प्राप्त होता है। किन्तु जो सरसता महाकाव्य में प्राप्त होगी, वह पौराणिक भाषा में नितान्त अलभ्य एवं अगोचर ही है।

यद्यपि इस प्रकार की रचनाओं से भारतीय संस्कृति एवं हमारी देववाणी संस्कृत भाषा का प्रचार एवं प्रसार अनुदिन होता रहेगा । इसी धारणा को ध्यान में रखकर सर्वजन साधारण के लिय बोधगम्य सरल भाषा में मैने महाकाव्य की रचना की है। साथ ही हिन्दी टीका करके अतिशय सरल वनाने का प्रयास किया है।

आशा है कि हमारे संस्कृत भाषा के मनीषियों, विद्वानों, गुरुजनों, एवं पाठकों को यह रचना नितान्त लाभप्रद ही सिद्ध होगी। साथ ही शिव भक्तों को नवीन प्रेरणा प्रदान करके सदैव ही श्रेयस्कर सिद्ध होगी। यद्यपि इस महाकाव्य की रचना शिवजी की प्रत्यक्ष प्रेरणा के कारण की गयी है। अतएव प्रत्येक सर्ग में कथानक के आधार पर भक्ति की मंदाकिनी ही प्रवाहित हुई है। फिर भी हमारे मनीषियों एवं पाठकों को यत्र– तत्र कहीं भी त्रुटि का अनुभव हो, तो वे मुझे अपना समझकर क्षमा ही करेंगे।

निवेदकः

रचनाकार

-: समर्पणम् :-

यद्यन्ते लिखितम् चरित्रमतुलं सत्यं शिवं सुन्दरम्,
ज्योतिर्द्वादशलिंगदर्पणमिदं देवेश ? भक्त्या मया।
तुभ्यं चात्र समर्पितं पुनरहो ? ज्ञानेन्द्रियाह्लादकम्,
संसारामय भेषजं हि भुवने भूयाद्भवायास्पदम्।।

हिन्दी अनुवादः– हे शिवजी ? मैंने सत्य, शिव एवं सुन्दर तथा अतुलित चरित्र युक्त जो द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पण नामक तुम्हारी भक्ति में महाकाव्य लिखा है वह ज्ञानेन्द्रियों को प्रशन्न करने वाला है। अतएव आज मैं भक्तिपूर्वक तुम्हें ही समर्पित कर रहा हूँ। यह महाकाव्य संसार रुपी रोग की औषधी है, अतएव यह विश्व में आप की कृपा से प्रतिष्ठा को प्राप्त करे ।

निवेदकः–
रचनाकारः-

-: आभार :-

किसी कार्य के पूर्व उसका कारण तो अवश्य ही निहित होता है।इस रचना के पूर्व मैंने स्वयं कई वार विचार किया कि कोई भक्ति काव्य अवश्य लिखूँगा। किन्तु मेरे साथियों ने मुझे विभिन्न विषयों पर प्रेरित करके खण्ड काव्य, एवं महाकाव्य लिखने की सलाह दी, जिससे मैं अनेक रचनाओं का प्रतिपादन करने के पश्चात् भी भक्तिकाव्य न लिख सका। इस वार भैंने तय कर लिया कि मैं भक्तिकाव्य अवश्य लिखूँगा। इसके वाद भगवान् आशुतोषजी ने ऐसी प्रेरणा दी, जिसके फलस्वरुप मै इस रचना के लिये वाध्य हो गया ।

इस भक्ति काव्य की रचना में मेरे विद्यालय के विज्ञान अध्यापक श्री सत्यदेव जी दीक्षित, एवं हिन्दी के अद्वितीय महारथी श्री रामेश्वर दयालजी शाक्य ने अभूतपूर्व योगदान दिया। साथ ही हमारे अन्य साथी श्री रामदीन जी पाल अध्यापक मण्ड़ल के संस्था अध्यक्ष का भी मैं आभारी रहूँगा, जिन्होंने मुझे इस रचना में भी अपूर्व निष्ठा के साथ सहयोग किया।

मैं अपने अनन्य मित्र श्री कमलेश चन्द्र पाण्ड़ेय अध्यक्ष संस्कृत विभाग भारतीय ड़िग्री कालेज फरुखाबाद की भी अद्‌भुत उत्कण्ठा एवं दैनिक श्रद्धा से अनवर किये गये योगदान का परम आभारी रहूँगा, जिन्होंने इस रचना के लिये मुझे सदैव पूर्ववत् प्रेरित किया।मेरी समृस्तरचनाओंकेमूल स्त्रोतएवं कर्णधार ड़ा0 राजेन्द्र दीक्षित प्रो0 अंग्रेजी विभाग एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 दिल्ली का मैं सदैव आभारी एवं चिर ऋणी रहूँगा। जिन्होनें मुझे नितान्त विषम परिस्थितियो मे पूर्ण योगदान दिया ।

शिक्षा विभाग के अलावा पुलिस विभाग के थाना इंचार्ज तिकोना चौकी के उप निरीक्षक शिवशंकर मिश्रा निवासी सीतापुर का भी मैं परम आभारी हूँ। जिन्होंने अनेक परिस्थितियों से आक्रान्त होने के उपरान्त भी मेरी मनोवृति को पूर्ण रुपेण सम्वल प्रदान करके अपने अदम्य साहस एवं सूझवूझ का पूर्ण परिचय प्रदान करते हुये इस रचना में योगदान दिया । वस्तुतः ऐसे कर्मनिष्ठ एवं साहसी अधिकारियों से समाज का ही नही अपितु समस्त देश का ही सदैव मस्तक ऊँचा रहेगा।

—: लिंड्ग शब्द रहस्य एवं लिंड्ग पूजन :—

भगवान् शंकरजी के विभिन्न नामों में पशुपति एवं लिंड्ग में दोनो विचित्र नाम है। शिवपुराण की वायवीय संहिता कें पूर्व खण्ड़ में इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि —

स पश्यति शरीरं तच्छरीरं यन्न पश्यति।
तौ पश्यति परः कश्चित् तावुभौत न पश्यतः।।
व्राह्माद्यः स्थावरान्ताश्च पशवः परिकीर्तिताः।
पशूनामेव सर्वेषाम् प्रोक्तमेतन्निदर्शनम्।।

अर्थात् वह जीव शरीर को देखता है। किन्तु जीव को शरीर नहीं देखता दोनों को कोई उनसे भी परे देखता है। किन्तु जीव को शरीर नहीं देखते। व्रह्मा से लेकर स्थावर तक सभी पशु कहलाता है। सब पशुओं के लिए यह निदर्शन कहा जाता है। यह मायापाशों में बॅधा रहता है,और सुख दुःख रुपी चारा खाता है। यही भगवान की लीला का मदारी के समान साधन है। ऐसा विद्धानों का कथन है। वह प्राणी अज्ञानी है। ईश नहीं है। वही सुख — दुःखात्मक है, तथा ईश्वर की प्रेरणा से स्वर्ग तथा नरक में जाता है। इसीलिए जीव पशु है, और इसका पति ईश है, व्रह्म है। इसलिये पशुपति— महेश्वर का नाम है।

लिंड्ग शब्द का साधारण अर्थ चिन्ह या लक्षण है। सांख्य दर्शन में प्रकृति को, प्रकृति से विकृति के भी लिंड्ग हैं। देव चिन्ह के अर्थ में लिंड्ग शब्द शिवजी के ही लिंड्ग अर्थ में प्रयुक्त होता है। और प्रतिभाओं को मूर्ति कहते हैं। कारण यह कि औरों का आकार मूर्तिमान के ध्यान के अनुसार होता है। किन्तु लिंड्ग में आकार या रुप का उल्लेख नहीं हैं। यह चिन्ह मात्र है और चिन्ह भी पुरुष की जननेन्द्रिय के समान है। जिसे लिंड्ग कहते है। परन्तु स्कन्दपुराण में "लयनाल्लिड्गमुच्यते" कहा है। जिसका अर्थ है लय या प्रलय। इसी से इसे लिंड्ग कहते है। प्रलय से लिंड्ग का क्या अर्थ या सम्बन्ध है।

प्रलय की अग्नि में सभी कुछ भस्म होकर शिव लिंड्ग मे समाहित हो जाता है। वेद शास्त्रादि भी शिव लिंड्ग मे समाविष्ट हो जाते है। फिर सृष्टि

के आदि में शिव लिंड्ग से ही सव प्रकट भी होते हैं। अतएव लय शब्द से ही लिंड्ग शब्द की उत्पत्ति समीचीन है। यह संयोग की वात है कि लौकिक व्यवहार में लिंड्ग शब्द अश्लील शब्दवाची है। वैदिक शब्दों का यौगिक शब्द लेना ही समीचीन माना जाता है। यौगिक शब्द में कोई अश्लीलता नहीं रह जाती । फिर भी कुछ वुद्धिहीन लिंड्ग में अश्लीलता का समावेश करके अपनी मूर्खता का परिचय दिया करतें हैं। वस्तुतः लिंड्ग शब्द प्रलय का ही वाचक है। अतः शिवलिंड्ग की पूजा विधान सर्वग्राह्य है।

—: रचनाकार का व्यक्तित्व एवं कृतित्वः—

" द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणम्" के रचनाकार आचार्य शम्भू दयाल अग्निहोत्री की लेखनी से सुप्रसूत अव तक संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में सात रचनायें प्रकाश में आ चुकीं हैं। प्रायः सभी रचनायें नवीन विषयों पर आधारित एवं वेजोड़ हैं। आचार्यजी की सरलता एवं सादगी का परिचय इनकी समस्त रचनाओं का अवलोकन करके ही प्राप्त हो जाता है। सभी ग्रन्थों की भाषा सरल एवं बोधगम्य है। इन रचनाओं में भारतीय सस्कृति के आदर्शो एवं सिद्धान्तों का पालन करने का पुरजोर प्रयास किया गया है। जीवन के मौलिक सिद्धान्तों एवं आदर्शों का परिज्ञान करने के लिए भक्तिकाव्य ही पर्याप्त है।

मनुष्य के जीवन का अन्तिम लक्ष्य भक्ति है जिसके सहारे जीवन का अन्तिम समय यापन होना चाहिए। इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए द्वादश ज्योतिर्लिंडग दर्पणम् नामक भक्तिकाव्य की रचना की गई है। भारतीय संस्कृति के समस्त मौलिक तत्व भारत में ही निहित हैं । उन्हीं शिवजी के ज्योतिर्लिंड्गों का प्रतिपादन इस रचना में किया गया है।

हमारे भारत की एक एक रजकण परम पवित्र एवं चंन्दन और अवीर के समान पूज्यनीय मानी गयी है। वस्तुतः इस बात का सत्यापन इस रचना के अध्यन से ही प्राप्त हो सकेगा। हमारा देश कितना पवित्र एवं पूज्य है, इसका गौरव हमें स्वयं नहीं होता। भारतीय मनीषियों की तपोभूमि इस भारत में क्या क्या नहीं है, जो हमारे भारतीय पाश्चात्य सस्कृति का अनुगमन करने के लिये परम लालायित से प्रतीत हो रहे हैं। इन समस्त तथ्यों का निराकरण इस रचना में निहित है। जिसका अनुशीलन एवं अध्ययन प्रत्येक भारतीय के लिये नितान्त आवश्यक है।

इस रचना में रचनाकार ने भक्ति का प्रतिपादन करने के उपरान्त, महाकाव्य के समस्त लक्षणों से विभूषित किया है। किन्तु भाषा की सरलता एवं बोधगम्यता का पूरा ध्यान रखकर नवरसों का पूरा चित्रण भी समस्त रचना के प्रत्येक सर्ग में प्राप्त होता है। प्रकृति चित्रण में भी कुछ स्थल इतने वेजोड़ हैं जो वर्तमान संस्कृत साहित्य में प्रायः अनुपलब्ध ही प्रतीत होगें। अतः हम कह सकते हैं कि आचार्यजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व इस रचना में जैसा विकसित हुआ है, वैसा उनकी अन्य रचनाओं में दिखाई नहीं पड़ता ।

—: महाशिवरात्रि के वृत में शिवलिंग् पूजन का महत्वः—

शिव पुराण की विश्वेश्वर संहिता में भगवान् शिवजी ने अपनें श्रीमुखारविन्द से व्रह्मा तथा विष्णु को इस वृत का महत्व तथा लिंग पूजन का महत्व स्वंय वताया है। शिवजी ने कहा हे पुत्रो, आज का दिन एक महान् दिन है। इसमें तुम्हारे द्वारा जो मेरी पूजा की गयी है। उसका महत्व मैं तुमसे निवेदन कर रहा हूँ। मैं आज के दिन की तुम्हारी पूजा से परम प्रशन्न हूँ। इसी कारण यह शिवरात्रि का दिन परम पवित्र और महान् माना जायेगा। आज की यह तिथि शिवरात्रि के नाम से विख्यात होकर मेरे लिये परमप्रिय होगी। आज के दिन अर्थात् महाशिवरात्रि को जो मेरे लिंङ्ग (निष्कल– अङ्गआकृति से रहित निराकार स्वरुप के प्रतीक) वेर (सकल साकार रुप के प्रतीक) विग्रह की जो व्यक्ति पूजा करेगा। वह व्यक्ति जगत की सृष्टि और पालन कार्य भी कर सकता है। जो शिवरात्रि को रात दिन निराहार वृत रहकर तथा जितेन्द्रिय भाव से अपनी शक्ति के अनुसार तथा निश्छल भाव से मेरी पूजा करेगा उसकों मिलने वाले फल का वर्णन सुनों। एक वर्ष तक नित्य मेरी पूजा करने का फल केवल शिवरात्रि के दिन पूजन करने से ही प्राप्त होगा। जैसे पूर्ण चन्द्रमा का उदय समुद्र की वृद्धि का कारण होता है, उसी प्रकार शिवरात्रि के दिन मेरी पूजा का फल मेरे धर्मवृद्धि का कारण समझो।

इस तिथि में व्यक्ति द्वारा की गयी मेरी स्थापना आदि परम मंगलमय उत्सव मानी जायेगी। पहले जव मैं ज्योतिर्मय स्तम्भ से प्रकट हुआ था, वह समय मार्गशीर्ष मास में आर्द्रा नक्षत्र से युक्त पूर्णमासी प्रतिपदा थी। जो पुरुष मार्गशीर्ष मास में आर्द्रा नक्षत्र से युक्त पार्वती के साथ मेरी प्रतिमा या लिंङ्ग का पूजन करता है। अथवा इस दिन झांकी सजाता है, वह व्यक्ति मुझे अपने प्रियपुत्र कार्तिकेय के समान परमप्रिय हो जाता है । इस दिन मेरे दर्शन मात्र से मनुष्य को सवसे अधिक फल प्राप्त होता है। यदि दर्शन के साथ जो व्यक्ति मेरा पूजन करता है, उसका वर्णन तो मैं स्वंय नहीं कर सकता अर्थात् वह व्यक्ति संसार की किसी वस्तु से अछूता नहीं रह सकता।

जव मै ज्योतिर्मय स्तम्भ से प्रकट हुआ था उस समय मेरा आकार स्वंय

लिंड्गमय था। अतएव यह भूतल लिंड्ग स्थान के नाम से ही परम विख्यात हुआ। यह लिंड्ग संसार के समस्त भोगों को सुलभ कराने वाला तथा अन्त में मोक्षदायक है। इसका दर्शन पूजन एवं ध्यान करने मात्र से मनुष्य संसार के आवागमन से सदैव के लिए छुटकारा पा लेता है। हे पुत्रो ! अग्नि के पर्वत जैसा जो शिव लिंड्ग यहां प्रकट हुआ था, इसके कारण इस स्थान का नाम "अरुणाचल" प्रसिद्ध हुआ। जो व्यक्ति यहां निवास करेगा वह भुक्ति एवं मुक्ति दोनों ही प्राप्त करेगा। इतना कहकर शिव जी चुप हो गये।

–:द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों तथा उनके उपलिंङ्गों का महत्व:--

शिव पुराण की कोटिरुद्र संहिता में द्वादश ज्योतिलिङ्गो तथा उनके उपलिङ्गो के महत्व का वर्णन सूतजी ने सौनकादि महार्षियों को विस्तार पूर्वक सुनाया है। सूत जी कहतें है– महर्षियो मै द्वादश ज्योतिलिङ्गों का वर्णन कर रहा हूँ। आप लोग ध्यानपूर्वक सुनें । भारत के समस्त तीर्थ ज्योतिलिङ्गों से व्याप्त है। उन शिवलिङ्गों की गणना तो नहीं की जा सकती, वस्तुतः भारतीय संस्कृति तो वहुत व्यापक है फिर भी मैं शिवजी के प्रधान विग्रह ज्योतिलिङ्गों तथा उनके उपलिङ्गों का वर्णन कर रहा हूँ। भगवान शंकरजी ने सव लोगो पर कृपा करनें के लिये देवता – असुर – मनुष्यों को अपने शिवलिङ्गों से व्याप्त कर रखा है। अतएव प्रधान तीर्थों में सर्व व्यापक रुप में प्रायः लिङ्ग रुप में वे दिखायी देते हैं। जहां जहां जव जव भक्तों ने आर्तभाव से शिवजी का स्मरण किया वे वहीं उन पर कृपा करने के लिये प्रकट हो गये ! हाँ इतना अवश्य है कि शिवजी के लिङ्ग की पूजा करके ही मनुष्य हर प्रकार की सिद्धि को अवश्य ही प्राप्त कर लेता है। हे मुनीश्वरो ! मै इस भूतल के समस्त शिव लिङ्गों का वर्णन नहीं कर सकता तथापि प्रधान शिवलिङ्गों तथा ज्योतिलिङ्गों का वर्णन सुना सकता हूँ । इन ज्योतिलिङ्गों का नाम सुनने मात्र से मनुष्य के करोड़ो जन्मो के पाप नष्ट हो जाते हैं । फिर भला जो व्यक्ति इन शिव के द्वादश ज्योतिलिङ्गों का क्रमशः अध्ययन करता है , अथवा इनकी भक्तिमयी कथा का श्रवण करेगा उसे इस लोक में समस्त सिद्धियाँ स्वंय ही प्राप्त हो जायेंगी। इतना ही नहीं यह ध्रुव सत्य है कि उस व्यक्ति का कभी पुनर्जन्म नहीं होगा। द्वादश ज्योतिर्लिंङ्गों का अव मैं क्रमवार वर्णन कर रहा हूँ आप लोग ध्यान पूर्वक सुनें।

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारे परमेश्वरम्।।
केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशंकरम् ।
वाराणस्यां च बिश्वेशंत्र्यम्बिकं गौतमीतटे।।

बैधनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकाबने।
सेतुबन्धे च रामेशं धुश्मेशं च शिवालये।।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुथाय यः पठेत्।
सर्वपापैर्विनिर्मुक्तः सर्व सिद्धिफलं लभेत्।।

सौराष्ट्र में सोमनाथ श्रीशैल पर्वत पर मल्लिकार्जुन, उज्जयिनी में महाकाल, ओंकार तीर्थ में परमेश्वर, हिमालय के शिखर पर केदार नाथ, डाकिनी में भीम शंकर, बनारस में विश्वेश्वर, गौतमी के तटपर त्र्यम्वकेश्वर, चिताभूमि में वैधनाथ, दारुकावन में नागेश्वर, सेतुवन्ध मेंरामेश्वर, शिवालय में धुमेश्वर, इन द्वादश ज्योतिलिड्गों का जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर पाठ करता है। वह सभी पापों से मुक्त होकर सभी प्रकार की सिद्धियों का फल प्राप्त कर लेता हैं। श्रेष्ठ मनुष्य जिस जिस मनोरथ को पाने की इच्छा रखकर इन वारह ज्योतिलिड्गों का नित्य नियमपूर्वक पाठ करेगें, वे इस लोक और परलोक में उन मनोरथों को अवश्य पा लेगें जो शुद्ध अन्तःकरण वाले व्यक्ति निष्काम भाव से स्मरण करेगें। उन्हें कभी माता के गर्भ से उत्पन्न होकर पुनः इस भव सागर में जन्म नहीं लेना पड़ेगा।

जो महानुभाव इन समस्त ज्योतिलिड्गों के कथानक अथवा इनकी भक्तिप्रद कथाओं का नित्य श्रवण करेंगे, अथवा पाठ करेगें वे इस लोक के समस्त वन्धनों से छुटकारा पाकर भगवान् शंकर के अतिशय सानिध्य को प्राप्त करके मोक्ष पद को प्राप्त कर सकेगें, जो पद मुनियों के लिए भी दुलर्भ होगा। हे ऋषियो! अव तक मैने तुम्हें द्वादश ज्योतिलिड्गों के दर्शन, पूजन एवं पठन पाठन का फल वताया है। अव उनके उपलिड्गों का नाम अन्तकेश्वर है। यह उपलिड्ग रुद्रेश्वर, के नाम से प्रसिद्ध है। यह भृगु कक्ष में स्थित है, एवं उपासकों को तुरन्त फल देने वाला है। महाकाल का उपलिंड्ग दुग्धेश्वर नाम से प्रसिद्ध है। यह नर्मदा नदी के तट पर स्थित है। तथा समस्त पापों का विनाश करने वाला है। ओंकारेश्वर से उत्पन्न उपलिंड्गों कर्मेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। यह विन्दु सरोवर के तट पर स्थित है, तथा समस्त मनोरथों को प्रदान करने वाला है। केदारेश्वर का उपलिंड्ग भूतेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। यह यमुना तट पर स्थित है।

भीमशंकर का उपलिंड्ग स्वंय भीमेश्वर नाम से परम प्रसिद्ध है। यह भी सह्याद्रि पर्वत पर स्थित है। वह महान् वल एवं पराक्रम को प्रदान करने वाला है। नागेश्वर का शिवलिंड्ग भूतेश्वर के नाम से ही परम प्रसिद्ध है। यह मल्लिका सरस्वती के तट पर स्थित है। रामेश्वर से प्रकट उपलिंड्गों का नाम गुप्तेश्वर है। यह दर्शनमात्र से ही पापों का विनाश करने वाला है। धुश्मेश्वर से प्रकट शिवलिंड्ग को व्याघ्रेश्वर कहा जाता है। इस उपलिंड्गों की विशेषता यह है कि जो मनुष्य इसका स्मरण भी कर लेता है। उसके समक्ष किसी प्रकार की व्याधि नहीं आती ।

मुनीश्वरो ? मैने द्वादश ज्योतिलिड्गों तथा उनके उपलिंड्गों का समस्त वृतान्त तुम्हें सूक्ष्म शव्दो में सुनाया है। किन्तु इनके दर्शन, पूजन, एवं स्तवन की महिमा अवर्णनीय है। जो व्यक्ति इनके कथानकों का श्रद्धापूर्वक अध्ययन करेगें उन्हें सभी सिद्धियाँ स्वयं वरण करेंगी।

-: द्वादश ज्योतिर्लिंगों में शिवजी का ज्योतिर्मय प्रवेशः-

शिवजी को समस्त वेदों ने अनादि, एवं अनन्त ही माना है। प्रलयकाल में समस्त चराचर सृष्टि शिवजी के अन्तःकरण अर्थात् ज्योतिर्लिङ्ग में ही समाहित हो जाती है। सृष्टि के प्रारम्भ में शिवजी के आदेशानुसार व्रह्मा, एवं विष्णु अपने अपने कार्य में संलग्न होकर पुनः सृष्टि का प्रवर्धन करके पालन भी किया करते हैं। इस त्रिगुणात्मिका प्रकृति के संहार में शिव जी का विध्वंसक स्वरुप सामने आता है। अतएव शिवजी ही सृष्टि के आदिकारण माने गये हैं। उन्हें वेदों में स्वयंभू कहा गया है। शिवजी की अष्टमूर्तियों में अग्नि भी उनकी प्रारम्भिक मूर्ति है। वस्तुतः सभी देवताओं में शिवजी का स्वरुप सवसे भिन्न है। वह क्षणे रुष्टः क्षणे तुष्टः, रुष्टः तुष्टः क्षणे क्षणे ऐसे स्वभाव वाले हैं। इसीलिए उनका एक नाम आशुतोष भी है।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों की समस्त कथाओं में अपने भक्तों के लिए शिवजी ने समयनुसार अनेकों रुप धारण किये हैं। वे कभी ज्योतिर्लिङ्ग में साक्षात् प्रविष्ट हुये, कभी मृग का रुप धारण किया, कभी भैंसे के रुप में भीम की परीक्षा लेते हैं, तो कभी किरात वेष धारण करके अर्जुन की परीक्षा लेते हैं। कभी हिरण वन जाते हैं। तो कभी वाराह का रुप धारण कर लेते हैं। कभी सिंह का रुप धारण करतें हैं। तात्पर्य यह है कि शिवजी भी लीलाधर के समान भक्तों के हित के लिए नटवत् क्षण क्षण अपने स्वरुप को बदलकर सामने आ जातें हैं।

कभी कभी भक्त की पूजा से प्रशन्न होकर ऐसे तक कृत्य किये हैं। जो लोक में सुने भी नहीं जा सकते। मान्धाता के गर्व को दूर करने के लिए उन्होंने जिस अलक्षित माया का प्रयोग किया है, उसका तो कोई सहज रुप में विचार भी नहीं कर सकता। वालक श्रीकर की भक्ति से प्रसन्न होकर शिवजी ने एक ही क्षण में महाकाल का रुप धारण करके राक्षस का विनाश कर डाला। भीम नाम के राक्षस का वध करने के लिए वे उस ज्योतिर्लिङ्ग से ही प्रकट हो गये। धुश्मा के वालक को जीवित करने के लिए उन्होनें जो चमत्कार दिखाया उसे इस संसार में तो कोई सत्य भी नहीं मान सकता। किन्तु भक्तों पर प्रशन्न होकर उन्होंने जो जो लीलायें की हैं, उन्हें पढ़कर वास्तव में आज भी रोमांच हो जाता है। दाता के रुप में जव शिवजी अपनें भक्तों पर प्रशन्न होते हैं, तो रावण

के साथ लंका जाने को तैयार हो जाते हैं। किन्तु रावण के घमण्ड से जव क्रोध करते हैं, तो छोटे से शिवलिंड्ग में स्वय प्रविष्ट होकर उस रावण की सारी शक्ति ही क्षीण कर डालते हैं।

द्वादश ज्योतिर्लिंड्गों की कथायें शिवजी के विभिन्न चरित्रों के कारण वस्तुतः वड़ी रोचक हैं। शिवजी ने अपनी प्रशन्नता के लिए भक्तों को नितान्त सरल उपाय भी वतलाये हैं। शिवजी ने भक्तों को वरदान देकर अन्त में प्रायः सभी ज्योतिर्लिंड्गों में अपनी आन्तरिक ज्योति का आधान किया है। हमारे भारत का सवसे अधिक गौरव इन्हीं शिवजी के द्वादश ज्योतिर्लिंड्गों के कारण आज भी दिखाई पड़ता है। प्रत्येक ज्योतिर्लिंड्ग का तेज, वहॉ के धरातल की पवित्रता, शिवजी के चरण कमलों की भक्ति का सुप्रसाद, आज भी भारत की गौरव गाथा का गुणगान करता हुआ सुनायी देता है।

सभी देवताओं में शिवजी सवसे अधिक सरल एवं भक्त वत्सल भी हैं। वही योगीश्वर एवं महाकाल के भी रुप में हमें दिखायी देते हैं। किन्तु जिस भक्त ने उन्हें आत्म समर्पण किया है। उसके लिए उनकी भक्तवत्सलता स्वंय ही उछलकर सामने आ गयी। ऐसे रोमांचक आरव्यान द्वादश ज्योतिर्लिंड्गों में शिवजी ने जिस आन्तरिक तेज का स्वयं आधान किया है, उनकी गणना पहले ही वतायी जा चुकी है। भारत के कोने कोनें में शिवजी के द्वारा प्रतिष्ठित ये ज्योतिर्लिंड्ग आज भी हमारे देश की शक्ति एवं उनकी सर्व व्यापकता का प्रमाण इन्हीं वारह ज्योतिर्लिंड्गों का स्वरुप हैं।

हमारे देश की संस्कृति एवं सभ्यता भारत की पावन रजकणों में ही ध्वनित हो रही है। इसलिये समस्त विश्व आज भी हमारे देश के समक्ष घुटने टेंक देता है। संसार का ऐसा कौन सा देश है जिसने सर्वप्रथम भारत की संस्कृति की सराहना न की हो। इन्हीं समस्त तत्वों का समावेश इस नवीन रचना "ज्योतिर्लिंड्ग दर्पणम्" नामक पुस्तक में किया गया है। आशा है कि इस रचना से हमारे देश के सभी वर्गो के भक्तगण परम लाभान्वित होंगे । साथ ही हमारे देश की सभ्यता का वास्तविक स्वरुप समझकर देश के हित में अपना पूर्णरुपेण योगदान भी करेंगे। यह रचना शिवजी की कृपा से परम प्रेरित होकर लिखी गयी है। इसलिये इसका प्रभाव आप लोग स्वंय देख सकेंगे।

—:महाकाव्य में रस योजना:—

आचार्य जी की रचना "द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणम्" में प्रायः नव रसो का परिपाक प्राप्त होता है। किन्हीं किन्हीं स्थलों पर तो वीर एवं करुणरस की धारा ही प्रवाहित हुई है। कुछ स्थल तो श्रंगार से ओत प्रोत दिखाई पड़ते हैं। यद्यपि भक्ति की मन्दाकिनी तो सम्पूर्ण काव्य में ही प्रवाहित हुई है। कहीं – कहीं ऐसा प्रतीत होता है कि महाकाव्य में लगभग सभी रस प्रमुख ही वन पड़े है। वीर रस की झांकी प्रायः सभी सर्गो में देखने को मिलती है। अदभुत् रस वड़े ही चमत्कारपूर्ण ढंग से प्रयुक्त हुआ है। वीर वेष धारण किये हुये शिवजी का एक रुप देखिये–

विभृद्वानकरे त्रिशूलमपरे कृष्णं करालं धनु
स्तस्थौ वाणमिवामृशन् कटितटे तूणीरमध्ये शिवः।
चंचच्चारु चतुर्दिगन्त महिमा विस्मापयन् केशवम्
दृष्ट्वा दैत्यमुखम् जहास सहसा मेषे यथा केसरी।।

प्रस्तुत पद्य में शिवजी के स्वरुप का चित्रण कितना ही मनोरम एवं स्वाभिमान युक्त है। वीरता की प्रतिमूर्ति शिवजी का स्वरुप भगवान् विष्णु को भी सहसा आश्चर्य प्रदान करने वाला प्रतीत हो रहा है। इसी प्रकार अनेक स्थलों पर भी शिवजी का चरित्र विभिन्न रसों के द्वारा चित्रित किया गया है। वे कभी करुण रस में भक्तवत्सल वन जाते हैं। कभी भक्त की रक्षा करने के लिए वीर वेष धारण कर लेते हैं। करुण रस की झांकी एक पद में प्रायः देखने योग्य है।

विलोक्य तं वालमरालमद्भुतम् ,
हृयमन्दमानन्दमवाप शंकरः।
निधाय क्रोडे तमनन्दयत्पुनः,
जगन्निवासोऽपि रुरोद तत्क्षणम् ।।

शिव का करुण रस का चित्रण भी प्रायः हृदय विदारक है। वे एक क्षण में चराचर के स्वामी होकर भी एक वालक की रक्षा करने वाले महाकाल भी

वन जाते हैं, तो कभी एक ही क्षण में उस वालक को गोद में लेकर करुणा की प्रतिमूर्ति वनकर रोने लगते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणम्, नामक महाकाव्य में ऐसा कोई भी रस नहीं हैं, जो कि उभरकर के सामने नहीं आया। सभी रसों का चित्रण खुलकर किया गया है। भक्ति प्रधान रचना होने पर भी इसमें सभी रसों का पूर्ण परिपाक दिखाई देता है। कई स्थलों पर अदभूत् एवं भयानक रस दोनों ही चमत्कारी वन पड़े हैं। इतना ही नहीं शान्त रस तो करुणा के साथ अजीव आन्नदोत्पादक वन पड़ा है। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि बर्तमान काल की रचनाओं में यह रचना बेजोड़ है।

महाकाव्य मे अलंकार योजनाः—

"द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणम्" नामक महाकाव्य मे आचार्यजी ने प्रायः सभी प्रमुख अलंकारों का प्रयोग किया है। उपमा – उत्पेक्षा– रुपक भ्रांतिमान् -- संदेह– दीपक– तुल्ययोगिता– यमक –स्वभावोक्ति – अतिशयोक्ति इत्यादि विभिन्न अलंकारो का क्रमशः प्रयोग दिखाई पड़ता है। किन्हीं स्थलों पर तो महाकवि ने एक ही पद्य में दो दो अलंकारो का एक साथ प्रयोग किया है। उपमा एवं उत्प्रेक्षा का चित्रण एक पद्य में दर्शनीय है। यथा–

इत्येवं मुमुरेव मध्यनभसा देवाङ्गनानां गिरम् ,
श्रुत्वा सोऽपि वभूव युद्धविमुखः सद्यः भवनीपतिः।
न्यस्तं वाणमसौ विमुच्य सहसा निर्वर्ष्य भूयोदिवम्
तस्थौ स्थाणुरिवाचलः हि भुवने भक्तिप्रियाः देवताः।।

ऐसे अनेक पद्यों में एक साथ दो दो अलंकारो का प्रयोग किया है। कुछ पद्यों में तो कई अलंकार एक ही पद्य में शोभादायक बन पड़े है। संदेह तथा भ्रान्तिमान का प्रयोग क़ई पद्यों में आकस्मिक रुप में हुआ है। रचनाकार की क्षमता का अनुमान इस महाकाव्य में लगाया ही नहीं जा सकता । महाकवि ने किन्हीं स्थलों पर तो अलंकारों की झड़ी सी लगा दी है।एक पद्य में रचनाकार के द्वारा अलंकारों का चमत्कार देखिये –

श्रुत्वा वृत्तमिदं चराचरगुरुः साक्षात्कपर्दीश्वरः
जातः शोकप्रसादसंगमसरित्तीरे तरन् संततम्
चादौ भक्तविषाद चिंतनपरः पश्चाज्जयं श्रीपतेः ,
मध्ये द्वन्द तंरग तप्तह्रदयो शाखामृगाणामिव।।

प्रस्तुत पद्य में हनुमानजी के द्वारा रावण की पराजय एवं श्रीरामचन्द्रजी की विजय का समाचार सुनकर शिवजी की मानसिक स्थिति का चित्रण किया गया है। इस पद्य में कितने अंलकार हैं। संदेह , भ्रान्तिमान् , उपमा, उत्प्रेक्षा का एक साथ समावेश अन्य भी कई स्थलों पर प्राप्त होता है। प्रायः महाकाव्य में ऐसे स्थल वहुधा दिखाई पड़ेंगे, जहां उपमा उत्प्रेक्षा आदि विभिन्न अंलकारों के साथ क्रमशः वारी वारी से अपना अलग परिचय दे रहे होंगे। यद्यपि विस्तारमय

से उनका चित्रण करना समीचीन न होगा। इसलिये इस रचना का प्रत्येक सर्ग महाकवि की योग्यता एवं गरिमा के लिये पर्याप्त ही सिद्ध हुआ है। किन्हीं दो स्थलों पर अलंकार स्पष्ट रुप में शोभादायक वन पड़े हैं। महाकाव्य में अलंकारों का चमत्कार तो प्रायः सर्वथा वेजोड़ है। साथ ही भाषा की सरलता के कारण अलंकारों ने कहीं कहीं तो रचना में चार चाँद ही लगा दिये हैं। अतः हम कह सकते हैं कि इस रचना में अलंकारों का प्रयोग सर्वाधिक रुप में प्राप्त होता है।

–:महाकाव्य में छन्द योजना :–

आचार्यजी की रचना "द्वादश ज्योतिर्लिंङ्ग दर्पणम्" नामक महाकाव्य में प्रायः अनेक छन्दों का प्रयोग किया गया है। द्रुतविलम्वित, मन्दाक्रांता उपजाति–बसन्ततिलका–वंशस्थ–मालिनी–शार्दूलविक्रीडित आदि प्रमुख छन्दों का प्रयोग तो वहुधा प्राप्त होता है। कहीं कहीं हरिणीं छन्द का प्रयोग भी प्राप्त होता है। सर्ग के प्रारम्भ में अधिकतर शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग किया है। किन्तु सर्ग के अन्त में प्रायः मालिनी छन्द दिखायी पड़ता है। उपेन्द्रवज्रा तथा इन्द्रवज्रा का प्रयोग भी लगभग कई स्थलों पर प्राप्त हुआ है। शिवजी की स्तुति में शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग देखिये –

विभृच्चन्द्र प्रभानिषेक सरसं प्रालेय शुभ्रं खजं
गौरीवक्त्र सुहास सदृश चलद्देदीप्यते जान्हवी।
हारं नागसुवर्णकृष्णावलयं कंठे दधद्धूर्जटिम् ,
वन्दे तं गिरिजापतिं गुणनिधिं केदारनाथं शिवम्।।

इतना ही नहीं महाकाव्य में लगभग पच्चीस छन्दों का प्रयोग प्राप्त होता है। सभी छन्द कवि के वर्ण्य विषय के अनुरूप ही किये गये हैं। कुछ छन्द ऐसे हैं जहां महाकवि के वैदुष्य के प्रतीक़ के रूप में प्रयुक्त हैं। मन्दाक्रान्ता तथा मालिनी छन्दों की अविरल धारा ही कहीं कहीं प्रवाहित की गयी है। उपेन्द्रवज्रा का एक चित्रण देखिये–

मनो न मे कामयते महद्धनम्,
न चापि लोकस्य महेन्द्र शासनम्।
भजामि भक्त्या चरणौ चिरन्तनम् ,
नमेऽस्तु चिंता कतिचिच्चिकीर्षितुम्।।

इसी प्रकार मन्दाक्रान्ता छन्द का चित्रण भी प्रायः इस रचना में नितान्त मार्मिक वन पड़ा है। इस छन्द के कतिपय उदाहरण भी दर्शनीय हैं। एक मन्दाक्रान्ता का उदाहरण देखिये –

मन्दायन्ते न खलु सरले चाम्युपेतार्थ कृत्याः
तस्मादेनां सरलवदनामम्विके राजकन्याम् ।

दृष्ट्वा नूनं प्रहित नयनैनिर्मलान्तर्निरीक्ष्य ,
मां रक्षेथाः स्वकरकरजैर्नित्य कण्डूयमानाम् ।।

प्रस्तुत अवतरण में भगवती पार्वती से राजकन्या का समर्पणभाव प्रायः मन्दाक्रान्ता छंद में कितना स्वाभाविक चित्रित किया गया है। ऐसे अनेक पद्यों में विभिन्न छन्दों का प्रयोग अलंकारों की पृष्ठभूमि को चमत्कृत करके ही रह गया है। अतः हम कह सकते हैं कि वर्तमान समय के संस्कृत भाषा के महाकाव्यों में इस रचना का सर्वप्रथम स्थान है। जहाँ प्रायः सभी छन्दों का क्रमशः प्रयोग प्राप्त हुआ है।

–:महाकाव्य में गुण–रीति एवं भाषा:–

"द्वादशज्योतिर्लिङ्गदर्पणम्" नामक महाकाव्य में महाकवि ने लगभग ओज, प्रसाद एवं माधुर्य, तीनों गुणों का क्रमशः प्रयोग किया है। किन्तु सम्पूर्ण रचना प्रायः प्रसाद गुण से ओत – प्रोत दिखाई पडती हैं । कहीं कहीं ओज भी अपने अनुरूप साकार सिद्ध हुआ है। यद्यपि यह रचना भक्ति प्रधान रचना हैं, फिर भी समय के अनुसार महाकवि को प्रायः कई स्थलों पर प्रसाद एवं माधुर्य के अलावा ओज गुण का आश्रय भी लेना पड़ा है। युद्ध के स्थलों पर तथा वीर रस के प्रयोग में ओज गुण जरूर सामने आया है। वहुधा प्रसाद एवं माधुर्य इस रचना के प्रमुख गुण हैं।

रीतियों के प्रयोग में रचनाकार ने प्रायः गौणी का ही प्रयोग किया है। पांचाली एवं वैदर्भी रीति का अनुभव हमें कई स्थलों पर अवश्य होता है। किन्तु कहीं कहीं स्पष्ट रूप से वैदर्भी का चित्रण भी अछूता नहीं है। महाकाव्य में सरलता के कारण पांचाली के साथ साथ गौणी का प्रयोग खुलकर किया गया है। काव्यात्मक दृष्टिकोण से इस रचना में वैदर्भी का भी स्थान कम नहीं है। किन्तु गौणी का आश्रय समस्त महाकाव्य का उपजीव्य है।

भाषा की दृष्टि से इस महाकाव्य में परम सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। यद्यपि भक्तिकाव्य के होने के कारण सर्वजन साधारण के लिये वोधगम्य भाषा ही लोकप्रिय मानी जाती है। दुरूह एवं क्लिष्ट भाषा में साधारण व्यक्ति काव्य का आन्नद प्राप्त नहीं कर पाता। इसीलिये महाकाव्य का लक्ष्य सर्वजन साधारण के अन्तःकरण को स्पर्श करने वाली भाषा से ही पूर्ण हुआ है। प्रायः आचार्य जी की सभी रचनायें नितान्त सरल एवं वोधगम्य हैं। किन्तु भक्ति प्रधान काव्य होने के कारण इस रचना में भाषा का विशेष ध्यान रखा गया है। भाषा के दुर्वोध होने से भक्तिपरक काव्यों में वास्तविक आन्नद की उपलब्धि से पाठक वंचित हो जाता है। अन्त में वही काव्य उनके लिये अनिच्छा का विषय वन जाता है। इसलिए पौराणिक भाषा से भी अतिसरल एवं नितान्त वोधगम्य भाषा का प्रयोग करना ही महाकवि का इस रचना में लक्ष्य रहा है।

भाषा की सरलता के कारण भक्ति प्रत्येक सर्ग में उभरकर सामने आ गई

है। कहीं कहीं छन्दों के विस्तृत हो जाने के कारण इस रचना में भाषा स्वंय क्लिष्ट प्रतीत हो रही है। किन्तु प्रत्येक स्थल स्पष्ट दिखाई देते हैं। काव्य में कवि का लक्ष्य भक्ति का उद्दीपन करना ही रहा है। अतः भाषा की सरलता से इस रचना में कोई स्थल दुर्बोध नहीं हो पाया है।

—: महाकवि कालिदास की शिवोपासनाः—

भगवती सरस्वती के वरदपुत्र महाकवि कालिदासजी भारतीय साहित्य की सर्वश्रेष्ठ विभूति हैं। भारतीय सस्कृति के वे परम उपासक और भारतवर्ष की उज्जवल कीर्ति के अमर अनुगायक एवं समुन्नायक है। भारतीय संस्कृति की कतिपय विशेषतायें अद्वितीय एवं समुत्थापक भी हैं। जिसके कारण विश्व संस्कृति में उसका अपना निजी स्थान है। भारत सदा धर्म प्रधान एवं धर्मप्राण देश रहा है तथा भारतीय संस्कृति सदा धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत रही है। भारतीय धर्म का आधार है सर्वशक्तिमान् भगवान की सत्ता में अटूट विश्वास। भारतीय संस्कृति में प्राणी मात्र के सुख और कल्याण की कामना सर्वापरि है। भारतीय चिन्तन में तो निखिल व्रह्माण्ड के जीवधारियों के कल्याण के मंगलकामना का भाव निहित है। यथा—

सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

यहां तक कि हमारे भारतीय मनीषियों का सिद्धान्त प्रायः सदैव ही " वसुधैव कुटुम्वकम्" की भावना से अभिप्रेत रहा है। महाकवि कालिदास की कृतियों में प्राणीमात्र के प्रति यही शुभभावना अभिव्यक्त हुई मिलती है। साथ ही उनकी रचनाओं में प्रकृति के कण– कण के प्रति आत्मीयता का भाव मुखरित होता हुआ दिखाई देता है। कालिदास की कृतियों में अभिव्यक्त यही सर्वव्यापक मंगलकामना उनकी अभीष्ट शिवाराधना है। शिव जगत के मंगल कारक तत्व के ही पर्याय है। महाकवि इसी अर्थ में शिव की उपासना करते हैं। चराचर के प्रति इसी व्यापक सर्व कल्याण भावना के उद्भावक के रूप में महाकवि का अपना स्वतन्त्र स्थान है। महाकवि कालिदास उदारचेता, सहिष्णु और परम आस्थावान् है।

कालिदास के परम आराध्य भगवान शिव उन्हें परमप्रिय हैं। उनके लगभग सभी ग्रन्थों का प्रारम्भ मंगल एवं आन्नद मूर्ति भगवान् शिवजी की स्तुति से होता है। उनकी शिव भक्ति उनके काव्यों एवं नाटकों के मंगलाचरण एवं काव्यगत विभिन्न स्थलों के अन्तर्भाव से स्पष्ट है। महाकव्यों में 'रघवंश'

उनकी सर्वश्रेष्ट रचना है। इस कृति में महाकवि ने प्रतापी रघुवंशी राजाओं की धवल कीर्ति का गान किया है। किन्तु इस महाकाव्य में महाकवि ने सर्वप्रथम अपनी प्रणामाज्जलि भगवान् शिव तथा जगज्जननी माता पार्वती के ही चरणों में अर्पित की है। यथा –

वागर्थाविवसम्प्रक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।

विशुद्ध शव्दार्थ के परिज्ञान के लिये शव्द एवं अर्थ की तरह परस्पर संश्लिष्ट सम्पूर्ण विश्व के माता पिता अर्धनारीश्वर भगवान् शिव या शिव–पार्वती की मैं वन्दना करता हूँ।

इससे महाकवि की भगवान् आशुतोष के प्रति अनन्य भक्ति का संकेत मिलता है। उनकी कृति का वर्ण्य विषय चाहे ऐतिहासिक हो अथवा पौराणिक, चाहे वह रामायण से ग्रहीत हो अथवा महाभारत से, किन्तु कृति का प्रारम्भ वे भगवान् शिवजी की स्तुति से ही करते हैं।

कालिदासजी का द्वितीय महाकाव्य 'कुमार सम्भव' तो भगवान् शिव की महिमा से ओतप्रोत ही है। सम्पूर्ण कुमार सम्भव शिवजी की महिंमा में श्लोकों से परिपूर्ण है। इस महाकाव्य में गर्वस्फीत काम की दयनीय पराजय का वर्णन मिलता है। यहां कवि ने मदन के गर्व को ध्वस्त किया ही है। साथ ही इस तथ्य को भी रेखांकित किया है कि नारी की सुन्दरता उसकी सर्वोच्च सम्पत्ति नहीं है। उससे सच्चे प्रेम की उपलब्धि सम्भव नहीं है। महाकवि पुरूषार्थ चतुष्ठे के प्रतिपादक अवश्य हैं। किन्तु अर्थ एवं काम को आवश्यकता से अधिक महत्व प्रदान करने के वे पक्षधर नहीं हैं।

महाकवि ने इस तथ्य को भी उजागर किया है कि विना तपस्या के प्रेम कभी परिनिष्ठित नहीं होता। कुमार सम्भव के पंचम सर्ग में पार्वती जी की कठोर तपस्या का अत्यन्त उदान्त वर्णन है। उसी कठोर तपस्या के वल पर पार्वती को भगवान् शिव की प्राप्ति हुई। विना अपना शरीर तपाये धर्म की भावना उत्पन्न नहीं होती। जगत जननी पार्वती ने भी घोर तपस्या करके अभीष्ट प्राप्त किया। समस्त लोक के मंगल का भाव इसी तप मे समाहित है।

महाकवि कालिदास कृत मेघदूत का गीतिकाव्य के रूप में भारतीय साहित्य में विशिष्ट स्थान है। यह गीतिकाव्य धनपति कुवेर के द्वारा दण्डित अपने भ्रत्य– एक यक्ष के वर्ष भर के लिये निर्वासित जीवन का अभिलेख मात्र नहीं है। प्रत्युत यह तो भगवान् चन्द्रशेषर की महिमा से ओतप्रोत गीतिमय काव्य रचना है। इस गीतिकाव्य में महाकवि ने भगवान् शिवजी की महिमा का पुष्कल गान किया है। और इस प्रकार उनके प्रति अपना प्रणतिभाव ही व्यक्त किया है।

मेघदूत में मेघ के माध्यम से कालिदास ने भगवान् शिव जी के चरणों में अपनी सम्पूर्ण श्रद्धा उड़ेल दी है। उज्जयिनी में भगवान् महाकाल की सांध्य अर्चना के समय अपनी सेवांज्जलि अर्पित करने का वे मेघ से अनुरोध करते हैं। यहॉ मेघ के माध्यम से भगवान् शिव के प्रति कवि ने अपना ही श्रद्धान्वित भक्तिभाव व्यक्त किया है। भगवान् त्रिलोचन का वाहन वृष है। अर्थात वे बृष को अपने वश में करके उसमें आसीन होते हैं। वृष काम का प्रतीक है। उसके द्वारा कवि का संकेत है कि काम भगवान् शिव के बशीभूत है। इसीलिए काम शिव के प्रदेश में प्रवेश करने का साहस नहीं करता। अतएव वह वहाँ चाव चढ़ाने में भी डरता हैं। इस सन्दर्भ में उत्तर मेघ का एक पद्य देखिये–

भत्वा देवं धनपति सखं यत्र साक्षाद्धसन्तम ।
प्रायश्चायं न वहति भयान्मन्मयः सट्पदज्यम्।।

मेघ इच्छाचारी है। आकाश में वह स्वेच्छा से विचरण करता है। इसीलिए कालिदास ने मेघ को कामरूप प्रकृति पुरूष कहा है।

जानामि त्वां प्रकृति पुरूषं कामरूपं मघोनः ।।

अतः यक्ष कामरूप मेघ से उस अल्का नगरी जाने का अनुरोध करता है। जिसके महल उससे नगरी के बाहरी उधान में विराजमान भगवान् चन्द्रमौलि के मस्तक पर सुशोभित चन्द्र विच्छुरित चन्द्रिका से सुशोभित एवं धवलित हैं। यहॉ महाकवि का संकेत है कि कामतत्व को अपने कल्याण के लिये शिव के सांनिध्य में निगृहीत भाव से रहना है। इस प्रकार महाकवि ने मेघदूत के समग्र परिवेश को भगवान् शिव की महिमा से सम्प्रक्त निरूपित किया है।

अभिज्ञान शाकुन्तल नाटक में महाकवि कालीदास ने वासना जन्य प्रेम हेय स्वीकार किया है। उन्होंने केवल उसी प्रेम को स्वीकृति प्रदान की है, जो अनुताप की अग्नि में निरन्तर तप कर अन्त में कुन्दन की भाँति खरा पवित्र एवं दिव्य प्रमाणित होता है। भगवान् शिव की महिमा का ज्ञान नाटक के प्रारम्भ में ही किया गया है।

या सृष्टिः सृष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं बिधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीज प्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः ,
प्रव्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिखतु बस्तामि रष्टाभिरीशः ।।

कालीदास ने नाटक की नान्दी में भगवान् शिव की अष्ट मूर्तियों का उल्लेख किया है। ये अष्ट मूर्तियाँ हैं–सूर्य,चन्द्र, यजमान, प्रथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश। महाकवि ने इन अष्ट मूर्तियों के लिये "प्रत्यक्षाभिः यह पद प्रयुक्त किया गया है। अर्थात् ये अष्टमूर्तियां संसार में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होती हैं। इससे कालिदास का स्पष्ट संकेत है, कि इन प्रत्यक्ष मूर्तियों को धारण करने वाले इस जगत के नियामक की सत्ता संदेह से परे है। वल्कि सत्य तो यह है कि विश्व का प्रत्येक कण उनकी सत्ता को व्यक्त करता है।

तत्वज्ञ होने के कारण उन्होंने भगवान् शिवजी से कभी अर्थ और काम की लालसा नहीं की, अपितु शिव जी से कभी कैवल्य की कामना करते रहे। वे भगवान् शिव से किसी सांसारिक वस्तु की याचना न करते हुये उनसे जन्ममृत्यु के चक्र से मुक्ति प्रदान करने हेतु विनय करते हैं।

ममापि च क्षपयतु नील लोहितः ,
पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः ।।

मालविकाग्निमित्र नाटक की नान्दी में उन्होंने सामाजिकों के लिये भगवान् से प्रार्थना की है कि वे उनकी तामसी वृत्ति का शमन करें। ताकि उनकी सन्मार्ग में प्रवृत्ति हो । यथा –

।।सन्मार्गालोकनाय व्यपनयतु स वस्तामसीं वृत्तिमीशः।।

इसी प्रकार "विक्रमोर्वशीय" नाटक की नान्दी में उन्होंने स्थिर भक्ति

भोग से सुलभ भगवान् शंकर से सभी को निःश्रेयस प्रदान करने की प्रार्थना की है। यथा –

स स्थाणुः स्थिर भक्ति योग सुलभो निःश्रेयसामास्तुवः ।।

महाकवि कालिदास की यह विशेषता है कि उनकी आराधना में व्यापक लोकमंगल की भावना निहित रहती है। वे भगवान् शिव से जनकल्याण की कामना ही करते रहे और यही उनके शिव के स्वरूप का यथार्थज्ञान तथा उनकी यथार्थ शिवोपासना है। यही सर्वजनहिताय, एवं सर्वजनसुखाय ही रही है। क्योंकि हमारे भारतीय मनीषियों का लक्ष्य ही " वसुधैव कुटुम्वकम्" के सिद्धान्त का पोषक रहा है।

–: निवेदक :–

आचार्य विष्णु नारायण शुक्ला (एम0 ए0 साहित्याचार्य)
विभागाध्यक्ष (साहित्य विभाग)
शा0 ज0 सनातनधर्म संस्कृत महाविद्यालय
रेलवे रोड – फर्रुखाबाद

—:प्रथम सर्गः—

:— अथद्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणम् :—

—:सोमनाथम् :—

कामं कैलाशवासी मनसिज दहनाद्विश्रुतो मन्मथारिः,
लोके सोऽयं स्वयंभू प्रमथ गणपति स्त्र्यम्बिको भूतनाथः।
दाता ख्यातस्त्रिलौके तदपि पुनरयं भिक्षुको शूलपाणिः
तस्माद्वन्दे गिरीशं भवभयहरणं सर्वथा निर्विकल्पम्।।1।।

हिन्दी अनुवादः— शिव जी यद्यपि कैलाश पर्वत पर निवास करने वाले हैं, किन्तु कामदेव को भस्म करने से वे मन्मथारि नाम से प्रसिद्ध हैं। वे ही संसार में स्वयंभू कहलाते हैं। समस्त भूत प्रेत के स्वामी हैं, तथा तीन नेत्रों को धारण करने वाले हैं, अतएव वे भूतनाथ नाम से ही विश्व विख्यात हैं। यद्यपि समस्त संसार के प्रसिद्ध दानी होने पर भी शिवजी सदैव भिक्षुक हैं। इसलिये समस्त गुणों से युक्त होंने के कारण संसार सागर के भय को दूर करने वाले निराकार एवं निष्कलुष भगवान् भोलेनाथ की मै वन्दना कर रहा हूँ।

वन्देऽहं प्रथमं पुरारितनयं गौरीसुतं वा ततो,
विघ्न द्वंदविनाशकारण परं विघ्नेश्वरं सिद्धिदम्।
वीणापाणि पदारविन्दमपरं सारस्वतं वैभवम्,
ध्यात्वा पूर्ण कलेवरं मुहुरहो दुर्गात्रिनेत्रां भजे।।2।।

हिन्दी अनुवादः— मैं सर्वप्रथम शिवजी अथवा पार्वतीजी के पुत्र श्री गणेशजी की, जो समस्त विघ्नों का विनाश करने वाले एवं सर्व सिद्धियों के दायक हैं, उनकी वन्दना कर रहा हूँ। तदनन्तर सरस्वती का वैभव अर्थात् साहित्यक सृष्टि के मूलतत्व भगवती के चरण कमलों की वन्दना करता हूँ। इसके पश्चात् मैं भगवती जगदम्वा के पूर्ण स्वरूप का ध्यान करके त्रिनेत्र धारिणी माता दुर्गा जी का भजन करता हूँ।

ईर्ष्याद्वेष समन्विताः खलजनाः किचिन्न कर्तुं क्षमाः,
मिथ्यैवं परद्रोह कर्मणिरताः लोके भ्रमन्तीह ते।
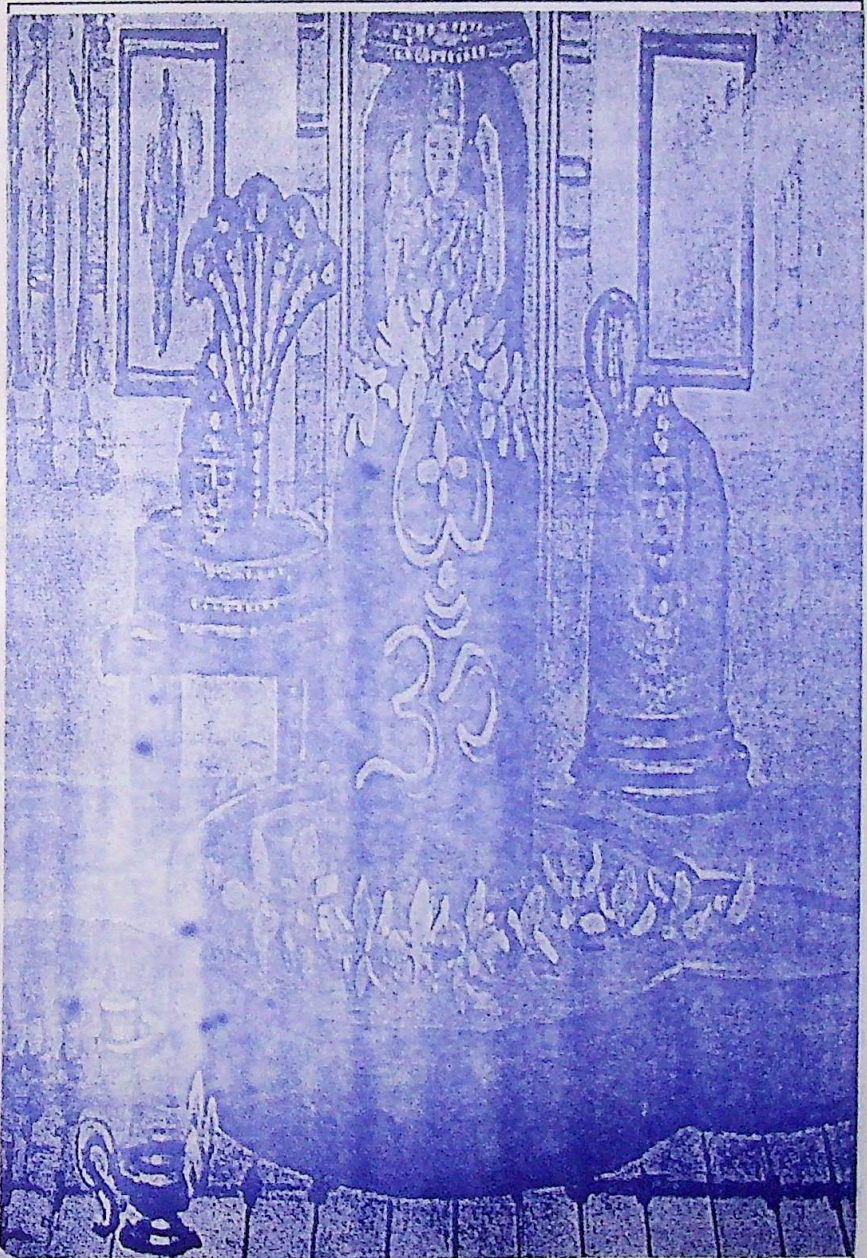
श्री सोमनाथम्

तत्राप्यत्र सदैव काव्य रचना दोषान्समन्वेषिणः
लम्वग्रीवमहोष्ट्रकंटकद्रुमेष्वालम्वमाना इव।।3।।

हिन्दी अनुवादः– इस संसार में ईर्ष्या, एवं द्वेष के वशीभूत दुर्जन लोग और कुछ करने में असमर्थ दूसरे लोगों से वैर करने में तत्पर होकर, व्यर्थ में भ्रमण किया करते है। वे नित्य ही सुन्दर काव्य रचना में दोषों को खोजने के इच्छुक उसी प्रकार देखे जाते हैं, जैसे लम्वी गर्दन वाले ऊँट काँटेदार पेड़ों की तलाश में घूमते रहते हैं। अर्थात् उन्हें सुंदर फलवाले वृक्ष कभी पसन्द नही होते।

ज्योतिर्द्वादशलिड्ग दर्पणमिंद निर्मातुमिच्छाम्यहम् ,
मत्पार्श्वे न कवित्य वुद्धि विभंव प्रायः कवीनामिव।
कामं पल्वल पद्म विभ्रमवशाद् मृड्गीभवन्मे मनः ,
धावत्यत्र तथापि गन्धमधिकं ध्रातुं पुनः प्रत्यहम्।।4।।

हिन्दी अनुवादः– मै "द्वादशज्योतिर्लिड्ग दर्पणम्" नामक महाकाव्य की रचना करना चाहता हूँ। किन्तु मेरे पास कवियों की भाँति न तो कवित्व शक्ति है, और न वौद्धिक क्षमता ही है। जैसे तालाव में खिले हुये कमल के भ्रम से भ्रमर उसकी मधुर गन्ध को सूँघनें के लिये अनवरत दौड़ा करता है। किन्तु उसका मनोरथ पूर्ण नहीं हो पाता। उसी प्रकार मेरा मन भौरे के समान लालायित तो सदैव रहता है, किन्तु काव्यशास्त्र का मर्मज्ञ न होने के कारण अन्त मे हताश हो जाता है।

जानन्त्येव वुधाः कवित्य रसिकाः विद्वज्जनाः सूरयः ,
काव्यं नैव पयः फलं न मधुरं काव्यप्रतिष्ठाजुषाम् ।
कर्कन्धू फल सदृशं हि निकषं विधावतां भूषणम्।।
प्रायः वाह्य मनोहरं पुनरहो! चान्ते महाकर्कशम्।।5।।

हिन्दी अनुवादः– काव्य के रसिक वुद्धिमान् विद्धान् एवं कविजन तो स्वयं जानते हैं कि काव्य न तो दूध है, न मधुर फल है जो साधारणतया उपयोग मे आ सके। काव्य की प्रतिष्ठा के मर्मज्ञ विद्धानों को काव्य, वेर के फल के समान है। क्योंकि यह विद्वानों की कसौटी एवं सर्वोत्तम भूषण भी है। जैसे वेर देखने में वाहर से कितना सुन्दर लगता है किन्तु अन्दर नितान्त कठोर होता

है।उसी प्रकार काव्य देखने में तो बहुत सुन्दर एवं सरल प्रतीत होता है। किन्तु रचना करने में वहुत कठोर एवं परिश्रम साध्य हैं।

लोके सर्वकवीन् पुनर्गुरूपदं नत्वां मुहुः शंकरम्
काव्यानन्दपयोधिसारसरसं निर्मातुमिच्छाम्यधः।
ज्योतिर्द्वादशलिंङ्ग दर्पणकथाः प्रायः भवानीपतेः ,
श्रुत्वा चात्रजनाः समस्त भुवने यास्यन्ति मुक्तिं ध्रुवम्।।6।।

हिन्दी अनुवादः– मैं संसार के समस्त कवियों, तथा गुरूदेव के चरण कमलों , एवं भगवान् शंकरजी को वार वार प्रणाम करके, काव्य के आनन्द रूपी सागर के सरस तत्व "द्वादशज्योतिर्लिंङ्ग दर्पण" नामक महाकाव्य की नीचे रचना करना चाहता हूँ। इस महाकाव्य की शिवजी की समस्त कथायें सुनकर विश्व के सभी प्राणिमात्र निश्चित ही मुक्ति को प्राप्त कर सकेगे ऐसा मेरा मत है।

अथैकदा दक्षद्विजः प्रजापति
स्त्रिसप्तषष्ठाधिक दिव्यकन्यकाः।
तथोपयेमें सहसा निशापतिम्,
समर्पितन्यास इवान्तरात्मना।।7।।

हिन्दी अनुवादः– एक बार दक्षप्रजापति ने अपनी अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी आदि अलौकिक स्वरूपवती सत्ताइस कन्याओं का चन्द्रमा के साथ विवाह करके उसी प्रकार कन्यादान कर आनन्द प्राप्त किया जैसे कोई व्यक्ति किसी की धरोहर प्रदान करके आनन्द का अनुभव करता है।

यथा सरिद्भिः सततं सुशोभते,
पयोनिधिश्चात्र जगत्त्रये पुनः।
तथौषधीनांपतिरेष चन्द्रमाः
रराज नीराजनया दिने दिने।।8।।

हिन्दी अनुवादः– जिस प्रकार समस्त नदियों के द्वारा समुद्र तीनों लोकों मे सुशोभित हुआ करता है। उसी प्रकार समस्त औषधियों का स्वामी चन्द्रमा उनकी आरती के द्वारा प्रतिदिन सुशोभित होने लगा।

विधाय प्रीतिः सुविशेष रोहिणीं,
वभूव सः प्राणप्रियः निशापतिः।
तदन्य निःश्शेष द्विजेन्द्र कन्यकाः ,
निवेदयामासुरलं शुचं गुरूम्।।9।।

हिन्दी अनुवादः—चन्द्रमा सभीस्त्रियों की अपेक्षा रोहिणी से सर्वाधिक प्रेम करने के कारण, वह रोहिणी को प्राणों से भी अधिक प्रिय लगने लगा अतएव दक्ष प्रजापति की अन्य सभी कन्याओं नें अपना शोक दक्ष से निवेदन किया।

निशम्यविश्लेष मनोनिवर्हणम्,
प्रजापतिश्चात्मजनीनमातुरः।
जगाम सद्यः सहसा कलानिधे,
र्निकेतनं नीतिमतां विशारदः।।10।।

हिन्दी अनुवादः— दक्षप्रजापति ने जब अपनी कन्याओं के वियोग जन्य मानसिक शोक के कारण चन्द्रमा की शिकायत सुनी। तव वह सहसा व्याकुल होकर नीतिज्ञों में चतुर प्रजापति चन्द्रमा के निवास स्थान पर पधारे।

द्विजाकृतिं दक्षप्रजापतिं पुन ,
र्विलोक्य चन्द्रः न ननाम सत्वरम्।
समादरं नैन चकार श्रद्धया,
यथा खलोऽपत्रपतेमुहुर्मुहुः।।11।।

हिन्दी अनुवाद :— उस व्राह्मवेष वाले दक्षप्रजापति को देखकर चन्द्रमा ने न उन्हें प्रणाम किया और न उनका श्रद्धापूर्वक स्वागत सत्कार ही किया अपितु उसी प्रकार लज्जित होने लगा जैसे दुष्ट व्यक्ति मन में बार बार लज्जित हुआ करता है।

द्विषन्ति तेभ्यो सहसा हि कामिनः ,
बिनिर्दिशन्तीह पथं हितैषिणम्।
महाजनाचार परम्परासमीः
त्यजन्ति लोके खलु जन्तुनाभिव।।12।।

हिन्दी अनुवादः– कामी पुरूष उन्हीं लोगों से सदैव द्वेष रखते हैं, जो उन्हें हितकर मार्ग का निर्देश किया करते हैं। वस्तुतः ये लोग महापुरूषों की पद्धति का, जंगली जीवों के समान सदैव परित्याग कर देते हैं।

अथ प्रजानामधिपः प्रजापति ,
र्जगाद तं चण्डमयूरव सम्भवम्।
अहो ? कलानाथ? न ते विचिन्तितम्
गतिर्न लोके शुचि योषितामपि।।13।।

हिन्दी अनुवादः– इसके पश्चात् प्रजाओं का पालन करने वाले दक्षप्रजापति चन्द्रमा से वोले । हे चन्द्र देव ? तुमने इस पर कभी विचार नहीं किया कि इस संसार मे शोक अथवा क्लेश की अवस्था में नारियों की क्या दशा होती है। अर्थात दुःख की अवस्था में स्वामी के अलावा उन्हें कोई शरण नहीं देता ।

भवन्ति नार्याः सततं पराश्रिताः
विपत्तिकालेऽपि त्यजन्ति बान्धवाः।
पतिं विना जीवनमत्र दुर्धरम् ,
भजन्ति प्रायः प्रमदाश्चराचरे।।14।।

हिन्दी अनुवादः– हे चन्द्रदेव? स्त्रियाँ सदैव पराधीन ही रहतीं हैं। क्योंकि विपत्ति काल में भाई–बान्धव भी छोड़ जाते हैं। पति अर्थात् स्वामी के बिना स्त्रियाँ इस संसार में नितान्त असहाय एवं दयनीय जीवन को प्राप्त किया करतीं हैं। तात्पर्य यह है कि जीवन में स्त्रियों को पति के अलावा कहीं भी सुख नहीं मिलता।

अतोऽर्हसि नात्र प्रवाधितुं स्त्रियः ,
कुलस्य नारी गृहिणां विभूषणम्।
सुपुत्ररत्नानि प्रसूयते सदा,
गृहस्य लक्ष्मी प्रमदा निगद्यते।।15।।

हिन्दी अनुवादः–अतएव तुम्हें स्त्रियों को पीड़ित नहीं करना चाहिए। क्योंकि नारी गृहस्थों के कुल का भूषण है। वह नारी सुन्दर पुत्र रूपी रत्नों को

उत्पन्न किया करती है। अतः नारी गृहलक्ष्मी कही जाती है। तात्पर्य यह है कि नारी कुल का सर्वोत्तम भूषण है।

त्यजन्ति ये मूढ़धियः स्वयोषितं ,
वृजन्ति दुःखानि पुनः क्षणे क्षणे।
भजन्ति सर्वत्र कुलभिमानिनः
समाद्रियन्तो विवुधैः कुलाड्गनाः।।16।।

हिन्दी अनुवादः– जो मुर्ख लोग अपनी नारी का परित्याग कर देते हैं। वे क्षण क्षण दुःखी रहा करते हैं। कुल की मर्यादा का पालन करने वाले सज्जन उनकी सेवा किया करते हैं। अर्थात उन्हें सदैव सम्मान देते हैं। किन्तु बुद्धिमान लोग कुलांड्गना नारी का सदैव आदर ही किया करते हैं।

इतीह मे सौम्य? समीरितं वचः
मनः समाधाय क्षणे निशम्यताम्।
कुलाड्गनाप्रीति समान कारिणाम् ,
विवैकिनां नैव शुचं जगत्त्रे।।17।।

हिन्दी अनुवाद – है सौम्य? चन्द्रदेव? इस प्रकार मेरे कहे हुए वचनों को एक क्षण ध्यान देकर सुनो। नारियों से समान रूप में स्नेह करने वाले बुद्धिमान् व्यक्तियों को संसार में कभी शोक अथवा क्लेश नहीं होता। वे ही प्राणी सुखी रहते हैं जो इस संसार में अपनी धर्मपत्नियों से समान रूप से प्रेम का व्यवहार किया करते हैं।

इतीरयित्वा प्रययौ प्रजापति ,
स्तदीय शिक्षानुगतः कलानिधिः।
समान कान्तासहवास तत्परः
निनाय विभ्यद्दिवसानि भूयसा।।18।।

हिन्दी अनुवादः– दक्ष प्रजापति ऐसा कहकर अपने घर चले गये। चन्द्रमा भी उनके बताये हुये मार्ग का अनुसरण करके, अपनी समस्त धर्मपत्नियों के साथ समान व्यवहार करने में तत्पर होकर तथा भयभीत होकर अपने दिन व्यतीत करने लगा।

तथापि नक्षत्रपतिः शनैः शनै–
रवर्धयत्प्रीतिपथं स्वरोहिणीम्।
अपास्य सर्वाऽखिलताः कुलाङ्गनाः,
मनोरमामत्र जगत्समीहते।।19।।

हिन्दी अनुवादः– फिर भी चन्द्रमा क्रमशः धीरे धीरे अपना प्रेममार्ग रोहिणी से ही पल्लवित करने लगा। क्योंकि अन्य सभी को त्यागकर संसार भी सुन्दर नारी को ही अपना प्रेमपात्र चुना करता है ।उसी प्रकार चन्द्रमा ने भी अन्य सभी धर्मपत्नियों को त्याग कर रोहिणी से स्नेह करना प्रारम्भ किया।

तया सहैवात्मनिवन्धनं सदा,
प्रवर्षयामास हितं दिने दिने ।
दिनान्त शैय्यासन क्रीडनादिकं ,
चकार नित्यं विधिवन्निशांकरः।। 20।।

हिन्दी अनुवाद :– चन्द्रमा फिर भी उसी रोहिणी के साथ आत्मिक प्रेम एवं आन्तिरिक स्नेह पद्धति, प्रतिदिन बढ़ाने लगा। सूर्य के अस्त हो जाने पर वह अपना भोजन, शयन, एवं क्रीडनं आदि रोहिणी के साथ ही किया करता था।

प्रपीड्यमानाः हि द्विजेन्द्र कन्यकाः
निवेदयामासुरलंगुरूं पुनः।
तथापि तत्याज पथं न चन्द्रमाः,
पुराग्रहीतं नत्यजन्ति मानिनः।।21।।

हिन्दी अनुवादः– चन्द्रमा के इस व्यवहार से नितान्त खिन्न होकर दक्षप्रजापति की अन्य सभी कन्याओं ने अपने पिता से फिर शिकायत की। किन्तु चन्द्रमा ने अपने मार्ग का अनुसरण करना नहीं छोड़ा । क्योंकि मानी लोग पहले अपनाये हुये मार्ग का परित्याग नहीं करते

चन्द्रं वीक्ष्य प्रजापतिः रिपुसमं कोपेन लोलाधरः,
साक्षात्काल कराल सदृशवपुः यज्ञोपवीतं स्पृशन्।
नासाग्रे वहु निःश्वसन् नयनयोर्विधुत्प्रभा विस्फुरन् ,
बभ्रे तं खलनायकं पुनरहो? सद्यः गृहीत्वा करम्।।22।।

हिन्दी अनुवादः— दक्ष प्रजापति चन्द्रमा की इस करतूत को सुनकर क्रोध से जिसके दोनों ओठ फडक रहे थे। साक्षात् महाकाल के समान शरीर धारण किये हुए तथा यज्ञोपवीत को वार– वार स्पर्श करते हुये, नासिका के अग्रमान से गर्म श्वासें भरते हुये, जिनकी दोनों नेत्रों की कान्ति विजली के समान चमक रही थी । ऐसे दक्ष ने चन्द्रमा को शत्रु समझकर तथा उस खलनायक का हाथ पकड़कर कहना प्रारम्भ किया।

रे जन्मान्ध ? त्वया न चिन्तितमिंद लोके महादुष्कृतम,
कारूण्यं हृदि नैव मन्दमतयः शोचन्ति नित्यं रहः।
साक्षाद्गोवध सद्रशं पुनरहो? कान्तावमानं गृहे,
क्षीणत्वं तनुरोगभीषशुचं राकेश! त्वं लप्स्यसे।।23।।

हिन्दी अनुबादः— अरे जन्मान्ध? चन्द्र? तुमने संसार में दुष्कर्म क़ा विचार भी नहीं किया। तुम्हारे हृदय में दया नहीं है। मूर्ख प्राणी एकान्त में पश्चाताप किया करते हैं। घर में नारी का अपमान गोहत्या के समान है। अतएव हे चन्द्रमा? तुम्हें क्षीणता का शारीरिक रोग अवश्य भोगना पड़ेगा। जो तुम्हारे शोक का भूल कारण होगा।

शापार्हाः हि पिशाच सदृशनराः प्रायः महाकामिनः,
भक्ष्याभक्ष्यपरान्न क्षीणमतयो मिथ्यामिमानी जनाः।
नित्यं दुर्वल घातकाः परधनं निर्वर्ष्य चिन्तातुराः,
दुर्वृत्ताः परद्रोह हृष्टवदनाः कान्ताकृतघ्नाधमाः।।24।।

हिन्दी अनुबादः—महाकामी, राक्षसों के समान व्यवहार करने वाले, भक्ष्य एवं अभक्ष्य तथा पराये अन्न खाने से क्षीण बुद्धिवाले, व्यर्थ घमण्ड करने वाले, सदैब कमजोर की हिंसा करने बाले, पराये धन को देखकर चिन्ता करने बाले, नितान्त दुराचारी, दूसरों से बैर करने में प्रशन्न रहने बाले, एवं अपनी स्त्री के प्रति कृतध्नता दिखलाने बाले नीच पुरूष, ये सदैव शाप के भागी होते हैं।

इत्युक्त्वा बिरराम रक्तवदनः दक्षः प्रजानांपतिः,
चन्द्रं वीक्ष्य मुहुर्मुहुः पुनरसौ साक्षात्पशूनामिव।

कोपेनात्मवपुः ज्वलन्निव पुनः संस्तंभयन् भूयसा,
बक्तुं नैव शशाक किंचिदपरं गेहं प्रतस्थे ततः।।25।।

हिन्दी अनुवादः—साक्षात् पशुओं के समान आचरण करने वाले उस चन्द्रमा को देखकर लाल मुख मण्डल वाले वे दक्ष प्रजापति ऐसा कहकर चुप हो गये। क्रोध से जलते हुए शरीर से वे दक्ष दुबारा बार—बार अपने को रोकते हुये फिर बे कुछ भी न कह सके। अन्त में वे वहाँ से अपने घर चले गये। क्रोध की अन्तर्दशा प्रायाः असह्य होती है। ऐसे समय में कुछ भी असम्भव नहीं है।

शापं विसृज्याशु गतेऽपि दक्षे,
चन्द्रस्ततो क्लिन्न मनः शुशोच।
कृतानि कर्माणि दहन्ति नूनं,
जनं जलं वन्हिरिवार्णवस्य।।26।।

हिन्दी अनुवादः—चन्द्रमा को शाप देकर दक्ष प्रजापति के चले जाने पर चन्द्रमा खिन्नचित्त होकर सोचने लगा कि मनुष्य द्वारा किये गये दुष्कर्म उसे उसी प्रकार जला देते हैं जैसे वर्षा ऋतु में समुद्र की अग्नि बरसात के जल को जला कर भस्म कर देती है।

विचिन्तयन् क्षीणतनुः मुहुर्मुहुः ,
निशापतिश्चात्र चचार भूतले।
महेन्द्रमालोक्य रूरोद सत्वरम्,
गृहात् प्रयाणे नवयोषितामिव।।27।।

हिन्दी अनुबादः— क्षीण शरीर बाला वह चन्द्रमा बार—बार विचार करता हुआ प्रथ्वी पर टहलने लगा।वह चन्द्रमा इन्द्र को देखकर उसी प्रकार रोने लगा। जैसे घर से विदा होने पर वधुयें अकस्मात् रोने लगती हैं। तात्पर्य यह है, कि व्यक्ति को जब तक दुष्कर्म का परिणाम नहीं मिलता। तब तक वह विचार नहीं कर सकता। परिणाम मिलने पर उसे क्षण —क्षण पश्चाताप करना ही पड़ता है।

विलोक्य शक्रः करूणार्ति विक्लबम,
निशापतिं तत्र समाश्वसन् मुहुः।

पपृच्छ धैर्येण हि शोक कारणम्,

निवेदयायास तदाशु चन्द्रमाः।।28।।

हिन्दी अनुवादः– करूणा की वेदना से व्याकुल चन्द्रमा को देखकर इन्द्र ने उसे समाहित करते हुए शोक का कारण पूछा। तब चन्द्रमा ने आद्योपान्त अपने शोक का कारण बताना प्रारम्भ किया। अर्थात् इन्द्र के पूछने पर चन्द्रमा ने सारा वृतान्त बता दिया।

विलोक्य चन्द्रस्य क्षयं सुरासुराः,

मुनीश्वराः मानव नागकिन्नराः।

सचन्द्रमेते प्रययुः पुरो विधिम्

ततःप्रणेमुर्विविधैस्तवैर्मुहुः।।29।।

हिन्दी अनुवादः– देवताओं,दैत्यों,मुनियों,मनुष्यों, तथा किन्नरों नें क्रमशः चन्द्रमा की अनुदिन क्षीणता देखकर, इन्होंने चन्द्रमा को साथ लेकर ब्रह्मा जी के निकट प्रस्थान किया। इसके बाद वहाँ जाकर सबने विभिन्न स्तुतियों से ब्रह्मा जी को प्रणाम किया।

उवाच सद्यः सहसा चतुर्मुखः,

कथं समभ्यागनन प्रयोजनम।

समस्त देवागमनेन मे मनः,

प्रवक्तुमेतद्विवशी करोतिमाम्।।30।।

हिन्दी अनुवादः– चन्द्रमा के साथ सबको देखकर ब्रह्मा जी बोले आप लोगों का मेरे पास आने का क्या तात्पर्य है। क्योंकि समस्त देवताओं का यहाँ पधारने से मेरा मन निवेदन करने के लिए विवश कर रहा है। अर्थात् आप सब किस मन्तव्य से मेरे पास पधारे हैं। आप लोग कारण स्पष्ट करें।

महात्मनां वेदविदां तपस्विनाम्

किमत्र विघ्नैस्तु तपो प्रदूषितम्।

विवाधया वा सुरलोक भीषणै–,

र्निशाचरैश्चाद्य पुनः हृणीयते।।31।।

हिन्दी अनुवादः– हे देवताओं, महात्माओं, बेदपाठियों तथा तपस्वियों की तपस्या किन्हीं विघ्नों के कारण दूषित हो गयी है क्या? अथवा भयंकर राक्षसों के द्वारा स्वर्गलोक आज फिर से लज्जित हो रहा है। अर्थात् कौन ऐसी आकस्मिक समस्या है जिसके कारण आप सब का यहाँ आना हुआ।

निशम्य ते नाथ? रसापगागिरा,
निवेदमानः सहसा शुचं द्रुतम्।
प्रजापतेः शापवशान्निशापतिः,
सदैव क्षीणत्वमुपैति संततम्।।32।।

हिन्दी अनुवादः– वृह्मा जी के पूछने पर देवताओं ने उत्तर दिया। हे नाथ? आप की सरस वाणी सुनकर हम लोग अपने शोक का कारण आप से अतिशीघ्र निवेदन कर रहे हैं, कि दक्ष प्रजापति के शाप से चन्द्रदेव सदैव अनवरत क्षीणता को प्राप्त होते जा रहे हैं। कृपया आप इसका सरल उपाय बताने की कृपा करें।

क्षणे क्षणे क्षीणमिमं क्षपापतिं,
समीक्ष्य संध्यारूणवाल वन्धुरम्।
समस्त सृष्टिच चराचरं महत्,
प्रपीड्यमानं न मनः विदूयते।।33।।

हिन्दी अनुवादः–हे स्वामी? संध्याकाल की तेजहीन लालिमा के समान इस चन्द्रमा को प्रतिक्षण क्षीण होते हुए,तथा जिसके कारण सम्पूर्ण सृष्टि एवं चर –अचर इस समस्त संसार को पीड़ित होते हुए देखकर क्या आपका मन संतप्त नहीं हो रहा है । अर्थात् आपको भी अवश्य कष्ट होता होगा।

शक्रस्यापि निशम्य प्रीतिपुलकं कारूण्य सिक्तं वचः,
स्वांतस्तभित दैन्य सारसरसंबव्रे विधाता स्वयं।
चन्द्रस्यास्य विपत्ति व्याधि दहने मन्ये? शिवः सक्षमः,
गन्तव्यं तदनेन नूतनभुवः क्षेत्रं प्रभासंप्रभोः।।34।।

हिन्दी अनुवादः– इन्द्रदेव के प्रेम भरे करूणायुक्त बचन सुनकर अन्तःकरण में ऊहापोह के आडम्बर से रहित,दीनता के सारभूत बृहंमा जी बोले।

हे सुरराज ? चन्द्रमा की विपत्ति एवं शारीरिक व्याधि को नष्ट करने में भगवान शिव जी ही सक्षम हैं। अतएव चन्द्रमा को प्रथ्वी के नवीन एवं पावन स्थान प्रभास क्षेत्र जाना चाहिए। क्योंकि वह शिव जी का परमप्रिय स्थान है।

चन्द्रं बीक्ष्य जहास चन्द्रबदनः बब्रे विधाता ततो,
नारी प्रीति–पराङ्मुखाः खलुजनाः दह्यन्ति रात्रिंदिवम्।
प्रायस्ते परयोषितामनुगताः दत्वा धनं गेहिनः,
रोदन्तीह भ्रमन्ति वीथिषु सदा लोके यथा शूकराः।।35।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद चन्द्रमा के समान मुख बाले बृहंमा जी चन्द्रमा को देखकर हँस पड़े। इसके बाद वे इन्द्र से बोले–अपनी स्त्री से परांङमुख अर्थात् प्रेम न करने बाले लोग रात दिन जलते ही रहते हैं। क्योंकि वे गृहस्थ इस लोक में परायी स्त्रियों से अनुगमन करने बाले, अपना सारा धन लुटा देने के बाद भी गलियों में रोते हुए उसी प्रकार घूमा करते हैं। जैसे रात दिन गलियों में सुअर घूमते रहते हैं।

निशम्य चैतद्विधिसम्मतं वचः
महेन्द्रसार्धं मुनिनागकिन्नराः।
अथावृजन् चन्द्रपुरा पुरोहिताः,
प्रभासक्षेत्रं दुरितोपशान्तये।। 36।।

हिन्दी अनुवाद :– इस प्रकार विधानपूर्वक बृहंमा जी की समुचित वाणी सुनकर, चन्द्रमा को आगे करके, मुनिजन, नाग, किन्नर तथा देवगणों में इन्द्र के साथ चन्द्रमा की इस व्याधि को शान्त करने के लिए शिव जी के परमपावन प्रभास क्षेत्र को प्रस्थान किया।

विधातुरंकान्परिमार्जितुं क्षमः,
त्रिनेत्रधारी सहसाहि धूर्जटिः।,
इतीव प्रायः दृढ़निश्चयः शशिः,
प्रभास क्षेत्रं च ददर्श दूरतः।।37।।

हिन्दी अनुवादः– ब्रह्मा के अंको को मिटाने में शिव शंकर अर्थात् भोलेनाथ ही समर्थ हैं। ऐसा मन में दृढ़ निश्चय करने वाले चन्द्रमा ने प्रभास

क्षेत्र को दूर से ही देखा। अर्थात् मनोवांच्छित स्थान देखकर हर व्यक्ति प्रशन्नता का अनुभव करने लगता हैं।

प्रणम्य पश्चात्सहसा मुहुर्मुहः,
यथा निधिं प्राप्य जहास चन्द्रमाः।
पुनर्ववन्दे वृषभध्वजं शिवम्,
त्रितापसंतापहरं हरं ततः।।38।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद चन्द्रमा उस प्रभास क्षेत्र को वार–वार प्रणाम करके हँसने लगा, मानों उसे कोई खजाना मिल गया हो। फिर उसने तीनों प्रकार के दुखों एवं समस्त प्रकार की व्याधियों को दूर करने बाले भगवान भोलेनाथ की बन्दना की।

मृत्युंचापि जितं मनोज दहनं येनाशु चके स्वयम्,
यस्यादिर्न विदन्ति देवमुनयः विद्वज्जनाः सूरयः।
यस्यान्तंनविदुः सुरासुरगणाः वृह्मामहेन्द्रादयः,
तं वन्दे वृषभध्वजं त्रिनयनं संतापहरिशिवम्।।39।।

हिन्दी अनुवादः– जिसने स्वयं मृत्यु को भी जीत लिया था। तथा कामदेव को एक क्षण में भस्म कर दिया। जिसकी उत्पत्ति देवता, मुनिजन, विद्वान लोग तथा कविजन भी नहीं जानते। जिसका अन्त देवताओं, दैत्यों एवं बृहंमा तथा इन्द्रदेव ने भी नहीं जान पाया। उन त्रिनेत्रधारी एवं समस्त कष्टों को दूर करने वाले भगवान् भोलेनाथ की मैं वन्दना करता हूँ।

श्रुत्वा चन्द्रमुखेन सम्म्मत वचः सद्यः चकम्पे शिवः,
प्रीतिस्निग्धप्रवाह वेगमनिशं संस्तम्मयन् भूयसा।
वव्रेतां गिरिनन्दिनीं सरभसं सद्यः भवानीपति,
मन्ये? भक्तिपरायणो मम जनश्चिन्तातुरो दृश्यते।।40।।

हिन्दी अनुवादः– चन्द्रमा की करूणाकलित वाणी सुनकर शिवजी काँप उठे। वे प्रेम तथा स्नेह भरे आन्तरिक प्रवाह के वेग को लगातार स्तभित करते अर्थात् रोकते हुये तुरन्त शीघ्रतापूर्वक पार्वती जी से वोले। मेरी समझ में मेरी भक्ति में दत्तचित्त कोई मेरा भक्त चिन्तित सा दिखायी दे रहा है।

इत्युक्त्वा वृषकेतनः मुहुरहो? त्यक्त्वा स्वकीयं वृषम्,
धावन् गौरिव बालसूनु बचसा तं चाह्वयन् भूयसा।
प्रायश्चिंन्तित मानसो हि शिखरात्सद्यः स्वयं कूदयन्,
गत्वा तत्र द्विजस्य रूपमपरं कृत्वा च वव्रे शिवः।।41।।

हिन्दी अनुवादः– पार्वतीजी से इतना कहकर शिवजी अपनी सवारी नन्दीगण को छोड़कर दौड़ते हुए एवं उसे बार–बार पुकारते हुए उसी प्रकार चले, जैसे गाय अपने बच्चे की आबाज सुनकर दौड़ने लगती है। चिंतित होने के कारण वे पर्वत की चोटी से कूदते हुये वहॉ जाकर तथा ब्राह्मण का स्वरूप धारण करके शिवजी चन्द्रमा से बोले।

अहो निशानाथ कथं च खिद्यसे,
विदन्ति मां नैव स्वयं दिवैाकसाः।
तबार्तिनाशाय समागतोऽस्म्यहम्,,
अबेहि मामत्र शिवस्य किंकरः।।42।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी ब्राह्मण वेश धारण करके चन्द्रमा से बोले हे चन्द्र तुम क्यों पीड़ित हो रहे हो। मुझे स्वर्गवासी देवता तक नहीं जान सकते तुम्हारी आन्तरिक बेदना को दूर करने के लिये मै यहॉ उपस्थित हुआ हूँ। तुम मुझे संसार के आदिकारण शिवजी का दास समझो।

द्विजस्य रूपं प्रणिधाय शाश्वतम् ,
समागतोऽहं सहसा त्वदन्तिकं।
मया न लोके शिव भक्तहंतकम,
बिलोकितं नैब चराचरे क्वचित्।।43।।

हिन्दी अनुवादः– हे चन्द्रदेव मै विशुद्व ब्राह्मण का स्वरुप धारण करके तुम्हारे पास आया हूँ। मैंने आजतक देवताओं या शिबभक्त का विनाश करने बाला शत्रु इस संसार में कहीं देखा ही नहीं अर्थात् यदि तुम शिवजी के सच्चे भक्त हो तो मैं तुम्हारी अवश्य रक्षा करूंगा।

निधाय रूपं हृदये पिनाकिनः,
भजाशु नूनं करूणालयं शिवम्।
समस्त रोगद्रुमदाव धूर्जटिं,
बदन्ति वेदाः विविधाः मुहुर्मुहुः।।44।।

हिन्दी अनुवादः– अतः हे चन्द्रदेव। तुम अपने हृदय में भगवान शिवजी का शाश्वत रूप धारण करके करूणा के आगार शिवजी का भजन करो। क्योंकि समस्त बेद शिवजी को बिभिन्न रोग रूपी बृक्षों को क्षण भर में भस्म करने वाली दावाग्नि बताया करते हैं। अर्थात् शिवजी का भजन करने से समस्त रोगों का विनाश हो जाता है।

स्वयं बिधाता जगती तले शिवंः,
अनुग्रहावग्रयोः स्वयं क्षमं।
क्वचिन्महाकाल कराल कान्तिनं,
क्वचित्प्रसादोपहितम् न बेत्सि त्वं।।45।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी इस संसार में स्वयं बिधाता है । वह समस्त प्राणिमात्र पर दया या कोप करने में स्वयं समर्थ है। वे कभी भीषण कान्ति वाले महाकाल वन जते हैं, कभी क्षणमात्र में प्रशन्न भी होतें है। वस्तुतः तुम उन्हें जानते नही हो ।

इत्थं सः वृषकेतनः द्विजबपुश्चारव्याय वृत्तं रह–,
श्चन्द्रं चात्र शिवस्य रूपमनघं चावेद्य लीलाधरः।
सद्यः सौम्य वचोभिरन्तर्गतं भूयो समास्वासयन्,
वायोर्दिव्य पथेन शुभ्रवदनः प्रायः प्रतस्ये शिवः।।46।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार बृांहम्ण वेषधारी शिव ने चन्द्रमा को सारा वृतान्त एवं शिवजी के निष्कलंक स्वरूप अथवा स्वभाव के विषय में निवेदन करके अन्त में अनेकों सरल बचनों से उसके हृदय को सन्तुष्ट करके उन्होंने वायु के अलौकिक मार्ग से प्रस्थान कर दिया।

निशापतिः सौम्य वचोभिरन्ततः,
पिनाकिनः घोर वृतं चिकीर्षया।
द्विजेन्द्र वक्तव्यमसौ च संस्मरन्,
चरवान गर्त वसुधातले ततः।।47।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद चन्द्रमा ने ब्राह्मण रूपधारी शिव जी के सरल बचनों से प्रेरित होकर अन्त में शिवजी की घोर तपस्या करने की इच्छा से तथा उस ब्रह्मण के कथन को याद करके जमीन में एक गड्ढा खोदा वस्तुतः दुखी प्राणी अपने हित की बात कभी नहीं भूलता।

विधाय लिंगं प्रथमाद्भुतं शशिः ,
पिनाकिनः दिव्यमनोहरं ततः।
शिवस्य ध्याना द्वृतनेमत्परः,
जजाप मृत्युंज्जय मंत्रमद्भुतम्।।48।।

हिन्दी अनुवादः– चन्द्रमा ने शिव जी का पाषाण का एक अलौकिक शोभासम्पन्न शिवलिंग वनाया। इसके बाद शिव जी का ध्यान करके तथा उनके नियमपूर्वक वृत में संलग्न होकर शिव जी के महामृत्युन्जय–मंत्र का जाप करने लगा।

अहो? मुनीनां चरितं जगत्त्रये,
तपोमयं चाद्य मयावलोकितम्।
हिनस्ति पापान् सुव्रतं पिनाकिनः,
विपत्तिशापाग्निहराः हि देवताः।।49।।

हिन्दी अनुवादः– तीनों लोकों में तपस्या से युक्त चरित्र मुनियों का मैने आज ही देख पाया। क्योंकि उसी का मैं आज फल भोग रहा हूँ। किन्तु शिव जी का वृत समस्त पापों को नष्ट करने वाला है। वस्तुतः देवतागण समस्त विपत्तियों एवं शाप की भीषण अग्नि को शान्त करने वाले होते हैं।

समाः सहस्रं सततं समाचरन्,
वृतं विधानेन शिवस्य चन्द्रमा।
तथापि लेभे न शमं पिनाकिनः,
ससर्ज तेनात्र फलाशनं ततः।।50।।

हिन्दी अनुवादः– चन्द्रमा विधि विधानपूर्वक हजारों वर्षों तक शिव जी का वृत करता रहा। किन्तु शिव जी उसके वृत से सन्तुष्ट न हो सके। तब उसने फलाहार करना भी छोड़ दिया ।

अपास्य नीरं स ततस्तु निर्जल–
श्चचार तेनात्र वृतं कपर्दिनः।
चचाल कैलाशगिरिः समन्ततः,
जगर्ज देव्यः मुहुरत्र केहरी।।51।।

हिन्दी अनुवादः– अव चन्द्रमा जलपान करना छोड़कर, निर्जल होकर शिव जी का वृत करने लगा।चन्दमा के कठोर वृत के प्रभाव से शिवजी का कैलाश पर्वत हिलने लगा। तथा भगवती पार्वती का वाहन सिंह बार–बार गरजने लगा। ऐसी स्थिति देखकर माता पार्वती ने शिव जी से कहा।

अहो? जगन्नाथ? किमत्र विप्लवम्,
समाधिमास्थाय न चिंतितं त्वया।
भवादृशाः लोकहितं चिकीर्षया,
भवन्ति प्रायः न कदापि निष्ठुराः।।52।।

हिन्दी अनुवादः– हे संसार के स्वामी? यह तूफान कैसा? आपने स्वयं समाधि लगाकर इस विषय में कुछ भी विचार नहीं किया। संसार का हित चिंतन करने वाले आप सरीखे महापुरूष, प्रायः कभी भी इतने कठोर नहीं होते है। अतः आप ध्यान देकर विचार करें कि ऐसा क्यों हुआ।

तथापि चन्द्रः शिवध्यान तत्परः,
भुवं तथैकांध्रिकनिष्ठया स्थित'ः।

प्रभंजनेनात्र प्रपूर्य स्वोदरम्,
जजाप मृत्युज्जय नाम केवलम्।।53।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद चन्द्रमा फिर भी शिवजी के ध्यान में दत्तचित्त होकर अपने एक पैर की सबसे छोटी अंगुली पर खड़ा हो गया। उसने वायु से अपना पेट भर कर केवल मृत्युज्जय (शिवजी) का नाम जपना प्रारम्भ किया। चन्द्रमा के इस कठोर वृत से भगवान भोलेनाथ द्रवित होकर भगवती पार्वती जी से बोले।

तदातिभीताः सहसा दिवौकसाः,
दिवं परित्यज्य पुनर्दिवांगनाः।
महेन्द्र सार्थं गिरिराज गह्वरम्: ,
शिवं समाराधयितुं प्रपेदिरे।।54।।

हिन्दी अनुवादः– उसी समय चन्द्रमा के कठोर वृत से स्वर्ग के समस्त देवता एवं अप्सरायें नितान्त भयभीत होकर देवराज इन्द्र के साथ, भगवान् शिवजी की आराधना करने के लिए, पर्वतराज हिमालय की गुफा में उपस्थित हुए।

विश्वम्भरं समनुपेत्य समस्तदेवाः,
दिव्यैस्तवैः सुरगुरं ननु प्रार्थयन्तः।
पश्चात्प्रणम्य शिवशंकरमात्म भावम्,
व्याचरव्युरेनमपरं निजदैवहेतुम्।।55।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद समस्त देवतागण संसार का पालन करने वाले भगवान् भोलेनाथ के समीप पहुँच कर, विभिन्न प्रकार की अद्‌भुत स्तुतियों से उनकी प्रार्थना करते हुए, तदन्तर उन्हें प्रणाम करके अपने आन्तरिक क्लेश का कारण निवेदन करने लगे।

निशम्य सद्यः सुरदैन्यवेदनाम्
विचारयामास क्षणे जगत्पतिः।

समीक्ष्य ध्यानेन निशापतेर्वृतम्
जगाम गोविन्द इवार्तिनाशनः।।56।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी देवताओं की दीनता युक्त वेदना सुनकर एक क्षण अपने मंन में विचार करने लगे। अन्त में चन्द्रमा के द्वारा अनवरत कठोर व्रत को ध्यान से देखकर वे उसी प्रकार उसके कष्ट का निवारण करने के लिये चल पड़े, जैसे गजेन्द्र की रक्षा करने के लिये विष्णु भगवान् गरूड़ को छोड़कर सहसा चल पड़े थे।

समस्त शस्त्राण्यवसज्य वेगतः
समादृयन्तं सततं मुहुर्मुहुः।
विनाकपाणिः सहसा जगत्पति,ः
ददर्श तं चात्मवृते निशापतिम्।।57।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी ने बड़ी शीघ्रता से अपने समस्त आयुधों को लटकाकर बार बार उसे पुकारते हुऐ धनुष को अपने हाथ में धारण किये हुए संसार के स्वामी भोलेनाथ ने अपने व्रत की तल्लीन मुद्रा में अवस्थित उस चन्द्रमा को देखा।

समीक्ष्यतं चन्द्रमसौ जगत्पति–
र्जगाद तत्राद्भुत नीललोहितः।
अपास्य सद्यः वृतमद्य दारूणम् ,
समस्त रोगापहरं विलोक्यताम्।।58।।

हिन्दी अनुवादः– समस्त संसार के स्वामी भगवान् भोलेनाथ उस चन्द्रमा को देखकर वड़े अद्भुत शव्द्धों में वोले। हे चन्द्रदेव! मेरे कठोर व्रत को त्यागकर समस्त रोगों को दूर करने वाले मुझे देखो। अर्थात् मेरा दर्शन करके मनुष्य संसार के सभी प्रकार के रोगों से छुटाकारा पा लेता है।

ये ध्यायन्ति च मां विशुद्ध मनसा तेषां कुतो व्याधयः ,
संसारामयभेषजं मम वृतं नित्यं च मे दर्शनम्।
इत्युक्त्वा जगदम्विकापतिरसौ साक्षात्कपर्दीश्वरः ,
लिङ्गान्ते प्रविवेश सूक्ष्म तनुना लोके मुनीनामिव।।59।।

हिन्दी अनुवादः— जो प्राणी मुझे अथवा मेरा नितान्त विशुद्ध मन से ध्यान करते हैं उन्हें कभी किसी प्रकार की व्याधियाँ, अथवा रोग पीड़ित नही कर पाते। संसार रूपी रोग की औषधि तो मेरा व्रत एवं प्रतिदिन का दर्शन ही है। ऐसा कहकर वे जगज्जन्नी माता पार्वती के स्वामी मुनियों के समान अति सूक्ष्म शरीर से उस शिवलिङ्ग के अन्दर प्रवेश कर गये।

चन्द्रश्चात्र निरामयः समभवत्प्रायः शिवं पूजयन् ,
सद्यः पूर्ववदेव निर्मलतनुर्जातः शशिर्भूयसा।
नक्षत्राधिपतिर्वभूव सहसा दैवैः सदा पूजितो ,
ये कुर्वन्तिवृतं शिवस्य सततं मुंचन्ति ते बन्धनात्।।60।।

हिन्दी अनुवादः— चन्द्रमा शंकरजी का पूजन करते हुये क्षीणता के रोग से मुक्त हो गया। अव वह पहले की तरह निर्मल शरीर वाला हो गया। तदन्तर देवताओं के द्वारा पूजित वह चन्द्रमा नक्षत्रों का स्वामी बन गया। अतएवं जो लोग शिवजी का नित्य नियम पूर्वक व्रत किया करते हैं, वे प्रायः संसार के समस्त वन्धनों से मुक्त हो जातें हैं।

ततो समुद्याम प्रभास गौरवम् ,
ततान सर्वत्र स्वयं शनैः शनैः।
यथार्कविम्वेन पुनर्निशापति ,
प्र्वद्धिमायाति नवं दिने दिने।।61।।

हिन्दी अनुवादः— इसके वाद उस प्रभासक्षेत्र का गौरव स्वयं धीरे धीरे उसी प्रकार बढ़ने लगा। जैसे सूर्य के प्रकाश से प्रतिदिन बढ़ता हुआ चन्द्रमा फिर भी पूर्ण हो जाया करता है। अर्थात् चन्द्रमा के वृत के प्रभाव से उस प्रभास क्षेत्र का महत्व बढ़ गया।

ज्योतिर्लिङ्गमिदं त्वदीय तपसा संपूज्यमानं जनै ,
लोंके चात्र प्रसिद्धिमेष्यति ध्रुवं यावज्जलं सागरे।
भूयादस्य महत्व गौरवयशः त्वन्नामधेयेन वा ,
भव्ये भारतभूतलेऽनुदिवसं कीर्तिर्पुनर्वत्स्यति।।62।।

हिन्दी अनुवादः— हे चन्द्रमा? यह सोमेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग तुम्हारी तपस्या

के द्वारा लोगों के द्वारा सदैव पूजित होकर, जव तक सागर में जल रहेगा, तब तक संसार में प्रसिद्ध को प्राप्त करेगा। इस ज्योतिर्लिङ्ग का महत्व, गौरव, अथवा यश तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा। तथा इस अलौकिक भारतवर्ष की ध ारती पर इसकी ख्याति अनुदिन सदैव वढ़ती रहेगी।

इत्युक्त्वा गिरिजापतिः सुवचनैर्दत्वा वरं वान्छितम् ,
प्रीत्या चन्द्रमसं प्रशन्नवदनः संतोषयन् भूयसा।
ज्योतिर्लिङ्गमनेधा स्वकृपया संवीक्ष्यमाणो हरः ,
पश्चान्तं रजनीपतिं पुनरसौ निर्वर्ष्य चान्तर्हितः।।63।।

हिन्दी अनुवादः— ऐसा कहकर शिवजी अपने सुन्दर वचनों से चन्द्रमा को आशीर्वाद देकर तथा उसे इच्छानुसार वरदान देकर एवं अपने प्रसन्न मुख मण्डल से उसे बार बार सन्तुष्ट करते हुए तत्तपश्चात् ज्येतिर्लिङ्ग को अपनी अन्तिम कृपा से बार बार देखते हुऐ, फिर एक बार उसी प्रकार चन्द्रमा को देखकर भगवान् भोलेनाथ अन्तर्ध्यान हो गये।

ज्योतिर्लिङ्गमतः प्रणभ्य सहसा नीराजनं कुर्वतः ,
व्रह्मविष्णुमहेन्द्रकिन्नरगणाः सर्वेजगुः ननृतुः ।
चन्द्रंवीक्ष्य निरामयं मुनिजनाः नेदुः मृदङ्गादिकं,
निर्माणं स्वकरेण शम्भुसदनस्यादौ कृतं व्रह्मणा।।64।।

हिन्दी अनुवादः— इसके बाद व्रह्मा, विष्णु, इन्द्र तथा किन्नरगण उस ज्योतिर्लिङ्ग को सर्व प्रथम प्रणाम करके, उसकी आरती करते हुये नाचने गाने लगे। मुनियों ने चन्द्रमा को क्षय रोग से रहित देखकर मृदंग आदि बजाना प्रारम्भ किया। किन्तु भगवान् शिवजी के इस सोमेश्वर मन्दिर का प्रारम्भिक निर्माण व्रह्मजी ने अपने कर कमलों द्वारा किया।

अहो? स्वदेशस्य कथां च संस्मरन् ,
सशंकितश्चात्र स्वयं त्रिलोचनः।
प्रवक्तुमद्यापि विधिर्नसक्षमः ,
तथा धरित्री सहसा ह्रणीयते।।65।।

हिन्दी अनुवादः— आज भारत की पुरानी कहानी याद करते हुये

भगवान् भोलेनाथ स्वयं आश्चर्य चकित होकर रह जाते हैं। उस बात को व्रह्म जी भी कहने में असमर्थ हैं। किन्तु भारत की वसुंधरा उसे याद करके सहसा लज्जित हो जाती हैं। जो इस सोमनाथ ज्योतिर्लिङ्ग में घटना हुयी उसे कौन नहीं जानता किन्तु सभी मौंन हैं।

प्राचीनं शिवमंदिरं पुनरहो? नित्यं रूदन् संततम् ,
वक्षत्यद्य स्वदेशदुर्दिनकथां शोकाकुलैरश्रुभिः ।
लोके नैव श्रुणोति चन्द्रवदनः साक्षात्कपर्दीश्वरः ,
सैवेयं मम मेदिनी प्रतिक्षणं सायंतने रोदति।।66।।

हिन्दी अनूवादः— सोमनाथ जी का प्राचीन मन्दिर प्रतिदिन लगातार रोता हुआ, आज भी भारत के दुर्भाग्य की कथा शोक से युक्त आँसुओं से सुनाया करता है। किन्तु इस लोक में उसकी वेदनामयी कहानी चन्द्रमा के समान मुख वाले साक्षात् भालेनाथ भी नहीं सुनते। वस्तुतः हमारे भारत की वही वसुन्धरा उस दर्दमयी वेदना को याद करके नित्यप्रति सन्ध्याकाल के समय प्रतिक्षण रोया करती है।

चक्रे येन स्वदेश दुर्गतिरियं सोऽयं च म्लेक्षाधिपः ,
प्रत्याक्रम्य मुहुश्च सप्तदशधाजह्रे मयीयं वसुः।
पश्चादाङ्गल शासकैः प्रतिपदं भस्मीकृता मेदिनी,
हा?हा? साम्प्रतमत्र लुब्धकजनैः मन्नेतृभिः खिद्यते।।67।।

हिन्दी अनुवादः— जिसने हमारे देश की सवसे अधिक दुर्दशा की वह मुस्लिम शासक महमूद गजनवी था। जिसने हमारे देश पर सत्रहवार चढ़ाई करके मेरे सोमनाथ मन्दिर का समस्त धन हरण करके ले गया था। इसके बाद अंग्रेजी शासकों नें हमारे भारत की वसुन्धरा को कदम कदम पर जला डाला। किन्तु आज दुर्भाग्यवश हमारे देश के धन के लालची नेताओं के द्वारा यह भारत वसुन्धरा हर समय खिन्न होती जा रही है।

यवनपति विशीर्ण खण्डितं लिङ्गमेत ,
द्विपुल विभववन्तं चन्द्रमालोक्य सद्यः।
रविकर कमनीयं सोमवद्धर्धमानम्
पुनरपि परिपूर्ण राजते सोमनाथम् ।।68।।

हिन्दी अनुवादः– मुस्लिम बादशाह महमूद गजनवी के द्वारा छिन्न भिन्न किया गया यह ज्योतिर्लिङ्ग अद्भुत सौन्दर्य सम्पन्न चन्द्रमा को देखकर आज भी सूर्य की किरणों से प्रतिदिन वढ़ने वाले चन्द्रमा के समान प्रतिदिन वढ़ता हुआ फिर से हर प्रकार परिपूर्ण ही सुशोभित हो रहा है। अर्थात् सोमनाथजी का पुराना मन्दिर महमूद गजनवी ने नष्ट कर दिया था। किन्तु वह आज भी सांयकाल के समय सुन्दर प्रतीत होता है।

कृत्वा चात्र सुदर्शनं पुनरसौ सद्यः विमुक्तो नरः ,
माया मोहभवाब्धिवन्धन गतश्चाप्नोति चाऽन्ते पदम् ।
यं ध्यायन्ति महर्षयः वुधजनाः लोके सदा सूरयः ,
तत्प्रत्यक्षममीष्टसिद्धिवरदं सोमेश्वरं गीयते ।।69।।

हिन्दी अनुवादः– यहां सोमनाथजी का दर्शन करके मनुष्य मुक्त हो जाता है। माया मोह तथा संसार सागर के बन्धन में पड़ा हुआ प्राणी अन्त में शिवजी के उत्तम पद को प्राप्त कर लेता है। जिस सोमेश्वर ज्योतिर्लिंङ्ग का मुनिजन, एवं विद्वान तथा कविजन नित्य ध्यान किया करते हैं। वही सोमेश्वर भगवान् भोलेनाथ अभिलषित वरदान देने वाले कहे जाते हैं।

ज्योतिर्द्वादशलिंग दर्पणमिदं लोके मया निर्मितम् ,
कल्याणाय सतां भवेदनुक्षणं वुद्धेस्तमः शान्तये।
सद्बुद्धिं वितनोतु ऋद्धिमसकृत्सिद्धिं कपर्दीश्वरः,
भूयाद्भारतभूतले सभधिकं सत्यं शिवं सुन्दरम् ।।70।।

हिन्दी अनुवादः– इस "द्वादशज्योतिर्लिङ्ग दर्पणम्" नामक ग्रंथरत्न की रचना मैंने इसलिये की है, कि यह रचना सज्जनों की वौद्धिक जड़ता को दूर करके सदैव उनका कल्याण करे। तत्पश्चात् हमारे भारत की वसुन्धरा पर रहने वाले प्राणिमात्र को भगवान् भोलेनाथ सदैव सद्‌वुद्धि प्रदान करें। तथा अनेक प्रकार की ऋद्धियाँ एवं सिद्धियाँ प्रदान करें। तथा मेरे भारत देश की धरती पर सदैव सत्य, शिव, एवं सुन्दर का वर्चस्व देदीप्यमान होता रहे।

फलकपुर निवासी विप्रवंश प्रदीपः,
द्विजगुरूजनसेवी शम्भुसन्नामधेयः।

सकलजगदहेतोर्दर्पणं चातिश्रेष्ठम्
लिखितमिहपुरारेः प्रीतिमाप्तुं मयैव।।71।।

हिन्दी अनुवादः– उत्तर प्रदेश में फर्रूखाबाद जिले के निवासी ब्राह्मणों तथा गुरूजनों के सच्चे सेवक "आचार्य शम्भूदयाल अग्निहोत्री" नाम से प्रसिद्ध, ब्राह्मण वंश में उत्पन्न होने वाले, मैंने समस्त संसार के हित के लिये "एवं भगवान् भोलेनाथ का स्नेह प्राप्त करने के लिये " द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणम्" नामक ग्रन्थ की रचना की है।

इति श्री द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणस्य प्रथमः सर्गः समाप्त

– इति सोमेश्वर निरूपणम् –

:— अथ द्वितीयः सर्ग :— (मल्लिकार्जुनम्)

अस्मद्भारतभूतले सुलालितं श्रीमल्लिकामन्दिरम् ,
कृष्णायाः परमाद्भुते शुभतटे देदीप्यते सर्वदा।
मध्ये श्री जगदम्बिका सहचरः संद्रश्यते धूर्जटिः,
पार्श्वे ज्योतिमयी विलोचनप्रिया नित्यं मनः मोदते।।1।।

हिन्दी अनुवादः— हमारे भारत की परम पावन वसुन्धरा पर कृष्णा नदी के रमणीय तट पर, परमशोभा सम्पन्न"मल्लिकार्ज्जुन" नाम का शिव जी का सर्वोत्तम मन्दिर है। इसके मध्यभाग में भगवती पार्वतीजी के सहचर भगवान् भोलेनाथ दिखायी पड़ते हैं। इनके समीप में परम तेजोमयी भगवती जगदम्बा नित्य ही शिवजी का मन प्रशन्न करती रहती हैं।

ज्योतिर्लिङ्गमिदं विभाति भुवने द्वाम्यां प्रियाम्यां पुनः,
र्वामें शैलसुता च दक्षिणतटे विश्वम्भरः शंकरः।
नाम्नश्चात्र निगद्यते शशिधरः गाण्डीवधृच्चार्जुनः,
मन्ये सौम्य शिवा च शोभिततनुः श्रीमल्लिका गीयते।।2।।

हिन्दी अनुवादः— यह ज्योतिर्लिङ्ग दोनो प्रेमीजनों से सम्पन्न संसार में परम शोभायमान प्रतीत हो रहा है। क्योंकि इसमें वायीं ओर भगवती,पार्वतीजी एवं दाहिनी तरफ समस्त संसार का पालन करने वाले शिवजी विराजमान हैं। यहां शिवजी गाण्डीवधारी अर्जुन के नाम से प्रसिद्ध है, तथा माता पार्वतीजी मल्लिकादेवी के नाम से प्रसिद्ध है।

श्रीशैलस्य पुनाति नाम गृहणं किं वा ततो दर्शनम्,
साक्षादत्र सविग्रहेण वसतः माया च मायापतिः।
कामं प्रीतिपरस्परं विदधतस्तौ दम्पति र्जीवने,
बन्दे तत्व द्वयं भवाब्धिशरणं गौरी च गौरीश्वरम् ।।3।।

हिन्दी अनुवादः— श्री शैल नामक पर्वत का केवल नाम लेना भी पवित्र करने वाला है। फिर उसके दर्शन की तो बात ही क्या है। क्योंकि यहाँ सशरीर माया एंव मायापति निवास किया करते हैं। यद्यपि ये दोनों ही दम्पति अर्थात्
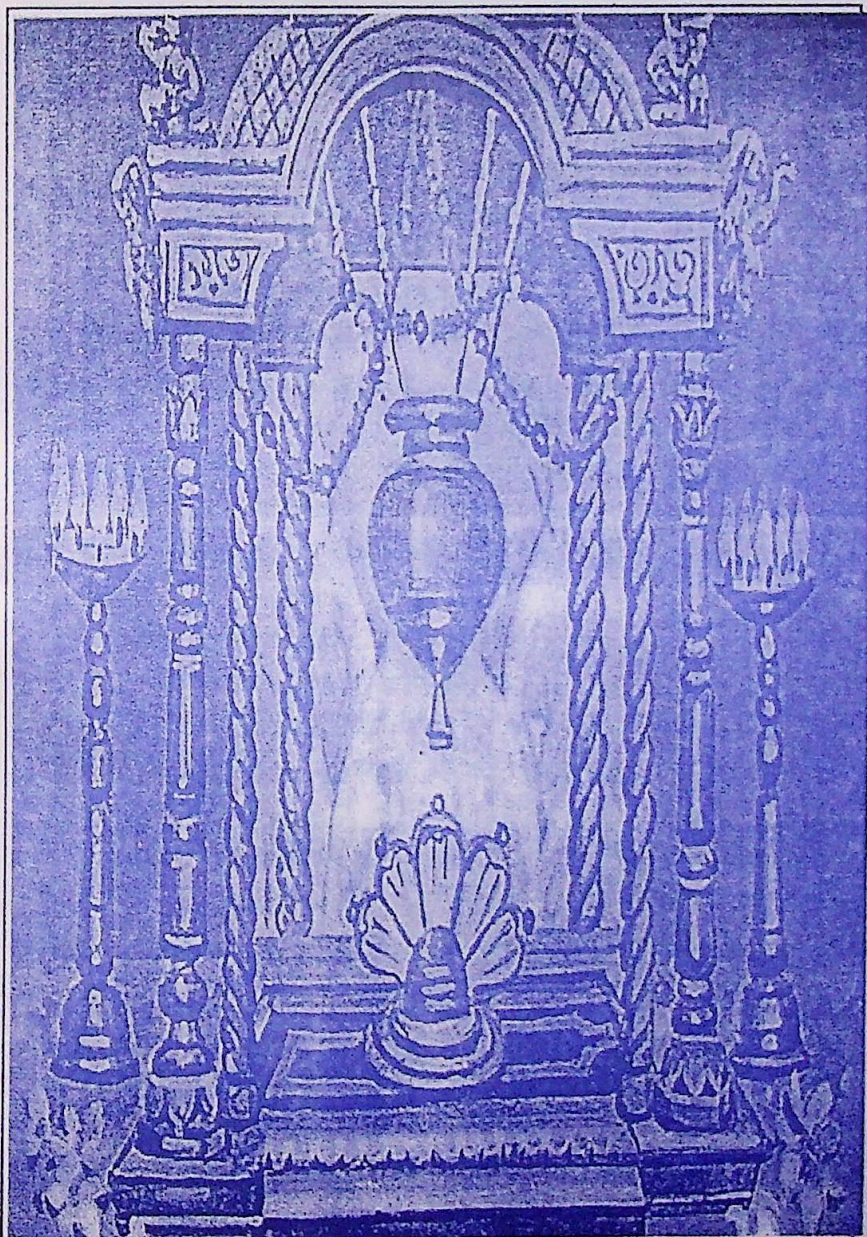
श्रीमल्लिकार्जुनम्

स्त्री पुरूष आपस में बड़े स्नेह के साथ जीवन में आनंद का अनुभव कर रहे हैं। अतएव मैं इन दोनों तत्वों को संसार सागर में शरण प्राप्त करने के लिए भगवान् भोलेनाथ एवं माता पार्वतीजी की वन्दना कर रहा हूँ।

माता चाद्रिसुता मनोगतरूजं वक्तुं रहो भूयसा,
प्रायः प्रस्फुरिताधरा वहुविधं निर्निमिषं चार्ज्जुनम्।
ध्यानावस्थितमुद्रया निजप्रियं सम्बोधयन्ती स्थिता,
मन्ये? पुत्रवियोग क्लिष्टविषये सन्धीयमाना इव।।4।।

हिन्दी अनुवादः— मन्दिर के अन्दर वांयी ओर खड़ी हुयी माता पार्वती ध्यान की मुद्रा में अवस्थित एवं आखे बन्द किये भगवान् भोलेनाथ से एकान्त में कुछ अपने मानसिक क्लेश को कहने की इच्छा से उन्हें बार–बार सम्बोधित करती हुयी एवं जिसके लगातार दोनों ओंठ फड़क रहे हैं। ऐसी मुद्रा में वे वहाँ खड़ी हैं। मेरी समझ में अपने पुत्र श्री कार्तिकेय जी के वियोग सम्बन्धी कठोर विषय पर परामर्श करने के लिए मानो वे शिवजी के पास अवस्थित है।अर्थात् परामर्श करने के लिए दिखायी दे रही है।

भवन्ति लोके सुधियः पराड्मुखाः,
स्वधर्मकर्मातिशयेन सर्वथा।
विलोक्य तेषामगतिर्विवेकिनाम्,
लिखामि तत्काव्यमहं दिवौकसाम्।।5।।

हिन्दी अनुवादः— इस संसार में बुद्धिमान पुरूष अधिकतर अपने धार्मिक कृत्यों से क्रमशः विरत होते जा रहे हैं। इसीलिए उनकी प्रायः दुर्दशा को देख कर, मैं उनके कल्याण के लिए देवताओं के महाकव्य अर्थात् "द्वादश ज्योतिर्लिंड्ग दर्पणम् नामक महाकाव्य की रचना कर रहा हूँ।

समाश्वसन्तीह वुधाः परस्परम्,
सदोष काव्येषु शनैः मनीषिणाम्।
परं विनिन्दन्ति रबलास्त्वनेकधाः,
सुपल्वले कृष्णमिवैकपंकजम्।।6।।

हिन्दी अनुवादः– विद्वानों के दोषयुक्त काव्यों में बुद्धिमान लोग सदैव धीरे–धीरे आश्वासन देकर उनका दोष दूर कर दिया करते हैं। किन्तु दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति अनेक प्रकार से उसकी उसी प्रकार निन्दा किया करते हैं। जैसे तालाब में कृष्ण कमल के बिकसित होने पर भी कुछ लोग उसकी सदैव निन्दा ही करते रहते हैं।

तथापि तेम्यो न विमेमि संततम्
स्वभावजन्या हि क्रियाः द्वयोरपि।
तपर्तुपूर्तौ बहुधा हि दर्दुराः,
बसन्तकाले विनदन्ति कोकिलाः।।7।।

हिन्दी अनुवादः– इसीलिए मैं उन दुर्जनों से कभी भयभीत नहीं होता। क्योंकि दोनों के कार्य स्वभाव वश संसर्गजन्य हैं। ग्रीष्म के पश्चात् वर्षा काल में अनेकों मेढ़क बोलते रहते हैं। किन्तु वसन्त ऋदतु में कोयलें मधुर आवाज से बोला करती हैं।

ततः परिक्रम्य जगच्चराचरं,
निवर्तयामास सुतः षडाननः।
निशम्य विध्नेश विवाह कौतुकं,
चुकोप सद्यः सहसा मुहुर्मुहुः।।8।।

हिन्दी अनुवादः– इसके पश्चात् समस्त चर एवं अचर, संसार की परिक्रमा करके, माता पार्वती के ज्येष्ठ पुत्र स्वामी कार्तिकजी, घर लौट आये। तब उन्होंने अपने छोटे भाई गणेशजी के विवाह का वृन्तान्त सुना, इस बात पर वे सहसा बार–बार नाराज होने लगे।

ततः समालक्ष्य सुतं विपश्चितम्,
जगाद गौरी वृषकेतनं रहः,।
युवा सुतो नैन क्षणं निषिध्यते,
अनंड्गतापोहि सतां सुदुस्सहः।।9।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद विद्वान पुत्र कार्तिकेय को देखकर पार्वतीजी

ने एकान्त में शिवजी से कहा। हे देव! जवान पुत्र एक क्षण भी नहीं रोका जा सकता। क्योंकि कामदेव की वेदना सज्जनों को भी असहनीय हो जाती है। अर्थात् युवावस्था में कामदेव किसी पर दया नहीं करता। वह सभी को एक समान पीड़ित किया करता है।

सुबन्धुकान्तामवलोक्य षण्मुखः,
कथं सधैर्यः सदने निवत्स्यति।
विषण्णचेतः बहिरन्तरे पुनः–,
कुलाङ्गनाभिः सततं विदूयते।।10।।

हिन्दी अनुवादः– अपने छोटे भाई गणेशजी की धर्मपत्नी को देखकर इस घर में वह वेचारा कैसे धैर्य धारण करके रह पायेगा। वह सदैव दुःखित मन वाला षड़ानन घर के अन्दर एवं वाहर हर जगह स्त्रियों के द्वारा संतप्त होता रहेगा।

हसन्ति केचिद्विधुरैकजीवनेः,
स्वयं गृहस्थाः प्रमदावियोगिनाम्।
कुलाङ्गनामध्य स एव दुर्भगः,
विदूयमानः सततं हृणीयते।।11।।

हिन्दी अनुवादः– स्त्रियों से वियुक्त, विधुर जीवन का कुछ गृहस्थ लोग स्वयं ही उपहास किया करते हैं। कुलीन नारियों के मध्य वह दुर्भाग्यशाली व्यक्ति स्वयं अपने मन में लज्जित होकर मन ही मन कष्ट का अनुभव किया करता है।

कलौ तु सर्वत्र रूजं निरीक्ष्यते,
स्वयं युवानः परप्रीतिविह्वलाः।
निजाङ्गनाप्रीतिपथे पराङ्मुखाः,
भ्रमन्ति नित्यं खलु शूकरा इव।।12।।

हिन्दी अनुवादः– कलयुग में यह रोग प्रायः हर जगह दिखायी देता है। क्योंकि आजकल के जवान लड़के परायी स्त्रियों से प्रेम करने के लिए

व्याकुल हो रहे हैं। वे अपनी स्त्रियों से प्रेम करने में असमर्थ होकर प्रतिदिन गलियों में उसी प्रकार घूमा करते हैं। जैसे हर समय बाजारों में सुअर घूमा करते हैं।

सदा गुरूणामवधीर्य सद्वचः,
बिचित्र चित्रेषु क्षपाः नयन्ति ते।
ततः समुत्थाय विलोल जिह्वया,
विषाक्त वाक्यैर्हि बमन्ति किल्बिषम्।।13।।

हिन्दी अनुवादः– वे युवक अपने गुरूजनों की बात की अवहेलना करके, सदवब अजीव प्रकार के चित्र दर्शन आदि व्यर्थ के कार्यों में अपनी रातें बिताया करते हैं। इसके बाद प्रातःकाल उठकर अपनी चंचल जीभ से परिवारिक जनों पर जहरीले वाक्यों से विषवमन किया करते हैं।

अतः समीचीन वयोविलोक्य वा,
सदैव यूनां परिणीत बन्धनम्।
हितं विधते सततं हि गेहिनाम्,
तथा च सर्वत्र तयोर्द्वयोरपि।।14।।

हिन्दी अनुवादः– अतएव समुचित अवस्था देखकर (युवकों का विवाह संस्कार) गृहस्थों तथा उन दोनों का सदैव हित चिंतन ही किया करता है। विवाह संस्कार की अतीतावस्था शास्त्रों की दृष्टि से सदैब घातक मानी गयी है। अतएव अधिक विलम्ब से किया गया विवाह संस्कार अनुचित है।

अहो? क्वचिन्द्भारतदेश भूतलं,
निलीन सर्पैः सहसा हृणीयते।
क्वचिच्चरित्रस्य सुरापगा पुनः,
कुलांग्ना कीर्तिध्वजैः प्रदूष्यते।।15।।

हिन्दी अनुवादः– आज हमारे भारत की बसुंधरा कहीं तो आस्तीन में छिपे हुए सर्पों से लज्जित होती जा रही है। तथा कहीं चरित्र की प्रवाहित मन्दाकिनी हमारे देश की कुलांग्नाओं के कीर्ति रूपी झंड़ों से अनवरत दूषित होती जा रही है।

इत्यालोच्य नगेन्द्रजा पुनरूमा पुत्रं समाश्वास्य सा,
प्रत्यक्षं वृषभध्वजं पुनरहो? वब्रे च वाणी समा।
बालोऽयं ननु षण्मुखः परिणये प्रायः गणेशस्य च,
क्रुद्धः कोटिविविक्तसौम्यवचनैः स्थातुं न बांछत्यसौ।।16।।

हिन्दी अनुवादः– ऐसा सोचकर माता पार्वती अपने ज्येष्ठ पुत्र को शान्त्वना देकर,सामने विराजमान शिव जी से साक्षात् सरस्वती के समान स्पष्ट वांणी में बोलीं। हे नाथ? यह बालक षड़ानन गणेशजी के विवाह से अधिक कुपित हो गया है। अतएव करोड़ों सौम्य बचनों से समझाने पर भी अब यह यहाँ नहीं रहना चाहता।

इति विविध प्रयत्नैस्तोषयन् कार्तिकेयम्,
सकलभुवन वन्द्यः वन्दनीयं च वालं।
शुक इव गुरूबाक्यैर्वोध्यमानः न किञ्चित्,
निज सदन निवासं कर्तुमेतन्न दध्रे।।17।।

हिन्दी अनुवादः– समस्त संसार के बन्दनीय शिवजी अनेक प्रयत्नों से संसार में परम आदरणीय अपने ज्येष्ट पुत्र स्वामिकार्तिक को सन्तुष्ट करते हुए तथा तोते के समान गौरवान्वित वाक्यों से समझाते हुए किसी प्रकार से उसे सन्तुष्ट न कर सके। अन्त में उसने हठपूर्वक अपने घर में फिर भी निवास करना स्वीकार न किया।

प्रणम्य सद्यः पितरौ षडाननः,
जगाम श्रीशैलगिरिं ततः परं।
तथावरोद्धुं न शशाक धूर्जटिः,
न चात्र माता गिरिजा सुतंवरम्।।18।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद कार्तिकेयजी अपने माता पिता को प्रणाम करके श्रीशैल पर्वत पर चले गये। उस क्रुद्ध बालक को न तो शिवजी ही रोकने में समर्थ हो सके और न पार्वती जी भी उस श्रेष्ठ एवं ज्येष्ठ बालक को रोक सकीं।

ततो पुरारिः सुतशोक कातरः,
व्यपेतधैर्यः सहसा मुहुर्मुहुः।
विचिन्त्य तं शोकमहार्णवेपतत,
पतत्रिक्तीर मुदं न जगृहे।।19।।

हिन्दी अनुवादः— इसके पश्चात् शिवजी पुत्र शोक से पीड़ित होकर अधीर अवस्था में, उसकी चिन्ता करते हुए तथा बार--बार अपने पुत्र शोक रूपी महासागर में पक्षी के समान गिरकर आनन्द रूपी किनारा न प्राप्त कर सके। अर्थात् बेचैनी इतनी बढ़ गयी कि उन्हें स्वयं का परिज्ञान न हो सका।

जगत्त्रयैकस्थपतिः जगत्पतिः,
चराचरात्मा जगदीश्वरः स्वयं।
जगन्निबासः सुतशोकमायया,
कथं निवद्धस्तु ददर्श केशवः।।20।।

हिन्दी अनुवादः— तीनों लोकों में सदैव स्थित रहने वाले, समस्त विश्व की आत्मा स्वयं भोलेनाथ, आज अपने पुत्र के शोकरूपी संसारिक माया में कैसे फँस गयें। ऐसा भगवान् विष्णुजी ने अजीब दृश्य देखा ।

विलोक्य तं शेकतरंगपिच्छिलं,
पिनाकिनं भूतपतिं महेश्वरम्।
जगाद वद्धांजलि संस्तवन् मुहुः,
रमापतिश्चात्र वचोभिरद्भुतैः।।21।।

हिन्दी अनुवादः— अपने पुत्र शोक की मलिन तरंगों से अभिषिक्त भगवान् भोलेनाथ को दुखी देखकर, दोनो हाथ जोड़कर स्तुति करते हुए लक्ष्मीपति भगवान् विष्णुजी ने अद्भुत बचनों से उनसे कहा।

अहो? जगन्नाथ? विमोह बन्धने,
कथं निवद्धं न विलोकितं मनः।
समस्त संसारगतिर्जगत्पतिम्,
नमन्ति मायापुरूषं मनीषिणः।।22।।

हिन्दी अनुवादः– हे संसार के स्वामी? शिवजी? सांसारिक मोह के बन्धन में बंधे हुये अपने मन को क्या आपने नहीं देख पाया। क्योंकि आप तो समस्त विश्व की एकमात्र शरण हैं तथा आप स्वयं समस्त चराचर संसार के स्वांमी हैं। अतएव इस विश्व की समस्त माया के सूत्रधार समझकर समस्त विद्वान् लोग आपको सदैव ही प्रणाम किया करते हैं।

समस्त चाज्ञान विनाश कारणम्,
वदन्ति त्वामेव पुनर्दिवौकसाः।
सदैव वेदाः शुकशौनकादयः,
नमन्ति सर्वत्र निरीहमव्ययम्।।23।।

हिन्दी अनुवादः– हे जगदीश! हर प्रकार के अज्ञान का विनाश करने वाले आपको ही समस्त देवतागण उसका कारण बताया करते हैं। सभी वेद एवं शुकदेव तथा शौनक आदि मुनिजन आपको ही अविनाशी एवं अनपेक्ष्य मानकर आपको प्रणाम किया करते हैं।

इति स्तवैः सर्वजगत्पतिः प्रभु,:
त्रिकालदर्शी शिव नीललोहितः।
रमापतेश्चाद्भुत शव्दसंश्रयात्,
तथाशु भूयोबुबुधे त्रिलोचनः।।24।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार विष्णु भगवान् के द्वारा की गयी अनेक स्तुतियों एवं गोपनीय शब्दों के आश्रय से, संसार के स्वामी, त्रिकालदर्शी शिवजी फिर उस विमोह पास से अलग होकर अर्थात छुटकारा पाकर पुनः होश में आ सके।

मायाबन्धनवद्धविष्वग्विभुं लोके न ज्ञातं जनैः,
गोप्यं चात्ररहस्यमेतद्परं साक्षाद्भवानीपतेः।
सद्यस्तन्निमिषं विलोक्य सहसा पद्मापतिः केशवः,
ध्यात्वा तं वृषकेतनं पुनरहो? चकेस्वयंनिर्मलम्।।25।।

हिन्दी अनुवाद :– अपने पुत्रशोक रूपी माया के बन्धन में परमआवद्ध संसार के निर्विकार स्वामी भगवान् भोलेनाथ को लोगों ने नहीं जान पाया! और

न शिवजी का यह गोपनीय रहस्य ही किसी को पता चल सका। केवल भगवान् विष्णु ने ही यह अजीव दृष्य क्षण भर में देखकर तथा शिव का बार--बार ध्यान करके इस मोह जाल से उन्हें छुटकारा दिलाकर पुनः निर्मल कर दिया।

यो मायावशवर्तिविश्वमखिलं सद्यः स्वयं मुच्यते,
सोऽयं विश्वपतिः षडानन शुचं सोढुं न चार्हत्यसौ।
इत्यालोच्य जहास शंकर प्रिया माता शिवापार्वती,
मन्ये? शम्भुदयालु सौम्यहृदयः लोकेजनैरूच्यते।।26।।

हिन्दी अनुवादः– जो शिवजी संसार के साक्षात् स्वामी होकर समस्त विश्व को सांसारिक बंधनों से तुरन्त छुटकारा दिला देते हैं, वही आज अपने ज्येष्ठ पुत्र षडानन के वियोगजनित शोक को न सह सके तो भला दूसरे पुरूष में सामर्थ्य भी क्या होगी। ऐसा सोचकर शिवजी की सहचारिणी धर्मप्रिया माता पार्वती जी को हँसी आ गयी। वे बोली मेरी समझ में शिवजी बास्तव में सरल एवं दयालु हृदय बाले हैं। ऐसा लोग उन्हें ठीक ही कहा करते हैं।

ततः शिवायाः बदनं विलोक्य सः,
ह्यवाय लज्जां सहसा त्रिलोचनः।
नताननः सौम्यदयार्दिशीतलै,
र्बचोभिरश्रावि मनोगतं शिवः।।27।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद शिवजी देवी पार्वती का मुख देखकर तथा सिर झुकाकर लज्जित हो गये।फिर अपनी दयालुता से युक्त बचनों के द्वारा अपनी मनोगत बेदना पार्वती को क्रमशः सुनाने लगे। अर्थात् यह वृतान्त किसी को ज्ञात न हुआ केवल पार्वती ही समझ सकीं।

श्रुणुदेवि? बदामि कौतुकम्,
मम गोप्यं चरितं जगत्त्रये।
अनवाप्यरहस्यमद्भुतम्
ननु देवैरपिनैव ज्ञायते।।28।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी बोले –हे देवि! मेरा चरित्र तीनों लोकों में परम गोपनीय है। आज मैं तुम्हें सुना रहा हूँ। मेरा रहस्य नितान्त अलक्षित एवं

छिपा हुआ है। जिसे देवतागण भी कभी नहीं जान सके। भला साधारण पुरूषों की तो बात ही क्या है।

ममभक्तिमतां जितेन्द्रियः,
नियतात्मा परमार्थविह्वलः।
शिवध्यान परायणः वशी,
सच संयाति सदैव मत्पदम्।।29।।

हिन्दी अनुवादः– हे देवि? मेरे भक्तों में जितेन्द्रिय, तथा जिसे अपनी आत्मा पर पूर्ण रूपेण विश्वास हो,जो मेरे परमधाम का सदैव इच्छुक हो,एवं मेरी ध्यान मुद्रा में सदैव तल्लीन रहने वाला व्यक्ति ही सदैव मेरा अलौकिक पद प्राप्त कर सकता है।

भववन्धनमत्रदेहिनाम्,
व्यथयत्येव सदैव संततम्।
सरसीव यथात्मपङ्कजा
न्यर्हन्वीह पदं सुरक्षितम्।।30।।

हिन्दी अनुवादः– हे देवि! शरीरधारियों को यह सांसारिक बन्धन सदैव हर समय ही पीड़ित करता रहता है। किन्तु वे ही वुद्धिमान् व्यक्ति मेरे पद को सुरक्षित रखपाते हैं। जो घर में रहते हुए भी तालाव में विकसितकमलों के समान इस संसार में अपना जीवन व्यतीत किया करते हैं। अर्थात् कमल तालाव में ही खिलते हैं। किन्तु उनमें ओस के अलावा तालाव के जल का संसर्ग नहीं हो पाता।

कथयामिप्रिये? च भूयसा,
मम भक्तिं प्रविहाय जन्तवः।
जननादिकियादिभिर्न ते,
मुञ्चन्तीहकदापिदेहनः।।31।।

हिन्दी अनुवादः– हे प्रिये! मैं तुमसे बार–बार कह रहा हूँ। कि मेरी भक्ति को छोड़ कर शरीरधारी प्राणी जनन,मरणादि कियाओं से कभी भी छुटकारा नहीं पाते। अर्थात संसार में रहकर केवल मेरी भक्ति ही ऐसा साधन

है। जिससे प्राणी सदैब के लिए सांसारिक बन्धनों से छूट कर मुक्त हो जाता है।

इत्यालोच्य जगत्पतिः शशिधरः मायामसौ संहरन्,
दध्रे चात्र स्वरूपमद्भुतविभोः विश्वेश लीलाधरः।
कारूण्यं प्रतिलोक्य मातृ हृदये प्रायः प्रियायांप्रभुः।
पुत्रस्याशुसमस्त चिंतनशुचं हर्तु स वव्रे शिवाभ्।।32।।

हिन्दी अनुवादः– ऐसा सोचकर संसार के स्वामी शिवजी, उस सांसरिक माया का उपसंहार करके, अर्थात् निवारण करके, उन लीलाधर ने जगत्पिता परमेश्वर के अद्भुत स्वरूप को तुरंत धारण कर लिया। तदनन्तर माता के हृदय में पुत्र की दया एवं करूणा को देखकर, वे चराचर के स्वामी शिवजी पुत्र की चिन्ता से उत्पन्न शोक को दूर करने के लिए, अपनी प्रियतमा पार्वतीजी से फिर बोले।

शुचं विहायाद्य प्रिये? विलोक्य मां,
चराचरे नैवसुखं जगत्त्रये।
अतस्तु प्रायः मुनयः मनीषिणः,
विहायलोकं हिं वनं गृजन्ति ते।।33।।

हिन्दी अनुवादः– हे प्रिये! आज अपना आन्तरिक शोक दूर करके, तथा मुझे देखकर शांत हो जाओ। क्योंकि इस संसार में अथवा तीनों लोकों में कहीं भी सुख नही है। इसीलिए मुनिजन एवं विद्वान पुरूष संसार को त्याग कर अन्त में बन को चले जाते हैं। अर्थात् बन में जाकर परमात्मा का भजन करते हैं।

कथं त्वमेवं सुतशेक विह्वला,
न चात्र किंचिच्छरणं विमन्यसे।
विमोहनिद्रा न क्षिणोति कुत्रचि,
दतोहिं मायापुरूषोतमं भज।।34।।

हिन्दी अनुवादः– हे प्रिये! तुम पुत्र के शोक में इतनी वेचैन क्यों हो रही हो। इस विश्व में तुम्हें कोई शरण प्राप्त नहीं हो रही है। यह मोह निद्रा

कहीं शान्त नही हो सकती। अतएव अब तुम मायापति भगवान् विष्णुजी का भजन करो।

तथापि प्रायः न शमाययौ शमम्,
ससर्ज धैर्यहृदयेन पार्वती।
विदग्ध कारूष्य शुचामुखश्रिया,
रूरोदकान्ता सहसा पिनाकिनः।।35।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी के समझाने पर भी माता पार्वती को जब संतोष न मिल सका। उनका धैर्य कमशः हृदय से टूटने लगा। तव वे करूणा के द्वारा जली हुयी अपनी मुखरकृति से रक्तवर्ण होकर सहसा रो पड़ीं।

अहो? जगद्वन्धनमत्र देहिनाम्,
प्रवाधते नैव कयं हि मायया।
विलोक्य दूनः सहसा जगत्यतिः,
सुतस्य शोकेन रूरोद भूयसा।।36।।

हिन्दी अनुवादः– यह सांसारिक माया का कठोर वन्धन सामान्य प्राणियों को क्यों नहीं पीड़ित करता होगा । ऐसा देखकर संसार के स्वामी शिवजी स्वयं उस पुत्र शोक को सहन न कर सके। अर्थात् वे भी पुत्रशोक में अधीर होकर अकस्मात् रोनें लगे।

पुनः समाश्वास्य क्षणे त्रिलोचनः,
मुहुर्मुहुः गद्गद सीत्कृतैः स्वरैः।
जगाद सद्यः जगदीश्वरीं शनैः,
र्वियोग दुःखं ह्यतिदारूणं रूजम्।।37।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी एक क्षण में माता पार्वती को सान्त्वना देकर बार--बार गद्गद कंठ से तथा श्रीकारी भरे स्वरों से फिर जगज्जननी से बोले। हे देवी? वास्तव में वियोग रूपी दुःख सबसे कठिन रोग है। इससे बड़ा कोई क्लेश नहीं होता।

शुचं विरम्याशु प्रिये? बिलोक्यताम,
विलोकनीया हि त्वयां गृहस्थितिः।

सुतं समन्वेष्टुमहं बृजामितं
बृजन्ति यस्याश्रयमत्र देहिनः।।38।।

हिन्दी अनुवादः– हे देवी? अपने शोक को दूर करके इधर देखो। तुम्हें घर की भली प्रकार देखभाल करना हैं। अब मैं पुत्र की खोज करने वहीं जा रहा हूँ। जहाँ संसार के सभी प्राणी जिसका आश्रय प्राप्त किया करते हैं।

मयापि सार्ध बृज देवि सत्वरं,
गतः स्वयं यत्र सुतः षडाननः।
नवा गतिश्चान्यपथं प्रवर्तितुम्
सुतस्य शोकोहि नितान्तदुस्सहः।।39।।

हिन्दी अनुवादः– अथवा जहाँ स्वामिकार्तिक गया है। वहाँ तुम भी मेरे साथ अतिशीघ्र ही चलो। क्योंकि अन्य किसी मार्ग का अनुगमन करना उचित नहीं है। वास्तव में पुत्र का शोक सबसे अधिक असहनीय माना गया है।

इत्यं बैसुतशोक सम्भ्रक्ती हुंभरवं कुर्वतीं,
सद्यः निर्झरद्वंद नेत्र पतितैः सम्यग्सृवच्चाश्रुभिः।
क्लान्तं कान्त कपोल प्रान्तमसकृत्संवारयन्तीं मुहुः,
भूयो प्रेमपयोधि गद्गद गिराबव्रे शिवः तां प्रियाम्।।40।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार पुत्रशोक में गाय के समान बार–बार हुंकार करती हुयी, तथा झरनों रूपी दोनों नेत्रों से लगातार वहते हुए आंसुओं से सुन्दर एवं भीगे हुए कपोल मण्डल के प्राप्त भाग को बार–बार पोंछती हुयी,अपनी प्रियतमा पार्वती से पुनः प्रेम के समुद्र से उमड़े हुए गद्गद कंठ से शिवजी ने पार्वती से कहा।

व्यपेत शोकार्ति सुखेन, ते मनः,
निधाय धैर्य यत्नेन सांप्रतम्।
प्रिये? त्वदीयात्म सुतेन संततम्,
व्यपोहयिष्यस्यनिशं च वेदना।।41।।

हिन्दी अनुवादः– हे प्रिये! शोक के सन्ताप से रहित होने वाला तुम्हारा मन तथा प्रयत्नपूर्वक धैर्य धारण करके, अपने पुत्र के दर्शन से हमेंशा के लिये

वेदना से निर्मुक्त हो जायेगा। अर्थात् पुत्र के अवलोकन मात्र से तुम्हारी अधीरता शान्त हो जायेगी।

इत्येवं स जगच्चराचरगुरूर्देवादिदेवोहरः ,
सार्धंचात्रनिनाय शैलतनयां प्राणप्रियां पार्वतीं।
श्री शैलं हृयधिगम्य तत्र तनयं नालोक्य चिंतातुरः ,
दध्यौ ज्ञानपथेन तं षठमुखं लोके मुनीनामिव।।42।।

हिन्दी अनुवादः— इस प्रकार वे चराचर संसार के स्वामी महादेवजी अपनी प्रियतमा भगवती पार्वतीजी को भी पुत्र का अवलोकन करने के लिये अपने साथ श्री शैल नामक पर्वत पर ले गये। वहॉ पहुँच कर शिवजी उस पर्वत पर भी जव अपने पुत्र को नहीं खोज पाये।तव उन्होंने ज्ञानमार्ग द्वारा समाधि लगाकर एक क्षण मुनियों के समान ध्यान किया। अर्थात् शिवजी ने समाधि के द्वारा स्वामी कार्तिक जी का पता किया।

यं ध्यायन्ति मुनीश्वराः सुरगणा व्रह्मामहेन्द्रादयः ,
दिग्पालाः दिग्दन्तिनः हि सततं तावन्न पश्यन्ति ते।
सोडयं विश्वपतिः चराचरविभुः त्रैलोक्य लीलाधरः,
पुत्रं चात्र षडाननं हि विपिने मायावशान्मृग्यते।।43।।

हिन्दी अनुवादः— जिस जगत्पति शिवजी को मुनीजन, देवगण, ब्रह्मा एवं इन्द्र आदि, दिशाओं की रक्षा करने वाले दिग्पालगण नित्य ही ध्यान किया करते हैं फिर भी वे उन्हें नहीं देख पाते। वही शिवजी, तीनों लोकों में अपनी माया का दर्शन करने वाले आज माया के वशीभूत होकर अपने पुत्र को वन मे स्वयं खोज रहे हैं । यह आश्चर्य की बात है।

चचार सद्यः गिरिकन्दरातटे,
सरित्तटे चोपवने वने पुरा।
परिभ्रमन् पल्वलतीरकानने ,
ददर्श तत्रापि न तं पिनाकिना।।44।।

हिन्दी अनुवादः— शिवजी ने सर्वप्रथम, पर्वत की कन्दराओं के तट पर तथा नदियों के किनारे, बगीचों एवं वनों में भ्रमण किया। तदनन्तर उन्होनें

तालावों के किनारे जंगल में घूमते हुये भी अपने पुत्र को नहीं देख पाया।

तपोबनेष्वत्र परिभ्रमन् शिवः ,
निरीक्ष्यमाणः निपुणं मुहुमुर्हुः।
स्वकीय सानिध्यगतेऽपि मन्दिरे ,
ददर्श सूनुं न ततो पिनाकिना।।45।।

हिन्दी अनुवादः— शिवजी उसके बाद मुनियों के तपोवनों में भी घूमते हुए तथा उस वालक की बड़ी बारीकी से खोज करते हुये तथा बार—बार देखते हुये, शिवजी से स्वयं अधिष्ठित मंन्दिर में भी उस वालक को न देख सके। तव वे दुःखी हो गये।

पिपासयारूद्धस्वरं महेश्वरं ,
भृगीव साक्षादनुक्रंदितं पुनः ।
क्षणे क्षणे पुत्रशुचार्तिविह्वलम् ,
ददर्श मार्गे विधिवत्स नारदः।।46।।

हिन्दी अनुवादः— उस समय प्यास के कारण शिवजी का कंठ सूख गया था। हिरणी के समान अनवरत हुंकारें भरते हुये, एक—एक पल में पुत्र के शोक में बेचैन होते हुये उन भोलेनाथ को नारदजी ने मार्ग में देख लिया।

विलोक्य तं श्वास चलत्कपर्दिनम् ,
नितान्तकम्पात्तु विलोल कुंतलम्।
मुहुर्मुहुः निःश्वसितं जगत्पतिं,
स्वयं चकम्पे हृदयेन नारदः।।47।।

हिन्दी अनुवादः— लम्बी—लम्बी श्वासें भरने से लगातार कम्पित शरीर वाले , तथा कम्पन के कारण जिसकी जटायें हिल रही थी, ऐसे संकट में बार बार गर्म श्वासे भरनें वाले चराचर के स्वामी शिवजी को देखकर नारद जी अपने हृदय में काँप उठे ।

हिरण्यगर्भाङ्गभुवं महामुनिम् ,
त्रपाभरादानतमौलि चक्षुभिः।
विलोक्य किंचित्करूणाद्रचेतसा ,
जगाद सद्यः सहसात्रिलोचनः।।48।।

हिन्दी अनुवादः– ब्रह्मा जी के पुत्र महर्षि नारद से लज्जा के कारण जिसका मस्तक झुक गया था, ऐसे शिवजी अपनी आँखों से उन्हें देखकर दयालुता से गीले हृदय से कुछ बोले। अर्थात् नारद को देखकर शिवजी स्वयं लज्जा का अनुभव करते हुये वोले।

कथं कुतो वत्स! परिभ्रमन् भुवम् ,
समागतः कानन चारिणामिव।
वदाशु वृत्तं गरूणासनस्थवा ,
क्रियाकलापं तु गुरोर्विर्धेरपि।।49।।

हिन्दी अनुवादः– हे वत्स नारद! समस्त पृथ्वी का भ्रमण करते हुये इस समय वनचरों के समान कहाँ से कैसे यहाँ पधारे। पहले विष्णुजी का कुशल मंगल तदनन्तर अपने पिता ब्रह्मा जी की क्रियाशीलता का निवेदन कीजिये।

वीणावाद्यमनेकधाः परिमृशन् संस्थाप्यचाङ्के पुनः ,
पश्चाद्युग्म करारविंद पुटकेनादौ ववन्दे शिवम्।
वृत्तं चापि निशम्य सौम्य मनसा चावेद्य भूयो रहः,
वायोवृत्तपथेन सम्यग्तया सद्यः प्रतस्थे मुनिः।।50।।

हिन्दी अनुवादः– नारद जी ने अपनी वीणा को अनेक वार सहलाते हुये इसके वाद उसे अपनी गोंद में रखकर, फिर दोनों हाथों को जोड़कर शिवजी की वन्दना की। इसके वाद शान्तचित होकर शिवजी का सारा समाचार सुनकर तथा एकान्त में अपनी कुशल क्षेम बताकर वायु के निष्कंटक आकाश मार्ग से स्वर्ग को प्रस्थान कर दिया।

ततः परं तौ सुतशोकचिन्तया ,
निवासयामासतुरन्ततः गिरिम्।
प्रभुत्वमन्यत्परितः प्रदर्शयन् ,
वभौहि लिङ्गं भुवि मल्लिकार्जुनम्।।51।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद वे दोनो पार्वती और शिवजी अन्त मे पुत्र शोक की चिन्ता के कारण उसी श्री शैल पर्वत पर निवास करने लगे। इसके

वाद अपनी प्रभुता को चारों ओर प्रदर्शित करते हुये वह शिवजी एवं पार्वजी से अधिष्ठित ज्योतिर्लिङ्ग मल्लिकार्जुन नाम से पृथ्वी पर सुशोभित होने लगा।

अथैकदा काचिद्राज कन्यका,
विहायगेहं गिरिगह्वरं ययौ।
निवार्यमाणाऽपि मुहुर्मुहुस्तथा ,
निवर्तिता नैव गृहं कृशोदरी।।52।।

हिन्दी अनुवादः– इसके पश्चात् एक दिन कोई राजकुमारी अपने घर को छोड़कर उसी शैल गिरि पर चली गई। वह राजा के बार–बार रोकने पर भी वेचारी दुवले उदर वाली वह बालिका नहीं रूकी । अर्थात् उसी पर्वत पर निवास करने लगीं।

कृष्णां धेनुमियं सुसेव्यसततं रात्रिंदिवं सापि तां ,
नित्यं तत्र दुदोहचेष्ट समये प्रीत्या द्वयोः सन्ध्ययोः।
एकस्मिन् दिवसे ददर्श सहसा चौरेण दोग्धींचगां ,
गत्वा तत्र विलोक्य प्रस्तर द्वयं चक्रे पुनर्विस्मयं।।53।।

हिन्दी अनुवादः– वह वहाँ प्रेमपूर्वक रहने लगी। उस राजकुमारी ने एक काली गाय पाल रखी थी। वह उसकी सेवा करके रोज अपनी गाय को निश्चित समय पर, अर्थात् दोनों संध्याओं के समय दुहा करती थी। एक दिन उसने किसी चोर के द्वारा उस गाय को दुहते देखा। वह तुरन्त वहाँ गई, किन्तु वहॉ दो पत्थरों को देखकर वह आश्चर्य चकित होकर रह गई।

ततश्च बालापि च राजकन्यका,
प्रणम्य चानर्च शिंव दिने दिने।
पुनश्च तन्नित्यक्रियाशनादिकं ,
चकार प्रायः शिवदर्शनात्परम्।।54।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद वह राजकुमारी शिवजी को नित्य प्रणाम करके प्रतिदिन पूजन करने लगी। इसके बाद वह अपनी नित्य क्रिया भोजन आदि भी शिवजी के दर्शन करने के बाद ही किया करती थी। इस प्रकार उसने अपना समय विताना प्रारम्भ किया।

अथैकदाराजसुता निशात्यये ,
ददर्श स्वप्नं सहसा मनोहरं ।
द्विजाकृतिः कोऽपि समेत्य तां शनै–
र्जगाद प्रीत्या प्रियमद्भुतं वचः।।55।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद उस राजकुमारी ने, एक दिन रात के वीतने के समय एक सुन्दर स्वप्न को देखा। कि कोई ब्राह्मंण उसके पास आकर धीरे से परम अद्भुत शव्दों में प्रेमपूर्वक कहने लगा।

श्री शैले शरदेन्दु सौभ्य बदनः साक्षात्कपर्दीश्वर :,
अध्यास्ते गिरिजासमं पुनरसौ प्रत्यक्ष लीलाधरः।
तौ संपूज्य वृतेन नित्यनियमैः श्रीमल्लिकां चार्जुनम,
प्रायः दिव्यपदं द्वयोश्च कृपया वाले? ध्रुव लप्स्यसे।।56।।

हिन्दी अनुवादः– हे राजकुमारी! श्री शैल पर्वत पर संसार की लीला करने वाले भगवान् भोलेनाथ भगवती पार्वती के साथ साक्षात् विराजमान हैं। जो शरद ऋतु के चन्द्र के समान सुन्दर मुखारविंद वाले हैं। उन दोनों की तुम नित्य नियमपूर्वक पूजा करके निश्चयपूर्वक अलौकिक पद प्राप्त कर सकोगी। क्योंकि वे दोनों यहां मल्लिका एवं अर्जुन नाम से परम प्रसिद्ध हैं इससे तुम्हारा कल्याण होगा।

इत्युक्त्वा स द्विजोऽपि चन्द्रवदनः स्वप्ने सुतां तां शनैः,
प्रायः प्रेमपयोधिसिंचित नवैः सद्यः बचोभिः स्वयं।
रात्रौ तस्य कपर्दिनः सगुणतामावेद्य शून्ये गृहे,
प्रातः ब्रह्ममुहूर्त दिव्यसमये विप्रोऽपि चान्तर्दधे।।57।।

हिन्दी अनुवादः– वह चन्द्रमा के समान मुखवाला ब्राह्मण स्वप्न में प्रेम रूपी सागर से अभिषिक्त बचनों से स्वयं उस राजकुमारी से शिवजी की सगुणता एवं उनका महत्व निवेदन करके, उस शून्य ग्रह में सब कुछ समझा बुझाकर सुबह के समय ब्रह्मं मुहूर्त में वह ब्राह्मण अन्तर्ध्यान हो गया।

प्रातः काले शशिधर शिवं चिन्तयन्ती च वाला,
ध्यायन्ती वा कमलवन्दनं सर्वथा शूलपाणेः।

मन्दालोके हिमगिरि सुतां पूजयन्ती विपन्ना,
श्री शैले तां व्यथित मनसा मल्लिकां तां ददर्श।।58।।

हिन्दी अनुवादः– वह राजकुमारी प्रातः काल चन्द्रमा को धारण करने वाले शिवजी का विचार करती हुयी, तथा उन्हीं शिवजी का ध्यान करती हुयी संध्या के समय भगवती पार्वती को खिन्न हृदय से पूजती हुयी, उसने श्री शैलपर्वत पर भगवती मल्लिका का दर्शन किया।

दृष्ट्वा देवीं शिव सहचरीं पुत्र शोकार्तिदूनां,
वाला सद्यः परमविकला मंदिरे तां च दध्रे।
को वा लोके व्यथित मनसां ज्ञातुमन्यः समर्थः,
मन्ये? प्रायः दुःखित हृदयं वेदनाऽप्यावृणोति।।59।।

हिन्दी अनुवादः– उस राजकुमारी ने मंदिर के अन्दर पुत्र शोक से पीड़ित शिवजी की सहचारिणाी पार्वती को देख कर नितान्त व्याकुल हृदय से उसे पकड़ लिया। क्योंकि व्यथित हृदय वालों का दर्द इस संसार में दूसरा कौन जान सकता है। मेरी समझ में दुःखित मन की वेदना चारों ओर से जकड़ कर आकान्त कर लेती है।

मदायन्ते नखलु सरले? चाभ्युपेतार्थकृत्याः,
तस्मादेनां विधिवश शुचामम्बिके? राजकन्यां।
दृष्ट्वा नूनं विमल नयनैः पितृत्यक्तां च भत्वा,
मां रक्षेथाः स्वकरकरजैर्नित्य कण्डूयमाना।।60।।

हिन्दी अनुवादः– हे भगवती! हित करने वाले लोग कभी विलम्ब नहीं करते। इसलिए हे माता! दुर्भाग्यवश दुखी इस राजकुमारी को जो पिता के द्वारा त्याग दी गयी है ऐसी कन्या की अपने हाथ के नाखूनों से खुजलाते हुए माता के समान मेरी रक्षा अवश्य करना।

दत्वा धैर्य जननि? सहसा शून्य संसार मध्ये,
दीनां वालां विगतशरणां त्वत्पदं प्रापयेथाः।
यद्वान्छन्तः सकल मुनयः ध्यानमार्गेण नूनं,
लभ्यन्ते ते कथमपि न तत्वत्पदं सेव्यमानाः।।61।।

हिन्दी अनुवादः–हे जगदम्बे! इस शून्य संसार के अन्दर आकस्मिक ध्यान करके अशरंण एवं परमदीन इस राजकुमारी को अपना पद प्रदान कर देना। जिस पद को चाहने के लिए समस्त मुनिजन ध्यान के मार्ग से सेवा करते हुए भी तुम्हारे उस परम पद को प्राप्त नहीं कर पाते।

इत्येवं विविधैस्तवैः नृपसुता संप्रार्थयन्ती शिवां,
प्रत्यालोलगलत्कपोलममितः सद्यः श्रवच्चाश्रुभिः,
प्रायः वामकरेण सम्यक्तया संमार्जयन्ती मुहुः,
सायं सा परिक्रम्य दीनवदना प्रायः स्वगेहं ययौ।।62।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार वह राजकुमारी अनेक स्तुतियों से माता पार्वती की प्रार्थना करके, गालों के चारों ओर लगातार वहने वाले आंसुओं से क्लिन्न तथा वायें हाथ से भली प्रकार उन्हें पोंछती हुई तदनन्तर संध्या के समय माता की बार–बार परिक्रमा करके वह वालिका कुम्हलाये हुए मुखवाली अपने घर चली गयी।

तयोः प्रभांव समवेक्ष्य संततम्,
विनिर्मपौ मंदिरमद्भुतं तया।
तदेव नाम्ना भुवि मल्लिकार्जुनम,
प्रसिद्धिमन्तेऽपि च प्राप भूयसा।।63।।

हिन्दी अनुवादः– उन दोनों शंकर जी एवं पार्वती जी के अद्भुत प्रभाव को देखकर उस राजकुमारी ने दुबारा इस मंदिर का जीर्णोद्वार कर दिया। किन्तु यह मंदिर उसी 'मल्लिकार्जुन' नाम से प्रथ्वी पर अन्त में प्रसिद्धि को फिर से प्राप्त हो गया। अर्थात् आज भी यह ज्योर्तिलिंड्ग मल्लिकार्जुन नाम से प्रसिद्ध है।

येध्यायान्ति चमल्लिकां भगवतीं लोंके पुनश्चार्जुनम् ,
तेषां पातक कोटिजन्मविहितान्नश्यन्ति सद्यः स्वयं।
प्रायः ब्रह्म वधाच्चगोवधकृतेनादौ च वंशक्षयः,
तत्सर्व प्रथमेंऽति नाम गृहणात्सद्यः क्षणे क्षीयते।।64।।

हिन्दी अनुवादः– इस संसार में जो लोग सर्वप्रथम भगवती मल्लिका

इसके बाद श्री अर्जुन जी का ध्यान करते हैं। उनके करोड़ों जन्मों के पाप तुरंत नष्ट हो जाते हैं। ब्रह्म हत्या, गोवध आदि करने से जो वंश का विनाश आदि व्यक्तिक्रम प्रारम्भ हो जाते हैं। वे सभी प्रकार के पाप केवल पहले दिन ही उन दोनों का नाम लेने मात्र से एक क्षण में नष्ट हो जाया करते हैं।

ज्योतिर्द्वादशलिंग दर्पणमिदं लोके मया निर्मितं,
प्रायः शम्भुत्रिनेत्र सौम्य कृपया साक्षात् फलंदृश्यते।
वैशिष्ट्यं न ममात्र किंचिदत्क्वचिद्वाणी विलासंविना,
मन्ये? संस्कृतवाड्मयस्य प्रचुरं रूपं भवेत भारते।।65।।

हिन्दी अनुवादः– यह द्वादश ज्योर्तिलिंड्ग दर्पणम् नामक ग्रन्थ की रचना मैंने अवश्य की हैं किन्तु त्रिनेत्रधारी भगवान् भोलेनाथ जी की कृपा का यह प्रत्यक्ष फल दिखायी दे रहा है। यह रचना अति सरल भाषा साहित्यिक ग्रंथियों से रहित है। क्योंकि इसमें कोई कहीं पर मैनें विशेषता प्रदर्शित नहीं की है। हाँ इतनी मेरी इच्छा अवश्य है, कि संस्कृत भाषा का प्रचार एवं प्रसार हमारे भारत में प्रचुर मात्रा में होता रहे।

रक्षेन्मे सकलं वपुर्भगवती श्री शैलजा मल्लिका,
वुद्धिर्ज्ञानवलं बिवेकमखिलं सर्व मदीयं वसुः।
पुत्रान्पौत्र ग्रहादि गेहवनिताः रक्षेत्पुनश्चार्जुनः ,
यत्सर्व ह्ययवशिष्ट वैभवयशः तत्वं द्वयोः पातु नः।।66।।

हिन्दी अनुवादः– श्री शैल पर्वत से उत्पन्न भगवती मल्लिका देवी मेरे समस्त शरीर, वुद्धि, ज्ञान, वल, विवेक एवं मेरे समस्त धनधान्य की रक्षा करें। तदनन्तर श्री शैल के भगवान् अर्जुन भोलेनाथ मेरे पुत्रों, पौत्रों तथा नवग्रहों से घर एवं धर्मपत्नी की रक्षा करें। उसके वाद रक्षा से मेरे वैभव एवं यश आदि समस्त बाकी वची हुई सांसारिक उपयोगी वस्तुओं की इन दोनो का वास्तविक तत्व मेरी रक्षा करें।

फलकपुर निवासी विप्रवंशप्रदीपः ,
द्विजगुरूजन सेवी शम्भुसन्नामधेयः।,
सकलजगदहेतोः दर्पणं चातिश्रेष्ठम् ,
लिखितमिह पुरारेर्प्रीतिमाप्तुं सदैव।।67।।

हिन्दी अनुवादः– फर्रुखाबाद जिले के निवासी, ब्राह्मण वंश मे उत्पन्न होनें वाले ब्राह्मणों तथा गुरूजनों के सच्चे सेवक, आचार्य शम्भूदयाल अग्निहोत्री ने समस्त संसार के हित के लिये द्वादशज्योतिर्लिंङ्ग दर्पणम् महाकाव्य की रचना शिवजी का हमेशा स्नेह प्राप्त करने के लिये की है।

:– इति श्री द्वादश ज्योतिर्लिंग् दर्पणम्
द्वितीयः सर्गः समाप्तः :– (मल्लिकार्जुनम्)

अथ द्वादशज्योतिर्लिङ्ग दर्पणम् तृतीय सर्ग

—महाकालम्—

विष्वग्विश्व पिशाच संगरजितं लोके धनर्ज्याशुगैः,
कालव्यालकरालकण्ठ दमनं चण्डी पतिं शंकरम्।
शिप्रा तीर प्रतिष्ठितंहि विपिने हन्तुंपुनः राक्षसान्,
तं वन्दे शशि शेखरम् प्रभु महाकालं च योगीश्वरम्।।1।।

हिन्दी अनुवादः—समस्त संसार के भूत प्रेतों को युद्ध में अपनी धनुष की डोरी के छूटे हुए वाणों से एक क्षण में जीत लेने वाले, भयंकर कालरूपी भीषण सर्प के कण्ठ को दबा देने वाले, भगवती चण्डी के स्वामी, शिप्रा नदी के किनारे पुनः राक्षसों का वध करने के लिए वन में विराजमान योगीश्वर भगवान् महाकाल शिवजी की मैं वन्दना करता हूं।

तवादिशक्त्तिं त्रिगुणात्मिकां विभो,
विदन्ति किञ्चिन्न नराः महोरगाः।
तथापि मत्योऽस्मि कथं दयानिधे,
लिखामि किंचिच्चरितं वृहत्तरं।।2।।

हिन्दी अनुवाद :— संसार के कण—कण में व्याप्त रहने वाले हे शिवजी तुम्हारी (सत्व—रज—तम) इन तीनों गुणों से व्यक्त (प्रकृति) आदिशक्ति कही जाती है। इस आदिशक्ति को मनुष्य तथा नागजन भी नहीं जानते तो भला मैं तो सांसारिक एवं मरणधर्मा प्राणी कैसे जान सकता हूं फिर मैं आपके इतने विस्तृत चरित्र को हे दयानिधान! कैसे लिख सकता हूं।

तथापि शश्वत्तव दर्शनोत्सुकः,
कृपा कटाक्षैर्ननु मामपीहया।
चरित्रमेतल्लिखितुं समुत्सहे,
भवेद्दया किंचिदहो! दयानिधे।।3।।

हिन्दी अनुवाद :— हे भोलेनाथ! आपकी दयामयी दृष्टि के कटाक्षों से आपके सौन्दर्य का वास्तविक अवलोकन करने का इच्छुक मैं आपके विस्तृत चरित्र को तभी लिख सकता हूँ जब हे दयानिधान! आपकी मुझ पर पूर्णरूपेण
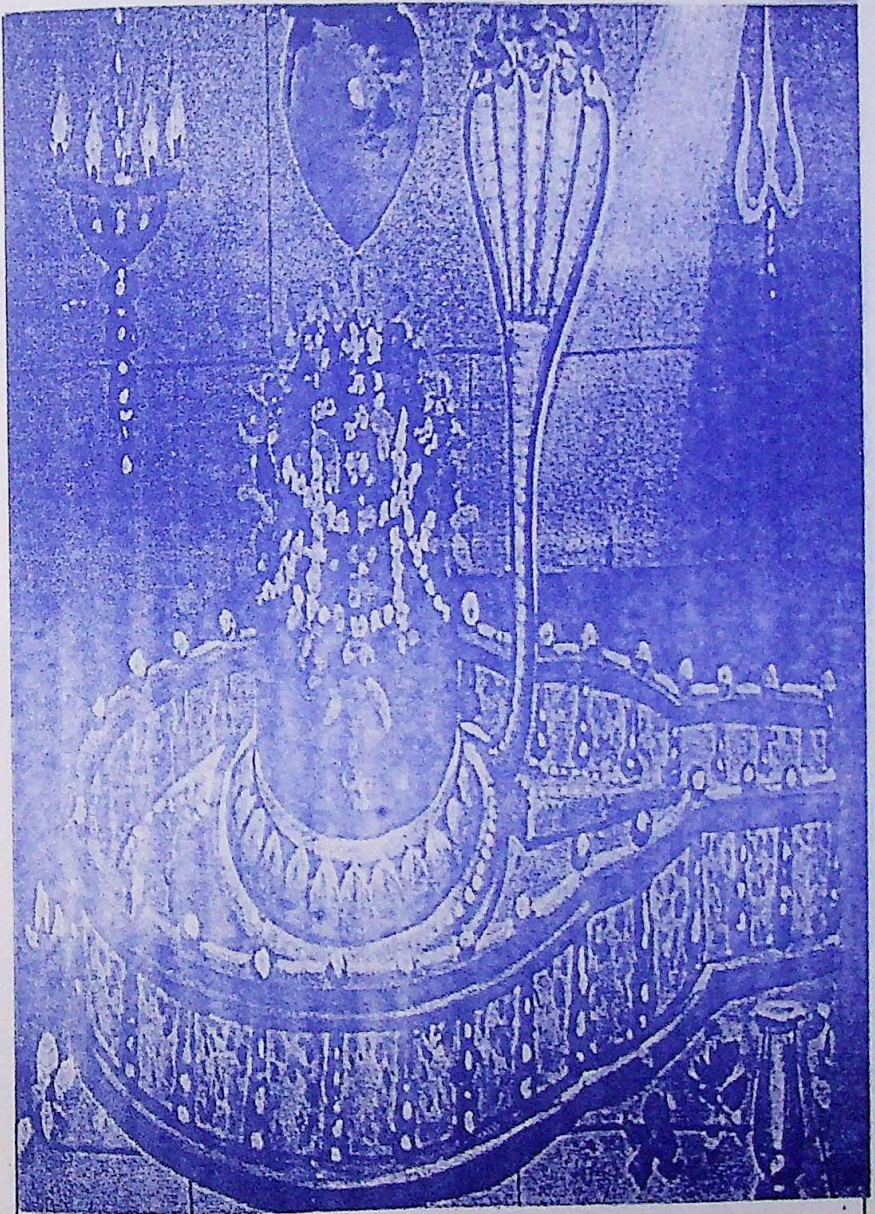
श्रीमहाकालेश्वर

दया हो। अन्यथा सांसारिक एवं विवेकहीन प्राणी आपके चरित्र को भला कैसे लिख सकता है।

शिप्रातीरे परम ललितं नूतनोद्यानमेत–,
ददेशे चाऽस्मिन् भुवन प्रथितं मंदिरं शूलपाणेः।
तत्रावन्ती क्षुभित नगरी दृश्यते पूर्वभागे,
ज्योतिलिंङ्गं दिवि परिगतं विश्वविख्यातमन्ते।।4।।

हिन्दी अनुवादः– हमारे देश में शिप्रा नदी के किनारे एक परम अलौकिक शोभा सम्पन्न एक वगीचा है। उसी बगीचे में भगवान् भोलेनाथ का मन्दिर है। इस मन्दिर की पूर्व दिशा की ओर अवन्ति नाम की दुखित नगरी दिखायी दे रही है। संसार में स्वर्ग तक परम प्रसिद्ध शिवजी का ज्योतिर्लिङ्ग इसी मन्दिर के अन्दर प्रतिष्ठित है।

तस्यामेकः भुवन प्रथितः शासको भूमिपालः,
नाम्नश्चासौ निजकुलमणिर्विश्रुतश्चन्द्रसेनः।
तस्योद्भूता सरस हृदये शम्भुदिव्यैक भक्तिः,
लोके प्रायः शशिधर कृपा सर्वदा शंतनोति।।5।।

हिन्दी अनुवादः– उस नगरी में पृथ्वी पर परम प्रसिद्ध शासन करने वाला एक राजा था।। जो अपने वंश में परम विख्यात चन्द्रसेन नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसके सरस हृदय में शिवजी की अलौकिक भक्ति उत्पन्न हुयी। क्योंकि अधिकतर संसार में शिवजी की कृपा हमेशा ही कल्याण किया करती है।

लोके राज्ञां सुचरितफलं दृश्यते भूमिभागे,
तेषां पुण्यैर्नवद्युतियुतं दीप्यतें राजचक्रं।
येदार्पान्धाः परिभवपदं शोभनं मन्यमाना–,
प्रायश्चैते तृणमिव स्वयं निन्दनीयास्त्रिलोके।।6।।

हिन्दी अनुवादः– संसार में राजाओं के सुन्दर चरित्र का प्रतिफल समस्त पृथ्वी पर दिखायी देने लगता है। उनके पुण्यों से नवीन कान्ति सम्पन्न शासनचक्र स्वयं प्रकाशवान् होकर दूर से चमकने लगता है। जो अपने घमण्ड से अन्धे होकर अपमान को भी अच्छा समझते हैं वे ही शासक तिनके के

समान तीनों लोकों में अधिकतर निन्दा के पात्र वन जाते हैं।

प्रातः सायं सरलमनसा त्रयम्बिकं पूज्यमानः,
मध्ये नित्यं निजसहचरैः शासयन् राजचक्रं।
दृष्ट्वा नित्यं विविधविधिना पूजनं शूलपाणेः,
भक्त्याप्रीता नृपसहरी भूपतिं व्याजहार।।7।।

हिन्दी अनुवादः— सुवह शाम सरल मन से शिवजी का पूजन करता हुआ वह राजा मध्यकाल मे अपने साथियों के द्वारा शासन करता हुआ नित्य ही अनेक प्रकार से उसे शिवजी का पूजन करते हुये देखकर, उसकी रानी ने शिवजी की भक्ति से प्रशन्न होकर उस राजा से कहा।

कामं लोक वहुधनसुखं विस्तृतं राजचक्रं,
कान्ता प्रायः कमल वदना वैभवं वाहनानि।
मन्ये! तेषां कुटिलमनसां भूभुजां भान्ति नित्यं,
राजन्यानां विमल चरितं चन्द्रवद्दीप्यते रवे।।8।।

हिन्दी अनुवादः— यद्यपि संसार में धन का सुख, विस्तृत शासन, कमल के समान मुख वाली स्त्री, विस्तृत एवं अनेक सवारियां, कुटिल हृदय अथवा दुष्कर्मी राजाओं को ही सुशोभित किया करते हैं। किन्तु उत्तम कोटि के राजाओं का चरित्र आकाश में चन्द्रमा के समान सदैव प्रकाशमान् हुआ करता है।

दृष्ट्वा राज्ञः सहजमनसा शम्भुदिव्यैक भक्ति—,
नूंनं प्रीत्या प्रणयविवशाः श्रीकरोविप्रवालः।
सद्यः मार्गे पतितमपरं प्रस्तरं तत्र नीत्वा,
रात्रौ नित्यं शिव इव चतं पूजयित्वा ववन्दे।।9।।

हिन्दी अनुवादः— सरल मन से शिव के प्रति राजा की अद्भुत भक्ति देखकर एक श्रीकर नाम का ब्राह्मणपुत्र शिव के प्रेम से पराधीन होकर, उसने रास्ते में पड़ा हुआ एक पत्थर लेकर तथा रात्रि के समय प्रतिदिन उसे शिव के समान पूजन करके उसकी वन्दना करने लगा।

नित्यं शम्भोः विविधविधिना पूजने ध्यानमग्नं,
त्यक्त्वा कामानखिल जगतः स्वामिनं प्रार्थयन्तं।
वालंदृष्ट्वा विगतजनकं भ्रातरश्चान्य कोपाद्,
वद्ध्वा हन्तुं परमविवशं सर्वथा प्रायतन्त।।10।।

हिन्दी अनुवादः– हर समय विभिन्न प्रकार से शिव के ध्यान में संलग्न रहने वाले, अन्य समस्त कार्यों कों छोड़कर समस्त संसार के अखिल कोटि ब्रह्माण्ड नायक की हर समय प्रार्थना करने वाले, पिता से रहित उस वालक को देखकर उसके अन्य भाई वान्धव क्रोध पूर्वक उसे वांधकर मारने का प्रयत्न करने लगे।

योविश्वं परिपाति नित्यनियमाद्वस्त्राादिभिः सततं,
शत्रुभ्योऽप्यभयं ददाति सुतवत्प्रायत्रिसन्ध्यं स्वयं।
यस्यैकान्त सरोष हुंकृत स्वरैः कालोऽपि यातः क्षयं,
तस्यैकं सुतवत्सुसेवकममुं कः हन्तुमेवं क्षमः।।11।।

हिन्दी अनुवादः– जो समस्त संसार की तीनों संध्याओं में वस्त्र भोजन आदि के द्वारा सदैव रक्षा किया करता है। तथा शत्रुओं से भी पुत्र के समान विश्व को सदैव अभयदान देता रहता है। एकान्त में क्रोध के हुंकार भरे स्वरों से स्वयं काल भी जिससे विनाश को प्राप्त हो गया। उसके पुत्र के समान एक सेवक को भला कौन मार सकता है।

विनाशकालः समवेक्ष्य वत्सलः,
निमीलिताक्षः शिवध्यानतत्परः।
अथाह्वयत्सोऽपि ततो जगत्पतिं,
यथागजेन्द्रः गरूड़ध्वजं पुरा।।12।।

हिन्दी अनुवादः– उस ब्राह्मण बालक श्रीकर ने जव अपने विनाश का समय सन्निकट आता हुआ देखा। तो वह अपने दोनों नेत्र वन्द करके शिवजी के ध्यान में तल्लीन होकर बैठ गया। तदनन्तर उस बालक ने अपने संरक्षक भगवान् भोलेनाथ को पुकारा जैसे गजेन्द्र ने तालाब में ग्राह से रक्षा करने के लिये भगवान् विष्णु को पुकारा था।

विसृज्य सर्वं गिरिवाहनादिकं ,
समाययौ तत्र क्षणे त्रिलोचनः।
समस्तशक्तिं प्रणिधाय चान्तरे,
विवेश सद्यः निज प्रस्तरं तदा।।13।।

हिन्दी अनुवादः— उस ब्राह्मण बालक श्रीकर की पुकार सुनकर शिवजी उस हिमालय पर्वत एवं अपनी सवारी नन्दी को वहीं छोड़कर एक क्षण में उस बालक के पास आ गये। समस्त लोकों की शक्ति को अपने अन्दर समाविष्ट करके उन्होंने उस पत्थर में प्रवेश किया।

चचाल सद्यः शिवप्रस्तरं पुरा,
जगर्ज पश्वान्नभमेघसदृशं।
ववन्ध तेनाशु समस्त दुर्जना,
नगस्त्यशापन्निशिखेचरानिव।।14।।

हिन्दी अनुवादः— शिवजी के प्रवेश कर जाने से वह छोटा पत्थर पहले चलायमान हुआ। इसके वाद आकाश के नवीन वर्षाकाल के मेघ के समान गरजने लगा। उस शक्तिशाली पत्थर ने इसके बाद उन दुष्टों को या वालक की हत्या करने के इच्छुक भाईयों को उसी प्रकार बांध लिया जैसे अगस्त मुनि के शाप से रात्रि के समस्त तारागण दृढ़ होकर प्रतिवन्धित कर दिये गये थे।

समीक्ष्य साक्षात्प्रणवं पिनाकिनं,
ननाम तं हृष्टतनूरुहः क्षणे।
स विप्रवालः सुविचिन्त्य तद्वलं,
जगाद तं रूद्धसगदद्ं वचः।।15।।

हिन्दी अनुवादः— उस बालक श्रीकर ने वेदो में ओंकार के समान साक्षात् शिवजी को सामनें देखकर, स्वंय रोमांचयुक्त प्रशन्न मन से उन्हे प्रणाम किया। इसके वाद उनकी दिव्य शक्ति को प्रत्यक्ष देखकर, या समझकर वह अवरूद्ध कंठ से गद्गद् होकर वोला।

अहो! जगद्धाम विभेमि संततम्,
वलावलेपादरूणेक्षणैः प्रभो!
विसृत्य विक्रान्तवपुर्यमान्तकं,
प्रदेहि सौम्याश्रित दर्शनं शिवम् ।।16।।

हिन्दी अनुवादः– हे संसार के परम धाम शिवजी! आपके दर्पयुक्त इन लाल लाल आंखों की चितवनों से मैं लगातार भयभीत होता जा रहा हूँ। अतएव आप अपने यमराज के विनाशक एवं विकराल भयानक शरीर को त्यागकर या वदलकर सरल प्राणियों को आश्रय प्रदान करने वाले शिव रूप को धारण करके मुझे दर्शन देने की कुपा करे।

निशम्य भक्तस्य सुधान्वितं वचः,
जहास त्रौलोक्य पतिस्त्रिलोचनः।
नियम्य शक्तीन् क्षणशः क्षमापति–,
र्जहार मायामृगवद्धरेरिव।।17।।

हिन्दी अनुवाद :– उस श्रीकर के अमृत से अभिषिक्त वचनों को सुनकर तीनों लोकों के एकमात्र संरक्षक, त्रिनेत्रधारी भगवान् भोलेनाथ पहले तो हंसने लगे। इसके वाद उन्होंने अपनी समस्त शक्तियों को समाविष्ट करके, एक क्षण में विश्वपति ने अपनी माया को उसी प्रकार हरण कर लिया जैसे भगवान् राम ने माया मृग का वन में संहार किया था।

विधायरूपं शशि शुभ्र सौभगं,
मनोहरं वालमृगाङ्गंपेलवम्।
जटाधरं चंदन चारूचर्तितं,
विलोक्य वालोऽपि मनोमुदंदधे।।18।।

हिन्दी अनुवादः– श्वेत चन्द्रमा के समान परम सुन्दर एवं वाल चन्द्रमा को सिर पर धारण करने से नितान्त कोमल तथा मनोहर स्वरूप को धारण करके, चन्दन को मस्तक पर धारण किये हुये जटाधारी शिव के परम सौम्य रूप को देखकर वह वालक मन में वहुत प्रशन्न हो गया।

मनोगतं चास्य विवेद तत्क्षणं,
सविस्मयोद्रेक भरेण चक्षुषा।
सवाल सारङ्ग निभं द्विजांडकुरं,
विलोक्य चान्तर्न मुदंदधे हरः।।19।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी ने इस वालक के मनोवांछित भावों को तुरन्त पहचान लिया। इसके वाद उन्होंने हिरन के छोटे वच्चे के समान अबोध ब्राह्मण बालक को आश्चर्य एवं संशय की दृष्टि से देखकर पुनः शिवजी ने अपने अन्तःकरण में आन्नद का अनुभव नहीं किया। अर्थात् वाद में उन्हें कुछ दुख हुआ।

विदन्ति देवाः न नराः न किन्नराः ,
न वेदवेदांग विदःविदुःकथं।
सवेत्तिवालः तिर्यगविलोचनः,
स्वरूपमेवंननु वोधितुं मुहुः।।20।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी ने मन में विचार किया , कि मुझे अथवा मेरे स्वरूपको देवता, मनुष्य, किन्नर, एवं वेदान्तों के ज्ञाता तो भला मुझे जान भी नहीं सकते किन्तु यह बालक तिरछी आखों वाला मुझे पहले से भली प्रकार पहचानता है क्या। जो मेरा परिज्ञान करने के लिए मेरे स्वरूप को बार–बार देख रहा है। इसमें कुछ संदेह अवश्य है।

करेण किंचित्परिभृज्यतं मुहु–
स्ततः विलोलाक्षिपथेन वीक्ष्यतं।
जगाद सद्यः जगतीपतिः पुन–
स्तथाङ्कमावेश्य घ्रुवं पुराहरिः।।21।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी ने अपने हाथ से उस बालक को शुद्ध करके इसके बाद उसे अपने नेत्रों की चंचल पक्ष्म पंक्तियों के मार्ग से बार–बार देखकर, अपने गोद में बिठाकर उसी प्रकार कहना प्रारम्भ किया। जैसे भगवान् विष्णु ने ध्रुव को अपनी गोद में बिठाकर बार–बार समझाया था।

अहो!विलोलाक्ष!कथं ह्रणीयसे,
तवाद्भुतं बह्मसमुद्रवं वपुः।
विलोकितं सर्वमिंद विपत्क्षणे,
निवार्य गन्तुं न प्रवर्तते मनः।।22।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी उस बालक से बोले। हे चंचल नेत्रों वाले बालक ! अब तुम क्यों लज्जित हो रहे हो। तुम्हारा शरीर कितना सुन्दर ब्राह्मण से उत्पन्न एवं कोमल है। तुम्हारी विपत्ति के क्षण मैंने पहले ही देख लिये थे । उन्हें दूर करने के बाद भी तुम्हारे पास से अब जाने की इच्छा भी नहीं ही हो रही है।

न मेडरविंदाक्ष। विदूयते मनः
प्रपन्नता नैव तनुं प्रवाधते।
निशम्य भक्तस्यमुखेन दुःखतः
दुनोति मृत्युंजय नाम केवलं।।23।।

हिन्दी अनुवादः– हे कमल के समान नेत्रों वाले! मेरा मन मुझे दुःखी नहीं करता। तथा न दयनीय अवस्था ही मेरे शरीर को वेदना पहुँचाती है। किन्तु दुःखी मन से भक्त के मुख से निकला हुआ मृत्युंज्जय का नाम सुनकर मुझे सदैव कष्ट होता रहता है।

यदा कदा चात्मनिवेदनं मुहु–,
स्तवार्ति नाशाय विहाय वाहनं।
निकेतनं चापि ससर्ज सत्वरं,
पदातिरेतत्समुपस्थितः द्रुतं।।24।।

हिन्दी अनुवादः– हे वत्स! जव मैंने तुम्हारी पुकार सुनी, उसी समय तुम्हारें कष्टों का विनाश करने के लिये अपना आवास एवं अपना वाहन छोड़कर वड़ी शीघ्रता से दौड़ कर पैरों चलकर शीघ्र ही तुम्हारें समक्ष उपस्थित हो गया। वस्तुतः भक्त पर भगवान् का कितना आत्मिक अनुराग होता है, इसी तथ्य को शिवजी वता रहे हैं।

स्वभक्त हेतोः मम विश्व वैभवं,
प्रभुत्वंमेतत्सततं भृशं तपः।
नृसिंहवच्चात्मतनोर्विपर्ययं,
विपत्पर्थ तत्परिवर्तते क्षणं।।25।।

हिन्दी अनुवादः– हे वत्स! अपने भक्त के लिये मेरा सांसारिक वैभव मेरी प्रभुता, तथा लगातार की गयी तपस्या, नृसिंह के समान शरीरिक परिवर्तन यह सब कुछ विपत्ति के समय मेरा सारा कलेवर एक क्षण में ही बदल जाया करता है। अर्थात् भक्त के लिए मुझे जैसीं आवश्कता होती है। वैसे ही मैं अपना रूप वदल लेता हूँ।

इत्येभिः शिवसौम्यसंगत सुधासिक्तैर्वचोभिस्ततः,
नित्यानन्दनिमग्न चिन्तन परः वालः स्वयं श्रीकरः।
प्रायः शंकर सेवितं पुनरसौ चादाय तत्प्रस्तरं,
दिव्यं तत्र वनं जगाम सहसा यत्रस्थितः तत्प्रभुः।।26।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार शिवजी के द्वारा समुचित रूप में अमृत तुल्य वचनों से, यह वालक श्रीकर प्रतिदिन आनन्द पूर्वक शिवजी का चिंतन करता हुआ, तथा शिवजी के द्वारा सेवित उस पत्थर को लेकर उस आलौकिक वन को चला गया। जहाँ उज्जयिनी के महाकाल वन में उसके स्वामी निवास करते थे।

प्रपूजयन् नित्यमसौ जगत्पतिं,
ससर्ज सद्यः त्वशनादिकाः क्रियाः।
निधायप्रीत्या सुमनोमनोहरं,
व्यचिंतयत्केवलमात्मवल्लभं।।27।।

हिन्दी अनुवादः– तत्पश्चात् वह वालक श्रीकर संसार के स्वामी शिवजी की नित्य नियमपूर्वक पूजा करता हुआ उसने एक दिन भोजन आदि समस्त क्रियायें करना भी वन्द कर दिया। वह केवल अपने मन को अपने अतिशय प्रिय प्राणनाथ शिवजी में संलग्न करके केवल उन्हीं के चिंतनमें तन्मय हो गया।

अमन्यदन्येऽपि समस्त वान्धवाः,
ज्वलज्जगद्वन्हिषु दारू संचयः।
निमज्य स्वांतः करणं पिनाकिनाः,
कृपालवालाम्बुपतंगवत्तदा।।28।।

हिन्दी अनुवादः– उस वालक ने अपने समस्त भाई वान्धवों को सांसारिक दुःख रूपी अग्नि में जलते हुये लकड़ियों के ढेर के समान समझ लिया। अंत में उसने अपने अतः करण को शिवजी की कृपा रूपी जल से भरे हुये थलहों में पंतगों के समान डुवाकर आंनद का अनुभव करने लगा।

विवेद विश्वस्य क्षणे निसंगता,
भवात्यसंदोहलयं च ददृशे।
निधाय पोतंह्वदि चादभुतं शनैः,
पिनाकिनः ध्यानधुरं महार्णवे।।29।।

हिन्दी अनुवाद :–उस बालक ने संसार की असारता का एक ही क्षण में परिज्ञान कर लिया। अतएव उसने अपने ह्वदय में शिवजी का ध्यान रूपी जहाज को धारण करके संसार सागर को पार करने के लिए अपने मन में प्रत्यक्ष रूप से सांसारिक प्रलय को देखा।

अथैकदा कोप कषाय कान्तिना,
विभित्सया कोऽपि समागतासुरः।
ततान सद्यः वदनं क्षणे क्षणे,
भयं न लेभे पुनरत्र श्रीकरः।।30।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद एक दिन उस बालक को भयभीत करने की इच्छा से कोई राक्षस वहॉ आ पहुँचा। उस राक्षस ने क्षण क्षण अपना मुख बढ़ाना प्रारम्भ किया। किन्तु वालक श्रीकर उससे तनिक भी भयभीत नहीं हुआ।

पराभवं वीक्ष्य तदात्मनोऽसुरः,
ससर्जमायाः विविधाः मुहुर्मुहुः।
तथापि साक्षाच्छिव ध्यानतत्परः,
विलोकयामास न ताः जितेन्द्रियः।।31।।

हिन्दी अनुवादः— तव उस राक्षस ने अपना अपमान समझकर अनेक प्रकार की मायावी विभीषिकाओं की सृष्टि प्रारम्भ की। किन्तु भगवान् अखिल गुरु भोलेनाथ के ध्यान में मग्न उस वालक ने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के कारण उन चमत्कारों को विल्कुल नहीं देखा।

यं लोके परिपाति दिव्यकृपया साक्षात्कपर्दीश्वरः,
कालस्तं वहिरन्तरे न कतिचिद्यत्नैश्च हन्तुं क्षमः।
इत्यालोच्य द्विजांकुरः दृढ़मतिः भूयः शिवं सत्वरं,
बब्रे ध्यानपरायणः पुनरसौ हा!हा!प्रभो! रक्षमां।।32।।

हिन्दी अनुवादः— इस संसार में साक्षात् भोलेनाथ जिसकी रक्षा करतें हैं।उसे काल भी भीतर या बाहर किन्हीं कारणों अथवा यत्नों से भी नहीं मार सकता। ऐसा सोचकर उस ब्राह्मण वालक ने दृढ़ निश्चय करके, तथा शिवजी के पुनः ध्यान में दत्तचित्त होकर भोलेनाथ से वोला हे स्वामी! अव मेरी रक्षा करो।

भीतं विलोक्य निजभक्तमसौ पुरारिः,
दध्यौ क्षणं द्विजसुतं विवशो यतीन्द्रः।
आहूय तं मुहुरहो! ननु धावमानः,
बब्रे च तं विरम वत्स! समागतोऽस्मि।।33।।

हिन्दी अनुवादः— शिवजी ने जव अपने भक्त को भयभीत होता हुआ देखा। तव उन्होंने या योगियों मे परम श्रेष्ठ शिवजी ने उस ब्राह्मण वालक का एक क्षण ध्यान किया। इसके वाद उसे वार वार पुकार कर दौड़ते हुए उससे वोले। हे वत्स एक क्षण रूको मैं अभी आ रहा हूँ।

विलोक्य को दण्डधरं, गजाजिनं,
त्रिशूलपाणिं च मृगेन्द्रकन्धरम्।
करालकालभवपुर्जगत्पतिं,
ननाम तं वालमरालवत्सुतः।।34।।

हिन्दी अनुवादः— हाथी का चर्म धारण करने वाले, धनुषधारी, एक हाथ में त्रिशूल लिये हुए, सिंह के समान कंधों वाले, कराल काल के समान शरीर

वाले संसार के स्वामी भगवान् को देखकर हंस के बालक के समान कोमल उस ब्राह्मण बालक श्रीकर ने शिव जी को प्रणाम किया।

ध्यात्वा चराचरगुरं द्विजवालवत्सः,
निर्भीकसिंह शिशुसदृशसंवभाषे।
जानासिकिंन मम रक्षकस्वामिनंवा,
कालं निहन्ति सहसा शिवशूलपाणिः।।35।।

हिन्दी अनुवादः– उन जगदीश्वर का ध्यान करके, निडर शेर के बालक के समान वह श्रीकर ऐसे दानव से बोला। क्या तू मेरे रक्षक स्वामी शिवजी को नहीं जानता। वे सहसा काल को भी एक क्षण में मार डालते हैं।

दुर्दान्त! दैवकृपया न विलोकितोऽसि,
नूनं प्रजल्पसि वृथाभयमाददानः।
लोकेऽधमाः निजवलेनमदान्धमन्ताः,
जानन्ति नैव हि वलं मतिरूत्तमानाम्।।36।।

हिन्दी अनुवादः– बालक बोला – हे दुष्ट निशाचर! विधाता की कृपा से तूने अभी तक उनके दर्शन नहीं किये। इसीलिये मुझे भयभीत करता हुआ तू वक रहा है। क्योंकि संसार में नीच लोग अपनी शक्ति के मद से मतवाले होकर, उत्तम कोटि के लोगो की शक्ति एवं वुद्धि का परिज्ञान नहीं कर पाते।

नूनं नवेत्सि वत! देवगुरूं पुरारिं,
हन्तुं स एव निपुणः कलिकालभीतिं।
मुक्तिं ददाति मृगशूकरकूकरूणां,
वेदाः वृजन्ति करूणालयमाश्रयं ते।।37।।

हिन्दी अनुवादः– वड़े खेद की वात है कि तुम उन महेश्वर शिव को नहीं जानते। वह कलियुग के भीषण भय को दूर करने में भी सिद्धहस्त हैं। तथा वे हिरण, सुअर, कुत्ते आदि पशुओं को भी मुक्त कर देने वाले हैं। चारों वेद उन भगवान् भोलेनाथ की जो, वस्तुतः दया के सागर हैं। उनकी शरण प्राप्त किया करते है।

सोऽयं शिवः शशिधरः जगदान्तरात्मा,
ब्रह्माहरिश्च नहिवक्तुमलं वलंवा।
देवादिदेव ननु विश्वपतिः कपर्दी,
सद्यः प्रयान्ति विवुधाः शुचि तं शरण्यम् ।।38।।

हिन्दी अनुवादः– वह शिवजी चन्द्रमा को धारण करने वाले तथा समस्त संसार की आत्मा हैं। ब्रह्मा एवं विष्णु भगवान् भी उनकी शक्ति का कभी वर्णन नहीं कर सके। वे शिवजी देवताओं के भी स्वामी हैं। विद्वान् लोग भी शोक की अवस्था में उन्हीं की तुरन्त शरण प्राप्त किया करते हैं।

वालस्य दिव्यवचनं वहुधा निशम्य,
सद्यः निधाय हृदये सचदानवेन्द्रः।
दध्यौ क्षणं शशिधरं करूणालयं वा,
भीतः जहास शिवसदृश सादृहासः।।39।।

हिन्दी अनुवादः– उस वालक के आलौकिक वचनों को बार बार सुनकर उस राक्षस राज ने शिवजी को अपने हृदय में तुरंत धारण करके शिवजी का एक क्षण ध्यान किया। फिर भयभीत होकर शिवजी के समान वड़े वेग से अट्टहास करता हुआ जोर जोर से हंसने लगा।

ततश्च वालः शिवध्यानतत्परः,
जुहाव तं भूतपतिं मुहुर्मुहुः।
जगाद भूयोऽपि निसाचरं ततः,
क्षणं प्रतीक्षष्व जगत्पतिं पुनः।।40।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद शिवजी के ध्यान में दत्तचित्त उस वालक ने शिवजी का फिर से वार वार आवाहन किया। फिर उस शक्तिशाली राक्षस से वोला! हे राक्षस! एक क्षण भोलेनाथ का इंतजार कर। क्योंकि अव तेरी मृत्यु का समय विल्कुल सन्निकट आ चुका है।

कुद्धं वीक्ष्य जगत्पतिं शशिधरं लोलंचलत्कुण्डलं ,
विभृ,द्वामकरे त्रिशूलमपरे कृष्णं दधत्कार्मुकं ।
सार्धसिन्धुसुता समस्त मुनिभिः देवासुरैः केशवः ,
तत्रागत्य स्वयं विवेकजलधिं बब्रे शिवं शंकितः।।41।।

हिन्दी अनुवादः—क्रोध के कारण जिसके दोनों कुंडल हिल रहे थे। वायें हाथ में त्रिशूल धारण किये हुये,तथा दूसरे हाथ में काले रंग का विकराल धनुष धारण किए हुए, ऐसी क्रोध की भीषण मुद्रा में संसार के स्वामी शिवजी को देखकर लक्ष्मीजी एवं समस्त मुनियों देवताओं तथा दैत्यों के साथ विष्णु भगवान् ने वहां आकर विवेक के सागर भगवान् भोलेनाथ से आशंकित होते हुए कहा।

अहो!जगन्नाथ!जगच्चराचरं
विहाय किंचाध त्वया विचिंतितम्।
चलत् त्वदीयं भृकुटिं विलोक्य मां ,
प्रवाधते चंचल चेतसा क्षयं।।42।।

हिन्दी अनुवादः—हे चर एवं अचर के स्वामी! समस्त चराचर संसार को त्यागकर आज तुमने क्या सोच रखा है। आप की चंचल भृकुटियों को देखकर मेरे चंचल मन में संसार का विनाश ही पीड़ित कर रहा है। अर्थात् क्या आपने आज संसार का विनाश करने का विचार कर लिया है।

विनाश काले मुनयः महोरगाः ,
दिवौकसाः चात्र समस्तखेचराः।
अनन्यजन्मान्तर पुण्य संचया— ,
न्मुहुर्लभन्ते पदमक्षयं विभोः!।।43।।

हिन्दी अनुवाद :— हे जगन्नियंता ! बिनाश के समय मुनिजन, उरगण, देवतागण तथा आकाश मंडल पर बिचरण करने बाले समस्त नक्षत्रगण, सैकड़ों जन्मों के पुण्य का संचय हो जाने से आपके अबिनाशी पद को प्राप्त किया करते हैं।

इति विविधवचोभिःसंस्तवैःस्तूयमानः ,
पुनरपि च गिरीशं सान्त्वयनं तं मुरारिः।
तदपि विकट वेषे तं स्वयं वीक्ष्यमाणंः
द्विप इवच मृगेन्द्र काल क्रोधाग्नि दग्धः।।44।।

हिन्दी अनुवादः—इस प्रकार अनेक वचनों एवं स्तुतियों के द्वारा स्तुति करते हुए भगवान् विष्णु फिर भी शिवजी को शान्त करते हुए शान्त न कर सके।

इसके वाद भीषण वेश में शिवजी स्वयं उस राक्षस को देखते हुए उसी प्रकार काल के समान क्रोध रूपी अग्नि में जलने लगे जैसे सिंह हाथी को देखकर काल वर्ण हो जाता है।

ततश्च कोपाग्नि ज्वलत्पिनाकिनं ,
विलोक्य भूयः मुमुदे स दानवः।
स्वमुक्तिहेतुं सहसा जगत्पतिं ,
न नाम तेनात्र मनस्थितं शिवं।।45।।

हिन्दी अनुवादः—इसके वाद क्रोध से जलते हुए शिवजी को देखकर वह राक्षस फिर भी अपने मन में प्रसन्न होने लगा। अपनी मुक्ति का कारण शिवजी को समझकर उसने अपने मन में स्थित शिवजी को मन में प्रणाम किया।

खड्गं निधाय विवशः पुनरूच्छवसन् सः,
प्रीत्या ददर्श समरे स पिनाकपाणिं।
वब्रे स धैर्यमवलम्ब्स पुनर्गिरीशं ,
वीरस्य भूषणमिदं खलु वीरवेषः।।46।।

हिन्दी अनुवादः—तलवार लेकर वह राक्षस गरम–गरम श्वासें भरता हुआ , पहले युद्व भूमि में उसने धनुषधारी शिवजी को स्नेहपूर्वक देखा। इसके बाद धैर्य धारण करके वह फिर शिवजी से बोला। वीरता का वेष ही वीर पुरूष का सर्वोत्तम भूषण है।

श्रुत्वा च दैत्यवचनं स पिनाकपाणिः ,
कोपादलक्षितशरं पुनराससर्ज।
मौर्वीं निधाय सहसा धुरि मोक्तुमैच्छ–
दाचुकुशुः नभसि तं खलुदेवकन्याः।।47।।

हिन्दी अनुवादः—शिवजी ने उस राक्षस की बातें सुनकर , क्रोध के कारण अपना अलक्षित बाण निकाला। बाद में उसे धनुष की डोरी पर जैसे चढ़ाना चाहा। उसी समय आकाश में देवकन्याओं ने उन्हें धिक्कारना प्रारम्भ किया। अर्थात् वह राक्षस का रूपधारी गन्धर्व था। उसकी मृत्यु देवकन्यायें नहीं

देख सकीं।इसीलिए वे शिवजी को धिक्कारने लगीं।

इत्येवं मुहुरेव मध्य नभसा देवांग्नानां गिरा ,
श्रुत्वासोऽपि वभूव युद्ध विमुखः सद्यः भवानीपतिः।
न्यस्तंवाणमसौ विमुच्य सहसा निर्वर्ष्य भूयो दिवं ,
तस्थौ स्थाणुरिवाचलः हि भुवने भक्ति प्रियाः देवताः।।48।।

हिन्दी अनुवादः—इस प्रकार आकाश मण्डल के मध्य से अप्सराओं की बार—बार आवाज सुनकर ,देवी पार्वतीजी के स्वामी शिवजी तुरन्त ही युद्ध से. विमुख हो गये।अर्थात् उन्होंने युद्ध करना बंद कर दिया । धनुष पर चढ़ाया हुआ बाण डोरी से हटाकर, तथा फिर से आकाश की ओर देखकर, वे ठूँठ के समान चुपचाप खड़े हो गये। वस्तुतः संसार में देवताओं को भक्ति सबसे अधिक प्रिय होती है।

विचिन्त्य किन्चित्सहसा जगत्पतिः,
मुकुन्द गंभीरगिरं विभावयन्।
ततश्च दैत्येन्द्र हितं विमृश्य सः,
वभूव शान्तस्तमितेन मन्युना।।49।।

हिल्दी अनुवादः—शिवजी अकस्मात् अपने मन में विचार करके , तथा भगवान् विष्णु के गौरवान्वित शब्दों पर गम्भीरता पूर्वक सोचते हुए , एवं उस दैत्यराज के हित को बार—बार अपने आप स्वयं मन में विचार करके, रोके गये कोध के कारण तुरंत शान्त हो गये। अर्थात् फिर वे नितांत शांत मुद्रा में खड़े होकर रह गये।

ततः समक्षं समवेक्ष्य स्वामिनं,
जगाद वद्धाज्जलि दैत्य पुंगवः।
त्वमेव साक्षाज्जगतीपतिः प्रभो!,
नमन्ति त्वामेव सदा सुरासुराः।।50।।

हिन्दी अनुवादः—इसके बाद शिवजी को अपने सामने खड़ा हुआ देखकर , वह राक्षसों का स्वामी दोनों हाथ जोड़कर बोला। हे शिवजी! आप समस्त संसार के शरीर संरक्षक हैं।क्योंकि सभी देवगण एवं समस्त राक्षस लोग सदैव आप को ही प्रणाम किया करते हैं।

दासस्तवास्मि करूणाकर! मेप्रसीद ,
शापेन ते धृतमिदं त्रिगुणं शरीरम्
त्वद्दर्शनेन प्रविहायच दैत्यदेहम् ,
सद्यः प्रयामि तवधाम जगन्निवास!।।51।

हिन्दी अनुवादः—हे करूणासिंधु! मैं आपका ही सेवक हूँ। आप मुझ पर कृपा दृष्टि करें। आप के द्वारा दिये गये शाप के कारण मैंने (सत्व—रज—तम) तीनों गुणों वाला सांसारिक शरीर धारण किया है। अब आपके दर्शन से दैत्य का शरीर त्यागकर अब मैं आपके शिव लोक को प्रस्थान कर रहा हूँ। क्योंकि सारा संसार आप में ही समाहित हो जाता है।

इत्युक्त्वा प्रणिपत्यराक्षसपतिः साक्षाद्भवानीपतिं,
नेत्रोद्भिन्नहृयजस्र प्रेमपुलकैः भूयोऽश्रुविन्दून्पुरः।
संवेगादगलिता शुचांगुलिपुटैः संमार्जयन् संततम्
शम्भोःद्वंदपदंप्रणम्य मनसा सद्यः प्रतस्थे दिवम् ।52।

हिन्दी अनुवादः—ऐसा कह कर वह दैत्यराज भगवान् भोलेनाथ को प्रणाम करके, प्रेम के रोमांच से आंखों से अविरल प्रवाहित होने वाले आंसुओं तथा अधिक वेग के कारण टपकते हुए आंसुओं को अपने हाथ की उँगलियों के पुटों से लगााकर उन्हें पोंछते हुए ,तथा शिवजी के दोनों चरणों का पुनः अभिनन्दन एवं अभिवादन करके वह राक्षस शिवजी के परमधाम अथवा स्वर्गलोक को चला गया।

ततो महाकालमिमं विलोक्य सः,
द्विजात्मजोऽसौ मुमुदे मुहुर्मुहुः।
अजस्रचक्षुस्रवदश्रुविन्दुभिः,
समादरं तत्रचकार तं ह्रिया।।53।।

हिन्दी अनुवादः—इसके पश्चात् उस ब्राह्मण बालक श्रीकर ने भगवान् महाकाल भोलेनाथ को देखकर अपने हृदय में बार—बार आनन्द एवं प्रशन्नता का अनुभव किया। आंखों से लगातार बहते हुए आँसुओं की बूँदों से उसने अन्त में शिवजी का लज्जित होकर बहुत समादर किया।

मनोहरं बालमृगांगवन्मुखम् ,
द्विजात्मजं चात्र विलोल कुन्तलं।
सगद्गदं नीलसरोजनिह्नतम्,
निमीलिताक्षं विदधे पिनाकिना।।54।।

हिन्दी अनुवादः—इसके बाद वाल चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाले, जिसके कोमल एवं घुघराले वाल वायु के कारण हिल रहे थे। रोने के कारण जिसका कंठ गद्गद् हो गया था। नीलकमल के समान छिपी हुयी दोनों आखें मूंदकर खड़े हुये, उस ब्राह्मण बालक श्रीकर को भगवान् भोलेनाथ ने पकड़ लिया।

निधायचांके सहसा जगत्पतिः
रूरोद सद्यः विलप्रन् महेश्वरः।
समाश्वसन्तं निजभक्तविह्वलं,
ददर्श दूराद्विपिने स नारदः।।55।।

हिन्दी अनुवादः—इसके बाद उस बालक को अपनी गोद में बिठाकर , संसार के स्वामी अपने व्याकुल भक्त को पुनः आश्वस्त करते हुए शिवजी को उस जंगल में काफी दूर से नारदजी ने देख लिया।

नृसिंहवच्चात्र कृपात्म विह्वलः,
दुनोति लोके सहसा जगत्पतिः।
अहो! अमीषां विपिने विपन्नता ,
प्रवाधते नैव कथं हिदेहिनाम्।।56।।

हिन्दी अनुवादः—नारदजी ने सोचा कि शिवजी आज नृसिंह भगवान् के समान अपनी दया से स्वयं विह्वल अर्थात् वेचैन दिखायी दे रहे हैं। अरे! जब इन देवताओं को वन में सांसारिक माया से उत्पन्न व्याकुलता पीड़ित कर रही है। तो भला शरीरधारियों को क्यों नहीं पीड़ित करती होगी। अर्थात् सांसारिक ममता एवं मोह में जीवधारी वंचित नहीं रह सकते।

विचिन्त्य किंचिद्विधि वत्स नारदः ,
ननाम लीलाधरपाद पंकजम्।

ततो विलोक्याद्भुतं शंसयं मुने-
रदिद्रवच्चात्म महावने शिवः।।57।।

हिन्दी अनुवादः—इस प्रकार नारदजी ने कुछ सोचकर समस्त संसारमें-अपनी लीला दिखाने वाले शिवजी के चरण कमलों को प्रणाम किया। इसके बाद नारदजी के हृदय में कुछ संदेह समझकर शिवजी अपने महाकाल नामक वन में करूणा से द्रवित होने लगे।

तंचालोक्य विषाद विक्लव शिवं स्वर्गान्महेद्रादयः
देवाश्चाप्सरसां कुलैरपि समं वेगाद्भवं भेजिरे।
पश्चादत्रविशालसिंह सहिता मध्येच नन्दीश्वरं ,
नीत्वा तत्र समागता पुनरहो! बव्रे गिरीशं शिवा।।58।

हिन्दी अनुवादः—शिवजी को महाकाल वन में व्याकुल देखकर समस्त अप्सराओं तथा देवताओं के साथ इन्द्र आदि सभी देवगण स्वर्ग से बड़ी शीघ्रता से पृथ्वी की ओर चल पड़े। इसके वाद विशालसिंह के साथ मध्य में शिवजी के वाहन नन्दीगण को लेकर वहाँ पहुँच गये। वाद में पार्वतीजी ने भोलेनाथ से निवेदन किया।

त्रिलोकचिन्ताव्यथितैकः चेतसां ,
भवादृशां नैव ध्रुवं मनोदशा।
नज्ञायते कुत्र कथं च वेधसा ,
भयाच नाद्यावधि संततं रहः।59।

हिन्दी अनुवादः—हे स्वामी! तीनो लोकों की चिन्ता करने वाले आप जैसे महापुरूषों की मनोवृत्ति आज तक न तो ब्रह्माजी ही जान सके। और न एकान्त के समय में कब, कैसी है इस प्रकार मै भी न जान सकी। अर्थात् आप तो बहुत ही अजीव हैं।

स्वमायया चात्र निवद्ध चेतसां ,
चलद्भिर्भिनाश्रय लक्ष्यते मतिः
तथापि तेभ्यो नटवच्च लीलया ,
सुहृज्जनाश्चापि कथं न विभ्यति।।60।।

हिन्दी अनुवादः–हे स्वामी! अपनी माया के द्वारा मोहित हृदय वाले व्यक्तियों की वुद्वि चंचल एवं नितांत आकर्षण युक्त हो जाया करती है। फिर भी नट के समान उनकी लीला के कारण, उनके मित्रगण् अथवा भाई वान्धव, उनसे क्या भयभीत नहीं होते। अर्थात् ऐसे व्यक्तियों से सभी भयभीत रहा करते हैं।

अथाशु तस्मै सुमनोऽमिवाञ्छितं ,
वरं प्रयच्छात्महितैषिणं पुनः।
गिरेरशून्यं च निवासकेतनं
कुरूष्व तन्नाथ! मनोनिवर्हणम्।।61।।

हिन्दी अनुवादः–हे नाथ! अब आप सबसे पहले उस ब्रह्माण बालक को मनोवांछित वरदान प्रदान कीजिये। इसके वाद अपना हित चाहने वाले पर्वतराज हिमालय पर अपने निवास स्थान को प्रस्थान करने से पहले अपनी मानसिक ग्लानि को दूर कीजिए।

इत्यावेद्य सरस्वतीव सहसा दिव्याम्वरा पार्वती ,
सद्यस्तत्र शिवं विलोक्य विवशं प्रायः मुनीनामिव।
कान्तारे धरणीं समास्थितमिमं चारव्याय वृत्तं रहः ,
देवैः सार्घमियं जगाम सदनं सिंह स्थिता चण्डिका।।62।।

हिन्दी अनुवादः–इस प्रकार शिवजी को सब कुछ बताकर, अलौकिक वस्त्रों वाली पार्वतीजी ने शंकर को मुनियों के समान पराधीन देखकर तथा उस वन में जमीन पर बैठे हुए शिवजी को, एकान्त में फिर से सारा समाधान समझाकर देवताओं के साथ सिंह पर समासीन होकर अपने निवास स्थान को प्रस्थान कर दिया।

ततस्तमालोक्य स्वतः पिनाकिना ,
चकर्ष मायाजनितं मनोमलं।
वलं समाधायविशिष्ट कौतुका–
च्चकार सद्वेदविदां गुरोरिव।।63।।

हिन्दी अनुवादः–इसके वाद शिवजी ने उस बालक को स्वयं देखकर , उसके मन में माया से उत्पन्न मनोविकार को सबसे पहले खींच लिया। इसके बाद बड़े

, कुतूहल पूर्वक ढंग से उसमें शक्ति का समावेश करके, उस बालक को सुन्दर वेदों का परिज्ञान करने वाले गुरू के समान उसे निर्मल बना दिया।

पुनस्तमालोक्य द्वित्रात्मजं शिवः ,
जगाद भूयोऽपि वशीकृतानिव।
रहस्यमेतत्परमं सुगोपितं ,
वदामि त्वामत्र भवच्छिदं मुहुः।।64।।

हिन्दी अनुवादः— इसके बाद फिर शिवजी उस बालक को देखकर उससे इस प्रकार कहने लगे, जैसे पराये वश में होने वाले व्यक्ति प्रेमपूर्वक वार्तालाप किया करते हैं। यह रहस्य नितांत छुपा हुआ है। यह वास्तव में मेरा चरित्र संसार सागर के माया जाल से व्यक्ति को मुक्त कर देने वाला है।

भवन्ति मद्भक्ति परायणाः नराः
सदैव सानिध्यमवाप्यमत्परं।
विमुच्य संसारगतागतं पुन—
र्नचाश्रयन्ते भवजन्मवन्धनम्।।65।।

हिन्दी अनुवादः— जो लोग मेरी भक्ति में तन्मय होकर जीवन व्यतीत किया करते हैं वे मेरी समीपता प्राप्त करके , संसार के गमनागमन से मुक्त होकर संसार के जन्म मृत्यु रूपी बन्धन से रहित हो जाते हैं। तात्पर्य यह है कि महाकाल ज्योर्तिलिंग् का चरित्र वस्तुतः मोक्षदायक होता है।

ये श्रण्वन्ति पठन्ति सौम्यमनसा नित्यं चरित्रंचमे ,
तेषां नैवचरूग्णता नचभयं भूयोऽपि कालादपि।
दुस्वप्नाः न भवन्ति भूतलतले नैतद्वयं शत्रुभिः,
ते जीवन्ति सदैव संततियुताः लोके मुनीनामिव।।66।।

हिन्दी अनुवादः—जो लोग मेरा चरित्र सरल मन से नित्य पढ़ते या सुनते हैं। उन्हें न तो कोई रोग होता है, और न उन्हें कभी काल से भी कभी भय लगता है। उन प्राणियों को कभी रात में बुरे—बुरे स्वप्न भी नहीं आते और उन्हें कभी भी शत्रुओं के द्वारा किसी प्रकार का भय नहीं होता। अन्त में वे लोग सदैव पुत्र—पौत्र आदि से सम्पन्न होकर पृथ्वी पर मुनियों के समान

जीवन व्यतीत किया करते हैं।

खिन्नं पुनर्द्विज सुतं समवेक्ष्य शम्भुः ,
प्रीत्याचतं परिमृशन् पुनराचचक्षे।
आनन्दवाष्पमुखमण्डल मध्यविन्दून् ,
सद्यःकरेण परिमार्ज्य शनैर्ददर्श।।67।।

हिन्दी अनुवादः—शिवजी ने फिर भी उस ब्राह्मण बालक को खिन्न देखकर, आनन्द के कारण बहते हुए अपने मुखमंडल के मध्य भाग के आंसुओं को अपने हाथ से पोंछकर उसे धीरे से देखा। फिर उसे अपने हाथ से बार–बार सहलाते हुए शिवजी ने उससे कहा।

दत्तं वत्स! मया त्वदर्थमपरं सर्वोत्तमं मत्पदं ,
ध्यानेनात्र तपोभिरन्यमुनयः वा०छन्ति यं योगिनः।
कल्पान्तेऽपि मनीषिणः पुनरहो! ज्ञानेन वेदान्तिनः ,
ध्यायन्तोऽपि न प्राप्नुवन्ति सततं लोकंच मे त्वंवृज।।68।।

हिन्दी अनुवादः—शिवजी बोले—हे बेटा श्रीकर! मैंने तुम्हें अपना सर्वोतम एवं परम अलौकिक पद प्रदान कर दिया है। जिसे अन्य मुनिजन, तथा योगीजन, ध्यान एवं तपस्या के द्वारा प्राप्त करने की अभिलाषा किया करते हैं। किन्तु विद्वान् एवं कविजन तथा वेदान्त के ज्ञाता ज्ञान के द्वारा मेरा वह दिव्य पद प्रलय के बाद तक प्राप्त नहीं कर पाते। उस परमं धाम को तुम प्राप्त करो।

इत्युक्त्वा द्विजसूनवे शशिधरः दत्वावरं वांछितम् ,
ज्योंतिलिंग्मसौ करेण सहसा पस्पर्श वालं तथा।
लोकं तं पुनरात्मनः सरमसं संप्रेष्य भक्तं स्वतः ,
योगेनात्म पथेन सौम्यविधिना सद्यः प्रतस्थे गिरिम्।।69।।

हिन्दी अनुवादः—ऐसा कहकर शिवजी उस ब्राह्मण बालक को अपना अभिलषित वरदान देकर, उन्होंने अपने हाथ से सर्वप्रथम उस महाकालजी के ज्योतिलिंग, का तथा इसके वाद में उस बालक का स्पर्श किया। तदनन्तर उस अपने भक्त श्रीकर को शीघ्रता से अपने परमं धाम को भेजकर, अपनी योगक्रिया के सरल

मार्ग से तुरन्त हिमालय या कैलाश पर्वत को प्रस्थान कर दिया।

फलकपुर निवासी विप्रवंश प्रदीपः ,
द्विजगुरूजन सेवी शम्भुसन्नामधेयः।
सकलजगद्धेतो दर्पणं चातिश्रेष्ठं ,
लिखितमिह पुरारेप्रीतिभाप्तुं मयैव।।70।।

हिन्दी अनुवादः—उ0प्र0 के फर्रूखाबाद, नामक जिले के निवासी ब्राह्मण वंश में उत्पन्न होने वाले , ब्राह्मणों , तथा गुरूजनों के सेवक , आचार्य शम्भूदयाल अग्निहोत्री" ने समस्त संसार के हित के लिए , तथा भगवान भोलेनाथ का सच्चा स्नेह प्राप्त करने के लिए , द्वादश ज्योतिर्लिंग् दर्पण" नाम का परम अलौकिक ग्रंन्थ रत्न लिखा है।

इति श्री द्वादश ज्योतिर्लिंग् दर्पणस्य तृतीयः सर्गः समाप्तः—

—इति महाकाल निरूपणम्—
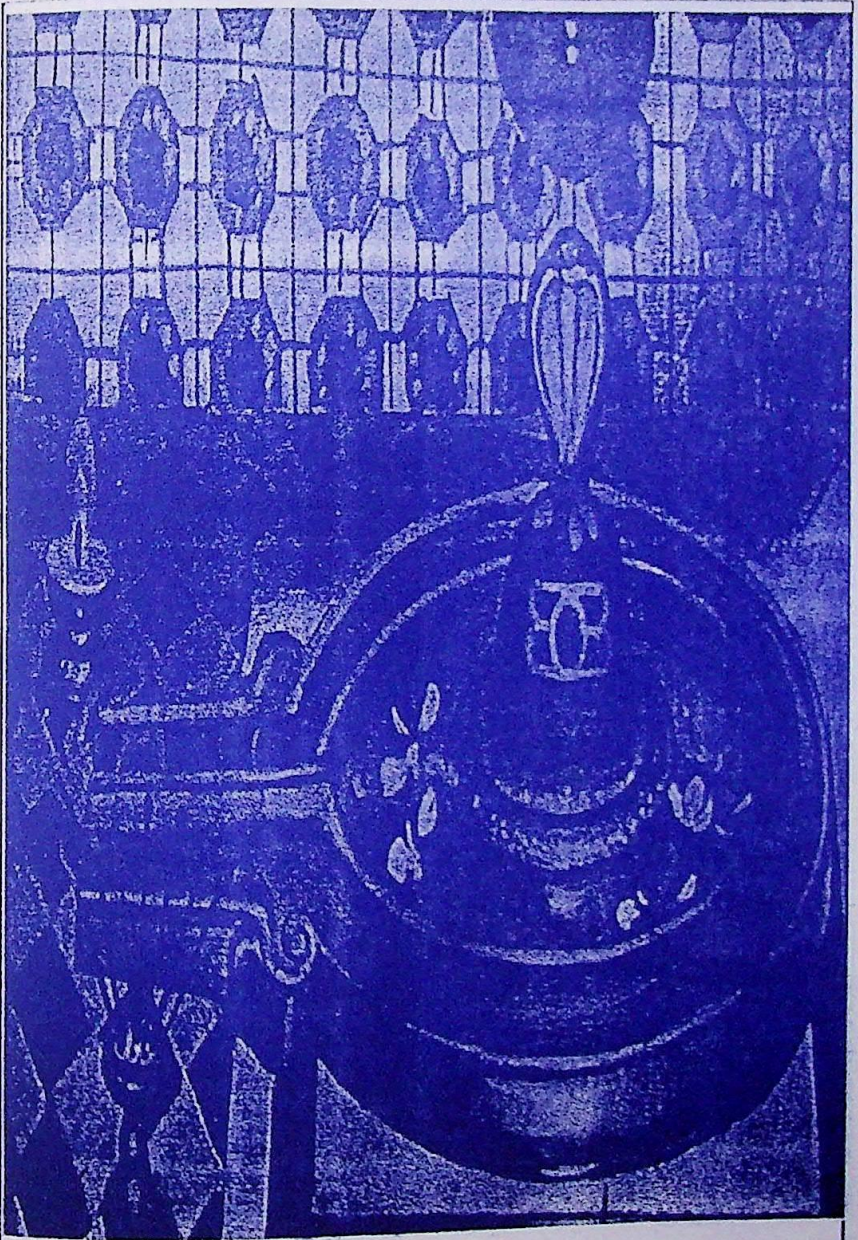
श्रीओंकारेश्वरम्

अथ श्री द्वादशज्योतिर्लिग् दर्पणस्य चतुर्थः सर्ग

– ओंकारेश्वरम् –

यं संपूज्य सुरासुराः मुनिजनाः वेदेषु वेदान्तिनः ,
शैवाः वौद्धमरूद्गणः गुणनिधिं पश्यन्ति लोकेनते।
तत्वं गूढ़मनामयं हि प्रणवं ओकारवत्संततं ,
प्रायः ब्रह्मनिरीह कारणपरं वन्दे चज्योतिर्मयं।।1।।

हिन्दी अनुवादः—देवगण ,असुरगण ,मुनिजन ,वेदों में वेदान्तीगण ,शैव वौद्व मरूद्गण भी जिसकी पूजा करके संसार में उस गुणाकर का दर्शन नहीं कर पाते। ऐसे परम गूढ़तत्व, वेदों में ओंकार के समान निहित रहने वाले निर्विकार तथा परम प्रकाशवान, उस परम् कारण ब्रह्म, भगवान् ओंकारेश्वरनाथ शिवजी की मैं वन्दना करता हूँ।

मान्धाता च महीपतिः कृतयुगे जातास्ततो भारते,
लोकेऽयं रघुवंश भूषणमणिस्तद्विश्रुतः भूतले।
तेनैवात्र समाःसहस्र तपसा प्रासाद्य भूयः शिवं ,
ज्योतिर्लिग्मिदं चकार भुवने ओंकारमज्छन्दसां।।2।।

हिन्दी अनुवादः—सतयुग में मान्धाता नाम का एक चकवर्ती राजा भारत में उत्पन्न हुआ था। रघुवंश में मणि के समान यह समस्त भूमण्डल में प्रसिद्ध हुआ था। उसी ने यहाँ हजारों वर्ष कठोर तपस्या करके तथा शिवजी को प्रशन्न करके वेदों में ओंकार के समान यह ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग् की स्थापना की थी।

अथैकदा धर्मधनार्जितः नृपः
चचारसंध्या रूणलोचनः भुवं।
विभिन्नयज्ञैर्न यदा शर्म ययौ ,
ततः प्रपेदेशरणं पिनाकिनः।।3।।

हिन्दी अनुवादः—इसके बाद धैर्यपूर्वक धन को अर्जित करने वाला , एवं संध्या काल के सूर्य के समान नेत्रों वाला यह राजा प्रथ्वी पर विचरण करने

लगा। अनेक यज्ञ एवं अनुसंधानों के द्वारा जब उसे शान्ति न मिल सकी तब वह शिव की शरण में पहुँच गया। वस्तुतः शिवजी की शरण शान्ति कारक है।

समां:सहस्रं परिपूजयन् हरं ,
दर्दश रूपं न तथापि भूपतिः।
ततो विषण्णः व्यथितैकचेतसा ,
चकार भूयोऽपि स दारूणंतपः।।4।।

हिन्दी अनुवादः—हजारों वर्षों तक शिवजी की पूजा करते हुए राजाने फिर भी शिवजी के वास्तविक रूप को नहीं देख पाया। तब उसने अपने व्यथित हृदय से दुःखित होकर कठोर तपस्या करना प्ररम्भ किया।

ततोहि चैकांधिकनिष्ठया स्थितः,
दिगम्बरं तं सततं जपन्नसौ।
ययौ न निद्रां कथमप्यहर्दिवं ,
पपौ निशायाममृतं कलानिधेः।।5।।

हिन्दी अनुवादः—इसके बाद यह राजा अपने पैर की सबसे छोटी उँगली पर लगातार शिवजी का जाप करता हुआ खड़ा हो गया। उसने कभी रात दिन शयन नहीं किया। अन्त में वह रात के समय चन्द्रमा की किरणों से निकला हुआ अमृत का पान करने लगा।

अथापरेद्युः गिरिगह्वरं भ्रमन् ,
दर्दश सद्यः मृग शावकं नृपः।
विलोक्य वालंलुलुभे मुहुर्मुहुः ,
यथावने चात्मनि कोशलाधिपः।।6।।

हिन्दी अनुवादः—इसके बाद दूसरे दिन उस राजा ने भ्रमण करते हुए पर्वत की कंदरा में एक हिरन के बच्चे को देखा। उसे देखकर उसे बार–बार उसी पर मुग्ध होने लगा। जैसे वन में कौशलपति श्री रामचन्द्रजी मायामृग पर मुग्ध हो गये थे।

निशंकभावेन चरन्नितस्ततः ,
सकृज्जलस्निग्धविलोलया दृशा।

विलोक्यं तं भूपतिरन्तिकं ययौ ,
तदा स भूयोऽपि मनोमुदं दधे।।7।।

हिन्दी अनुवादः—निर्भीक भावना से इधर–उधर चरते हुए वह हिरन का बच्चा अपनी कजरारी , चिकनी तथा चंचल दृष्टि से उस राजा को देखकर उसके पास आ गया। तब राजा अपने मन में फिर उससे अधिक प्रशन्न हो गया। अर्थात् पास आ जाने पर उस बच्चे को देखकर राजा के आनन्द का ठिकाना न रहा।

विचिन्त्य सद्य सततं महीपतिः,
विहाय सान्ध्यं च तपःपिनाकिनः।
पुनश्च वभ्राम तदन्वये नृपः
अहो! प्रकृत्याप्रकृतेर्मनोज्ञता।।8।।

हिन्दी अनुवादः— ऐसा बिचार करके राजा शिवजी की संध्याकाल की तपस्या को छोड़कर फिर उसी के हिरन के बच्चे के पीछे–पीछे घूमने लगा। क्योंकि प्रकृति की स्वाभाविक सुन्दरता भी बड़ी अद्भुत ही है। वस्तुतः प्रकृति सौन्दर्य देखकर प्रायः मनुष्य अपनी सुधवुध भी खो बैठता है।

निसर्ग संस्कारतया नरोत्तमाः,
समाश्रयन्तेहि पदं मनस्विनां।
तथैव प्रायः प्रकृतेर्गुणास्त्वमीः
गुणानुरागेण वृजन्त्यहो!नृणाम्।।9।।

हिन्दी अनुवादः—स्वाभाविक संस्कारों के कारण ही उत्तम श्रेणी के व्यक्ति बुद्विमान व्यक्तियों की परम्परा का आश्रय किया करते हैं। लगभग उसी प्रकार प्रकृति के ये तीनों (सत्व–रज–तम) गुण भी गुणों के अनुराग के आधार पर व्यक्तियों का आश्रय किया करते हैं।

विलोलभावेन विहायचापलं ,
सुशिक्षयत्मेष स मां मुहुर्मुहुः।
तथापिलास्येन मुदं वहत्यसौ ,
कुरंग्दृष्टिः खलु योषितामिव।।10।।

हिन्दी अनुवादः—यह हिरन का बच्चा अपने चंचल स्वभाव से चंचलता को त्यागकर यह शिक्षा तो मुझे बार—बार दे रहा है। फिर भी अपनी क्रीड़ा से अपने मन में प्रशन्नता का भी अनुभव कर रहा है। क्योंकि हिरन की चितवन प्रायः स्त्रियों के समान हुआ करती है।

गुणाःपरेषां न विदन्ति दुर्जनाः ,
वदन्ति प्रायः परदुर्गुणानपि।
क्रमेलकः कंटक जालमन्वितं ,
मुखं विकृत्यैव यथापराश्रयः।।11।।

हिन्दी अनुवादः—दुष्ट लोग दूसरों के गुणों को कभी नहीं जान पाते। किन्तु उनके दुर्गुणों को हर जगह विभिन्न रूपों में सुनाया करते हैं। जैसे ऊँट का मुख सदैव काटों से भरा होता है। किन्तु वह दूसरे अन्य पौधों को खाने के लिए अपना मुँह फाड़—फाड़कर प्रयास किया करता है।

अधिगत्य समस्त संश्रया ,
दथ राज्ञः जगतीपतिः शिवः।
भवबन्धनमोहदायिनी ,
मतिरस्यैव मया प्रतीयते।।12।।

हिन्दी अनुवादः—समस्त आश्रयों से जगत के स्वामी शिवजी भली भाँति राजा का वृतान्त समझकर सोचने लगे, कि इस राजा की बुद्धि सांसारिक बन्धन का परमं कारण (मोह) से मुक्त मुझे प्रतीत हो रही है। अर्थात् मुझे विभिन्न रूपों से इसका मोह दूर करना चाहिए।

विलोक्य तं भूतपतिः ततः क्षणं ,
जहास सद्यः सहसा त्रिलोचनः।
विदन्ति ते मूढ़धियः पराभवं ,
तथापिलोकेन बृजन्ति सत्पथं।।13।।

हिन्दी अनुवादः— प्राणियों के स्वामी शिवजी उस राजा को देखकर अकस्मात् एक क्षण हँस पड़े। फिर बोले— मूर्ख लोग संसार में अपना अपमान भली प्रकार जान जाते हैं। फिर भी वे सन्मार्ग का अनुगमन नहीं करते।

निशम्य शम्भोर्गुरूगौरवं वचः ,
जगाद सद्यः जगदम्बिकासती।
कथं क्षणे हास्यमकारणं प्रभो! ,
रहस्यमेतन्निखिलं वदाधुना।।14।।

हिन्दी अनुवादः—शिवजी की गम्भीर एवं गौरवान्वित बातें सुनकर समस्त संसार की माता पार्वतीजी बोलीं। हे स्वामी! आप एक क्षण अकारण क्यों हँस पड़े। इसका सारा रहस्य आप मुझे अभी बताने की कृपा करें। क्योंकि किसी बात का रहस्य हृदय में सन्देह उत्पन्न किया करता है।

इति वदति प्रियायां विश्ववन्द्यः पुरारिः ,
सकलजगद्बन्धुः वेदवेदान्त विज्ञः।
धवलगिरि शिलायाः पृष्ठभागे निषण्णः
हिमगिरिकुलकन्यां वाक्यमेवं च बब्रे।।15।।

हिन्दी अनुवादः—इस प्रकार महारानी पार्वती के कहने पर संसार के वंदनीय, तथा संसार के बन्धु, वेदों एवं वेदान्तशास्त्रों के ज्ञाता शिवजी हिमालय पर्वत की निर्मल चट्टान पर बैठे हुए पार्वती से इस प्रकार बोले। अर्थात् अपनी आकस्मिक हँसी का कारण बताया।

निवेदयामीति प्रिये! मनोहरं ,
रहस्यमेतत्तु त्वदर्थमद्भुतं ।
निशम्य नूनं भवदेहधारिणः ,
त्यजन्ति मोहादि चतुर्विधं रूजम्।।16।।

हिन्दी अनुवादः—शिवजी बोले! हे प्रिये! मैं परमं लाभकारी , तथा मन को प्रिय लगने वाला यह रहस्य तुम्हें सुना रहा हूँ। जो रहस्य सुनकर संसार के समस्त शरीरधारी प्राणी काम, कोध, लोभ, मोह इस चार प्रकार के रोगों को हमेशा के लिए छोड़ देते हैं। तथा अन्त में मेरे परम धाम को प्राप्त कर पाते हैं।

श्रुणु देवि! वदामि कौतुकं ,
कलिकाले मम पूजनं नृणां।

शिवभक्ति कथानकं परं ,

प्रदहत्याशुमनः शुचं ध्रुवम् ।।17।।

हिन्दी अनुवादः–हे प्रिये!तुम ध्यान देकर सुनो। मैं तुम्हें नितान्त गोपनीय रहस्य बता रहा हूँ। कि कलयुग में मेरा पूजन ,एवं शंकरजी की भक्ति को उत्पन्न करने वाली कथायें, मनुष्यों के मानसिक संताप को सदैव के लिए नष्ट कर देती हैं। इसमें कोई भी संदेह की बात नहीं है।

मनसा वचसा च कर्मणा ,

कृतमन्यैरपि दुर्जनैरपि।

शिवरात्रि वृतं च पूजनं ,

परिहर्तु क्षमते ह्यघं नृणाम् ।।18।।

हिन्दी अनुवादः– हे प्रिये! शिवरात्रि के दिन मेरा बृत एवं पूजन, यदि दुष्टलोग भी मन वाणी एवं कर्म से श्रद्धापूर्वक किया करते हैं। तो उनके भी समस्त पापों का समूल उन्मूलन हो जाता है। फिर भला सामान्य शरीरधारियों की तो बात ही क्या है।

वृणुतेहिपदं वृतेन सः ,

निजदुष्कर्म रताहि मानवाः।

ह्यपमृत्यु भयं न कर्हिचित्–,

नचलोके पुनरत्र दुर्गतिः।।19।।

हिन्दी अनुवादः–सदैव दुष्कर्म में आसक्ति रखने वाला मनुष्य भी मेरे इस वृत से अन्त में परमधाम को वरण कर लेता है। अर्थात् मेरा पद प्राप्त कर लेता है। उसे कहीं भी अपमृत्यु नहीं होती। तथा इस संसार में उसे बेचैनी या लौकिक वेदना का अनुभव नहीं होता।

समस्त संताप समन्वितं प्रिये ,

विहाय राज्य सदनं चभूपतिः।

ममाधिसंदेहहरं वृतं परम् ,

निधाय चाडन्तेऽपि स दुर्गतिं ययौ।।20।।

हिन्दी अनुवादः–हे प्रिये! समस्त क्लेशों का आगार अपना राज्य एवं घरद्वा

छोड़कर यह राजा , मानसिक भ्रम को दूर करने वाले मेरे वृत अथवा पूजन में मन लगाकर या हृदय में धारण करके भी अन्त में हिरन के बच्चे में आशक्त हो जाने के कारण फिर भी दुर्गति को प्राप्त हो गया।

मृगान्तरे तत्प्रविशामि सांप्रतम् ,
तथात्यये नूनमहंनृपस्य च ।
क्षणं प्रतीक्षष्व प्रिये! विलक्षणं ,
विलोक्य वृतं सहसा हसिष्यसि।।21।।

हिन्दी अनुवादः—हे प्रिये! अब मैं राजा की सांसारिक माया का विनाश करने के लिये इस मृग के अन्दर प्रवेश कर रहा हूँ। तुम मेरा एक क्षण इन्तजार करो। इस मेरे रहस्यमय वृतान्त को देखकर तुभ भी अकस्मात् हँसने लगोगी।

इत्युक्त्वा वृषकेतनः निजप्रियां गौरीं च हित्वा वने ,
सद्यः संप्रविवेश शावकतनोरन्तर्हितः शंकरः।
ज्ञातं नैव मृगेण वृतमखिलं राज्ञा न लोके जनैः ,
तत्रालोक्य रहस्यमद्भुतमिंद देवी स्वयं सस्मिता।।22।।

हिन्दी अनुवादः—ऐसा कहकर शिवजी अपनी प्रियतमा पार्वती को वन में छोड़कर, वे भोलेनाथ उस हिरन के बच्चे के अन्दर राजा का कल्याण करने की दृष्टि से प्रविष्ट हो गये। इस समस्त गोपनीय रहस्य को न तो उस हिरन ने , यहाँ तक संसार में लोगों ने भी नहीं जान पाया। केवल इस रहस्य को देखकर देवी पार्वतीजी मुस्कराने लगीं।

कथं च माया सततं पिनाकिनं ,
पतत्रिवन्नैवम्रशं विदूयते।
यथाहि मायापुरूषं रमापतिं ,
प्रशन्नतामेति सदैव सिन्धुजा।।23।।

हिन्दी अनुवादः— पार्वतीजी ने सोचा—कि यह सांसारिक माया पक्षियों के समान क्रीड़ा करने वाले शिवजी को क्यों नहीं संतप्त कर रही है। क्योंकि मायापति भगवान् विष्णु को जैसे लक्ष्मीजी प्रशन्न किया करतीं हैं। उसी प्रकार वे भी इससे शायद प्रशन्नता का अनुभव करते होंगे।

महात्मनां दिव्यचरित्रमन्ततः ,
न ज्ञातुमर्हन्ति पुनर्दिवौकसाः।
विलोक्यचैतन्ननुविस्मितं मन–,
स्ततोहि मुह्यन्ति ध्रुवं शरीरिणः।।24।।

हिन्दी अनुवादः–महान् पुरूषों का अलौकिक चरित्र देवता लोग भी नहीं जान सकते। क्योंकि यह सब कुछ देखकर मेरा मन स्वयं आश्चर्यचकित हो रहा है। वास्तव में इसीलिए शरीरधारी प्राणी ईश्वर की माया से निश्चित ही मुग्ध हो जाया करते हैं।

ततश्च सारंग्शिशुः तमन्विषन् ,
समागतस्तत्र महीपतिं पुरः।
विलोक्य सद्यः मुमुदे पुनर्नृपः ,
निवारणीया न सतां मनोज्ञता।।25।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद वह हिरन का बच्चा उसे खोजता हुआ फिर राजा के समक्ष आ गया। उसे देखकर राजा फिर प्रशन्न हो गया। क्योंकि सज्जनों की व्यक्तित्व सम्वन्धी सुन्दरता दूर नहीं की जा सकती।

दधत्समस्तांग् सरोज सदृशं ,
विलोलचिह्नांत्कित वृन्तकंधरमं ।
सुनील राजीव विशालमम्वकंम्
विलोक्य सारंग शिशुं स विस्मितः।।26।।

हिन्दी अनुवादः– कमलों के समान समस्त अंग प्रत्यंगों को धारण करने वाले चंचल एवं विभिन्न चिन्हों से अंकित गोल कन्धों वाले तथा नीलकमल के समान काले व बड़े–बड़े नेत्रों वाले ऐसे हिरन के वच्चे को देखकर वह राजा आश्चर्यचकित हो गया।

इतस्ततश्चिंतित चेतसा भुवम्,
समीक्ष्यमाणं स कुरंड्ग शावकं।
पुनश्चनिर्वर्ण्य क्षणं महीपतिः,
सषाद संध्यारूण विक्लवो यथा।।27।।

हिन्दी अनुवादः— चिंतित हृदय से इधर उधर वार वार धरती को देखने वाले, उस हिरन के वच्चे को दोवारा देखकर वह राजा व्याकुल होकर पृथ्वी पर उसी प्रकार वैठ गया। जैसे संध्याकाल में थकान से व्याकुल होकर सूर्य तेजहीन होकर विश्राम करने लगता है।

तदद्भुतं रूपमवेक्ष्य सस्मितः,
क्वचित्स भीतः सहसा मुहुर्मुहुः।
यथा शिशुः पन्नगवालक्रीडया,
दुनोतिप्रीणातिस्वतःक्षणेक्षणे।।28।।

हिन्दी अनुवादः— उस अद्‌भुत स्वरूप को देखकर वह राजा कभी मुस्कराने लगता था। तथा कभी अकस्मात् बार—बार भयभीत हो जाता था। जैसे छोटा वच्चा सर्प के साथ क्रीडा करने से स्वयं क्षण क्षण कभी दुखित हो जाता है। तो कभी प्रशन्न हो जाता है।

विचिन्त्य भूयोऽपि स्वयं महीपतिः,
विचारयामास क्षणे स निभृतः।
करांङ्गुलीभिश्चिवुकं परिस्पृशन् ,
जगाद सद्यः मधुरं स्वयं वचः।।29।।

हिन्दी अनुवादः— राजा ने स्वयं बार—बार सोच कर एकान्त में उसने एक क्षण विचार किया। इसके वाद अपने हाथ की उगलियों से ठोंड़ी का स्पर्श करते हुये वह स्वयं ही बहुत मधुर शब्द वोला। वस्तुतः चिन्ता की यही मुद्रा होती है।

अहो! स्वरूपं प्रविहाय केवलम् ,
समागतोऽहं विपिने महीपतिः।
तथापि लोकेन विमुग्ध चेतसा,
चरामि नित्यं नवयोषितामिव।।30।।

हिन्दी अनुवादः— अरे! रूप का सौन्दर्य त्यागकर ही मैं राजा वनकर इस जंगल में आ गया हूँ। फिर भी सांसारिक मोह माया से मुग्ध मन होने के कारण मैं आज कल की नवीन स्त्रियों के समान वेचैन होकर नित्य व्यर्थ इधर

उधर घूम रहा हूँ।

विचार्य किंचित्करूणार्ति बिह्वलः

शशाम सद्यः सहसा महीपतिः।

ददर्श तेनात्र चरित्रमद्भुतम्,

शिशोः शरीरे बदनं कपर्दिनः।।31।।

हिन्दी अनुवादः— वह राजा करूणा की आन्तरिक वेदना से व्याकुल हृदयवाला ऐसा सोचकर शान्त हो गया। इसके वाद उसने हिरन के वच्चे के शरीर में शिवजी के मुख ऐसा अद्भुत चरित्र देखा। अर्थात् शरीर तो हिरन का था। किन्तु उसका मुख शिवजी का था।

सविस्मितस्तम्मित नेत्र पक्ष्मभि–,

र्विलोक्य तं चन्द्रधरं पिनाकिनं।

ननाम चान्तःकरणे महीपतेः,

सुवाल सारंगसुतं मुहुर्मुहुः।।32।।

हिन्दी अनुवादः— राजा ने अपने अर्ध मुकलित नेत्रों की वरौनियों से चन्द्रमा को धारण करने वाले शिवजी को देखकर, उस हिरन के वच्चे को अपने अन्तःकरण में वार वार प्रणाम किया।

क्षणे मृगः सोऽपि क्षणे वृकः क्वचित्–,

क्वचिद्वराहः क्वचिदत्र पन्नगः।

क्वचिद्गजश्चात्र क्षणे मृगाधिपः,

वभूव सद्यः स कुरंग शावकः।।33।।

हिन्दी अनुवादः— वह हिरन का वच्चा एक क्षण हिरन, कभी एक क्षण में सुअर, कभी भेड़िया, कभी सर्प, तो कभी एक क्षण में हाथी, कभी एक क्षण में सिंह वनकर राजा के समक्ष खड़ा हो जाता था।

विलोक्य भीतः प्रथमे क्वचिन्नृपः,

क्वचित्स धैर्यः हृदयेऽपि सस्मितः।

यथा हि वालाः ननु दूरदर्शने

रूदन्ति पूर्वं च हसन्ति चान्ततः।।34।।

हिन्दी अनुवादः– वह राजा उसे देखकर पहले तो भयभीत हुआ। वाद में धैर्य धारण करके अपने मन में अन्दर ही अन्दर मुस्कराने लगा। जैसे दूरदर्शन में बच्चे कोई भंयकर दृश्य देखकर पहले रोने लगते हैं। किन्तु वाद में मनोविनोद होने पर खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं।

अधिगत्य क्षणे सभूपतिः,
खलु मायां विपिनेपिनाकिनः।
प्रणनाम मुहुर्मुहुः शिवं,
सुरवन्द्यं करूणालयं ततः।।35।।

हिन्दी अनुवादः– वन में शिवजी की माया को भली प्रकार एक क्षण में समझकर राजा नें उन देवताओं के परम आराध्य एवं करूणासिन्धु भोलेनाथ को बार बार प्रणाम किया। वस्तुतः शिवजी सभी देवताओं में नितान्त सरल एवं भक्तवत्सल हैं।

विलोक्य साऽक्षाद्विपिने पिनाकिनं,
जगाद वद्धांजलि तं महीपतिः।
विदन्ति त्वां नैव मनीषिणः प्रभो!
सुरासुराः वेदविदां विशारदाः।।36।।

हिन्दी अनुवादः– वन में साक्षात् भोलेनाथ को देखकर वह राजा हाथ जोड़कर उनसे कहने लगा। हे देव! आपको विद्वान् एवं कविजन, देवता, दैत्य तथा वेदों के पारंगत परम वेदान्ती जन भी नहीं जान पाते तो भला मनुष्य जाति में उत्पन्न होकर मैं कैसे जान सकता हूँ।

भवाब्धिपोतं करुणालयं पुन–
र्नमामि कल्याणकरं महेश्वरम्।
नमोऽस्तु कैलाशपतिं दिगम्बरं,
पिनाकपाणिं सततं ह्यधोक्षजम्।।37।।

हिन्दी अनुवादः– अतएव संसार रूपी समुद्र के एकमात्र जहाज, परम कल्याण करने वाले, कैलाश पर्वत पर रहने वाले अर्थात् कैलाशनाथ धनुष धारण करने वाले, अधोगति का नाश करने वाले शिवजी, आप देवताओं के

भी परम आराध्यदेव हैं। आपको मैं बार–बार प्रणाम करता हूँ।

निशम्य सद्यः सुर सदृशंवचः,
ससर्ज माया सहसा पिनाकिना।
निधाय निष्कल्मषमद्भुतं बपु–
र्ददर्श तं चात्र शनैर्नृपं शिवः।।38।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार देवताओं के समान राजा की स्तुति सुनकर, शिवजी ने अपनी अलौकिक माया का उपसंहार कर दिया। अर्थात् अपना मायावी स्वरूप परित्याग कर दिया। निष्कलंक या निर्लिप्त एवं अद्भुत शरीर धारण करके शिवजी ने धीरे से फिर उस राजा को देखा।

तथापि खिन्नं मनसाति चिंतितं,
गलत्कपोलाश्रुनितान्त गद्गदं।
विलोक्य तं चात्र पुर्नमहीपतिं,
न तत्र तस्थौ सहसा जगत्पतिः।।39।।

हिन्दी अनुवादः– फिर भी परम दुःखित एवं मन से चिंतित होने वाले गालों पर आंसुओं के टपकने से गद्गद कंठ वाले, उस पृथ्वी की रक्षा करने वाले राजा मान्धाता को देखकर संसार के स्वामी भोलेनाथ वहां खडे. न रह पाये, अर्थात वे व्याकुल हो गये।

विलोक्य तं नाथमनाथवच्छिवं,
समुच्छ्वसन्तं विपिने मुहुर्मुहुः।
ततश्च सद्यः जगदम्बिका स्वयं,
जहास वै केहरिकन्धरस्थिता।।40।।

हिन्दी अनुवादः– संसार के स्वामी भोलेनाथ को अनाथ अर्थात् नितान्त असहाय प्राणी के समान वन में बार–बार गरम–गरम स्वांसे भरते हुए शिवजी को देखकर सिंह के कन्धों पर विराजमान जगज्जननी देवी पार्वती स्वयं अकस्मात् हंसने लगीं अर्थात शिवजी की ऐसी दशा देखकर उन्हें भी हंसी आ गयी।

जगाद सद्य बृषकेतनं शिवा,
अहो! मदीयं न वचो विचिन्तितं।

जनात्मयोषिद्वचनावधीरणाद्–
भ्रमन्ति मायाषु सदैव मायिनः।।41।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद जगज्जननी पार्वती जी ने शिवजी से कहा। हे नाथ! तुमने मेरी बात पर तनिक भी विचार नहीं किया इसी का यह प्रत्यक्ष फल है। जो लोग अपनी स्त्रियों की बातों की अवहेलना किया करते हैं। वे ही मायावी लोग अपनी स्वरचित माया में इसी प्रकार स्वयं फंसकर घूमा करते हैं।

ततो प्रियायाः वचनं निशम्य सः,
नताननः किचिंदभूज्जगत्पतिः।
तथापि चक्रे स्वमना समीहितं,
यथा युवानः खलुयोषितामिव।।42।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद शिवजी अपनी प्रियतमा की बात सुनकर संसार के स्वामी होते हुए भी कुछ नतमस्तक तो अवश्य हो गये किन्तु उन्होंने वहीं किया जो उन्होंने अपने मन में पहले से ही सोच रखा था। क्योंकि आजकल के जैसे लड़के अपनी स्त्रियों की बात न मानकर अपना अभिलषित कार्य किया करते हैं। उसी प्रकार शिवजी ने ध्यान न देकर वहीं किया।

ततः समक्षं समवस्थितं शिवं,
विलोक्य सद्य सहसा नरेश्वरः।
जगाद्नत्वा विधिवत्पिनाकिनं,
क्षमष्व मां क्षीणधनं दयानिधे!।।43।।

हिन्दी अनुवादः–इसके बाद शिवजी को अपने सामने खड़ा हुआ देखकर वह राजा मान्धाता फिर अकस्मात् उनसे प्रणाम करके बोला। हे दयानिधान! मुझ जैसे नितान्त निर्धन प्राणी को अब क्षमा कर दीजिए। क्यों कि आप दयासिन्धु हैं और मैं राज्य छोड़कर आपकी शरण में आ गया हूँ।

महाजनाः मानधनास्तपस्विनः,
भजन्ति त्वामेव सदाविमुक्तये।
त्वदीयमेतच्चरितं विलक्षणं,
विलोकितं चात्र मया वनेष्वपि।।44।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी! महान पुरुष, मानी पुरुष तथा तपस्वीगण मुक्ति प्राप्त करने के लिए सदैव आपका भजन किया करते हैं। आपके इस अद्भुत चरित्र को मैंने जंगलों में भी भली प्रकार देख लिया है।

नमामि भूयस्तव पादपंकजम्,
नमन्ति यं भूतगणाः सुरादयः।
सदैव वेदाः प्रणवोपरिस्थितं,
भवात्मरूपं हिबृजन्त्यहर्निशम्।।45।।

हिन्दी अनुवादः– आपके जिन चरण कमलों को भूतगण एवं देवतागण सदैव नमन किया करते हैं तथा सभी वेद ओंकार से भी ऊपर अवस्थित रहने वाले, आपके स्वयंभू रूप को प्राप्त किया करते हैं। अतएव मैं आपके उन चरण कमलों को प्रणाम कर रहा हूँ।

मान्धाता स महीपतिः शशिनिभं निर्वर्ण्यरूपं पुन–
र्नत्वा तं च कपर्दिनं पुनरहो! सद्यः स्वयं सस्मितः।
सर्वारम्भकरेण जन्हुतनयानीरं समभ्युक्ष तं,
वव्रे ध्यान परायणस्त्रियनः सम्यक्महीप वचः।।46।।

हिन्दी अनुवादः– राजा मान्धाता चन्द्रमा के समान शिवजी का दिव्य रूप देखकर, इसके बाद शिवजी को प्रणाम करके स्वयं मुस्कराने लगा। शिवजी ने सबसे पहले उस राजा पर अपने हाथ से गंगा का पवित्र जल छिड़क कर एवं उसे पवित्र करके ध्यान की मुद्रा मे अवस्थित होकर, उन शिवजी ने सरल वचनों से उस राजा से फिर कहा।

अहो महीपाल! परीक्षितं मया,
त्वदीय चित्तं चरणामृतं हरेः।
पवित्रमेतन्न कथं प्रतीयते,
प्रशान्नतामेति दिवौकसामपि।।47।।

हिन्दी अनुवादः– हे राजन! मैंने भली प्रकार परीक्षा करके देख लिया है वास्तव में तुम्हारा मन भगवान विष्णु का पवित्र चरणामृत है। इससे और अधिक कोई हृदय पवित्र नहीं जान पड़ता। जो देवताओं को भी प्रशन्न कर रहा है।

कुले रघूणां खलु दीपवज्ज्वल–
ज्ज्वलत्पताकेव सुविस्तृतंयशः।
पयोधिपर्यन्त दिगन्त विस्फुरद,
सुपुष्पकस्येव प्रयातु ते रथः।।48।।

हिन्दी अनुवादः– रघुवंशियों में दीपक के समान जलता हुआ तथा झंडे के समान चंचल होकर फहराता हुआ तुम्हारा यश एवं रथ समस्त दिशाओं में प्रसिद्धि को प्राप्त हो। समुद्र तक पुष्पक विमान के समान अबाध गति से प्रस्थान करे अथवा पहुंच जाय।

त्वदीय नाम्ना गिरिरेष विश्रुतः,
भवेत्पुनः भारत देशभूतले।
ततः परं पर्वतराजसंज्ञया,
प्रपूजनीयः मम लिंङ्गमन्वितः।।49।।

हिन्दी अनुवादः– हे राजन! यह पर्वत तुम्हारे नाम से समस्त भारतवर्ष की धरती पर सदैव प्रसिद्ध हो। इसके अलावा यह पर्वत मेरे ओंकारेश्वर नाम के ज्योतिर्लिंग् से अधिष्ठित होकर समस्त दिशाओं में स्वयं प्रसिद्ध हो जाय।

धनं च मानं च सुताः सुयोषिता,
सुवैभवं चाति विनिमलं मनः।
सुभक्ति प्रीतः शशिशेखरः स्वयं,
ददात्यसौ सर्वसुखानि मानद!।।50।।

हिन्दी अनुवादः– हे सम्मान देने वाले राजन! सम्मान, पुत्र, सुन्दर स्त्रियां, विस्तृत वैभव एवं निर्मल मन तथा समस्त प्रकार के सुख व्यक्ति की अनन्य भक्ति से प्रशन्न होकर भगवान् भोलेनाथ सब कुछ दे देते हैं अर्थात् उसे शिवजी से कुछ भी मांगना नहीं पड़ता।

मनोरुजं चाऽपिहरत्यसौ शनैः–
सुभक्ति प्रीत्या प्रसभं क्षणे हरः।
यथानिलेनात्र घनाः मदोद्धताः,
प्रकीर्णतामेत्य क्षणे प्रलीयते।।51।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी भक्त की अनन्य भक्ति से प्रसन्न होकर उसके मानसिक विकारों को धीरे–धीरे उसी प्रकार दूर कर देते हैं जैसे तेज चलने वाली वायु के द्वारा आकाश में मतवाले बादल क्षण में फैलकर नष्ट कर दिये जाते हैं।

समक्षमेतच्च त्वयावलोकितं,
मदीय रूपं सततं नवं पुनः।
इतीह माया ननु मोहदा स्वयं,
वदन्ति वेदाः त्रिगुणात्मसम्भवा।।52।।

हिन्दी अनुवादः– हे राजन्! तुमने अपने समक्ष मेरा नवीन रूप स्वयं ही देख लिया है। यही मनुष्य को मोह प्रदान करने वाली माया है। वेदों ने इसी प्रकार इसे (सत्व–रज–तम) इन तीन गुणों से उत्पन्न माना है। अर्थात् यही माया या प्रकृति कही जाती है। इसे कुछ दार्शनिक ब्रह्म की अचिद् शक्ति भी बताते हैं।

रुदन्तमेतद्वदनं विलोक्य ते,
वदामि किंचित्सहसा परंतप!।
कदापित्यक्ष्यामिन दिव्यमंदिरम्,
कुलप्रतिष्ठा सद्योषितामिव।।53।।

हिन्दी अनुवादः– हे राजन्! तुम्हारा रोता हुआ मुख देखकर मैं कुछ तुमसे कह रहा हूं। कि तुम्हारा यह मन्दिर जो वस्तुतः सर्वशोभा सम्पन्न एवं अलौकिक है। इसे मैं कभी नहीं छोड़ पाऊंगा। अर्थात् मेरा यहां ज्योतिर्मय तेज सदैव जगमगाता दिखायी देगा।

किमन्यदन्यत्र मनः समीहते ,
वृणीष्व मे चान्यवरः नरेश्वर!।
ददामि तत् तुभ्यमहं ह्यशंसयं,
निबोध मे वत्स! समीरितं बचः।।54।।

हिन्दी अनुवादः–हे राजन्! अब तुम्हारा मन किस वस्तु की कामना कर रहा है।तुम चाहो तो दूसरा वरदान माँग लो! मैं तुम्हें उसे भी

दे सकता हूँ। हे बेटा! तुम मेरा कथन नितान्त सत्य समझो।

निशम्य प्रायः सहसा शिवोदितम्
प्रसाद सौम्यं सुलभं महीपतिः।
जगाद प्रीत्या निगमात्पुरस्सरं ,
सुसस्मितं दैन्य समन्वितं वचः।।55।।

हिन्दी अनुवादः—राजा ने शिवजी के द्वारा कहे हुए प्रशन्नतायुक्त एवं अतिसरल वचन सुनकर, वैदिक नियम के अनुसार दीनता भरी मुस्कराहट के साथ शिवजी से बोला। अर्थात् कुछ बचन बोला।

याचेऽहं जगदीश! भूतलतले शाष्वत्प्रभा मण्डितं
भूयान्मे तव दिव्य सौम्य कृपया सारस्वतं वैभवम्।
लोके धर्मधनादि वित्तविभवं पौत्रादिभिः संयुतम् ,
चंचच्चारूचतुर्दिगन्तमहिमाददीप्यमानं यशः।।56।।

हिन्दी अनुवादः—हे विश्वेश! केवल मैं आपसे यही याचना करता हूँ। कि इस पृथ्वी पर अद्वैतकांति से युक्त, तथा आपकी अलौकिक एवं अक्षुण्ण कृपा के फलस्वरूप मुझे सर्वप्रथम भगवती शारदा का वैभव प्राप्त हो। तदनन्तर इस संसार में पुत्र, एवं पौत्रों से समन्वित अक्षुण्ण धन धान्य के साथ चारों दिशाओं में चमकता हुआ, दिव्य प्रतिभाशाली मुझे यश प्राप्त हो।

पदं गृहीत्वा स रूरोद भूपति–,
र्विलोक्य पश्चाद्वदनं कपर्दिनः।
क्षणं समाश्वास्यपुनर्नरेश्वरं,
जगाद शम्भुः प्रियमद्भुतं वचः।।57।।

हिन्दी अनुवादः—इसके बाद वह राजा शिवजी से वरदान माँगने के बाद उनका मुँह देखकर, तथा पुनः शिवजी के पैर पकड़कर रोने लगा। शिवजी उस राजा को पुनः समाहित करके उससे अद्भुत शब्दों में कहने लगे।

पदं ग्रहीतं खलु सांप्रतं त्वया,
तथात्महेतोः प्रददामि मत्पदं।

नयल्लभन्ते तपसा महर्षयः,
गतिर्नकिंचित्सहसा विधेरपि।।58।।

हिन्दी अनुवादः--हे राजन्! इस समय तुमने मेरा पैर पकड़ा है। इसलिए तुम्हारी आत्मा के कल्याण के लिए मैं तुम्हें अद्भुत पद भी दे रहा हूँ। जिस पद को तपस्या के द्वारा बड़े-बड़े मुनिजन नहीं प्राप्त कर सके और उसे प्राप्त करने के लिए साक्षात् ब्रह्मा भी समर्थ नहीं हो सके।

अहो महीपाल! चरित्रद्भुतं,
पठन्ति श्रण्वन्ति सदैव श्रद्धया।
तएव नित्यं ह्युपलम्यमत्पदं,
वृजन्ति मद्धाममनामयं जनाः।।59।।

हिन्दी अनुवादः--हे राजन! मेरे इस अद्भुत चरित्र को जो लोग श्रद्धापूर्वक नित्य पढ़ते, अथवा सुना करते हैं। वे मेरे अम्दुत एवं अक्षुष्ण पद को प्राप्त करके शिव को निश्चय ही प्राप्त किया करते हैं।

इत्युक्त्वा शशिशेषरः नरपतिं निबर्ण्य भूयः स्वयं,
ओंकारेश्वर दिव्यलिंग्विवरे सद्यस्तदार्न्तदधे।
मान्धातापितदम्दुतं सुचरितं चालोक्य प्रायः शनैः,
ध्यात्वा सोऽपि चिरंतनं पशुपतिं चान्ते द्युलोकंययौ।।60।।

हिन्दी अनुवादः--ऐसा कहकर भगवान् शिवजी उस राजा को पुनः एक बार देखकर, ओंकारेश्वर शिवलिंग् के अन्दर एक छिद्र में अर्न्तध्यान हो गये। मान्धाता भी ऐसे रोमांचकारी चरित्र को देखकर धीरे से वहां से हटकर एवं निराकार एवं निर्विकार शिवजी का ध्यान करके अन्त में स्वर्ग अथवा शिव लोक को चला गया।

ये श्रण्वन्ति पठन्ति दिव्य चरितं लोके सदा श्रद्धया,
तेषां नैव प्रयाति जीवन सुखं वृतं मुनीनामिव।
सान्द्रानन्दपयोधिसद्रशवपुः साक्षात्कपर्दीश्वरः,
नित्यं याति सदा त्रिशूलफलकैर्प्रायः शिशूनामिव।।61

हिन्दी अनुवादः—जो व्यक्ति इस अलौकिक चरित्र को नित्य श्रद्धा एवं भक्ति के साथ पढ़ते हैं। अथवा सुना करते हैं। उनके जीवन का सुख इस संसार में मुनियों के चरित्र के समान कभी नष्ट नहीं होता। सघन आनन्द सागर के समान शरीर धारण करने वाले शिवजी, साकार रूप में अब उपस्थित होकर , उन प्राणियों की रक्षा, वे अपने त्रिशूल की पैनी नोंक से बच्चों के समान किया करते हैं।

फलकपुर निवासी विप्रवंश प्रदीपः,
द्विजगुरूजन सेवी शम्भुसन्नामधेयः।
सकलजगद्धेतोर्दर्पणं चाति श्रेष्ठं,
लिखितमिह पुरारेर्प्रीतिमाप्तुं मयैव।।62।।

हिन्दी अनुवादः— उत्तर प्रदेश में फर्रूखाबाद जिले के निवासी ब्राह्मणों एवं गुरूजनों के सच्चे सेवक "आचार्यशम्भूदयाल अग्निहोत्री" ने समस्त संसार के हित के लिए, भगवान् भोलेनाथ की स्निग्ध भक्ति प्राप्त करने के लिए "द्वादश ज्योतिर्लिंग् दर्पण" नामक अद्भुत ग्रंथ की रचना की है।

इति श्री द्वादश ज्योतिर्लिंग् दर्पणस्य
चतुर्थः सर्गः समाप्तः
इति श्रीओंकारेश्वर निरूपणम्

अथ श्री द्वादश ज्योतिर्लिंग् दर्पणस्य– पंचमः सर्गः

केदारेश्वर निरूपणम्–

विभृच्चन्द्रप्रभा निषेकसरसं प्रालेयशुभ्रं स्रजं,
गौरीवक्त्र सुहास चंचलचलद्देदीप्यते जान्हवी।
हारं कृष्ण सुवर्णमिश्रित दघन्नागं च कंठे पुर–,
स्तं वन्दे गिरिजापतिं गुणनिधिं केदारनाथं शिबम्।।1।।

हिन्दी अनुवादः–चन्द्रमा की चाँदनी से अभिषिक्त एवं सरस, बरफ के समान श्वेत वर्ण के पुष्पों की माला धारण करने वाले, तथा पार्वती के सुन्दर हास के समान जिसके सिर पर चंचल एवं लगातार लहराती हुयीं गंगाजी सुशोभित हो रहीं हैं। गले में काले तथा सोने के समान पीले रंग से मिश्रत नाग का हार धारण करने वाले, ऐसे पार्वती के स्वामी, गुणों के आगार, भगवान् केदारेश्वर भोलेनाथ की मैं वन्दना कर रहा हूँ।

दत्तंयेन वरं पुरापरिणतं प्रायस्तपोमिर्फलं,
पूर्व तन्नररूपिणे पुनरसौ नारायणायात्र च।
भक्त्या तुष्टिमवाप्य शैलशिखरे संशोमितं सर्वदा,
ज्योतिर्द्वादशलिंग पंचम प्रभुं केदारनाथं भजे।।2।।

हिन्दी अनुवादः–जिसने तपों के द्वारा पका हुआ वरदान रूपी मधुर फल पहले नर को, इसके बाद नारायण को, प्रदान किया था उन दोनों की परम अद्भुत भक्ति से प्रशन्न होकर पर्वत की रमणीय चोटी पर साक्षात्– सदैव के लिए सोभायमान, एवं विराजमान, होने वाले तथा भारत के द्वादश ज्योंतिलिंगों के पाँचवें स्वामी भगवान् केदारेश्वर भोलेनाथ की मैं वन्दना कर रहा हूँ।

विलोक्य भक्तिं च द्वयोः परस्परं,
जगन्निवासः ननु वद्रिकाश्रमम्।
ययौ स्वयं तत्र च विष्णु प्रेरितः,
सदैव क्लेशातिहराः हि देवताः।।3।।

हिन्दी अनुवादः– नर एवं नारायण की परस्पर अद्भुत भक्ति देखकर, तथा

श्रीकेदारेश्वरम्

भगवान् विष्णु की पूर्वकथनानुसार प्रेरणा प्राप्त करके, संसार के एक मात्र आश्रय भूत भगवान् भोलेनाथ बद्रिकाश्रम को बिवश होकर चल दिये। क्योंकि देवतागण् स्वयं प्राणियों के कष्टों एवं विपत्तियों को दूर करने वाले ही होते हैं।

विलोक्य तं शुष्क तरोरिवास्थितं,
महाप्रभावेण दिगन्त दीपितं।
महत्तपोभिर्ज्वलदग्निसदृशं,
नरं स बब्रे सहसा त्रिलोचनः।।4।।

हिन्दी अनुवादः— अत्यधिक तपस्या के कारण जलती हुई अग्नि के समान एवं अत्यधिक प्रभाव के कारण समस्त दिशाओं में चमकने वाले, सूखे पेड़ के समान खड़े हुए उस नर को देखकर वे शिवजी अकस्मात् उससे बोले।

भस्मांग्लेप सहितोऽपि च निर्विकारं,
प्रायस्तपोभिरबलम्बित चारू वर्णम्।
चंचद्रवेरिव चमत्कृत शूलपाणिम्,
सद्यः नरं च निर्वर्ण्य जगाद शम्भुः।।5।।

हिन्दी अनुवादः— समस्त अंग प्रत्यंगों में भष्म का लेप करने पर भी विकार से रहित, अधिक तपस्या करने पर भी सुन्दर स्वरूप वाले, स्वयं सूर्य के समान चमकते हुए भी शिव को चकाचौंध कर देने वाले ऐसे नर को देखकर शिवजी उससे बोले।

परं प्रशन्नोऽस्मि तपोभिरद्भुतैः,
वृणीष्व मे तात! वरं द्विजोत्तम!।
जगाद तं वीक्ष्य नरं पुनःपुनः,
जगन्निवासो वहुधा त्रिलोचनः।।6।।

हिन्दी अनुवादः— हे भाई उत्त्म ब्राह्मण! तुम्हारे अद्भुत तप से मैं बहुत प्रशन्न हूँ। अतएव तुम मुझसे वरदान माँग लो। इस प्रकार उस परम् तपस्वी नर को देखकर शिवजी उससे बार—बार कहते रहे।।

तथापि सः निन्हुत नेत्र पंकजं,
निमील्य तस्यौ न जगाद तं नरं।
परं स भक्तार्तिहरः जगत्पतिः
वरं प्रदातुं विवशोऽप्यभूत्क्षणे।।7।।

हिन्दी अनुवादः— फिर वह नर कमल के समान अपने दोनों नेत्र बन्द करके खड़ा ही रहा। शिवजी से उसने कुछ भी नहीं मांगा। लेकिन भक्त की पीड़ा को दूर करने वाले जगत् के स्वामी शिवजी उसे वरदान देने के लिए एक क्षण में ही व्याकुल होने लगे।

नेत्रे निमील्य तरूवज्जडमम्युपेत्य,
सर्वेन्द्रियाष्यपि च जर्जरमूह्यमानं।
प्रश्वासघर्घरखोज्झित कृच्छकंठं,
निर्वर्ण्य तं न मुमुदे सहसा गिरीशः।।8।।

हिन्दी अनुवादः— समस्त जर्जर इन्द्रियों को धारण करने वाले, लम्बी-लम्बी सासों को खींचने से घर्धर की आवाज करने से कठोर कंठ वाले, दोनों नेत्रों को बन्द करके पेड़ के समान जड़ उस नर को देखकर शिवजी फिर प्रशन्न न रह सके। अर्थात् ऐसे भक्त को देखकर उन्हें बड़ी व्याकुलता होने लगी।

समाः सहस्रं तपसाधिखिन्नं,
निःशंक भावेन शिवं जपन्तं।
चलत्स्वयं बिम्वफलाधरोष्ठं,
विलोक्य मम्ले स नरं गिरीशः।।9।।

हिन्दी अनवादः— हजारों वर्षों की तपस्या के कष्ट से खिन्न रहने वाले निश्चित एवं एकाग्रचित्त से लगातार शिवजी का जाप करने वाले, अपने आप विम्वाफल के समान चंचल ओंठों वाले, उस नर को देखकर शिवजी अधिक मलिन हृदय हो गये। अर्थात् उनके हृदय में विशेष चिन्ता होने लगी।

विधाय रूपं सरलं च निर्मलं,
करात्ररूद्राक्ष स्रजं विलक्षणं।
जपन्तमत्यंत वियोग निर्भरम्,
चचार विप्रात्मजवत्त्रिलोचनः।।10।।

हिन्दी अनुवादः— वे शिवजी अपने हाथ में रूद्राक्ष की माला लेकर लगातार जाप करने वाले, अत्यन्त वियोग से युक्त, निर्मल, एवं सरल रूपध ारण करके ब्रह्मण के बालक के समान वहाँ टहलने लगे। अर्थात् शिवजी ने अपना असली रूप छिपाकर विप्रवटु का रूप धारण कर लिया।

यथा—यथायेन नरेण यत्कृतं,
तथा—तथासोऽपि चकार शंकरः।
समीक्ष्य ब्रह्मर्षि वदाशु तं नरः,
जगाद सर्वं सच मित्रवच्छनैः।।11।

हिन्दी अनुवादः— उसने अर्थात् नर ने जो—जो कार्य किये, वैसे ही वैसे शिवजी भी उसी के समान कार्य करने लगे। वह नर शिवजी को ब्रह्मर्षि देखकर या समझकर अर्थात् ऋषि के समान उस नर ने मित्र के समान शिवजी को सब कुछ बता दिया। अर्थात् कह दिया।

तदादिशक्तिं प्रणमन्ति दानवाः,
महीधराः किन्नर नागखेचराः।
कथं च विन्देयमहं त्रयम्बकंम्,
पिनाकपाणिं बदमे जगत्पतिम्।।12।।

हिन्दी अनुवादः— नर ने कहा—हे ब्रह्मर्षि! उस आदि शक्ति शिवजी को सभी दानव, पर्वत, किन्नर, नाग, सभी नक्षत्र या पक्षीगण सभी कोई प्रणाम किया करते हैं। मैं उस जगत् के स्वामी त्रिनेत्रधारी शिवजी को कैसे प्राप्त करूँ। कृपया आप उसका समुचित उपाय बतायें।

स एव विद्वज्जनवृन्दवन्दितः,
भवाब्धि संदेहहरं महौषधमं।
जगत्त्रये पापपतंग वाधितुम्,
सशक्त संवद्ध महाबनेचरः।।13।।

हिन्दी अनुवादः– वह शिवजी सदैव विद्धानों के समूह द्वारा वन्दनीय हैं। संसार के भ्रमरूपी रोग को हरण करने वाली अचूक औषधि हैं। तीनों लोकों के पाप रूपी पक्षी को बन्दी बनाने के लिए वे शक्तिशाली संबद्ध रखने वाले या वन में विचरण करने व्याघ हैं। अर्थात् बहेलिया के समान वे सदैव वन में घूमते रहते हैं।

त्रिकालदर्शी शशिवत्सनातनः,
स एव दिव्यात्मविंदा विशारदः
वियोग द्वन्दौघ विशिष्ट कज्जलं,
हरत्यहो! सर्वक्षणे हरोहरः।।14।।

हिन्दी अनुवादः– हे ब्रह्मर्षि–वे शिवजी चन्द्रमा के समान निर्मल एवं निर्विकार हैं। वही अलौकिक आत्मज्ञ अथवा वेदान्ती लोगों में सबसे बुद्धिमान है। इस संसार के वियोग एवं विवाद तथा पाप समूह रूपी काजल को वे प्रत्येक क्षण दूर करने वाले हैं। अधिक क्या कहें। यहाँ तक कि वे तीनों कालों भूत–भविष्य–एवं वर्तमान को भी देखने वाले हैं।

निशम्य प्रायः श्रुतिसंमतं वचः,
तथा च नैवाह स तं जगत्पतिः।
पुनः पुनश्चेतसि संस्मरन् रहः,
स्वभाव एवैष द्विजोत्तमात्मनां।।15।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार नर की वे समस्त बातें सुनकर शिवजी कुछ भी उससे न कह सके। अन्त में उसकी बातों को बार–बार अपने हृदय में विचार करके तथा एकान्त में सोचते हुए बोले। क्योंकि उत्तम कोटि के ब्राह्मणों का यही स्वभाव हेता है।

इत्थं नरोऽपि सदने वदनेन किंचि–,
द्वृत्तंरहः समधिगम्य पिनाकपाणेः।
नैवाह तं मधुर शष्कुलिमात्र प्रीतः,
प्रायः स्वभाव इव सद्द्विजदेवतानां।।16।।

हिन्दी अनुवादः– इसी प्रकार नर ने भी अपने घर में उपस्थित,–ब्राह्मण वेषधारी शिवजी की मनोभावना भली प्रकार समझकर उनसे कुछ नहीं कहा। मानो वह स्वयं समझ गया हो। कि अच्छे ब्राह्मणों का स्वभाव केवल मीठी पूड़ी (पिटैआ) खाने मात्र से ही प्रशन्न हो जाने वाला हुआ करता है।

ततश्च तं वीक्ष्य पुनर्जगत्पतिः,
विचिन्त्य किंचित्सहि भक्तवत्सलः।
अदर्शयद्रूपमसौ पुरातनं,
क्षणे स लीलाधरवद्विशांपतिः।।17।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद उस नर को देखकर, संसार के स्वामी शिव ने कुछ सोचकर एवं भक्तों से परम् स्नेह करने वाले, उन्होंने लीलाधर के समान एक क्षण में समस्त धन धान्य के स्वामी भोलेनाथ का पुराना रूप उस नर को दिखाया अर्थात् फिर वे अपने असली रूप में आ गये।

विलोक्य तं विश्वपतिं जगद्गुरुं,
ननाम सद्यः सनरो नताननः।
द्वयोश्चरित्रं ननु चाद्भुतं वभौ,
विविक्त योगान्नर ब्रह्मयोरिव।।18।।

हिन्दी अनुवादः– उस चराचर के एक मात्र कारण, जगनियन्ता शिवजी को देखकर नर ने अपने झुके हुए सिर से प्रणाम किया। किन्तु उन दोनों का चरित्र बड़े ही अद्भुत् रूप में ऐसा सौभायमान लगा। जैसे विभिन्न योगों के एकत्रित हो जाने पर जीव और ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है।

इतस्तु कल्याण कियामुपेयुषा–
मधीरवद्धैर्य धुरंधरः शिवः।
ततोऽपि तद्दर्शनमात्र विह्वलः,
विलोलपक्षः खगवन्नरोत्तमः।।19।

हिन्दी अनुवादः– इधर तो भक्त का समूल उद्धार करने वालों में सिद्धहस्त तथा नितांत अधीर होने वाले परम धैर्यवान् शिवजी। उधर केवल दर्शन मात्र हो जाने से पक्षी के समान चंचल पक्ष वाला वह उत्तम कोटि का प्राणी अर्थात् मुनि दोनों ही परम सुशोभित हो रहे थे।

तथापि तद्ध्यान परायणं परं,
नरं समीक्ष्यापि विशाल लोचनः।
जहास सद्यः परिरम्भयन् करम्,–
प्रभंजनस्पर्शक्षमं तरोरिव।।20।।

हिन्दी अनुवादः– फिर भी उनके ध्यान में नितान्त तल्लीन रहने वाले एवं उत्तम श्रेणी के उस नर को देखकर भी वे बड़ी–बड़ी आखों वाले शिवजी वायु के स्पर्श को सहन करने की सामर्थ्य वाले वृक्ष के समान, उस नर का हाथ पकड़कर तथा दबाते हुए तुरन्त हँस पड़े।

समाप्य तत्सोऽपि वरं वृतं नरः,
नितान्त धीरोऽपि ह्यधीरलोचनः।
नमन्नयं शूलधरं पिनाकिनं,
जगाद तं धैर्यगभीरया गिरा।।21।।

हिन्दी अनुवादः– वह नर अपने उत्तम वृत को छोड़कर, धैर्यवान् होते हुए भी अधीर नेत्रों वाला, उन त्रिशूलधारी, एवं धनुषधारी, शिव को प्रणाम करता हुआ, धीरता, एवं गाम्भीर्य से युक्त अपनी वाणी से बोला। अर्थात् शिवजी से अपने मन में अन्तर्निहित शब्दों को बताने लगा।

यदीह स्वामिन्! मयि तेडस्त्वनुगृहः,
पितेव पुत्रस्य रतिर्द्वयोरपि।
तथापि चान्तर्मनसा दिदृक्षया,
वृणोमिनित्यं तवपादपंकजम्।।22।।

हिन्दी अनवुादः– हे स्वामी! यदि आप की मुझ पर विशेष कृपादृष्टि हो। तथा पिता पुत्र के समान दोनों का दृढ़ संबन्ध आप समझे तो मैं सदैव अपनी आन्तरिक भावना से नित्य दर्शन करने की इच्छा से आप के चरण कमलों का वरण कर रहा हूँ। अर्थात् आप सदैव यहीं निवास करें।

दत्वा वरं हि मुनये सच शूलपाणिः,
किंचिद्विचिन्त्य सहसा पुनरेव बव्रे।
विश्वेश विश्वजिद्वाम विलोलनेत्रे,
आदौतदिंङ्गितपदं समधीत्य धीरः।।23।।

हिन्दी अनुवादः— उस योगी नर को वरदान देकर, शिवजी संसार के स्वामी होकर विश्व को जीतने वाली अपनी चंचल वार्यी आँख से प्रारम्भ में इशारा करते हुये, तथा अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान रखकर, एवं कुछ सोचकर उस नर से फिर वोले।

त्वयाजगद्वन्धन मुक्तिहेतवे,
कृतंतपो वत्स! ममातिदुश्चरम्।
फलं तदस्यान्तमलब्धमन्ततो,
फलन्ति कर्माणि ध्रुवं तरोरिव।।24।।

हिन्दी अनुवादः— हे बेटा! अपने सांसारिक बन्धनों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए तुमने मेरा कठोर वृत किया था। उसी वृत का उत्तम फल भी प्रत्येक दशा में तुमने प्राप्त भी कर लिया। क्योंकि कर्म ही सदैव पेड़ों के समान अच्छे या वुरे फल दिया करते हैं।

यथा तिलेभ्यः नघृतं प्रपद्यते,
सदैव तैलं गुणकर्म संश्रयाद्।
तथैव लोके कृत कर्म संचयः,
फलत्यहो! सौभगदुर्भगोऽथवा।।25।।

हिन्दी अनुवादः— जैसे तिलों से कभी घी नहीं उत्पन्न होता। अनुगुण एवं कर्म के अनुसार उनसे तेल ही निकलता है। उसी प्रकार संसार में किये गये कर्म के परिणाम स्वरूप सौभाग्य तथा दुर्भाग्य प्रतिफलित होता रहता है।

स्वभावजन्या सदसद्गतिर्नृणां,
तथापि कर्मातिशयेन दीर्यते।
वपत्यसौ यद्यद्बुद्धि प्रेरितः—,
जनस्तथैवात्र लुनाति संततम्।।26।।

हिन्दी अनुवादः— स्वभाव के अनुसार मनुष्यों की अलग अलग स्थिति वन जाती है। वह भी सत्कर्म के वाहुल्य से नष्ट कर दी जा सकती है। मनुष्य अपनी वुद्धि से प्रेरित होकर जैसा बोया करता है। वह उसी के फलस्वरूप भला या बुरा काटता है।

इत्युक्त्वा शशि शेषरः सच ययौ दिव्याम्वरं भूषयन्
पश्चात्सोऽपि नरोत्तमः स्वसदनं सायंतने प्रस्थितः
इत्थं चात्र द्वयोः परस्परमहो! भावाम्वुधौ तत्क्षणं,
सूर्यस्येवसरोजसदृशगतिः प्रायः वभूवान्ततः।।27।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद वे शिवजी अलौकिक आकाश को सुशोभित करते हुये चले गये। इसके बाद वह नारायण के अंश से उत्पन्न नर भी संध्याकाल के समय अपने घर चला गया। इस प्रकार दोनों के आपसी भाव रूपी सागर में सूर्य एवं कमल के समान गति अन्त तक होती चली गयी। अर्थात् शिवजी व नर दोनों ही एक दूसरे के प्रेम में मस्त होते हुये प्रस्थान कर गये।

ततश्च नारायण भक्ति प्रेरितः,
ययौपुनस्तत्र स वद्रिकाश्रमं।
विलोक्य भूयः शशिभृत्सनातनं,
मुनिर्ववन्दे सहसा कृतान्जलिः।।28।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद नारायण की भक्ति से प्रेरित होकर शिवजी फिर वद्रिकाश्रम गये। उस नारायण नाम के ऋषि ने चन्द्रमा को धारण करने वाले शिवजी को देखकर,हाथ जोड़कर अकस्मात् वन्दना की।

अहो! जगद्धाम! प्रभो! जगत्पते!,
त्वमादि देवः जगदादिकारणं ।
विदन्ति तत्वं न जगत्त्रये क्वचि,
न्नचात्र वेदास्तव शेषशारदाः।।29।।

हिन्दी अनुवादः– हे संसार के स्वामी! भोलेनाथ तुम्हीं संसार के आदि सृष्टि कर्ता एवं प्रारम्भिक कारण हो। हे प्रभो आप के वास्तविक तत्व को तीन लोकों में भगवती सरस्वती जी एवं शेषनाग तथा वेद भी कभी नहीं जान पाते।

मनो न मे कामयते महद्धनं,
नचापि लोकस्य महेन्द्रशासनम्।

भजामि भक्त्या चरणंचिरंतनं
भवाब्धिपोतं परमं परंतप!।।30।।

हिन्दी अनुवादः— हे परम तपस्वी भोलेनाथ जी मेरा मन अत्यधिक ध
ान नहीं चाहता और न इन्द्र के समान संसार का शासन ही चाहता हूँ। मैं सिर्फ सवसे अधिक आपकी भक्ति द्वारा आपके चरण कमलों का चिन्तन करना चाहता हूँ। जो संसार का सर्वोत्तम जहाज माना जाता है।

इत्येवं विविधैः स्तवै सुरगुरूं नत्वा च नारायणः,
प्रीत्या प्रेम पयोधिसिंचित सुधा सिक्तैर्वचोभिर्पुनः।
तं संपूज्य विचित्र पुष्परचितैः स्रग्भि स्वयं शंकरं,
वव्रे विश्वपतिं शिवं शशिधरं विष्णुप्रियः मानवः।।31।।

हिन्दी अनुवादः— इस प्रकार विभिन्न प्रकार की स्तुतियों से शिवजी को नमस्कार करके तथा प्रेमपूर्वक प्रेमरूपी सागर में अभिषिक्त अमृत से सिंचित वचनों से उनकी पूजा करके, अनेक प्रकार के फूलों से निर्मित मालाओं के द्वारा अर्चन करके वह नारायण विष्णु भगवान् का अतिशय सेवक संसार के स्वामी शिवजी से फिर बोला।

मनोजहन्तासि मनोजवंचमे,
निवार्य किञ्चिन्ननु निर्मलं पुनः।,
स्वयं समाधाय तवांशुदीपकै—,
सरोज शुभ्रं सुमनो विधीयतां।।32।।

हिन्दी अनुवादः— हे शिवजी! आप तो कामदेव के संहारक हैं। अतएव मेरे मन की तीव्रता को रोककर, अपनी किरण रूपी दीपकों के अद्भुत प्रकाश से कमल के समान श्वेत एवं निर्मल मेरा मन वना दीजिये।

इति वदतिद्विजातौ विश्वकल्पान्तकारी,
सकल गुणिगणानां विश्रुतो शूलपाणिः।
नभसि विकल देवान् सान्त्वयन् सद्वचोभिः—,
पुनरपि जगदीशः तंमुनिं प्रत्युवाच।।33।।

हिन्दी अनुवादः— इसके वाद उस ब्राह्मण नारायण के कहने पर

समस्त संसार के स्वामी एवं विश्व की प्रलय कर देने वाले वे शिवजी समस्त गुणी पुरूषों में परम प्रसिद्ध, आकाश में व्याकुल देवताओं को शुभ शब्दों से शान्त करते हुये उस ऋषि से बोले।

वृणीष्व मे चाशु वरं यदीच्छसे,
कृतं त्वया चात्रतपः सुदुश्चरं।
श्रमेण साध्यं ननु साधनं भुवः,
मुदा भजन्ते श्रमिणोऽप्यहर्निशं।।34।।

हिन्दी अनुवादः— हे मुनिवर! जो तुम्हारी इच्छा हो वह मुझसे वरदान मॉग लो। क्योंकि तुमने मेरी अतिशय कठोर तपस्या की है। क्योंकि परिश्रम द्वारा सिद्ध करने योग्य कोई साधन परिपूर्ण होने पर परिश्रम करने वाले व्यक्ति उस पर प्रशन्नता का अनुभव किया ही करते हैं।

अतः परं चेदपरं यदीच्छसे,
महर्ध्यमेतत्तु वरं निशम्यतां।
त्रिलोकसौख्यं च पुनर्भवं भुवः,
वदाशु दास्यामि च ते यतीश्वर!।।35।।

हिन्दी अनुवादः— हे मुनिवर! यदि इसके अलावा अधिक मूल्यवान् कोई दूसरा वरदान मांगना चाहते हों तो सुनो। तीनों लोकों का सुख अथवा इस धरती पर पुनर्जन्म जो तुम्हें सबसे अच्छा लग रहा हो, निशंक होकर मुझसे मांग लीजिये।

इत्येवं विरराम चन्द्रवदनः साक्षात्कपर्दीश्वरः,
ध्यानावस्थित मुद्रया पुनरसौ तस्थौ स नारायणः।
दत्वा वांछित सौम्यसंगतवरं संस्पृश्य लिंगं पुनः,
भक्तानां हितकारकः शशिधरश्चक्रे निवासं ततः।।36।।

हिन्दी अनुवादः— इस प्रकार वे चन्द्रमा के समान मुख वाले शिवजी शान्त हो गये। वह नारायण, शिवजी की ध्यान की मुद्रा के द्वारा वहां खड़ा हो गया। इसके वाद शिवजी उसे वरदान भी उसकी इच्छा के अनुसार देकर तथा उस केदारनाथ नाम के शिवलिंङ्ग को स्पर्श करके वे भक्तों के परम हितैषी शिवजी वहीं विश्राम करने लगे।

ततः प्रभावं समवेक्ष्य पांडवाः,
शिवं तदाभ्यर्चितुमाश्रमं ययुः।
प्रपूज्य सम्यग्विधिना पिनाकिनं,
पुनः परिक्रम्य प्रणेमुरन्ततः।।37।।

हिन्दी अनुवादः— इसके वाद इस ज्योतिलिंग का अद्भुत प्रभाव देखकर सभी पाँचों पाण्डव शिवजी का पूजन करने के लिये उस पर्वत पर पहुँच कर आश्रम को गये। इसके बाद उन्होंने शिवजी की भली प्रकार पूजा करके एवं उस मंन्दिर की परिक्रमा करके भोलेनाथ को प्रणाम किया।

अथापरेद्युः धृतमाहिषं वपु—,
श्चचार सद्यः गिरिजापतिस्ततः।
विलोक्य तं वन्यपशुं युधिष्ठिरः,
जगाद भीमं मधुरं प्रियं वचः।।38।।

हिन्दी अनुवादः— इसके वाद पार्वती जी के स्वामी शिवजी भैसे का शरीर धारण करके तुरन्त विचरण करने लगे। युधिष्ठिर ने उस जंगली पशु को देखकर भीम से अति मधुर एवं प्रिय शव्दों में कहा।

नवेत्सि नूनं कथमत्र सांप्रतं,
चरत्यसौ वन्यपशुः वृकोदर!।
विलोक्य मां तिर्यग्चक्षुषा पुनः—,
र्दुनोति दैन्यैन मनस्विनामिव।।39।।

हिन्दी अनुवादः— हे भीमसेन! वास्तव में तुम नहीं जानते यह जंगली जानवर इस समय क्यों घूम रहा है। क्योंकि यह मुझे वार वार अपनी तिरछी आंख से देखकर अपनी दीनता से विद्वानों के समान मुझे हर क्षण पीड़ित कर रहा है। क्योंकि इस समय विद्वानों का ही सम्मान नहीं होता।

अयं वलिष्ठः द्विपवच्चतुष्पदै—,
र्विडम्वयत्येष मृगेन्द्र विक्रमम्।
वृहद्विषाणोर्जित कृच्छगह्वरे—,
शरीर कण्डूयनमेति संक्षयम्।।40।।

हिन्दी अनुवादः— हे भीम! यह जंगली भैसा अपने चारों पैरों से हाथी के समान बलवान् है। यह शक्ति में तो सिंह की भी विडम्वना कर रहा है। अपने बड़े-बड़े सींगों से सामने की कठोर गुफा में खौरी लेकर अपने शरीर की खुजली मिटा रहा है।

विशाल विक्रान्तवपुर्विलोक्य तं,
ययौ न पार्श्वे सहसा वृकोदरः।
विभेत्य सद्यः नतमस्तकोऽभव-,
द्वलं वलेनात्र स्वतः ह्रणीयते।।41।।

हिन्दी अनुवादः— विशालकाय एवं शक्तिशाली उस भैसे को देखकर भीमसेन सहसा उसके समीप नहीं जा सका। अपितु उससे भयभीत होकर वह तुरन्त नतमस्तक हो गया क्योंकि इस लोक में शक्ति दूसरे की शक्ति से स्वतः ही लज्जित हो जाया करती है।

ततः समाहूय धनंजयं ह्रिया,
जगाद तं वीर धनुर्धरं पुनः।
यथा रविं प्रेक्ष्य दिगन्तरं चखे,
निशाकरो याति स्वयं भयातुरः।।42।।

हिन्दी अनुवादः— इसके बाद भीम ने अर्जुन को बुलाकर उस धनुर्धर से लज्जित होकर उसी प्रकार कहा, जैसे आकाश में सूर्य को देखकर चन्द्रमा लज्जित एवं भयभीत होकर दूसरी दिशा को प्रस्थान कर देता है। अर्थात् अस्त हो जाता है।

वलावलेपाद्वलवान् धनंजयः,
निधाय गाण्डीव धनुर्विलक्षणम्।
जगाम हन्तुं महिषं बनौकसं,
यथा महाकाल इवात्तविक्रमः।।43।।

हिन्दी अनुवादः— वह वलवान् अर्जुन अपनी शक्ति के घमण्ड से चूर होकर गाण्डीव नामक धनुष को लेकर उस जंगली भैसे को मारने के लिये चल दिया। मानों उसे महाकाल शिवजी से स्वयं शक्ति प्राप्त हो गई हो। यद्यपि वह भैसा शिवजी का रूप था। किन्तु उसे मारने के लिये अर्जुन

भयभीत नहीं हुये।

समीक्ष्य रूपं सहसा धनंजयः,
ननाम पूर्वं शतधाः मुहुर्मुहुः।
विकृष्यकोषान्निशितं शरं ततः,
जगाद वन्यं प्रहसन् जगत्पतिं।।44।।

हिन्दी अनुवादः— अर्जुन ने उस रूप को देखकर पहले सैकड़ो वार, वार–वार प्रणाम किया। इसके वाद अपने तरकस से अधिक तेज धार वाला वाण निकालकर उस जंगली भैसे का रूप धारण करने वाले संसार के स्वामी शिवजी से हंसते हुये कहा।

न निग्रहीतुं क्षमते विधुन्तुदः,
न चात्र चक्रं चपलं हरेरपि।
तथापि वध्नामि समर्चितुं प्रभो!,
क्षमष्व तन्नोऽविनयं त्रिलोचन!।।45।।

हिन्दी अनुवादः— हे शिवजी! आपके वन्दी वनाने के लिये न तो राहु ही सामर्थ्यवान् है। और न भगवान् विष्णु का चंचल चक्र ही आपको वांध ा सकता हैं। इसलिये हे स्वामी! आपकी पूजा करने के लिये मैं फिर भी आपको वांधना चाहता हूँ। हे शिवजी! आप मेरी धृष्टता को क्षमा कर दें।

अवैमि त्वद्रूपमिदं मनोहरं,
विदन्ति लोके न च नागकिन्नराः।
विधिः स्वयं नैव महेन्द्र शारदा
न चापि वेदाः न महर्षयोपुनः।।46।।

हिन्दी अनुवादः— हे शिवजी! आपके इस मनोहर स्वरूप को मैं पहचानता हूँ। इसे संसार में नाग, किन्नर, ब्रह्मा, इन्द्र, तथा सरस्वती एवं चारों वेद, महर्षिगण भी नहीं पहचान सकते भला सामान्य व्यक्ति की तो वात ही क्या है।

कथं गृहीतं नव माहिषं वपु–
श्चराचरात्मन्! जगतीतले त्वया।

त्वदीय भक्त्याधिगतं चिरंतनं,
नमामि भूयस्तव पादपंकजम्।।47।।

हिन्दी अनुवादः– हे शिवजी! चराचर की आत्मा होकर आपने इस संसार में जंगली भैसे का रूप क्यों धारण किया है। आपकी अलौकिक भक्ति के द्वारा ही मैंने आपके इस चिरन्तन स्वरूप को पहचान लिया हैं। इसीलिये मैं आपके इन चरण कमलों को वार वार प्रणाम कर रहा हूँ।

निशम्य सस्निग्ध वचः महेश्वरः,
समाप्य रूपं सहसा बनौकसां।
त्रिकालदर्शी वपुषा जगत्पतिः,
जगाद तं प्रीति समन्वितं वचः।।48।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार अर्जुन के प्रेम से युक्त बचनों को सुनकर शिवजी ने अपने जंगली भैंसे का स्वरूप समाप्त करके, बे संसार के स्वामी तीनों काल का अबलोकन करने बाले भोलेनाथ उस अर्जुन से प्रेमपूर्वक बोले।

सदैव भक्तार्ति विनाश हेतवे,
विभिन्न रूपाणि निधाय चार्ज्जुन!।
वृजामि सर्वत्र स्वयं वनाद्वनं,
यथा ध्रुवं त्रातुमसौ रमापतिः।।49।।

हिन्दी अनुवादः– हे अर्जुन! मैं सदैव अपने भक्तों की बेदना को दूर करने के लिए विभिन्न प्रकार के रूपों को धारण करके एक वन से दूसरे वन को खोजता रहता हूँ। जैसे ध्रुव की रक्षा करने के लिए भगवान् विष्णु घूमते थे।

क्वचिन्महाकाल वनं वृजाम्यहं,
क्वचितु चन्द्रस्य क्षयाधि शान्तये।
भवामि देव्या सह मल्लिकार्जुनं,
क्वचितु नागेश्वर दारूकावने।।50।।

हिन्दी अनुवादः– कहीं तो मैं महाकाल बन को जाता हूँ। कहीं चन्द्रमा के क्षय रोग की शान्ति के लिए जाता हूँ। कहीं अपनी धर्मप्रिया दे

साथ मल्लिकार्जुन बन जाता हूँ। तो कहीं दारूका बन में नागेश्वर के रूप में अवस्थित होता हूँ।

समाह्वयन्तीह जनाः यदा यदा,
तदात्म संधाय स्वरूपतादृशं।
विचित्रलीलाधरवज्जगत्त्रये,
स्वयं हि पश्यामि चरित्रनात्मनः।।51।।

हिन्दी अनुवादः– हे अर्जुन! जब–जब लोग हमें बुलाते हैं वैसा ही मैं अपना रूप धारण करके उसी प्रकार अपना चरित्र देखा करता हूँ जैसे नट विभिन्न प्रकार का रूप धारण करके अपना चरित्र नाटक में स्वयं देखा करता है।

धृतात्मशस्त्रेण कथं च मादृशम्
विनिग्रहीतुं न कदापि शक्यते।
स्वभक्त हेतोः प्रणये वशीकृताः
भवन्ति लोकेहि सदैवदेवताः।।52।।

हिन्दी अनुवादः– हे अर्जुन! धारण किये गये अस्त्र के द्वारा तुम हम जैसे लोगों को बांधने में कभी किसी प्रकार समर्थ नहीं हो सकते। क्योंकि देवतागण अपने भक्तों की भक्ति से उत्पन्न स्नेह के द्वारा ही वशवर्ती हुआ करते हैं।

वदाशुकिं बाञ्छति निर्मलं मनः,
वृणीष्व यत्ते रूचिरं जगत्त्रये।
प्रपूरयिष्यामि सुदुष्करं पुन–,
र्वदन्ति देवावितथाहि सद्गिरा।।53।।

हिन्दी अनुवादः– हे अर्जुन बोलो तुम्हारा निर्मल मन क्या चाहता है।जो तीनों लोकों में तुम्हें सबसे प्रिय लग रहा हो वह वरदान मांग लो। मैं अवश्य तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण ही करूँगा। क्योंकि देवता सदैव सत्य एवं मीठी वाणी बोला करते हैं।

दुरात्मनां नैवगतिर्विलोकितमश्रुतं वपुः।
तथापि भक्त्या प्राणिपत्य मत्पराः,

मदेव भक्ताः वृण्वन्तिकेवलम्।।54।।

हिन्दी अनुवादः– हे अर्जुन! मेरे इस नितान्त प्रक्षिप्त एवं संसार में परम प्रसिद्ध मेरे इस शरीर को देखने की सामर्थ्य दुष्ट एवं दुराचारी पुरुषों में कभी नहीं हो सकती। किन्तु फिर भी मेरी भक्ति में तल्लीन भक्तगणं मुझे केवल प्रणाम करके उसी का बरण किया करते हैं।

त्रयीव प्रायः प्रणवं जगत्त्रये,
विभिन्न शास्त्रेषु यथेश विश्रुतः।
मदीय रूपाणि नयन्ति मत्पदम्
यथा विलेम्यः ननु तैलमीयते।।55।।

हिन्दी अनुवादः– हे अर्जुन! जैसे वेदों में ओंकार एवं शास्त्रों में ईश्वर प्रसिद्ध है। उसी प्रकार मेरे समस्त रुद्र तीनों लोकों में उसी प्रकार निहित रहते हैं। जैसे तिलों में तेल भिन्न नहीं होता। यह अद्भुत रूप सदैव उनमें निहित रहता है।

अनादि रूपं न विदन्ति मानवाः,
न चात्र पूर्वाचरितैः मनीषिणः।
बलावलेपं प्रविहाय मत्पदं,
बृजन्ति भक्ताः भुविभावविह्वलाः।।56।।

हिन्दी अनुवादः– हे अर्जुन! मेरा यह गोपनीय रूप न तो इस लोक में साधारण मनुष्य ही जान पाते हैं और न पूर्व जन्म में किये गये शुभ आचरण के द्वारा विद्वान् पुरुष जान पाते हैं। हां घमण्ड से रहित मेरे भक्त मेरी भक्ति से विह्वल होकर जरूर मेरे इस परम पद को प्राप्त कर लेते हैं।

भवेद्वलं वैरिवधोद्यतं पुन–,
र्कदापि मागाः भुवने पराजयं।
धनुर्धरः स्याः सततं सुबन्धुषु,
भवेज्जयी वैरिबलेषु संयुगे।।57।।

हिन्दी अनुवादः– हे अर्जुन! शत्रुओं का वध करने के लिए अद्भुत बल प्राप्त हो। इस संसार में तुम्हारी कभी भी पराजय न हो। अपने समस्त

भाइयों में तुम वीर धनुर्धर बनकर तथा युद्ध में शत्रुओं की सेना में तुम्हारी सदैव विजय हो।

जयन्ति धीराः युधि संततं रिपून,
त्यजन्ति वीराः नच साहसं पुनः।
द्वयोर्गतिस्त्वामनुवर्तयेच्छनैः,
यथा तरूणां फलपुष्पसंगमा।।58।।

हिन्दी अनुवादः— हे अर्जुन! धीर योद्धा ही युद्ध में शत्रुओं को जीत पाते हैं। किन्तु वीर पुरुष युद्ध में कभी साहस नहीं छोड़ते। अतएव दोनों प्रकार के वीरों की प्रतिभा तुम्हारा अनुसरण उसी प्रकार करती रहे जैसे वृक्षों में फूल एवं फलों का आधान क्रम से हुआ करता है। तात्पर्य यह है कि तुम्हें धैर्य एवं साहस एक समान ही प्राप्त हो। ऐसा मेरा आशीर्वाद है।

कदापि भागाः दुरितं क्वचित्पदं,
शशांकवद्भातु जगत्त्रये यशः।
सदेव नक्षत्रग्रहाश्च देवताः,
प्रयान्तु भूयो विविवद्भवार्णवे।।59।।

हिन्दी अनुवादः— हे अर्जुन! तुम्हारा अधःपतन कभी न हो। तुम्हारा यश तीनों लोकों में चन्द्रमा के समान दैदीप्यमान हो। समस्त गृह, नक्षत्र, दक्तागण इस भवसागर में भली प्रकार तुम्हारी सदैव रक्षा करते रहें।

ततोऽभवद्वीर धर्नुधरो बली,
धनज्जयः धैर्यवतां महोत्तमः।
महाप्रतापी शिवशक्तिमन्वितः,
ह्यजीजयत्तेन नयेन भारतम्।।60।।

हिन्दी अनुवादः— इसके बाद शिवजी का आशीर्वाद प्राप्त करके वह अर्जुन धनुषधारी समस्त वीरों में महापराक्रमी, धैर्यवान् एवं महाबलवान् वीरधनुर्धर हो गया। जिसने शिवजी की शक्ति को प्राप्त करके भारतवर्ष में महाभारत का युद्ध नीति के द्वारा जीत लिया।

इत्येवं प्रथुसूनवे सुललितं दत्वावरं वांछितं,
सद्यः मन्दिरमन्तरे शशिधरस्तस्थौ मुनीनामिव।
केदारेश्वरलिंङ्गमात्मकरजैः कण्डूयमानः पुनः—
ध्यानावस्थित मुद्रया सुरगुस्तत्रैवचान्तर्दधे।।61।।

हिन्दी अनुवादः— इस प्रकार अर्जुन को मनवान्छित वरदान देकर वे शिवजी महेश्वर भोलेनाथ जी उस मन्दिर के अन्दर मुनियों के समान विराजमान हो गये। इसके बाद उस केदारेश्वर नामक शिवलिंग को अपने नाखूनों से बार—बार खुजलाते हुए ध्यान की मुद्रा में वे वहीं अर्न्तध्यान हो गये।

फलकपुर निवासी विप्रवंश प्रदीप,
द्विजगुरुजनसेवी शम्भु सन्नाम धेयं।
सकलजगद्धेतोः दर्पणं चाति श्रेष्ठं,
लिखितमिह पुरारेर्प्रीतिमाप्तुं मयैव।।62।।

हिन्दी अनुवादः— उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के निवासी ब्राह्मणों तथा गुरुजनों के सच्चे सेवक "आचार्य शम्भू दयाल अग्हिोत्री" ने संसार के हित के लिए, शिवजी की सत्यनिष्ठा एवं भक्ति को प्राप्त करने के लिए "द्वादश ज्योतिर्लिङ्गदर्पण" नामक अद्वितीय ग्रन्थ की रचना की है।

इति द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणस्य पंचमः सर्गः समाप्तः
इति केदारेश्वर निरूपणम् जातम्
— इति शं —
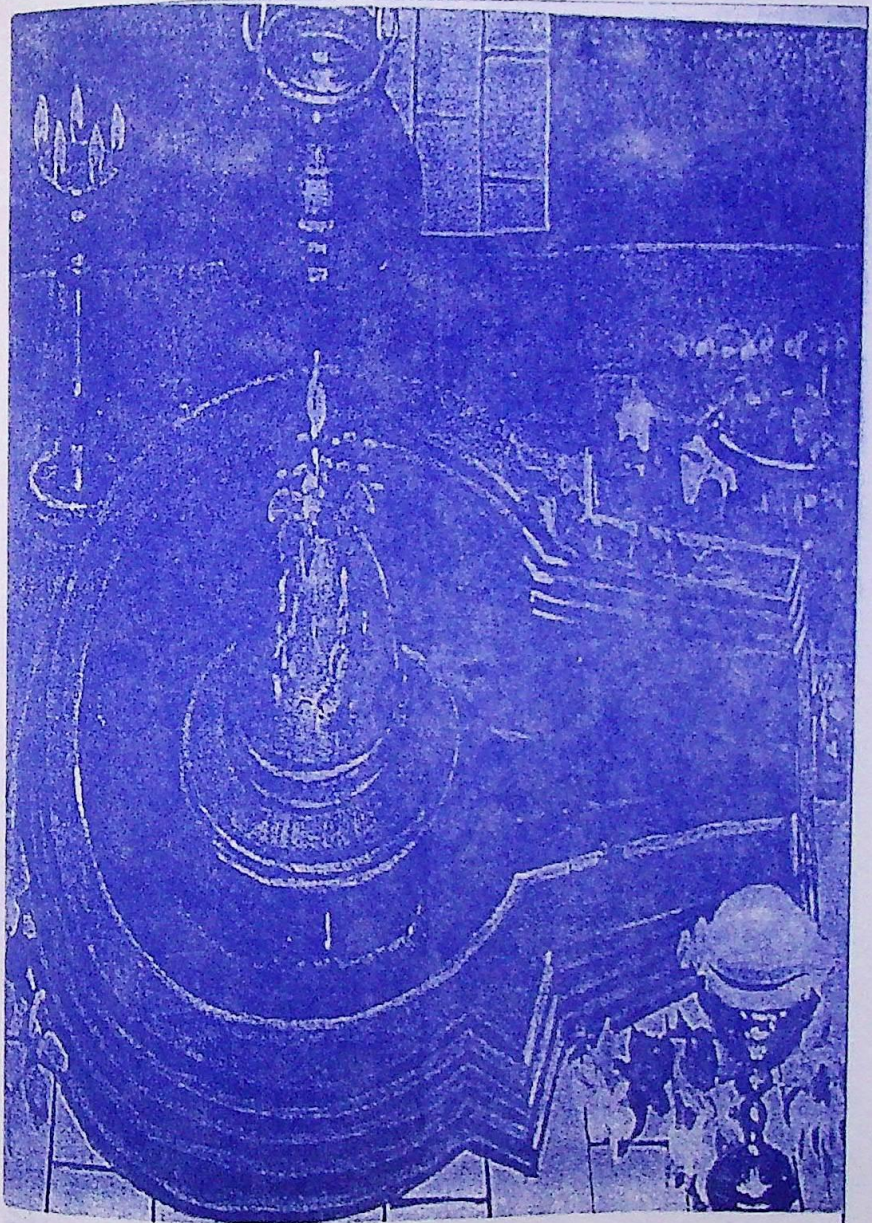
श्रीभीमेश्वरम्

अथ श्री द्वादशज्योतिर्लिड्.ग दर्पणस्य षष्ठः सर्गः

—ःभीमशंकर निरूपणः—

भीमायाः ललिते तटै विलसितं संशोभितं संततं,
ब्रह्मा–विष्णु–सुरेन्द्र सेवितपदं संपूजितं पूजया।
हत्वा भीम निशाचरं पुनरहो! लोके परं विश्रुतं,
वन्दे विश्वविभूतिकारणपरं भीमं ततः शंकरं।।1।।

हिन्दी अनुवादः— भीमा नदी के किनारे सुन्दर तट पर सुशोभित होने वाले ब्रह्मा, विष्णु तथा इन्द्र के द्वारा जिनके चरण कमलों की सदैव सेवा की जाती है एवं उनकी पूजा से पूजित भीम नाम के राक्षस को मारकर संसार में परम प्रसिद्ध उन संसार की समस्त सम्पत्ति के प्रमुख कारण, भगवान् भीमशंकर ज्योतिर्लिड्.ग की मैं वन्दना कर रहा हूं।

साक्षाच्छम्भुकृपावशीकृन्मनः मन्ये! मदीयं मया—
ज्योर्तिर्द्वादशलिंड्ग दर्पणमिदं लोकोपकार क्षमं।
सर्वेषां ललितं कथानकयुतं संशोध्यसम्यग्तया,
शास्त्री शम्भु दयालु शब्द ललितैर्भूयौबृहन्निर्मितं।।2।।

हिन्दी अनुवादः— यद्यपि मैं भली प्रकार समझता हूं कि भगवान् भोलेनाथ की प्रत्यक्ष कृपा से मेरा मन वशवर्ती हो चुका था। इसीलिए मैं शम्भुदयाल अग्निहोत्री नामक रचनाकार ने सर्वोत्तम कथानकों से युक्त एवं पुनः संशोधन करके, द्वादशज्योतिर्लिंगदर्पण नामक ग्रन्थरत्न की जो समस्त संसार का हित करने में स्वयं सक्षम है, ऐसी ग्रन्थ की सुन्दर एवं सरल शब्दों में रचना की है।

येनित्यं च पठन्ति साधकजनाः श्रण्वन्ति वा संततं,
तेषां नैव कदापि कंचिद्भयं चौरान्न रोगादपिं।
दिव्यं चास्य कथानकं हि भुवने भक्ति प्रदं देहिनां,
साक्षादत्र च भीम शंकर शिवस्त्रातुंजगत्संस्थितः।।3।।

हिन्दी अनुवादः— जो साधुजन इस कथानक को रोज पढ़ते हैं या

सुनते हैं उन्हें कभी भी रोग या चोर सम्बन्धी भय नहीं होता। वस्तुतः इसका कथानक संसार में प्रत्यक्ष भक्ति प्रदान करने वाला है क्योंकि यहां भगवान भोलेनाथ भीमशंकर जी समस्त संसार के प्राणियों की रक्षा करने के लिए स्वयं विराजमान हुए थे।

पुराच सह्याद्रि प्रसिद्ध पर्वते ,
वभूव कश्चिद्गजवन्निशाचरः।
स भीम नाम्ना प्रथितः जगत्त्रये,
वलावलेपात्स ददर्श कौतुकं।।4।।

हिन्दी अनुवादः– पहले सह्याद्रि नामक प्रसिद्ध पर्वत पर एक हाथी के समान भंयकर एक राक्षस हुआ। वह भीम नाम से समस्त संसार में मशहूर हुआ। उसने अपने घमण्ड के कारण एक अजीब कौतुक देखा।

अथैकदा सः जननीं च कर्कटीं,
पप्रच्छ सन्ध्या समये सकौतुकम्।
वदासु मातः! मम कः पिता प्रियः,
कथं च सह्यादि गिरिं समाश्रितः।।5।।

हिन्दी अनुवादः– एक दिन उसने सन्ध्या के समय कौतूहल पूर्वक अपनी माता कर्कटी से पूंछा। हे माताजी! मेरे प्यारे पिताजी कौन हैं तथा इस सह्याद्रि पर्वत पर कैसे आये। कृपया आप इस वृतान्त को बताने का कष्ट करें।

निशम्य शब्दांश्च सुतस्य कर्कटीं,
जगाद निश्वस्य स गद्गदं वचः।
निवेदितुं नात्र मनः प्रवर्तते,
सुखं न लोके सुतः! योषितामपि।।6।।

हिन्दी अनुवादः– अपने पुत्र के शब्दों को सुनकर वह कर्कटी नाम की राक्षसी गर्म श्वांस लेकर गद्गद कंठ से बोली। हे बेटा! इस कथा को सुनाने की इच्छा नहीं होती क्योंकि इस संसार में नारियों को कभी सुख नहीं मिलता।

तथापि भीमः प्रसभं पप्रच्छतां,
निशम्य सद्यः खलु गद्गदं वचः।
निवार्य किंचित्करुणाश्रुबिन्दुभिः,
जगाद तं सात्र गंभीरया गिरा।।7।।

हिन्दी अनुवादः— फिर भी उस भीम ने अपनी माता के गद्गद कंठ से युक्त शब्दों को सुनकर जबरदस्ती अर्थात् हठपूर्वक उसने फिर भी पूंछा। इसके बाद कर्कटी अपने करुणाकलित आंसुओं को पोंछकर गंभीर वाणी से उससे बोली।

वदामि किं वत्स! पुरंध्रिजीवनम् ,
विचारणीयं सततं जगत्त्रये।
तथापि वैधव्ययुतं च दुर्वहं ,
निगद्यते चैव मृतं सुयोषितां।।8।

हिन्दी अनुवादः— हे बेटा! तुम्हें क्या बताऊं स्त्रियों का जीवन प्रायः तीनों लोंकों में चिन्तनीय होता है। फिर भी नारियों का वैधव्य जीवन नितान्त दुरूह एवं मरण तुल्य गिना जाता है।

मृतस्त्वदीयः जनकोऽपि यौवने ,
मयापि वैद्यव्यमियाय जीवनं।
विसृज्य सर्वान् गृहबंधुवांधवान् ,
समागताहं गिरिवासकांक्षया।।9।।

हिन्दी अनुवादः— हे बेटा! तुम्हारे पिताजी तो जवानी की अवस्था में स्वर्गवासी हो गये थे। उसी समय से मैंने अपना वैधव्य जीवन बिताया मैं अपना घरवार अथवा भाई बन्धुओं को छोड़कर मैं इस पर्वत पर निवास करने के लिए चली आयी।

ततः जपन्ती हरिनाम केवलं ,
उवाह किंचिन्न च जीवने सुखं।
ददर्श स्वप्नेऽपिनते गुरूं पुन—
र्नवा कथंचिच्छ्रुतमश्रुतं वचः।।10।।

हिन्दी अनुवादः– हे बेटा! उसी समय से ईश्वर का नाम जपती हुई मैंने अपने जीवन काल में कभी सुख नहीं प्राप्त कर पाया। इसके बाद तुम्हारे पिताजी को स्वप्न में भी कभी नहीं देखा। और न फिर कभी दुवारा उनके अद्भुत वचन ही सुन पाये।

सदैव प्रायः मृतभर्तकाः वने ,
निनाय चान्तर्विकलंहि जीवनं।
महामहोत्पात प्रभज्जनोत्थितः ,
शशाक सोढुं विवशाऽभवं खलु।।11।

हिन्दी अनुवादः– हे बेटा! स्वामी के मर जाने पर इस जंगल में मैं सदैव अपने आन्तरिक जीवन को व्याकुल अवस्था में ही व्यतीत करती रही। बड़े–बड़े आँधी तूफानों को सहन करने के लिए मैं इस वन में अकेली ही सक्षम हो सकी।

अथैकदा दुर्धरनिर्जितेन्द्रियः,
समेत्य लंकाधिपतेः सहोदरः।
बलाद्दुराचारमतिश्चकर्ष मा,
मनिच्छाया कर्मचकार दुष्कृतं।।12।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद एक दिन अपनी इन्द्रियों को काबू पाने में अक्षम, रावण का छोटा भाई कुम्भकर्ण मेरे पास आकर मुझे जबरदस्ती खींचने लगा। और उसने मेरे साथ बलात्कार कर डाला।

ततो कलंकीभवदात्मना स्वयं,
ययौ स विक्लान्तमनः दिगन्तरं।
चलच्चतुर्दिक्षु चचाल भूधरः,
ददर्शचैनं नमसा चतुर्मुखः।।13।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद वह राक्षस कुम्भकर्ण अपने आन्तरिक मन से कलंकित होता हुआ, एवं व्यथित मन से किसी दिशा की ओर चला गया। उसके चलने पर सारा पर्वत चारों तरफ से हिलने लगा। किन्तु इस पापी को आकाश से केवल ब्रह्माजी ने देख लिया था।

गतेऽपि तस्मिन्सहसा समुत्थितुं ,
प्रभावशून्यं समवेक्ष्य मद्वपुः।
सहायभूतोभवदन्यकिन्नरः ,
समागतस्तत्र स्वयं हरेरिव।।14।।

हिन्दी अनुवादः— उस पापी के चले जाने पर भी , सहसा उठने के लिए सामर्थ से रहित मेरे शरीर को देखकर , कोई किन्नर सहायक बनकर वहाँ आ पहुँचा। मानों वहाँ स्वयं भगवान् आ गये हों। अर्थात् उस निर्जन वन में उसे देखकर मैंने समझा मानों स्वयं भगवान् आ गये ।

करं सामालम्ब्य तदस्य तत्क्षणं ,
समुत्थिता चात्रवलेन कर्हिचित् ।
नचान्यमित्रैर्न सुहृज्जनैस्तदा ,
विपत्तयो नैव ददर्श विह्वला।।15।

हिन्दी अनुवादः— इसके बाद उसी किन्नर का हाथ पकड़कर, बलपूर्वक मैं किसी तरह उठ पायी। किन्तु ऐसी बिपत्ति के समय पर किसी अन्य मित्रों एवं भाई वान्धवों ने व्याकुल अवस्था में मुझे देखा तक नहीं।

भ्रमन्ति चाद्यापि वने निशाचराः ,
नतद्विधः प्राप्तवती वनेष्वपि।
वदामि किं वत्स ! पुनर्नसाययौ ,
तमद्य संस्मृत्य मनः ह्रणीयते।।16।।

हिन्दी अनुवादः— हे बेटा ! यद्यपि वन में आज भी राक्षस घूमते रहते हैं। किन्तु वैसा राक्षस मैंने आज तक जंगलों में भी नहीं प्राप्त कर पाया। वह यहाँ से जाने के बाद पुनः लौटकर नहीं आया। उसकी याद करके मेरा मन आज भी लज्जित हो जाता है।

यथा स चासीद्विकराल भूधरः ,
स्वयं च पाषाण वपुर्महावलः।
तथैव त्वच्चाद्य प्रसूय काननं,
बिभेति भूयः मृगसिंहयोरिव।।17।।

हिन्दी अनुवादः– वह कुम्भकर्ण जैसा पर्वत के समान विकराल, एवं पत्थर के समान कठोर शरीर वाला, एवं शक्तिशाली था। उसी प्रकार तुमको उत्पन्न करके यह जंगल सिंह तथा हिरन के समान आज भी भयभीत हो रहा है।

भवन्ति लोके न भवादृशाः सुताः ,
विलोक्य त्वामत्र बिभेति मेदिनी।
ममापि सौभाग्यमिदं न चिन्तया ,
कदापि चेतश्चलितं भविष्यति।।18।।

हिन्दी अनुवादः– हे बेटा ! इस संसार में तुम जैसे पुत्र भी नहीं होते। तुम्हें देखकर समस्त धरती भयभीत हो रही है। मेरा भी यह सबसे बड़ा सौभाग्य है कि चिन्ता के कारण अब मेरा मन कभी भी विचलित नहीं हो सकेगा। अर्थात् मैं भी निश्चित होकर विचरण करूँगी।

यथैक पुत्रेणहि पुत्र वत्सला ,
विभेति सिंही न कदापि कानने।
तथैव त्वामत्र प्रसूय संततं ,
भयं न चिन्ता ह्वदयं प्रवाधते।।19।।

हिन्दी अनुवादः– जैसे एक पुत्र के द्वारा सौभाग्य शाली शेरनी कभी भी जंगल में भयभीत नहीं होती। उसी प्रकार तुम्हें उत्पन्न करके मेरे ह्वदय को भय अथवा चिन्ता पीड़ित नहीं करती।

वलं सदैवादधते सुखान्तिकं ,
मनस्विनां मोहततिंर्विलीयते।
विभर्ति कान्तारगतेऽपि जीवनंम् ,
सतां समृद्धिर्हि वलेन शोभते।।20।।

हिन्दी अनुवादः– वल सदैव एकान्तिक सुख का आधान करता है। वह बुद्धिमानों की मोहात्मक पद्धति को भी क्षीणकर देता है। यह वन में भी चले जाने पर जीवन की रक्षा करता है। अतःएव सज्जनों की सम्पत्ति भी वल के द्वारा ही सुशोभित हुआ करती है।

ततो वलस्यैव समर्जनं वुधाः ,
विधातुमन्तोऽपि चरन्ति दुश्चरं।
तपोभिरन्तर्मनसा वृतं पुन— ,
र्जगत्पतेश्चात्र निदर्शनंतपः।।21।।

हिन्दी अनुवादः— इसीलिए शक्ति का अर्जन करने के लिए बुद्धिमान लोग अतिरिक्त मनोवृत्ति के द्वारा कठोर तपस्या से चराचर गुरू भोलेनाथ का अद्भुत एवं अलक्षित वृत एवं तप किया करते हैं।

त्वमत्र नूनं तपसा चतुर्मुखं ,
प्रसाद्य शक्तिं हि समर्जितुं पुनः।
चराशु शुद्धांत विधेर्विलक्षणम् ,
सुदुश्चरं निश्चल दारूणं तपः।।22।

हिन्दी अनुवादः— हे बेटा! तुम भी तपस्या के द्वारा ब्रह्माजी को प्रशन्न करके, शक्ति का अर्जन करने के लिए, शुद्ध अन्तःकरण से ब्रह्मा का कठोर एवं कठिनता से करने योग्य अविचल तप करो।

इत्येवं वचनं निशम्य सहसा भीमोऽपि तद्दानवः ,
नत्वा मातृपदं परं पुनरसौ चक्रे विधातुस्तपः।
चंचच्चन्द्र प्रभा निषेक सरसं कृत्वा मनो निर्वलं ,
लोके पितृसमो वभूव सहसा सूर्याशुवद्दुर्धरः।।23।।

हिन्दी अनुवादः— इस प्रकार अपनी माता की बात सुनकर वह भीम नामक राक्षस, अपनी माता कर्क्टी के चरणों की वन्दना करके, ब्रह्माजी की तपस्या करने लगा। चन्द्रमा की कान्ति के अभिषेक से सरस एवं अति निर्मल मन को बनाकर इस संसार में अपने पिता के समान सहसा सूर्य की किरणों के समान देदीप्यमान एवं वीर शक्तिशाली योद्धा वन गया।

बलावलेपात्स चचार कानने ,
जगर्ज भूयः धनमैरवैः रवैः।
निशम्य लोके नरनागकिन्नराः ,
भयं च तस्मात्सहसा हि लेमिरे।।24।।

हिन्दी अनुवादः– वह भीम नामक राक्षस अपने घमण्ड के कारण उस वन में घूमा। इसके बाद वह बादल के समान घनघोर एवं भयंकर आवाज में गरजने लगा। उसकी आवाज सुनकर संसार में मनुष्य, नाग, एवं किन्नर लोग उससे भयभीत हो गये।

इतस्ततो वै विचचार भूतले ,
विशाल कायो विधिवन्निसाचरः।
ततो भयं प्राप्य पुनर्मनीषिणो ,
विहाय जग्मुः सहसा दिगन्तरं।।25।।

हिन्दी अनुवादः– वह सामर्थ्यवान् राक्षस विशाल शरीर वाला भली प्रकार समस्त भूतल पर इधर–उधर घूमने लगा। उससे भयभीत होकर विद्वान पुरूष एवं मुनिजन उस वन को छोड़कर दूसरी दिशायों में भागने लगे।

विशाल भूण्डलमध्य गामिनं ,
वलावलेपादति दुर्धरं विधिः।
विलोक्य तं चातिवलं भयंकरं ,
सविस्मितस्तत्र ययौ तदान्तिकम्।26।।

हिन्दी अनुवादः– इतने विशाल भूमण्डल पर घूमने वाले , तथा शक्ति के धमण्ड से अधिक कठोर होने वाले, अत्यघिक बलशाली उस दानव को देखकर, ब्रह्माजी आश्चर्यचकित होकर स्वयं उसके पास गये।

समीक्ष्य साक्षाच्चतुराननं च सः,
ननाम भूयोऽपि न तं निसाचरः।
यथा शिवोपात्तवरः दशाननः,
जगाद मार्गे न शिवं मनागपि।।27।।

हिन्दी अनुवादः– उस राक्षस ने साक्षात् ब्रह्माजी को देखकर दुवारा उन्हें प्रणाम तक नहीं किया। जैसे रावण ने शिवजी से वरदान प्राप्त करने के बाद, रास्ते में मिल जाने पर भी शिवजी से बड़े घमण्ड के कारण जरा भी नहीं बोला अर्थात् घमण्ड के कारण लोग प्रायः अपने व्यक्ति या अपने इष्ट को भी भूल जाया करते हैं।

तथा कृतघ्नं समवेक्ष्य भूयसा ,
जगाद तं सिंधुसुतात्मजस्ततः।
अहो! दुरात्मन्! भुवनेऽपि त्वद्विधाः
विलोकिता नैव श्रुताः हि स्वार्थिनः।।28।।

हिन्दी अनुवादः— उसी प्रकार उस एहसान फरामोस उस राक्षस भीम को देखकर ब्रह्माजी उससे बोले। अरे पापी! इस संसार में तेरा जैसा स्वार्थी मैंने आज तक न कहीं देखा, न सुना ही है। अर्थात् मुझसे वरदान प्राप्त करने के बाद मुझे तू पहचान भी न सका।

त्वदीय मृत्युः शिवशूल कर्षणा— ,
त्तवात्मखड्गेन ध्रुवं भविष्यतिं
नितान्त शून्ये शिव मन्दिरे भृशं ,
वपुस्त्वदीयं न तदेष्यति भुवम्।।29।।

हिन्दी अनुवादः— हे राक्षस! शिवजी के त्रिशूल के द्वारा खींची गई तेरी तलवार से ही तेरी मृत्यु होगी। ऐसे निर्जन स्थान पर शिव के मंदिर में तू मरेगा, जहाँ तेरा शरीर एक बार जमींन पर आने के बाद दुवारा पृथ्वी का पुनः स्पर्श भी नहीं कर पायेगा।

निशम्य कोपाकुल दारूणं बचः,
जगाद भीमोऽपि ततश्चतुर्मुखम्।
मया तपोमिर्न्नु विक्रमोर्जितं ,
वलं विलोक्याद्य कथं ह्रणीयसे।।30।।

हिन्दी अनुवादः— इस प्रकार कोध की व्याकुलता के कारण ब्रह्मा के कठोर बचनों को सुनकर वह भीम नाम का राक्षस फिर ब्रह्माजी से बोला। अरे ब्रह्मा मैंने अपनी तपस्या एवं पराकम के द्वारा शक्ति का अर्जन किया है। तुम मेरे बल को देखकर आज लज्जित क्यों हो रहे हो।

हिरण्यगर्भांग शरीर तेजसा,
चतुर्मखैश्चात्र वृथा प्रजल्पितं।

विलोक्य त्वामत्र विद्यते मन–
स्तथापि शून्येहृदयेऽपि खिद्यसे।।31।।

हिन्दी अनुवादः– विष्णुजी के हिरण्य गर्भमय शरीर से उत्पन्न होने के कारण अपने शारीरिक तेज एवं चारों ओर मुखों से बकने वाले तुम्हें देखकर हे ब्रह्मा! मेरा मन बहुत पीड़ित हो रहा है। किन्तु तुम फिर भी अपने सौम्य हृदय में लज्जित अथवा खिन्न क्यों हो रहे हो।

सुपद्मयालब्ध कलेश्वरंविधे!,
सुशिक्षिताश्चात्र प्रगल्भता तया।
अतस्तु लोके चतुराननं च त्वां ,
विदन्ति प्रायः विधिवद्विशारदाः।।32।।

हिन्दी अनुवादः– लक्ष्मीजी से शरीर प्राप्त करने बाले हे ब्रह्माजी! तुमने शीघ्रतापूर्वक चापल्य भी उसी लक्ष्मी से ही सीखा होगा। इसीलिए लोग तुम्हें चार मुख वाले अर्थात् (चौमुहे) की संज्ञा के कारण चतुर लोग तो भली प्रकार से पहचानते ही हैं।

पुरंध्रिबीजं भुवि विप्लवोद्भवं ,
वपन्नहो! नैव विचारितं विधे !
मुधा स्वमायाकृत कोप कुष्ठितं ,
विलोकितं नैव मुखं सुयोषिताम्।।33।।

हिन्दी अनुवादः– हे ब्रह्माजी! संसार में प्रलयकाल से उत्पन्न नारी जाति का बीज इस संसार में बोते हुए , क्या कभी इस पर विचार तक नहीं कर पाया कि इसका परिणाम क्या होगा। बनावटी माया के द्वारा किये गये आकस्मिक क्रोध से कुंठित क्या सुन्दर स्त्रियों का मुख तुमने कभी नहीं देखा। इसीलिए ऐसी बकवास कर रहे हो।

सदा गुरूणां गुण कर्म संश्रयाः–
त्प्रजायते दीप इवात्म संततिः।
तथा प्रकृत्या जननीजनोचिता,
समीक्षते विश्वगिवोत्पलं भुवः।।34।।

हिन्दी अनुवादः— हे ब्रह्माजी! गुरुजनों के गुण एवं कर्मो के संयोग से सम्पृक्त दीपक के समान संतान उत्पन्न हुआ करती है। उसी प्रकार बच्चे में स्वाभाविक संस्कृत संस्कार माता के स्वभाव के अनुरूप चारों ओर दिखाई पड़ते हैं अर्थात् सन्निधान का आश्रय नितांत स्पृहणीय है।

यथा त्वदीया जननी जगत्त्रये
लुनाति धैर्यं धृतधीरयादृशा।
तथैव त्वामत्र सुशिक्षया च मां
विलोक्य नूनं धरणीह्रणीयते।।35।।

हिन्दी अनुवादः— हे ब्रह्माजी ! तुम्हारी माता लक्ष्मीजी जिस प्रकार तीनों लोकों में अपनी धैर्यशाली चितवन से समस्त संसार का धैर्य हरण कर लिया करतीं हैं। उसी प्रकार शिक्षा देने वाले तुम्हें एवं मुझ दोनों को देखकर यह धरती आवश्य ही लज्जित हो रही है। अर्थात् तुम्हारे अन्दर भी अपनी माता के ही समस्त गुण दिखाई देते हैं।

इत्येवं खलसदृशं निसिचरं निर्वर्ण्य भूयो विधिः ,
श्रुत्वा तत्र वचःसरोषमखिलं कोपाग्नि संदीपितं।
विश्वं वीक्ष्यदिवं पुनर्ननु स्वयं तेजस्तनोर्वारयन् ,
वव्रे चात्र चतुर्मुखः क्वचिदसौ पश्चात्प्रतस्थे दिवम्।।36।।

हिन्दी अनुवादः— इस प्रकार दुर्जन प्राणी के समान उस निसाचर को देखकर एवं क्रोध की अग्नि को प्रज्वलित करने वाले उसके बचनों को सुनकर ब्रह्माजी ने समस्त संसार एवं स्वर्ग को देखकर अपने शरीर का तेज शान्ति करते हुए कुछ अपने मुख से बोले। इसके बाद वे स्वर्ग को चले गये अर्थात् उन्होंने अपने दिव्यलोक को प्रस्थान कर दिया।

विजित्य मानं सहसा सुवेधस— ,
स्ततोऽसि शक्त्या सततं दिवौकसां।
पुनर्महेन्द्रादि सुरान्प्रपीड्य सः,
जहास सद्यः विपिने निसाचरः।।37।।

हिन्दी अनुवाद :—उसने ब्रह्माजी का मन जीतकर तथा अपनी तलवार की

शक्ति से देवताओं एवं इन्द्र आदि समस्त देवगणों को पीड़ित करके, वह राक्षस सहसा उस वन में बड़े वेग से हँसने लगा अर्थात् समस्त लोकों के शक्तिशाली सुर एवं असुरों को जीतकर उसे अपने बल पर घमंड हो गया।

स्वयं महाकाल वशीकृतात्मनां ,
प्रदाय बुद्धिं पुनरत्र तादृशीं।
तदारि संसर्गमुमेत्य संततं
चिनोति मृत्योरिव तत्क्षणं विधिः।।38।।

हिन्दी अनुवादः– ब्रह्मा , मृत्यु के वशवर्ती होने वाले प्राणियों को स्वयं वैसी ही बुद्धि प्रदान करके , शत्रुयों के सन्निधान का माहौल तैयार करके, यमराज के समान फिर उसके उस क्षण का स्वयं ही चयन किया करते हैं अर्थात् मृत्यु का बहाना अपने ऊपर कभी नहीं लेते।

अहो! कथं सृष्टिरनेन रक्षयेत् ,
क्व प्राणिहिंसापि निवारेद्भुवः।
कथं विपन्नाः विपिने महर्षयः ,
सुरक्षयेमं सततं विधोरिव।।39।।

हिन्दी अनुवादः– ब्रह्माजी ने सोचा कि इस राक्षस से सृष्टि की रक्षा कैसे की जाय। अथवा इस धरती से प्राणियों की हिंसा कैसे रोकी जाय। वन में दुखित इन महर्षियों को चन्द्रमा के राहु के समान मैं कैसे बचाऊँ। इस प्रकार सोचकर ब्रह्माजी स्वयं चिन्ता करने लगे।

अथैकदा क्षीर सुधाकरं ययौ ,
वलावलेपात्स दुरन्त दानवः।
समीक्ष्य पद्मां प्रभुपाद सेविकां ,
जहास तत्रापि भृशं मुहुर्मुहुः।।40।।

हिन्दी अनवादः– अपने घमण्ड से चूर होकर वह दुर्दान्त दानव एक बार क्षीरसागर में भी पहुँच गया। वहाँ भगवान् विष्णु की सेवा में दन्तचित्त एवं उनकी चरण परिचर्या करने वाली लक्ष्मीजी को देखकर वह पापी वहाँ भी बड़ी तेजी से कई बार हँसा।

विलोक्य तं भीमवपुः निशाचरं ,
चकर्षचक्रं भगवानरिंदमः।
ततश्च पद्मा सहसा हरिप्रिया ,
जगाद तं सा मधुसूदनं पुनः।।41।

हिन्दी अनुवादः— उस भयंकर शरीर वाले राक्षस को देखकर, शत्रुओं का बध करने वाले भगवान् विष्णु ने तुरन्त अपना चक्र सुदर्शन खींच लिया। इसी बीच में भगवान् विष्णु की धर्मप्रिया भगवती लक्ष्मीजी ने भगवान् मधुसूदन से कहा।

अहो जगन्नाथ ! त्रिलोक शासनं ,
पुरा प्रदत्तं तपसाहि वेधसा।
तदाशु चक्रेण कथं विपद्यते ,
समस्त सृष्टि प्रलयं प्रयास्यति।।42।।

हिन्दी अनुवाद :—हे चराचर के स्वामी मधुसूदन ! तीनों लोकों का एक क्षत्र शासन इसे ब्रह्माजी ने पहले ही दे दिया था। क्योंकि इसने ब्रह्माजी की कठोर तपस्या की थी। उसी तपस्या से प्रशन्न होकर उन्होंने ही इसे वरदान दिया था। यदि आप अपने चक्र के द्वारा इसे नष्ट कर देंगें तो संसार की सारी सृष्टि का तुरन्त प्रलय हो जायेगा।

सुदुस्कृतस्यापि फलं नराधमाः ,
तथोपभुंजन्ति कृतात्मकर्मभिः।
परंचदोषानधिगत्य बेधसः ,
रूदन्ति पश्चात्सहसा मुहुर्मुहुः।।43।।

हिन्दी अनुवादः— हे स्वामी! नीच प्रकृति के लोग अपने द्वारा किए गये भयंकर पापों का परिणाम अपने कर्मो द्वारा स्वयं भोगते रहते हैं। किन्तु विधाता का दोष समझकर वे बाद में बार–बार जीवन पर्यन्त रोया करते है अर्थात् प्राणी जैसा कर्म करता है। उसे उसका परिणाम भी उसी के अनुसार भोगना पड़ता है।

अवाधवेगेन चलच्चतुर्दिगं ,
ततः स्फुलिंगान्प्रसमीक्ष्य दानवः।

भयं तदीयुर्न वने स्थिताः पुरा ,
नचात्र लोकेऽपि सुखं विलेभिरे।।44।।

हिन्दी अनुवादः— हे स्वामी! पहले अवाध गति से चलते हुए तुम्हारे चक की चारों दिशाओं में फैली हुई चिनगारियों को देख्कर यही दानवगण इतने भयभीत हो गये थे कि उन्होंने वन में भी न रहकर इस लोक में कहीं भी सुख नहीं प्राप्त किया था अर्थात् तुम्हारे बिना उन्हें कही शरण प्राप्त नहीं हो सकी थी।

इतिविविधवचोभिः सान्त्वयन्सा मुरारिम्,
कथमपि जगदीशं मन्युहीनं विधाय।
सकलतगद्वन्द्यां सिन्धुजातां विलोक्य,
पुनरपि धृतधैर्यः केशवस्तां ददर्शः।।45।।

हिन्दी अनुवादः— ऐसे विभिन्न वचनों से भगवान् विष्णु को शान्त करती हुयीं जगज्जननी लक्ष्मीजी ने किसी प्रकार उन्हें प्रशन्न करके, संसार के द्वारा वन्दना करने योग्य उन लक्ष्मी को बार—बार देखकर भी भगवान् विष्णु ने प्रशन्न मुद्रा में उन्हें फिर देखा।

रमानने चंचल दन्तपत्रिका—
मवेक्ष्य धीरोऽपि च संयतेन्द्रियः।
चकर्ष चित्रं ह्रदये रमापति—,
र्यथा वियोगे रघुवंश नन्दनः।।46।।

हिन्दी अनुवादः— लक्ष्मीजी के मुख में चंचल दातों के साथ अनवरत चमकने वाली सोने की (दातों के ऊपर चढ़ी हुई पत्ती) अर्थात् दन्त पत्रिका देखकर रमानाथ ने उनका मनोहर चित्र उसी प्रकार खींच लिया जैसे सीता के वियोग में भगवान् राम ने सीता का अद्भुत चित्र ह्रदय में खींच रखा था।

विलोक्य तामत्र विलोल वीक्षितै—
श्चलन्निमील्याक्षि करांशुभिन्नया।

सरोजमाल्यार्पितयोतयोर्द्वयो–
दृशा वचोभि प्रणयान्ननन्दतु।।47।।

हिन्दी अनुवादः– चंचल नेत्रों के कभी–कभी बन्द कर लेने से तथा हाथ की अंगुलियों में पहने हुए नगों की किरणों से चकाचौध दृष्टि के द्वारा चंचल चितवनों से कमला को देखकर एवं कमल पुष्पों की मालायें धारण करने के कारण प्रेमपूर्वक उन दोनों विष्णु एवं विष्णुप्रिया ने बचनों के पारस्परिक प्रेम के कारण आनन्द का अनुभव किया। अर्थात् दोनों ने एक दूसरे का अभिनन्दन किया।

अथैकदा मन्दिर मध्य भूतले ,
सुदक्षिणः नाम वृतं क्षितीश्वरः।
चकार संध्या समये पिनाकिनः ,
विलोक्य तं चात्र चुकोप दानवः।।48।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद एक दिन शिवजी के मन्दिर में कोई सुदक्षिण नाम का राजा संध्या के समय शिवजी का वृत अथवा पूजन कर रहा था। वृत करते हुए उस राजा को देखकर वह भीम नामक राक्षस उससे नाराज होने लगा।

कृतान्त वच्चात्र जर्गज कानने ,
समीक्ष्य खड्गं सहसा निसाचरः।
सभीमकायः प्रवलैर्वलैःसमं ,
विवेश विश्वेश निकेतनं तदा।।49।।

हिन्दी अनुवादः– वह भीम राक्षस अपनी तलवार को सहसा देखकर उस वन में यमराज के समान गरजने लगा। इसके बाद उस भयंकर शरीर धारी राक्षस ने अपनी शक्तिशाली सेना के साथ उस शिवजी के मन्दिर के अन्दर प्रवेश किया।

सुदक्षिणं वीक्ष्य ततोहि मन्युना ,
ज्वलत्करालान्तकवन्निसाचरः।

चकर्ष खड्गं सहसा करेण सः ,
प्रहर्तुमेनं सरलं महीपतिम्।।50।।

हिन्दी अनुवादः—मन्दिर के अन्दर उस राजा सुदक्षिण को देखकर साक्षात् काल अथवा यमराज के समान क्रोध से जलता हुआ वह राक्षस, अपने हाथ से तलवार खींचकर सहसा उस सरल स्वभाव वाले राजा पर उसने प्रहार करना चाहा।

निवारयामास करेण तन्नृपः ,
तदा क्षणे सः सहसा हि विस्मितः।
विलोक्य भक्तं निजभक्ति तत्परं ,
समाययौ तत्र स्वयं जगत्पतिः।।51।।

हिन्दी अनुवादः— राजा ने अपने हाथ से राक्षस के प्रहार को रोक दिया। इसी पर वह दानव बहुत आश्चर्य चकित हो उठा। इसके बाद अपने शक्ति को भक्ति में तल्लीन देखकर, उसकी रक्षा करने के लिए भगवान् भोलेनाथ संसार के स्वामी वहाँ तुरन्त आ गये।

यं संस्मरन्ति शतध्यानपथेन नित्यं,
ब्रह्मादिदेवमुनयः शतधात्रिलोके।
प्रायस्ततोऽपि न प्रयान्ति शरण्यमेत–
त्सोऽयं प्रयाति विवशः विपिने गिरीशः।।52।।

हिन्दी अनुवादः— जिनको ब्रह्मा इत्यादि देवता एवं मुनिजन अपने ध्यान के मार्ग से सैकड़ों बार विभिन्न पद्धतियों एवं विधियों से तीनों लोकों में नित्य ही स्मरण किया करते हैं फिर भी उसकी शरण प्राप्त नहीं कर पाते। आज वही संसार के स्वामी भोलेनाथ अपने भक्त की रक्षा करने के लिए जंगल में व्याकुल होकर स्वयं पहुँच रहे हैं।

तथा समक्षं समवेक्ष्य शंकरं,
त्रिशूल हस्तं च पिनाकिनं ततः।

विभेत्य भूयोऽपि जगर्ज दानवः ,
यथान्त काले विवशः दशाननः।।53।।

हिन्दी अनुवादः— इसी प्रकार शंकरजी को त्रिशूलधारी एवं धनुष धारण किये हुए देखकर अर्थात् सामने खड़े हुए देखकर , वह राक्षस भीम भयभीत होकर फिर उसी प्रकार गरजने लगा। जैसे अन्त समय व्याकुल होकर रावण मृत्यु से भयभीत होकर गरजा था।

दृष्ट्वाकोप कषाय कृष्णवदनं कालाभलोलं शिवं ,
ब्रह्माद्यस्त्रिदिवौकसाः हि मुनयः भूयो भयं भेजिरे।
गौरीसिंहसमन्विता मुहुरहो! निर्वर्ण्य रूपं पुनः ,
वब्रे तं वृषकेतनं हि विवशा कोपं प्रभो! माकृथाः।।54।।

हिन्दी अनुवादः— क्रोध के आवेश के कारण काले मुख वाले, तथा साक्षात् महाकाल के समान चंचल शिवजी को देखकर, ब्रह्मा इत्यादि सभी देवतागण एवं मुनिजन दुवारा फिर भयभीत हो गये। जगज्जननी पार्वतीजी सिंह के साथ अवस्थित वेचारी फिर से शिवजी का ऐसा विकराल रूप देखकर व्याकुल होकर शिवजी से बोलीं। हे प्रभो! भेलेनाथ! अब दुवारा क्रोध मत करो। अन्यथा सारी सृष्टि का फिर से प्रलय हो जायेगा।

निशम्य कान्ता वचनं जगत्पतिः ,
करं समुत्थाप्यत्रिशूल संयुतम् ।
ततः समाश्वस्य शशाम पाणिना ,
सतां वराकीं विवशां हरेरिव।।55।

हिन्दी अनुवादः— इस प्रकार अपनी प्रियतमा गिरजा की बात सुनकर शिवजी त्रिशूल से युक्त अपना हाथ उठाकर , फिर धनुषध ारण करने वाले हाथ से उन भोलेनाथ ने उन्हें आश्वासन देकर उसी प्रकार उन वेचारी, एवं विवश गिरजा को शान्त किया जैसे विष्णुजी ने लक्ष्मीजी को शान्त किया था।

प्रहत्य शूलं वृषकेतनस्तदा ,
निपातयामास क्षणे सुदुर्मदम्।

तथापि सः पर्वतसन्निमः शनै–
निधाय खड्गं प्रजहास भूयसा।।56।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी ने उस समय त्रिशूल का प्रहार करके उस अभिमानी राक्षस को एक ही क्षण में धराशायी कर दिया। किन्तु फिर भी वह पर्वत के समान भीषण शरीर वाला राक्षस अपनी तलवार लेकर फिर से बार–बार हँसने लगा।

ततो विषण्णं वृषकेतनं शिवं ,
विलोक्य सद्यः गुरुवन्महावलः।
जगाद तं विश्वपतिं त्रिलोचनं ,
रणांगणे नैव क्षमाः जटाधराः।।57।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद कुँम्हलाये एवं दुःखी शिवजी को देखकर, अपने पिता कुम्भकर्ण के समान वलशाली राक्षस भीम संसार के स्वामी, एवं त्रिनेत्रधरी शिवजी से बोला। युद्धभूमि में जटाधरी महात्मा लड़ने में समर्थ नहीं हो सकते। अतएव तुम अपनी जान बचाकर घर भाग जाओ।

अहो महात्मन्! नहि वेत्सि मे वलम्
जटाधरं घ्नन्ति न मादृशाः जनाः।
गृहाण शूलं पुनरेव पाणिना,
तथापि मां हन्तुमितो न चार्हसि।।58।।

हिन्दी अनुवादः– हे महात्माजी! तुम मेरी शक्ति को नहीं जानते , तुम जैसे जटाधारी महात्माओं को हम लोग कभी नहीं मारते। अब तुम अपने हाथ से अपना फिर त्रिशूल उठा लो। किन्तु फिर भी तुम मुझे यहाँ किसी प्रकार मारने में सक्षम नहीं हो।

इतीरयित्वा सहसा सुमायया ,
जहार शूलं विधिवत्कपर्दिनः।
यथा हि शक्रः द्विजवेश विश्रुतः ,
जहार कर्णस्य च वर्म कुण्डले।।59।।

हिन्दी अनुवादः– ऐसा कहकर उस दानव ने अपनी निसाचारी माया से भली प्रकार शिवजी का त्रिशूल हरण कर लिया। जैसे ब्राह्मण का प्रसिद्ध

वेषधारण करके इन्द्र ने कर्ण से उसका कवच कुण्डल हरण कर लिया था। अर्थात् वह भी छल करके ही कर्ण से हरण कर सका था।

ततो पिनाकं प्रणिधाय शूलिना ,
चकार कोपं सहसा जिघांसया।
दिवौकसाः दिव्यपथे दिवांगना– ,
स्तदाम्वरे ददृशुरेव संगरम्।।60।।

हिन्दी अनुवाद :–इसके बाद शिवजी ने अपना धनुष लेकर सहसा उसे मार डालने के लिए भीषण क्रोध किया। स्वर्ग अथवा आकाश में स्वर्ग के सभी देवगण, एवं देवांगनायें उस समय शिवजी का युद्ध देख रहे थे।

ततः परं कोप समन्वितं शिवं,
समीक्ष्य सद्यः सहसा स दानवः।
अदर्शयत्क्रीडनमत्र मायया,
यथा रणे मृत्युभयादृदशाननः।।61।।

हिन्दी अनुवादः– इसके पश्चात् नितांत क्रोध किये हुये शिवजी को देखकर वह राक्षस एक ही क्षण में तुरन्त उसी प्रकार अपनी माया के द्वारा शिवजी को अनेक खेल दिखाने लगा। जैसे मृत्यु के भय से नितान्त भयभीत होकर लंका में युद्ध के समय रावण ने दिखाये थे।

क्वचित्खरश्चात्र क्वचिन्मृगाधिपः,
क्वचित्स कासारतटे सुकुक्कटः।
क्वचिद्वहिश्चान्तरित स्तथान्तरे,
जहास तं वीक्ष्य शिवं स दानवः।।62।।

हिन्दी अनुवादः– वह राक्षस कहीं तो गदहा, कभी सिंह, कभी तालाव के किनारे मुर्गा,, कही वाहर, कभी भीतर जाकर छिप जाता था। अन्त में वह पापी उन शिवजी को देखकर हँसने लगा। अर्थात् उसकी माया से शिवजी हैरान हो गये। तव वह शिवजी को देखकर हँस पड़ा।

खिन्नंशिव समवलोक्य च शूलपाणिं,
बब्रे शिवाशिवप्रियाजगदादिमाया।

खेदं वृथा! परिभवन्ति च येपरेषां,
तेषामहं परिभवामि सदैव नूनम्।।63।।

हिन्दी अनुवादः— त्रिशुल को हाथ में धारण करने वाले, शिवजी को राक्षस की माया से खिन्न देखकर, शिवजी की धर्मप्रिया एवं संसार की सर्वोच्च माया पार्वतीजी शिवजी से वोलीं। हे देव! खिन्न क्यों हो रहे हो। जो लोग व्यर्थ में दूसरों को अपमानित किया करते हैं। उन्ही लोगो का मैं भी अपमान किया करती हूँ। यह ध्रुव सत्य है।

तथापि त्रातुं जगदीश! मे वलं,
निवोध नूनं विवशः गृहस्त्रियः।
हराभि माया सततं स्वमायया,
यथा मया कंसरिपोः हृतापुरा।।64।।

हिन्दी अनुवादः— पार्वती ने कहा— हे जगदीश! फिर भी आपकी रक्षा करने के लिए ही मेरी समस्त शक्ति है। ऐसा आप भली प्रकार समझें। क्योंकि घर की औरतें तो प्रायः पराधीन ही रहा करती हैं। मैं अपनी माया से इस राक्षस की माया का उसी प्रकार हरण करूँगी जैसे वृन्दावन में कृष्ण को पूतना से वचाने के लिए मैंने उन पर प्रयुक्त माया का हरण किया। था।

निशम्य सद्यः वचनं जगत्पतिः,
चकर्ष कोषान्निशितं शरं शिवः।
व्यपेत मायंप्रसमीक्ष्य दानवं,
तथापि तस्थौ मृगसिंहयोरिव।।65।।

हिन्दी अनुवादः— इस प्रकार पार्वती जी की वात सुनकर संसार के स्वामी शिवजी ने अपने तूणीर से तेज धार वाला एक वाण निकाला। इसके वाद माया से रहित उस दानव को देखकर वे फिर इस प्रकार खड़े हो गये जैसे हिरन को देखकर सिंह तैयार खड़ा हो जाता है।

विंचिन्त्य किंचित्सहत्राजगत्पतिः,
निरीक्ष्य तं लब्धवरं हि वेधसा।

तदस्य खड्गेन क्षयं हि निश्चयं,
चकार भूयो मनसा जितेन्द्रियः।।66।।

हिन्दी अनुवादः— वे शिवजी सहसा कुछ सोचकर, तथा ब्रह्मा के द्वारा वरदान प्राप्त करने वाले, उस राक्षस को देखकर, क्योंकि इसी तलवार से इसका विनाश भी सम्भव है। ऐसा शिवजी ने एक क्षण मन से निश्चय कर लिया। क्योंकि वे स्वयं जितेन्द्रिय थे। संयमी व्यक्ति सव कुछ सोचकर के ही कार्य करता है।

जहार खड्गं तरसा शरेण सः,
ततश्च तं वीक्ष्य क्षणे निसाचरं।
जघान तं चैककरेण मन्दिरे,
यथा हि मेषं वलिहेतु साधवः।।67।।

हिन्दी अनुवादः— पहले शिवजी ने अपने तीक्ष्ण वाण से उस राक्षस की तलवार हरण कर ली। इसके वाद उस दानव को देखकर, उसे एक हाथ से ही मन्दिर में मार डाला। जैसे वलि देने के लिये मन्दिर में सज्जन लोग बकरे का वध किया करते हैं उसी प्रकार शिवजी ने उसी की तलवार से उसका सिर काटकर उसका वध कर दिया।

भीमं वीक्ष्य मृतं सुरासुरगणाःब्रह्मामहेन्द्रादयः ,
भूयश्चात्र दिवाड्गनाः शशिधरं दृष्ट्वा सुखं लेभिरे।
मध्ये सा गिरिजा शिवं वहुविधिं संवाहयन्ती यथा ,
बव्रे त नरसिंह रूप विवशा पदमेव सद्यः शनैः।।68।।

हिन्दी अनुवादः— उस भीम नामक राक्षस को मरा हुआ देखकर ब्रह्मा, इन्द्र इत्यादि सभी देवतागण, तथा राक्षसगण, एवं अप्सराओं ने शिवजी को पुनः देखकर नितान्त सुख प्राप्त किया। उन्हीं के बीच में पार्वतीजी शिव को अनेक प्रकार से सहलातीं हुई धीरे से उसी प्रकार बोलीं। जैसे नरसिंह भगवान् का रूप देखकर व्याकुल हो जाने वाली लक्ष्मीजी ने मनाते हुए धीरे से कहा था।

अहो! जगन्नाथ! यथा त्वया कृतं ,
नचात्र कर्तुं हि क्षमः रमापतिः।

स तत्र शेते विवशात्ममायया ,
त्वमत्र चान्ते शरणं च मे गतः।।69।।

हिन्दी अनुवादः– हे संसार के स्वामी शिवजी! जैसा कार्य आपने किया वैसा लक्ष्मीपति विष्णुजी कभी नहीं कर सकते। क्योंकि वे तो वेचारे अपनी माया देवी से परेशान होकर क्षीरसागर में ही पड़े सोते रहते हैं। किन्तु आपने तो इस निशाचर की माया से परेशान होकर अन्त में मेरी शरण में पदार्पण किया था।

इत्येवं वचनं निशम्य सहसा त्रैलोक्य लीलाधर–
श्चान्ते तस्य समर्प्य लोकमपरं प्रायः पदं योगिनां।
पश्चात्तं शिवलिंगमेत्य सदने चक्राम देव्या समं,
भूयो वीक्ष्य चतुर्दिगं पुनरसौ सद्यः प्रतस्थे गिरिम्।।70।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार अपनी प्रियतमा की बातें सुनकर तीनों लोकों में लीला करने वाले शिवजी ने उस राक्षस को योगियों के अलौकिक अथवा शिवलोक देकर , फिर अपनी देवी उमा के साथ उस मंदिर के पास जाकर चारों ओर उसकी परिक्रमा की। फिर उन्होंने चारों दिशाओं को देखकर तुरन्त अपने कैलाश पर्वत को प्रस्थान कर दिया।

पातुं भक्त सुदक्षिणं विधिवशाद्दधे पुनर्कार्मुकं,
हत्वा भीम निसाचरं पुनरहो! लोके प्रसिद्धिं ययौ।
भक्तानां वरदं मुनीन्द्र शरणं साक्षात्कपर्दीश्वरं,
वन्देऽहं कलिकल्षौघहरणं भीमं तत शंकरम्।।71।।

हिन्दी अनुवादः– भक्त सुदक्षिण की रक्षा करने के लिए जिसने पुनः दुर्भाग्यवश अपना धनुष उठा लिया था। इसके बाद भीम नामक राक्षस को मारकर जिसने समस्त संसार में प्रसिद्धि प्राप्त की। ऐसे भक्तों को वरदान देने वाले, ऋषि, मुनियों की शरण सगुण शिवजी जो समस्त कलियुग के पापों का विनाश करने वाले हैं। उन भीम शंकर नाम से प्रसिद्ध भगवान् भेलेनाथ की मैं वन्दना

करता हूँ।

फलकपुरनिवासी विप्रवंश प्रदीपः
द्विजगुरुजन सेवी शम्भुसन्नामधेयः।
सकलजगद्वन्द्यं दर्पणं चाति श्रेष्ठं,
लिखितमिह पुरारे प्रीतिमाप्तुं मयैवः।।72।।

हिन्दी अनुवाद :—उत्तर प्रदेश में फर्रूखाबाद जनपद के निवासी, ब्राह्मणों एवं गुरुजनों के सच्चे सेवक "आचार्य शम्भूदयाल अग्निहोत्री" ने समस्त संसार में वन्दनीय "द्वादशज्योर्तिलिंगदर्पणम्" नामक सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ की रचना श्री शिवजी की भक्ति एवं स्नेह प्राप्त करने के लिए की है।

इति श्री द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्पणस्य षष्ठः सर्गः समाप्त
इति भीमशंकर निरूपणम्

अथ द्वादशज्योतिर्लिंग दर्पणस्य सप्तमः सर्गः

– विश्वेश्वर निरूपणं –

यत्सानिध्य मवाप्य जन्हुतनया शीर्षस्थिता मोदते ,
भालेचन्द्र प्रभानिषेक सहसा दन्तावलिर्दीप्यते।
साक्षादस्य त्रिशूलमध्यफलकं सम्वाह्यमानापुरी ,
काशी स्वर्गसहस्रदिव्यफलदा संशोभते सर्वदा।।1।।

हिन्दी अनुवादः– जिन शिवजी की समीपता अथवा सन्निधान प्राप्त करके भगवती गंगाजी सिर पर विराजमान होकर प्रशन्न हो रहीं हैं। मस्तक पर चन्द्रमा की चाँदनी के संसर्ग से जिनकी दन्तावली चमक रही है। तथा जिनके त्रिशूल के मध्य पुंख की नोंक पर विद्यमान काशी नगरी हजारों स्वर्गों के समान अलौकिक फल देने वाली हमेशा के लिए शोभायमान लग रही है। वे शिवजी विश्वेश्वरनाथ वस्तुतः धन्य हैं।

यं देवाः प्रवदन्ति सिद्धमुनयः स्वान्तस्थमीशं विभुम् ,
विश्वाधारमजं नमन्ति सहसा लोके च वेदान्तिनः।
प्रायः रूद्रमरुद्गणाः शतविधं ध्यायन्ति नित्यंचयं ,
तं वन्दे करूणाकरं प्रभुवरं श्रीविश्वनाथं सदा।।2।

हिन्दी अनुवादः– जिन्हें देवतागण , सिद्ध एवं मुनीश्वरगण , अपने अन्त करण में अवस्थित ईश्वर को विभु कहते हैं। उस संसार के एक मात्र स्वामी अजन्मा सच्चिदानंद स्वरूप ईश्वर को वेदान्ती लोग सदैव निराकार मान कर नमस्कार किया करते हैं। जिन्हें रूद्रगण , एवं मरूद्गण , हजारों तरीके से ध्यान किया करते हैं। उस करूणासिन्धु, परब्रह्म, स्वामी विश्वेश्वर भोलेनाथ को मैं (रचनाकार) प्रणाम कर रहा हूँ।

विष्वग्विश्व विभूति विसृद्वशी विश्वेश्वरः धूर्जटिः ,
भक्तांनां च भबाब्धिवन्धनशतं छेन्तुं समर्थः शिवः।

श्रीविश्वेश्वरम्

सर्वारम्भमनाग्मनोभवमलं मोहं च दग्ध्वा पुनः ,
पश्चान्मुक्तिमसौ ददाति सततं संसारिणां ब्रह्मणः।।3।।

हिन्दी अनुवाद :—संसार की समस्त समृद्धियों को धारण करते हुए भी जो विश्वेश्वरनाथ स्वयं योगी हैं। वही भक्तों के सांसारिक सभी प्रकार के वन्धनों को दूर करने वाले कल्याण कारण शिव रूप में भी अवस्थित हैं। वे प्रायः प्रारम्भ में ही मनुष्यों के ह्दय में विद्यमान काम विकार एवं मोहरूपी मैल को दूर करके लौकिक देहधारी प्राणियों को बाद में ब्रह्मा की सायुज्य मोक्ष भी प्रदान किया करते हैं। जिससे इस संसार में उनका पुनर्जन्म नहीं होता।

पंच क्रोध समाश्रिता परिगता काशीपुरी मन्यते,
देहान्तेऽपि शरीरिणो भगवतः प्रायः लभन्ते पदं।
विद्वांसः मुनयः महेन्द्रसदृशाः देवाः कवीन्द्रादयः,
नित्यं तेऽपि भजन्ति शुद्ध मनसा श्री विश्वनाथं शिवम्।।4।।

हिन्दी अनुवादः— पांच कोश विस्तृत भूमण्डल श्रेत्र में फैली हुई काशी मानी जाती है। इसमें निवास करने वाले प्राणी शरीर त्याग करने के बाद ईश्वर के पद को प्राप्त कर लेते हैं। विद्वान्, कविजन, एवं इन्द्र सरीखे देवतागण नित्य ही विशुद्ध अन्तःकरण के द्वारा भगवान् विश्वनाथ शिवजी का भजन किया करते है।

पापाचार परायणाः परप्रियाप्रेम्णा परीताः पुनः,
नित्यं चामिषभोजिनः परमहो! प्रायः सुरासेविनः।
धूर्ताश्चापि नराधमाः परधनं प्रत्यर्पणे वंचकाः,
काश्यां वास समाश्रिताः हि नियतं नूनं लभन्ते पदम्।।5।।

हिन्दी अनुवादः— परायी स्त्रियों से प्रेम करके पागल हो जाने वाले पापी लोग एवं रात दिन पाप करने वाले, नित्य ही मदिरा, एवं मांस का आहार करने वाले ऐसे धूर्तजन, तथा पराये धन को वापस न करके ठग लेने वाले नीच लोग, भी काशी में निवास करने से अन्त में निश्चय ही भगवान् भोलेनाथ के परम धाम को प्राप्त कर लेते हैं।

विद्वांसः परद्रोह कर्मणिरताः विद्याभिमानीजनाः,
धूर्ताःवित्त प्रवंचकाः परमहो! ज्ञाने स्वयं दम्भिनः।
वृद्धत्वेऽपि न संयताः सुयशसा दोषान् परान्वेषिणः,
काश्यां वास समाश्रितापि न क्वचित्प्रायःलभंते पदं।।6।।

हिन्दी अनुवादः— विद्धान् होते हुये भी दूसरों से वैर करने में तल्लीन रहने वाले, विद्या के घमण्डी, पराये धन को ठगने वाले,, अपनी शान पर दम्भ करने वाले, बुढापे में भी संयम विहीन, अपने यश के द्वारा पराये दोषों को सदैव खोजने वाले, ऐसे धूर्त लोग काशी में निवास करने पर भी किसी प्रकार शिवजी के उत्तम पद को प्राप्त नहीं कर पाते। तात्पर्य यह है कि अपने ज्ञान एवं विद्या पर घमण्ड करने वाले प्राणियों को अन्त में भी मुक्ति नहीं मिल पाती। वे नराधम इसी संसार के माया जाल में फँसकर सदैव पुनर्जन्म के नरक से कभी छुटकारा नहीं पा सकते।

अथैकदा विश्वपतिं समाश्रिता,
जगाद काशी शशिशेषरं रहः।
कथं जगन्नाथ! युगक्षयेऽप्यहं,
वसामि लोके भवदंघ्रिसेवितां।।7।।

हिन्दी अनुवादः— इसके वाद एक दिन भगवान् शिवजी के समीप विद्यमान काशीपुरी ने एकान्त में उनसे निवेदन किया। कि हे चराचर के स्वामी शिवजी! प्रलयकाल होने पर मैं आपके चरण कमलों की सेवा करने के लिये कैसे इस संसार में स्थित रह पाऊँगी।

ममांड्गभूता जलजन्तवस्तथा,
सरीसृपाद्यः भवदेहधारिणः।
कथं वियुक्तापि भवेयुरन्ततः,
महर्षयः मंड्गलकारिणो भुवः।।8।।

हिन्दी अनुवादः— हे शिवजी! मेरे अन्दर जन्म प्राप्त करने वाले जलजन्तु अण्डज, आदि सांसारिक शरीरधारी एवं संसार का कल्याण करने वाले ऋषि, एवं मुनिजन ये सभी प्राणी फिर कैसे अन्त में इस संसार सागर से मुक्त हो सकेंगे ।

चराचरात्मन्! तपसा तनुत्यजां,
नचास्ति लोके शरणं तितिक्षया।
अतस्तु मां वीक्ष्य भवाब्धिराप्लवां,
गतिश्च तेषां क्व पुनर्भविष्यति।।9।।

हिन्दी अनुवादः– हे चराचर की आत्मा शिवजी ! तपस्या के द्वारा शरीर त्यागने वाले प्राणियों की संसार से मुक्ति प्राप्त करने की अभिलाषा को फिर कहाँ किस लोक में शरण प्राप्त होगी। क्योंकि मुझे संसार सागर में डूबा हुआ देखकर आखिर फिर उन लोकों की दूसरी गति भी क्या होगी।

इतीव प्रायः रूदती मुहुर्मुहुः,
प्रमार्जयन्तीह निजाश्रुविन्दवः।
विलोक्य तं नाथमनाथवच्छिवं,
शिबेव काशी विललाप भूयसा।।10।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार वह काशी नगरी, पार्वती के समान बार–बार रोती हुई तथा अपने आंसुओं को पोंछती हुई शिव को नितान्त असमर्थ सा समझकर या देखकर वह बार–बार विलाप करने लगी।

ततः रूदन्तीमवलोक्य विह्वलां,
प्रियेव प्रीत्या समनन्दयच्छिवः।
धृतात्मकौसेयकरांशुकेनता–
मचीकरच्चाश्रुमुखीं विनिर्मला।।11।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद रोती हुई अपनी प्रियतमा के समान उस काशीपुरी को नितान्त विह्वल देखकर शिव ने उसे शान्त किया। तदनन्तर अपने हाथ में पकड़े हुए केसरिया रंग के रूमाल से उसके आंसुओं को पोंछकर निर्मल कर दिया।

अथात्मसंवेग विनिन्हुतं शुचं,
विनोदयन्तीव यथान्तरात्मना।
सुनिश्वसन्ती सहसात्मधीरया,
जगाद भूयोऽपि च तं तथागिरा।।12।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद आंतरिक प्रवाह से छिपे हुए शोक का शमन करती हुयी, मानों अपने हृदय से शांति प्राप्त करने के लिए वह बार–बार गरम–गरम श्वासें भरती हुयी फिर से शिवजी से धीरतापूर्वक वाणी से उसी प्रकार बोली।

प्रयाणकाले न सुहृन्नवान्धवाः
कदापि रक्षन्ति न तं शरीरिणम्।
जनोऽन्यथा तत्कृत पापपुण्ययो–
र्लभेत्फलं चात्र स्वयं द्वयोरपि।।13।

हिन्दी अनुवादः– हे देव! अन्त में प्रस्थान करते समय उसके भाई बान्धव एवं मित्रगण उस प्राणी की कोई भी रक्षा नहीं कर पाते। प्राणी अपने द्वारा किये गये पाप एवं पुण्यों का फल वहाँ कर्मानुसार स्वयं ही प्राप्त किया करता है।

अहो! जगद्बन्धन मुक्तिकारणं,
विहाय विश्वेश! चिरंतनं विभुं।
न मे गतिर्पल्वलतीर चारिणां,
जलं विना क्षीणपतत्रिणामिव।।14।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी ! संसार के बन्धन एवं मोक्ष के प्रधान कारण संसार के एक मात्र स्वामी, निर्विकार, अजन्मा आपको छोड़कर मेरी गति तालाब के समीप विचरण करने वाले जल के विना सूखे पच्छियों के समान ही कुछ भी नहीं कर सकेगी। अर्थात् जब आप नहीं होगे तो मुझ पर कौन श्रद्धा या विश्वास करेगा।

इतीव हा!हा! व्यथितांतरात्मना,
विशेष विष्लेश वियोगिनामिव।
विभिन्नकान्तार गुहाषु निष्प्रभा,
मुधा चरन्तीं न धरापि दृक्ष्यति।।15।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी! हाय इस प्रकार विशेष प्रकार के वियोग के कारण, वियोगी लोगों के समान व्याकुल हृदय वाली अनेकों वनों तथा गुफाओं के अन्दर निस्तेज एवं वेचैन दशा में व्यर्थ घूमती हुई मुझे यह धरती भी नहीं देख सकेगी।

अतस्तु स्वामिन्! समवेक्ष्य मे गतिः,
विचार्य किंचित्करूणार्द्रया दृशा।
विधेहि नूनं निगमात्त सत्पदं,
विदन्ति धीराः न वदन्ति सन्मुखं।।16।।

हिन्दी अनुवादः— अतएव हे स्वामी! शिवजी अपनी करूणा से द्रवित द्रृष्टि से मेरी दशा को देखकर, अथवा भली प्रकार विचार करके मेरे लिए कोई वैदिक पद्धति के अनुसार रास्ता खोजकर अवश्य बता दें। क्योंकि धीर पुरुष जानते सब कुछ हैं किन्तु किसी के समक्ष उसे प्रकाशित नहीं करते।

कृपालवालाम्बु प्रपूरितं जग—
ज्जगन्नियंताश्रित सेवितस्तरूः।
तदा फलत्याशु नयावदन्तरे—
कृपाकटाक्षोदितक्षिप्तविन्दवः।।17।।

हिन्दी अनुवादः— हे देव! आपकी करूणा से द्रवित जल से भरा हुआ थलहों वाला यह संसार रूपी वृक्ष तब तक फल नहीं देता, जब तक संसार का नियामक बागवान अपने आन्तरिक करूणा से टपके हुए जल का या जल की बूंदों का पूर्णरूपेण अभिषेक नहीं करता।

पतन्ति तावन्न फलानि सैकते,
नचापि माधुर्यमितो भविष्यति।
नवा शुकोपात्तभवाब्धिलक्षणं,
विलोलविश्रान्ति सुधारसं कुतः।।18।।

हिन्दी अनुवादः— हे स्वामी! तब तक इस संसार रूपी पेड़ से न तो फल ही टपकते हैं और न इन फलों में मधुरता ही होगी। तथा तोते के समान आपकी अलौकिक विलक्षण करूणा से समृद्धिपूर्ण एवं आनन्द ही मिल सकेगा। तथा अमृत के समान रस भी वहाँ कहां प्राप्त होगा।

नचानयन्तीह शरीरिणस्ततः,
नयन्ति नो किंचिदितो वसून्यपि।
तथापि माया जड़जन्य श्रंखला,
महोरगीबाश्रयतीह संततम्।19।।

हिन्दी अनुवादः– हे देव! शरीर धारी जीव न तो वहां से कुछ लेकर आते हैं और न यहां से कुछ ले भी जाते हैं। फिर भी यह माया की जड़ता से उत्पन्न प्राणी को उसी प्रकार जंजीर कसकर जकड़ लेती है, जैसे सर्पिणी मनुष्य को कसकर बाँध लिया करती है।

विदन्ति वेद्यं न ततो जगत्पति–
चराचरेणात्म वियोग विह्वलाः।
विवेक विद्या विपणीकृताकृतिं,
भ्रमेण क्रीणन्ति रहो! विशारदाः।।20।।

हिन्दी अनुवादः– विद्वान् लोग भी इस संसार में वस्तुतः जानने योग्य संसार के प्रमुख कारण जगन्नियन्ता को नहीं जान पाते। वे भी सांसारिक एवं अपने आत्मिक वियोग से व्याकुल होकर अपने ज्ञान एवं विद्या को बाजारों में बेचकर केवल सुन्दर सकल सूरत को भ्रमवश एकान्त में खरीदते हुए घूमते रहते हैं।

इति बदति प्रियायां लोक कल्याणकारी,
तदपि च जगदीशः विश्व भूतान्तरात्मा।
मुहुरपि च तदंके नेत्रविन्दून् विलोक्य,
परम सरल शब्दैस्तां पुरीमाचचक्षे।।21।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार शिवजी की नितांत एवं अतिशय प्यारी काशी के इस प्रकार कहने पर, संसार का कल्याण करने वाले समस्त संसार के प्राणियों की आत्मा भगवान् भेलेनाथ ने फिर भी उसके नेत्र प्रान्त में आंसुओं को देखकर परम् सरल शब्दों से उस नगरी से कहना प्रारम्भ किया।

विलोक्य सद्यः नगरीं जगत्पतिः
सुविस्मयोत्फुल्ल मृगांगनामिव।
चलत्सुपक्ष्मावलिप्रीतिमुद्रितां,
विलोलविक्लेश मदेन विह्वलाम्।।22।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी ने आश्चर्य से प्रफुल्लित एवं चंचल बरौनियों को प्रेम के कारण छिपाये हुए एवं वियोग के चंचल दुख से अधिक विह्वल नेत्रों वाली हिरणीं के समान उस काशी नगरी को देखकर कहा।

कथं त्वया देवि! विलप्यते वृथा,
विवेकमूढ़ाः न भवन्ति साधवः।
त्वदर्थमेतत्प्रथमं विनिश्चितं,
बिचिंत्य प्रायः सततं सतामिव।।23।।

हिन्दी अनुवाद :— शिवजी बोले—हे देवी काशी ! तुम इतना व्यर्थ में व्याकुल होकर विलाप क्यों कर रही हो। सज्जन लोग इतने विवेक शून्य नहीं होते। तुम्हारे लिए मैंने पहले ही सोचकर सज्जनों के समान तुम्हारा स्थान निश्चित कर दिया है। अतएव अब तुम चिन्ता मत करो।

त्वदीय प्रायः शरणाश्रिताः जनाः,
मनीषिणः मानव नागजन्तवः।
ममात्मशूलान्तफले जिजीषवः,
लयं तदेष्यन्ति नते लयेष्वपि।।24।।

हिन्दी अनुवादः— हे देवि! तुम्हारी शरण में निवास करने वाले मुनिजन, विद्वान, मनुष्य, नाग एवं साधारण प्राणी मेरे त्रिशूल के अग्रभाग पर अवस्थित तुम्हारी धरती पर जीवन प्राप्त करने वाले प्राणियों का प्रलयकाल में भी कभी विनाश नहीं होगा। अर्थात् प्रलयकाल में भी तुम्हारी स्थिति पूर्ववत् ही रहेगी।

ममात्र सान्निध्यमवाप्य संततं,
त्वदीय कीर्तिस्त्वनिशं दिनेदिने।
प्रवृद्धिमेष्यत्यमलाश्रिता तथा,
दिवांशुभिश्चन्द्रकला विधोरिव।।25।।

हिन्दी अनुवादः—हे देवि! काशी! मेरे सदैव सन्निधान को प्राप्त करके तुम्हारी कीर्ति उसी प्रकार दिनोंदिन बढ़ती रहेगी। जैसे सूर्य की किरणों का सानिध्य प्राप्त करके चन्द्रमा की जैसे चाँदनी दिनों दिन बृद्धि प्राप्त किया करती है। अतएव् तुम्हें दुखी नहीं होना चाहिए।

कदापि त्यक्ष्यामि न ते पदं प्रिये!,
यथात्म छाया सुखदा तरोरिव।
तवापि दुःखं सततं च मे शुचं,
सुखं तदन्तोऽपि मुदं च मादृशां।।26।।

हिन्दी अनुवादः— हे देवी! मैं तुम्हारा सानिध्य उसी प्रकार कभी नहीं छोड़ूँगा। जैसे पेड़ अपनी सुखद छाया नहीं छोड़ता। तुम्हारा दुःख मेरा शोक होगा तथा तुम्हारा सुख हम सरीखे लोगों की प्रशन्नता हुआ करती है।

इति विविध वचोभिः शान्त्वयन् शूलपाणिः,
शशिकर कमनीयैस्तांच भूयो पुरारिः।
नलिन इवचखिन्नां चाशु चण्डांशु भिन्ना,
मुख कमल प्रशन्नां वीक्ष्य वव्रे महेशः।।27।।

हिन्दी अनुवादः— इस प्रकार चन्द्रमा के समान निर्मल अनेक प्रकार के बचनों से उसे शान्त करते हुए, कमलिनी के समान खिन्न तथा सूर्य की किरणों से तुरन्त प्रस्फुटित हो जाने वाली तथा मुख कमल से प्रशन्न उस काशी को देखकर शिवजी फिर उससे बोले।

मदंग संसर्गमवाप्य सर्वदा,
पुनाति लोकस्त्रितयेषु त्वन्मही।
तथापि तापत्रयमोक्षकारिणी,
कथं भवोद्धाविनि! कः विदूयते।।28।।

हिन्दी अनुवादः— हे संसार का उद्धार करने वाली काशी! मेरे शरीर का सानिध्य प्राप्त करके तुम्हारी धरती आज भी तीनों लोकों में पवित्र हो रही है। फिर भी तीनों प्रकार के संताप को क्षीण कर देने वाली अब तुम्हें कौन पीड़ित कर रहा है। उस रहस्य को स्पष्ट कीजिए।

मनः मनोभूदमनान्न दीर्यते,
सुक्षीयते मोह क्षपाक्षणादिव।
तथापि वक्तुं व्यवसाययत्यहो!,
पुनर्जगन्नाथ! दयादरिद्रता।।29।।

हिन्दी अनुवादः— शिवजी की बात सुनकर वह काशी उनसे फिर बोली! हे जगत के स्वामी! आपके द्वारा कामदेव का विनाश कर देने से अब मेरा हृदय विदीर्ण नहीं हो रहा है। तथा आपके सम्पर्क से मोहरूपी रात्रि भी एक क्षण में ही व्यतीत हो गयी। अतएव फिर भी कहने के लिए आपकी दया की निर्धनता मुझे बाध्य कर रही है।

निशम्य प्रायः मधुराधरोदितं,
तथापि सः संयमवानशंकतः।
त्रिलोकलीलाधर वत्क्षणे रहः,
स चाह तामत्र गभीरया गिरा।।30।।

हिन्दी अनुवादः— शिवजी ने प्रशन्नता के कारण मधुर ओठों से उस काशी की बात सुनकर, वे संयमी होते हुए भी शंका करने लगे। तीनों लोकों में अपनी लीला का खेल करने वाले विष्णुजी के समान उन्होंने क्षण भर एकान्त में उससे गम्भीर वाणी में कहा।

विभेति नारी हृदयं जगत्त्रये,
यथार्धनारीश्वरमत्र मे वपुः।
अहो! विलोलाक्षि! वियोग विप्लवा—,
दधर्ममद्यापि स्वयं विदूयते।।31।।

हिन्दी अनुवादः— हे चंचल नेत्रों वाली! स्त्री का केवल हृदय तुम्हारा ही नहीं तीनों लोकों में सभी नारियों को भयभीत कर रहा है। जैसे हमारा अर्धनारीश्वर शरीर वियोग के झंझावात के कारण स्वयं दुखी रहा करता है। क्योंकि भयभीत हो जाना यह सभी नारियों का स्वभाव हुआ करता है। इसमें केवल तुम्हारा दोष नहीं है।

न विश्वसन्तीह कदापि योषिताः,
सु प्राणनाथेषु नवा परेष्वपि।
स्वयं चलच्चंचल नेत्र विभ्रमा,
द्वियोगिनार्याशु हरन्ति जीवनं।।32।

हिन्दी अनुवादः— स्त्रियां अपने सुन्दर पतियों अथवा पर पुरूषों पर भी कभी विश्वास नहीं करतीं। किन्तु खुद अपने चलायमान चंचल नेत्रों के कटाक्षें के द्वारा वियोगी पुरूषों के तो प्राण ही ले लिया करतीं हैं। अर्थात् अपने तीखें कटाक्षों से वियोगियों के एक ही क्षण में जीवन नष्ट किया करतीं हैं।

क्वचिच्चलत्पंथ विलोल वीक्षणै—
रलीक श्रंगार प्रसाधनान्विताः।

स्वयं समालोक्य वृथैव लीलया,
त्रसन्ति यूनां तु मनांसि संततम्।।33।।

हिन्दी अनुवादः– कभी कभी स्त्रियां चलते हुए रास्ते में अपनी चंचल नजरों के द्वारा बनावटी श्रंगार एवं साज सज्जा से सजधजकर अपने आप स्वयं देखकर अथवा विलासपूर्वक देखकर व्यर्थ में युवकों के मन को सदैव पीड़ा पहँचाती रहती हैं। क्योंकि स्त्रियों का स्वभाव ही चंचल हुआ करता है।

विधाय कान्ताकृतिमत्र वेधसा,
निधाय चागांनि समन्ततः पुनः।
ततः प्रकृत्यासिलतेव चापलम्,
त्ववेक्ष्य चाद्यापि विभेति संततम्।।34।।

हिन्दी अनुवादः– नारी की सकल सूरत बनाने के बाद, उसमें चारों तरफ से अंग प्रत्यंगों का समावेश करके तथा उसमें स्वाभाविक रूप में तलवार के समान चंचलता देखकर, ब्रह्माजी आज भी स्त्री से भयभीत रहा करते हैं।

इति विविध प्रमोदोपात्त सम्यग्वचोभिः,
परम विकलकाशीं वोधयन् विश्वनाथः।
पुनरपि च प्रशन्नां चात्र कृत्वापि यत्नैः,
रविकर इव संध्यामत्र शम्भुर्ददर्श।।35।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार अनेक प्रशन्न करने वाले शब्दों एवं बचनों से उस बेचैन काशी को समझाते बुझाते हुए, तथा फिर भी अनेक प्रयत्नों के द्वारा उसे प्रशन्न करके भगवान् विश्वेश्वर भोलेनाथ ने उसे सूर्य की किरणें से संध्या अथवा ऊषाकाल के समान परम प्रशन्न देखा।

ततः प्रसादोपहितं जगत्पति,
नतानना तं प्रणनाम भूयसा।
तथापि मेने न सुखं ततस्तया,
वियोगिनीवात्मप्रियेण विह्वला।।36।।

हिन्दी अनुवाद :– इसके बाद काशी ने परम प्रशन्न जगदाधार भगवान् विश्वनाथ को अपना मस्तक झुकाकर प्रणाम किया। फिर भी उसने अपनी

आत्मा में उसी प्रकार पूर्ण सुख का अनुभव नहीं किया। जैसे वियोगिनी अथवा वेचैन कान्ता अपने परम प्रिय स्वामी को प्राप्त करने पर भी पूर्ण संतुष्ट नहीं हो पाती।

सुचान्वितां कामप्रियां रतिं त्वया,
ररक्ष पत्युर्मरणात्परं प्रभो!।
त्रिनेत्रभस्मीकृत पुष्पशायकं,
ह्यनंगशब्देन समाह्वयत् पुनः।।37।।

हिन्दी अनुवादः—हे स्वामी! आपने पति के मर जाने पर कामदेव की ध र्म पत्नी रति को जो नितांत शोक के कारण व्याकुल थी। उसकी भी रक्षा की थी। अपने तीसरे नेत्र से भस्म किये गये उस कामदेव को आपने ही अनंग शब्द से फिर संबोधित किया था। अर्थात् आपने तो संसार में सभी असम्भव कार्य भी सम्भव कर दिखाये थे।

सुह्वत्समालम्वन सिद्ध साधकाः,
विदन्ति लोके सुह्वदां न किं प्रभो!।
समीक्ष्य सर्वं च हिताहितं स्वत—,
स्तदेव कुर्वन्ति यथोचितं पुनः।।38।

हिन्दी अनुवाद :—हे स्वामी! अपने मित्रों एवं बन्धुओं का हित करने वाले व्यक्ति मित्रों की अथवा हितैषियों की कौन सी बात नहीं जानते। वे स्वयं ही सब कुछ देखकर हित एवं अहित को समझकर वही कार्य किया करते हैं। जो उचित एवं उनके लिए हितकर हुआ करता है।

कृतं त्वया नाथ! जगत्त्रये न किं,
सुरक्षितं के न पुनर्महीतले।
वियोग वैक्लव्य शुचान्वितां प्रियाम्—
सतीं च जग्राह भवान्तरेष्वपि।।39।।

हिन्दी अनुवाद :—हे भोलेनाथ! तुमने तीनों लोकों में क्या—क्या नहीं किया। अथवा ऐसा कौन प्राणी है, जिसकी आपने इस धरती पर सुरक्षा नहीं की। वियोग की व्याकुलता से बेचैन एवं नितांत क्लेश का अनुभव करने वाली

धर्मप्रिया सती पार्वती को तो दूसरे जन्म में मरने के बाद भी आपने ग्रहण कर लिया था। अर्थात् फिर भी अपनी धर्म पत्नी बना लिया था।

असम्भवं किं जगदीश! साम्प्रतं,
वलेन नैवाशु त्वया प्रपद्यते।
विलोक्य सम्यग्विधिवच्च मेहितं,
विधेहि नूनं सफलं मदीप्सितं।40।

हिन्दी अनुवादः– हे संसार के स्वामी! शिवजी! आपके लिए संसार में कौन सा कार्य ऐसा है, जो इस समय आपके द्वारा असम्भव है। अथवा आपके बलपूर्वक करने पर नहीं हो सकता। इसलिए हर प्रकार से देखभाल कर अथवा भली प्रकार समझकर मेरा मनोरथ अवश्य पूरा कर दीजिए।

इत्येवं सुविचिंत्य सम्यग्तया श्रुत्वा च विश्वेश्वरः,
ध्यानावस्थित मुद्रया पुनरहो! वब्रे च काशीं शिवः।
मागाश्चात्र शुचं समीक्ष्य विधिवद्दास्यामि दिव्यंपदम्
यं लोके न कथं सुरासुरगणाः प्राप्तुं नचार्हन्ति मे।।41।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार भगवान् विश्वेश्वर भोलेनाथजी उस काशी के द्वारा कहे गये बचनों को भली प्रकार सोचसमझकर व सुनकर ध्यान की मुद्रा में अवस्थित होकर उससे कहने लगे। हे काशी! अब तुम शोक या चिन्ता मत करो। अब मैं तुम्हें अपना अलौकिक पद प्रदान करूँगा। जो इस लोक में आजतक देवता एवं दैत्यों को किसी प्रकार प्राप्त नहीं है।

ततः परासक्तशिवं निरीक्ष्य सा,
समागता तत्र विशाललोचना।
विशंकमाना सहसा तयोर्द्वयोः,
स्वयं ज्वलन्तीव जगाद तां शिवा।42।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद शिवजी को दूसरी स्त्री पर आसक्त हुआ देखकर सहसा बड़े–बड़े नेत्रों वाली पार्वतीजी वहाँ आ पहुँची। उन दोनों पर शंका करतीं हुई वे प्रज्वलित सी होती हुई उस काशी से बोलीं।

सदा विलोलाक्षिपुटेन वीक्षणा–
न्मृगांगनावच्च सतां सुयोषितः।

तथापि वृद्धत्वमुपेक्ष्य नित्यशः
हरन्ति धैर्येण वसून्यशूनपि।।43।।

हिन्दी अनुवादः— हिरणियों के समान हमेशा चंचल नेत्रों के पोटरों से देखने के कारण सुन्दर स्त्रियां सज्जनों के बुढ़ापे की उपेक्षा करके प्रति दिन धैर्यपूर्वक उनके धन एवं प्राणों को भी हरण कर लिया करतीं हैं। अर्थात् उनके नेत्रों को देखकर बुड्ढे लोग तो प्रायः लुट से जाते हैं।

गवाक्ष मार्गेण समीक्ष्य तं पुरा,
तुदन्ति प्रायः सतधाः मुहुर्मुहुः।
अतस्तु कान्ता कुलकाल योषितां,
नजातु लज्जा न दया न मार्दवं।।44।।

हिन्दी अनुवाद :—स्त्रियां उस प्रेमी को पहले स्वयं खिड़की के रास्ते से देखकर लगभग सैकड़ें बार अनेक प्रकार से उसे पीड़ित किया करतीं हैं। इसीलिए स्त्रियों के वंश में साक्षात् कल के समान ऐसी सुन्दर स्त्रियो को न तो लज्जा होती है और न उन्हें दया ही आती है। कोमलता तो उन्हें छूकर नहीं निकलती।

अहो विधाता! विधिवद्विधाय ताः,
सवेत्ति वृत्तं भुवने सुयोषितां।
अतस्तु लोके सततं महीयते,
चतुर्मुखस्तं प्रवदन्ति किं जनाः।।45।।

हिन्दी अनुवादः— विधाता ने उन स्त्रियों का भली प्रकार निर्माण करके वही संसार में सुन्दर स्त्रियों के चरित्र को भी भली प्रकार से जानता भी है। इसीलिए ब्रह्माजी का हर जगह सम्मान एवं महत्व भी है। फिर भला ब्रह्माजी को लोग चार मुँह वाला क्यों कहते हैं। यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है।

भवन्ति नामानि गुणानुवर्तिनः,
यथा हि दुग्धं च धृतं च तादृशं।
ध्रुवं स लीलाधर वल्कलाधरः
तथा हि कान्ता ह्रदयं स्रजत्यसौ।।46।।

हिन्दी अनुवाद :—वस्तुतः नाम तो गुणों के अनुसार ही हुआ करते हैं। क्योंकि जैसा दूध होता है वैसा ही घी हुआ करता है। यह सत्य है ब्रह्मा भी विष्णु के समान समस्त कलाओं को जानने वाले हैं। क्योंकि नारी का हृदय तो वही बनाया करते हैं।

निशम्य कोपाद् भृशदारूणं वचः,
स्ततो प्रियायाः ननुशंकितात्मना।
जगाद तामत्र जगत्पति प्रभुः,
स्वयं च शम्भुः सहसा हसन्निव।।47।।

हिन्दी अनुवादः— इसके बाद भगवती पार्वती के सशंकित हृदय से कोध के कारण अत्यधिक कठोर बचनों को सुनकर, संसार के स्वामी भगवान् भोलेनाथ अकस्मात् हंसते हुए से जगज्जननी जगदम्वा से बोले।

अवैमि दोषोऽपि न ते कथं प्रिये!,
स्वभाव एवैष भुवः सुयोषितां।
यथा द्विजैर्पोषित शावकाः प्रियाः,
वृजन्ति चान्तेऽपि परभृतामिव।।48।।

हिन्दी अनुवादः— हे प्रिये!मैं तुम्हारा दोष यहाँ किसी प्रकार नहीं समझ रहा हूँ। क्योंकि यह तो अनुमानतः सभी सुन्दर स्त्रियों का स्वाभाव ही हुआ करता है। जैसे कौवों के द्वारा पोषित कोयलों के बच्चे अन्त में कोयलों के ही समुदाय में मिलकर रहा करते हैं। उसी प्रकार स्त्रियां पर पुरूषों से कार्य करवाकर अन्त में अपने समुदाय में ही प्रशन्न रहा करतीं हैं।

द्विषन्ति प्रायः नितरां परस्परं,
स्वभाव संस्कार वशात्सुयोषितः।
यथा सुगावः कलहन्ति संततं,
वृजन्ति युथेषु वृजांगना इव।।49।।

हिन्दी अनुवादः— हे प्रिये! सुन्दर स्त्रियां अपने स्वभाव एवं संस्कारों के कारण नित्य ही आपस में एक दूसरे पर दोषारोपण उसी प्रकार किया करतीं हैं। जैसे गौयें आपस में सदैव लड़तीं रहतीं हैं। किन्तु अपने समूह में उसी

प्रकार चरने के लिए जातीं हैं मानों ब्रज की स्त्रियां एक साथ मिलकर जा रही हों।

द्वयोश्चपूतत्वमवेक्ष्यं संगमात्
कथं,न ह्रीणाति ध्रुवंमुहुर्मुहुः।
यथा स्वयं तीर्थपतिर्विशालतां–
मवाप्य भूयोऽपि न तन्मुदं ममौ।।50।।

हिन्दी अनुवादः– हे प्रिये! संयोग से एक साथ मिलाप हो जाने से दोनो देवियों की पवित्रता को देखकर वह तीर्थराज प्रयाग क्या अपने हृदय में लज्जित नहीं हो रहा होगा। अर्थात् अवश्य लज्जित होता होगा। क्योंकि इसीलिए वह प्रशन्नता अपने हृदय में समावेश न कर पाने के कारण इतने विस्तार को प्राप्त हो गया । अन्यथा उसके विस्तार का अन्य कोई कारण प्रतीत नहीं हो रहा है।

इतीह जायां प्रतिवोध्य शीतलै–
र्वचीभिरन्यैः सहसा जगत्पतिः।
जगाम पश्चान्निजदिव्य केतनं,
श्रयाश्रयाभ्यां नव वैभवं यथा।।51।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार विभिन्न प्रकार के संतोष प्रदान करने वाले शब्दों के द्वारा अपनी धर्मपत्नी भगवती जगदम्वा को संतुष्ट करके भगवान् भोलेनाथजी इसके बाद अपने अलौकिक आवास गृह अर्थात् मंदिर में उसी प्रकार उन दोनों देवियों के साथ पहुँचे जैसे प्रतिभा और बन्धुता के साथ नवीन वैभव का आगमन होता है।

तथाह तां दिव्य सुभासनस्थितां,
शुचस्मितेनापि च लीलयागिरा।
अहो! जगत्कारणबल्लभं प्रिये!
नवेत्सि,नूनं न शिवं न मामपि।।52।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद सुन्दर एवं अलौकिक आसन पर विराजमान उस जगदम्वा से विलासतापूर्ण वाणीं से मुस्कराहट के साथ

शिवजी बोले हे प्रिये! वस्तुतः तुम संसार के एक मात्र कारण अपने प्रियतम या शिवजी को या मुझको आज तक नहीं जानती। अन्यथ शंकालु हृदय से तुम मुझे ऐसा नहीं समझतीं।

प्रिये! कदाचित्परिणीतया त्वया,
विलोकितं नैव श्रुतं हि भूतले।
ममादिवृत्तं न विचिन्तितं पुन–
स्तथाह नुनं कलियोषितामिव।।53।।

हिन्दी अनुवादः– हे प्रिये! मेरे साथ विवाह करने वाली तुमने न कभी देखा और न सुना ही था। मेरे प्रारम्भिक चरित्र के बारे में तुमने वास्तव में आज तक विचार भी नहीं किया। इसीलिए तुमने कलयुग की स्त्रियों के समान बिना सोचे विचारे ऐसा एकदम कह डाला।

मया गृहीतं करपल्लवं प्रिये!
यदत्र लोकेऽपि भवान्तरेष्वपि।
त्यजन्ति प्रायः न पदं विपत्पथे,
न चात्म वृत्तं भुवनेहि साधवः।।54।।

हिन्दी अनुवादः– हे प्रिये! मैंने जो तुम्हारा हाथ इस लोक में तथा पुर्नजन्म के पश्चात् भी पकड़ा था। उसे आज तक नहीं छोड़ा। क्योंकि सज्जन लोग विपत्ति के समय में भी अपनी प्रतिष्ठा एवं अपने आचरण को संसार में कभी नहीं छोड़ते। अर्थात् यही सज्जनों की पहचान होती है।

नवेत्सि देवीमपि चात्र मे पुरीं,
समुज्ज्वलद्वन्हिवृहच्छिखामिव।
समस्त तीर्थेषु पुनाति स्वात्मना,
सुदर्शनेनैव वयं पुनीमहे।।55।।

हिन्दी अनुवादः– हे प्रिये! तुम देवी अर्थात् काशीपुरी को भी नहीं जानती हो। यह साक्षात् अग्नि की जलती हुई मूर्तिमयी शिखा

के समान है। वस्तुतः यह समस्त तीर्थों में अपनी आत्मा से परम् पवित्र है। जिसके प्रत्यक्ष दर्शन करने से हम लोग भी परम् पवित्र हो रहे हैं।

इत्युक्त्वा गिरिजापतिः स्वकरजै दिव्यात्मनो मन्दिरे,
गंगातीर तरंग सिक्तललिते संस्थाप्य पार्श्वे शिवां।
तेजोराशिजगत्त्रयैकप्रकृतेर्वीजद्वयं पश्यतः,
देवाः पुष्पसहस्रवृष्टिभिनवैरानर्चुरेनं शिवम्।।56।।

हिन्दी अनुवादः—ऐसा कहकर भगवान् भोलेनाथ ने अपने नाखूनों से गंगा के किनारे जल की तरंगों से अभिषिक्त अपने अलौकिक मंदिर में भगवती पार्वती को भी अपने समीप में ही स्थापित करके, तीनों लोकों के अलौकिक तेज पुंज एवं प्रकति के इन दोनों बीज भूत शिवा एवं शिवजी को सशरीर उस मंदिर में अध्यासित देखते हुए देवताओं ने हजारों फूलों की वर्षा के द्वारा शिवजी का विधिविधान पूर्वक पूजन किया।

ततः स्वयं देवगुरुं समर्चितुं,
समाययौ तत्र महर्षि नारदः।
विलोक्य रूपं गिरिजा गिरीशयोः,
ममौ मुदं नैव पुनस्तदात्मनि।।57।।

हिन्दी अनुवादः— इसके बाद भगवान् शिवजी का पूजन करने के लिए स्वयं नारदजी वहाँ आये। उन दोनों शिवजी एवं पार्वती का अदभुत रूप देखकर ,उनकी अन्तरात्मा में उस समय आनन्दयुक्त प्रशन्नता नहीं समा सकी।

चलच्चतुर्दिक्षु विलोलपन्नगं,
सुरासुरैरर्चित शेषरं शिवम्।
वृहज्जटामध्यविलोलजान्ह्वी,
पयोभिसेकात्परिपूतमन्तरं।।58।।

हिन्दी अनुवादः— जिनके चारों दिशाओं में चलायमान सर्प था।

तथा बड़ी बड़ी जटाओं के मध्य भाग में चंचल गंगाजी की जल धारा के अभिषेक के कारण जिनका अन्तस्तल परमं पवित्र हो रहा था। देवताओं तथा दैत्यों के द्वारा जिनके सिरों भाग की पूजा की गई थी। ऐसे शिवजी को महर्षि नारदजी ने देखा। जो गंगाजी के जल का आचमन करने से विशुद्ध अन्तः करण से युक्त थे।

दधत्पिनाकं च करे तथाऽपरे,
त्रिशूलदण्डेन सुशोभितं शिवं।
विलोक्य साक्षज्जगतीपति प्रभुं,
ननाम स्वांतः करणेन तं मुनिः।।59।।

हिन्दी अनुवादः– एक हाथ में धनुष तथा दूसरे हाथ में त्रिशूल का दण्ड धारण करने से सुशोभित शिवजी को देखकर संसार की अद्‌भुत कान्ति वाले उन ज्योतिपुंज शिवजी को महर्षि नारद ने अपने ह्रदय से प्रणाम किया।

ततः शिवस्यैव करावलम्बिनीं,
जगत्त्रयैकस्थपतिप्रियां पुनः।
शनैर्ववन्दे चरणौं महर्षिणा–
जगाद तं विश्वपतिं तपोधनः।।60।।

हिन्दी अनुवादः–इसके बाद शिवजी के हाथ को पकड़े हुए तीनों लोकों के स्वामी शिवजी की प्रियतमा को तदनन्तर शिवजी के दोनों चरणों की उन नारद ने वन्दना की। इसके बाद शिवजी से नारदजी ने कहा।

अहो जगद्धाम! सुरेन्द्र पूजितं,
विहाय कैलाशमिहागतोऽसि किं।
सती समं त्वामवलोक्य भूतले,
दिवौकसाश्चात्र वृजन्ति भूयसा।।61।।

हिन्दी अनुवादः– हे चराचर के स्वामी शिवजी! इन्द्रादि देवों के द्वारा पूजित कैलास पर्वत को छोड़कर आप यहाँ महारानी पार्वजी के

साथ क्यों आ गये। इस धरातल अर्थात् काशी में देवीजी के साथ आपको देखकर सभी देवतागण नितान्त आश्चर्य चकित हो रहे हैं।

युगान्तकाले सकलं महीतलं,
प्रलीयते तत्र रसातले यदा।
तथापि या शूलफलाग्रवासिनी,
कदापि काशी न क्षयं तदेष्यति।।62।।

हिन्दी अनुवादः— युग की समाप्ति के समय जब समस्त धरातल रसातल में विलीन हो जाता है। फिर भी मेरे त्रिशूल के अग्र भाग पर अवस्थित होने वाली काशी नगरी का कभी विनाश नहीं होगा। अर्थात् काशी कदापि नष्ट नहीं होगी।

वसामि तावच्च सविग्रहं मुने!,
नयावदत्येति युगक्षये धरा।
मदीय शूलेन सुरक्षिता पुरी,
सतीव सर्वत्र सुखं विधास्यति।।63।।

हिन्दी अनुवादः— हे नारद! मैं तब तक इस काशी में सशरीर विद्यमान रहूँगा जब तक प्रलय काल में इस पृथ्वी का प्रलय नहीं हो जाता। मेरे त्रिशूल के द्वारा सुरक्षित काशी सती पार्वती के समान हर जगह सुख ही प्राप्त करेगी।

ततस्त्वगस्त्यः शिवपूजनातुरः,
समाययौ गौरिपतिं दिदृक्षया।
विलोक्य तं भूतपतिं सविग्रहं,
ननाम सद्यः सततं तपोधनः।।64।।

हिन्दी अनुवादः— इसके बाद अगस्त मुनि भगवान् भोलेनाथ की पूजा करने तथा उनका विधिविधान पूर्वक पूजन करने वहां पधारे। उन सशरीर काशी में अवस्थित शिवजी को देखकर उस तपस्वी ने तुरन्त प्रणाम किया।

गजाजिनं विश्वपतिं विभूषितं,
विलोक्य विक्लान्त मनस्तपोधनः।

पुनश्च हर्षाश्रुगलन्निरंतरं,
मुखारविंदेन जगाद तं बचः।।65।।

हिन्दी अनुवादः– हाथी की खाल को धारण करने वाले समस्त अंग–प्रत्यंगों से विभूषित संसार के स्वामी भोलेनाथ को देखकर अत्यधिक व्याकुल ह्दय वाले एवं जिनके लगातार प्रशन्नता के आंसू टपक रहे थे। ऐसे मुनि अगस्त्य ने अपने मुखारविन्दु से शिवजी से कुछ वचन कहे।

नमोऽस्तु ते सर्वचराचरात्मने,
पुनर्गणानां पतये नमो नमः।
समस्त विश्वस्य लयाधिकारिणे,
वनस्पतीनां पतये नमो नमः।।66।।

हिन्दी अनुवादः– समस्त चराचर की आत्मा एवं समस्त भूतगणों के स्वामी को नमस्कार है। समस्त संसार के प्रलय करने के एकमात्र अधिकारी एवं समस्त वनस्पतियों अर्थात् विश्व के पेड़–पौधों के एकमात्र स्वामी जगन्नियन्ता भगवान् भोलेनाथ को बार–बार नमस्कार है।

इत्येवं घटसम्भवः पुनरसौ तीरे तरूणामधः,
गंगायाः परिपूत पावन जले कृत्वाभिषेकं पुरा।
काश्यां वासमुपाश्रितः शशिभृतः लिंगं सदा पूजयन्,
चान्ते ब्रह्मपदं जगाम तपसा लोके मुनीनामिव।।67।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार अगस्त्य मुनि गंगा के किनारे पेड़ों के नीचे गंगाजी के परम पवित्र जल में स्नान करके काशी में सदैव निवास करते हुये तथा उसी शिवजी के ज्योतिर्लिड्ग का पूजन करते हुये अन्त में मुनियों के समान अपनी तपस्या के द्वारा ब्रह्मा के अद्वैत परम पद को प्राप्त हो गये। अर्थात् उनकी सदैव के लिये मुक्ति हो गयी।

ततः परं ब्रह्मसुतं तपोधनं,
जगाद शम्भुः सहसा त्रिलोचनः।

न वेत्सि त्वं नारद! मे गतिः कथं,
विदन्ति लोके न पुनर्दिवौकसाः।।68।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद उस तपस्वी व्रह्मा के पुत्र नारदजी से त्रिनेत्रधारी भगवान् भोलेनाथ अकस्मात् वोले। हे नारद! तुम वस्तुतः मेरी गति नही जानते। तुम्हीं क्या संसार में देवता तक मेरी गति को नहीं जानते।

वृजामि तत्रैव तदालयं मुने!,
यदत्र मे भक्ति चरित्रमद्भुतम्।
ममापि लिंगोद्भवभूषिताः कथाः,
श्रुणोमि सर्वत्र स्वयं निरन्तरम्।।69।।

हिन्दी अनुवादः– हे नारद! विशेषरूप से मैं उसी घर जाता हूँ जहाँ मेरी भक्ति से युक्त चरित्रों का सदैव पठन–पाठन हुआ करता है। हे मुनिवर! अपने द्वादश ज्योतिर्लिड्ग की परम रमणीय कथायें जिस घर में पढ़ी जाती हैं। उन्हें बड़ी रूचिपूर्वक मैं नित्य ही सुना करता हूँ।

ददामि तेषामपि सौभगंवरं,
पठन्ति गायन्ति सुधान्विताः कथाः।
सदैव रक्ष्यामि तदीय संतति–,
र्यथा हि लोके सततं मनीषिणः।।70।।

हिन्दी अनुवादः– हे नारद! मैं उन्हीं लोगों को परम सुरम्य वरदान भी दिया करता हूँ। जो मेरी अमृत के समान रूचिर इन कथाओं को पढ़ते हैं या गाते हैं। मैं उनकी सन्तान की रक्षा सदैव अपने मुनिजनों के समान ही इस संसार में किया करता हूँ। अर्थात् मेरी इन वारहों कथाओं को सुनने वाले या पढ़ने वाले प्राणी संतान से वंचित नही रह सकते।

लोके ये प्रपठन्तिद्वादशकथाः लिंगोद्भवा संततम्,
सान्निध्यं न त्यजामि सौम्य मनसा साक्षान्मुनीनामिव।
तेषां सर्वविधं मनोऽभिलषितं संपूर्य प्रायः स्वयं,
नित्यं ब्रह्मपदं ददामि सहसा सत्यं च भाषितम्।।71।।

हिन्दी अनुवादः– हे नारद! इस संसार में जो लोग मेरी द्वादश ज्योतिर्लिड्गों से उत्पन्न समस्त कथायें शुद्ध मन से पढ़ते हैं। उनका सन्निधान मैं मुनियों के समान कभी नहीं छोड़ता। उन लोगों को हर प्रकार से धन–धान्य से पूर्ण करके एवं उनकी सभी इच्छायें पूर्ण करके अन्त में उन्हें ब्रह्मलोक अर्थात् मोक्ष भी प्रदान करता हूँ। हे नारद! मेरा कथन आप विल्कुल सत्य समझें।

निवोध सत्यं च मया समीरितं,
वदामि ते तात! मनोहरंवचः।
भजन्ति ये मां सहसात्मकिल्विषं,
विहाय ते यान्त्यभयं पदं हरेः।।72।।

हिन्दी अनुवादः– हे वत्स नारद! मेरे द्वारा कहे वचनों को सर्वदा सत्य समझे फिर भी मैं तुमसे तुम्हारे परम हित की वात कर रहा हूँ। जो लोग मेरा भजन करते हैं। वे अपने पापों का परित्याग करके मेरा पूजन एवं तपस्या के प्रभाव से उस परम ब्रह्म के निर्भय पद को अवश्य ही प्राप्त कर लेते हैं। इसमें कोई संदेह की बात नहीं है।

सदैव पास्यन्ति मदुद्भवाः कथाः,
नितान्त शून्येषुवने गृहेष्वपि।
तुदन्ति तं नैव च व्याधय क्वचि,
न्नचात्र भूतादिपिशाचसम्भवाः।।73।।

हिन्दी अनुवादः– हे नारद! मेरे द्वादश ज्योतिर्लिड्गों की मुझसे सम्वन्धित सभी कथायें नितान्त शून्य ग्रहों तथा वनों में भी सदैव प्राणियों की रक्षा करती रहेंगीं। उस प्राणी को भूत प्रेत, पिशाच आदि की सम्वन्धित व्याधियाँ भी कभी पीड़ा नहीं पहुँचा सकतीं जो इन कथाओं का नित्य अध्ययन भी किया करते हैं।

मनोहरं दिव्यमिदं कथानकं,
श्रुतं त्वया वत्स! मदीरितं मुने!।
प्रयाहि लोकं च त्वमाशु तत्पदं,
वृजामि नूनं शरणं गिरेरपि।।74।।

हिन्दी अनुवादः— हे मुनिवर! नारदजी! आज तुमने मेरे द्वारा कहा गया समस्त कथानक ध्यानपूर्वक सुन लिया। अब तुम भी अपने अलौकिक ब्रह्मधाम को प्रस्थान करो। क्योंकि मैं भी अपने आवास स्थान पर्वतराज हिमालय की शरण में जा रहा हूँ।

इत्युक्त्वा शशिशेषरः सुरपतिः संप्रेष्य तं नारदं,
भूयस्तच्च समीक्ष्य सौम्यमनसा दिव्याश्रितं मन्दिरं।
देव्यासार्धमसौ प्रविश्य सहसा लिंगान्तरे धूर्जटिः,
पश्चादत्र परिक्रमेण शतधाः दिव्याम्बरं प्रस्थितः।।75।।

हिन्दी अनुवादः— ऐसा कहकर भगवान् भोलेनाथ नारदजी को भेजकर फिर उस शिवलिंग से अधिष्ठित मन्दिर को सरल हृदय से वार वार देखकर तथा देवी पार्वती के साथ उस शिवलिंग में प्रवेश करके तथा हजारों वार परिक्रमा करके अलौकिक आकाश मार्ग को प्रस्थान कर गये।

फलकपुर निवासी विप्रवंश प्रदीपः,
द्विजगुरुजन सेवी शम्भुसन्नामधेयः।
सकलजगद्वन्द्यं दर्पणं चातिश्रेष्ठं,
लिखितमिह पुरारेःप्रीतिमाप्तुं ममैव।।76।।

हिन्दी अनुवादः— उत्तर प्रदेश में फर्रूखाबाद जिले के निवासी, ब्राह्मणों तथा गुरूजनों के सच्चे सेवक, आचार्य शम्भूदयाल अग्निहोत्री ने समस्त संसार में वन्दनीय "द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पण नामक ग्रंथरत्न की रचना, भगवान् शिवजी की सच्ची भक्ति एवं उनका स्नेह प्राप्त करने के लिये की है।

इति द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणस्य सप्तमः सर्गः
— समाप्त—
इति विश्वेश्वर निरूपणं संपूर्णम्

अथ द्वादशज्योतिर्लिङ्ग दर्पणम् – अष्टमः सर्ग

–: त्र्यम्वकेश्वरम् :–

यं ध्यात्वा शशिशेषरं सुरगुरूं सद्यः मुनिर्गौतमः,
प्रायः जन्हुसुतातटे स्वतपसा चक्रे बपुर्पावनम्।
पश्चान्नासिक पुण्यमण्डलभुवं पातुं स्वयं संस्थितम् ,
तं वन्दे गिरिजापतिं पुनरहो? भूतेश्वरं त्रयम्वकम्।।1।।

हिन्दी अनुवादः– जिन चन्द्रधर भगवान् भोलेनाथ का ध्यान करके महर्षि गौतम ने गौतमी गंगा के किनारे अपनी तपस्या के द्वारा अपने शरीर को पवित्र किया था। उसके वाद नासिक मण्डल की धरती को पावन वनाने के लिये स्वयं विराजमान रहने वाले स्वामी त्रयम्वकेश्वर शिवजी की मै वन्दना करता हूँ।

सदैव प्रायः मम भारताजिरे,
महामुनीनां तपसाहिमेदिनी।
उवाह सौरव्यं च वलं सुसंस्कृति।
र्यथा पयोमिर्हि फलन्ति भूरूहाः।।2।।

हिन्दी अनुवादः– हमारे भारत देश में सदैव महर्षियों की तपस्या के द्वारा भारत की वसुन्धरा सदैव सुख, समृद्धि एवं सांस्कृतिक वल से उसी प्रकार सवल एवं समृद्ध वनकर फलवती होती रही जैसे जल के अभिषेक से पेड़ फलदार वन जाते हैं।

पुरा स्वदेशे ननु गौतमो ऋषि–
र्वभूव लोके सहसा महातपः।
चचार तेनात्र तपः सुदुश्चरं,
यथा मुनीनां च महर्षिनारदः।।3।।

हिन्दी अनुवादः– पहले हमारे देश मे एक गौतम नाम के महान् तपस्वी ऋषि हुये। उन्होंने इस लोक में इतनी कठोर तपस्या की थी जैसे समस्त ऋषियों के महर्षि नारद जी ने की थी।

श्रीत्र्यम्बकेश्वरम्

समाः सहस्रं चरतस्तपोवृतं,
प्रसादयामास शिवं तदैकदा।
अघौघविध्वंसकरीं सुरापगाम,
यथा तदन्तेऽपि च तं महर्षिणा।।4।।

हिन्दी अनुवादः– हजारों वर्षो तक कठोर तपस्या करते हुये उस महर्षि ने एक दिन शिवजी को प्रशन्न कर दिया। इसके वाद समस्त पाप समूह को विनाश करने वाली गंगाजी ने अन्त मे शिवजी से याचना की।

स्वयं सतीनां जगदम्बिकेव साः
समाचरन्तीह सतीवृतं सदा।
तदाप्यहिल्यापि निनाय जीवनं,
यथा हि गौरीपतिसेवया शिवा।।5।।

हिन्दी अनुवादः– मुनिराज गौतम की धर्मपत्नी अहिल्या भी सती नारियों में पार्वती के समान इस लोक में सतीव्रत का पालन करती हुई अपना जीवन उसी प्रकार विताने लगी जैसे शिवजी की सेवा करके जगज्जननी जगदम्वा ने अपना जीवन व्यतीत किया था।

कपर्दिनालब्ध कृपाफलेन सः,
ददर्श भूयो भुवनेऽपि जान्हवी ।
सुमन्द गत्यागमनेन भूतले,
समीक्ष्य तामत्र मुमोद गौतमः।।6।।

हिन्दी अनुवादः– भगवान् भोलेनाथ से प्राप्त कृपा के फलस्वरूप उन मुनिवर गौतम ने दुवारा भगवती गंगा को संसार में देखा। वड़ी मन्दगति से पृथ्वी पर गंगा के आने से उसे देखकर गौतम परम प्रशन्न हो गये।

तपः फलं नैव विलीयते क्वचिः,
द्यथा श्रमेणाप्तध नं कथञ्चन।
विमृश्य सद्यः मुनिराज गौतम–
श्चचार चान्तेऽपि वृतं पिनाकिनः ।।7।।

हिन्दी अनुवादः– तपस्या का फल कभी क्षीण नहीं होता । जिस प्रकार परिश्रम से प्राप्त किया हुआ धन कभी किसी प्रकार नष्ट नहीं होता ऐसा विचार करके मुनिराज गौतम अन्त में फिर भी शिवजी का ही व्रत करने लगें।

ततो महर्षिः ज्वलदग्निसन्निभः
सुतप्त हेमाभ शरीर कान्तिना।
वभौ त्रिलोकेषु पुनर्वृतेन सः,
यथा जगद्धाम्नि च नूतनो रविः।।8।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद शिवजी के दुवारा वृत करने से वे महर्षि गौतम जलती हुई अग्नि के समान तथा तपे हुये सोने के समान अपने शरीर की आभा से तीनों लोकों में इस प्रकार सुशोभित होनें लगे मानों आकाश मण्डल में कोई दूसरा नवीन सूर्य उदित हुआ हो।

अथैकदा भारतमातृभूतले
ह्ययवर्षणं नैव वभूव संततंम।
समस्त दुर्भिक्ष प्रभाविता मही,
शमं न लेभे शरणे विधेरपि।।9।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद एक वार हमारे भारत की धरती पर पानी नहीं वरसा। समस्त पृथ्वी अकाल से प्रभावित होकर ब्रह्मा जी की शरण में भी शान्ति न प्राप्त कर सकी। अर्थात् अकाल पड़ने से हर जगह त्राहि त्राहि मच गयी।

तपः प्रभावात्स तहर्षि गौतमः,
जलाधिदेवं च समर्जयत्पयः।
प्रयूर्य गर्त सहसा समन्ततः,
प्रभूतमन्नं सहि प्राप भूयसा।।10।।

हिन्दी अनुवादः– महर्षि गौतम ने अपनी तपस्या के प्रभाव से जल के देवता वरूण से पर्याप्त जल की याचना की । इसके वाद वरूण देवता के द्वारा दिये गये जल से एक गड्डा भरकर चारों ओर से पर्याप्त अन्न फिर भी प्राप्त कर लिया।

ततः समन्तात्समवेक्ष्य गौरवं,
तपः प्रभावंच स्वतः महर्षिणः।
तथा हि ताः नागरिकाः गृहस्त्रियः
क्षणेऽपितस्मै भृशमद्रुहन्मुहुः।।11।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद चारों ओर से गौतम ऋषि का गौरव एवं उनकी तपस्या का अद्‌भुत प्रभाव देखकर उस नासिक नगर की रहने वाली स्त्रियाँ एक ही क्षण में उन महर्षि से विभिन्न तरीके से वैर करने लगीं । वस्तुतः स्त्रियों का स्वभाव ही ईष्यालु हुआ करता है।

क्रमादिमाः सौम्य वृतं समारभन् ,
गजाननं चात्र प्रसादनेच्छया।
विलोक्य दम्भाचरणं सुयोषिता–
मदूयदन्तः करणे भृशं शिवः।।12।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद क्रम से इन स्त्रियों ने गणेशजी को प्रशन्न करने की इच्छा से एक साधारण वृत प्रारम्भ किया। इस प्रकार उन चरित्रवती नारियों के कपटयुक्त आचरण को देखकर भगवान् भोलेनाथ अपने ह्दय में अत्यधिक दुःखी होने लगे।

विचारयामास क्षणे जगत्पति–
स्ततश्च देवीं सहसाबवीद्वचः।
अहो? विचित्रंचपुरंध्रिजीवनं,
नचात्र ज्ञेयं चरितं महर्षिभिः।।13।।

हिन्दी अनुवादः– संसार के स्वामी शिवजी ने एक क्षण विचार किया। इसके वाद देवी पार्वती से कहा। स्त्री का जीवन कितना विचित्र है। वस्तुतः स्त्रियों का चरित्र महर्षि लोग भी नहीं जान सकते। सामान्य पुरूष तो जान ही कैसे सकता है।

ततः वृतेनैव प्रसाद्य तं पुन ,
र्गणाधिनाथंसहसा पुरस्त्रियः।

तथापि ताः लव्धवराड्गनाः मुनिं,
प्रधर्षितुं चक्रुरलं पराभवम्।।14।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद वृत के द्वारा गणेशजी को प्रशन्न करके, नगर में रहने वाली स्त्रियों ने उस विनायक से वरदान प्राप्त करके मुनिराज गौतम को दवाने के लिये उनका पर्याप्त अपमान किया ।

ततश्च गोरूपधृतो विनायकः,
जगाम क्षेत्रं सहसा मुनेरपि।
समीक्ष्य शस्यादिभिरद्भुतं क्षणे,
वुभोज चान्तेऽपि तृणानि संततमः।।15।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद गाय का रूप धारण करने वाले गणेश, महर्षि गौतम के धान्य से परिपूर्ण खेत में जा पहुँचे । ऐसी हरियाली से सम्पन्न उस खेत में उन्होने घास चरना प्रारम्भ कर दिया। अर्थात् घास चरकर उन्होंने गौतम को वहां जाने के लिये वाध्य कर दिया।

विलोक्य क्षेत्रे कृशगात्रजर्जरां,
ततश्चरन्तीं ननु शाद्वलानि गाम्।
करेण चानीय तृणानि गौतमः,
पुनर्हिचिक्षेप शनै स्तपोधनः।।16।।

हिन्दी अनुवादः– गौतम ऋर्षि ने अपने खेत में बहुत दुवले शरीर वाली केवल घास चरती हुई उस गाय को देखकर, अपने हाथ से कुछ तिनके लेकर उस तपस्वी ने उस गाय के ऊपर फेंक दिये। अर्थात् उस गाय को मारने की जगह उसे वहाँ से हटाने का प्रयास किया।

ततस्तृणैरेव तदाशु पीड़िता ,
गताच पंचत्वमियं सुनन्दिनी ।
विलोक्य भीतो मुनिराज गौतमः,
भृशं चकम्पे हृदये दयापरः।।17।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद वह गाय केवल तिनकों से ही पीड़ित होकर मृत्यु को प्राप्त हो गई। ऐसा देखकर वह महर्षि गौतम तथा अपने हृदय

में सहसा कांप उठे क्योंकि वह इतने दयालु थे।

अहो! महत्पातकिनं विलोक्य मां,
महीतलम् चात्र स्वयं ह्वणीयते।
विचार्य किंचित्सहसा महामुनिः
सरोद सद्यः प्रविहाय धीरताम्।।18।।

हिन्दी अनुवादः– अरे! मुझ जैसे पापी को देखकर यह पृथ्वी स्वयं क्यों नहीं लज्जित होती होगी। अर्थात् अवश्य हो रही है। ऐसा सोचकर वे महर्षि गौतम अपना वास्तविक धैर्य छोड़कर अकस्मात् रोनें लगें।

इतीह निन्दन्व्यथितो महातपः
मुहुर्मुहुश्चात्मनि दुष्कृतं वपुः।
चकार चान्तेऽपि स दारूणं तपः
यथा पुराक्षीणवपुः स चन्द्रमा।।19।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार वे परम तपस्वी महर्षि गौतम अपने ह्रदय मे नितान्त दुखित होते हुये अपने पापी शरीर की वार वार निन्दा करते हुये उन्होंने फिर से उसी प्रकार कठोर तप किया जैसे पहले शरीर में क्षय रोग हो जाने पर चन्द्रमा ने शिवजी का कठोर व्रत किया था।

स ग्रीष्मकालेज्वलदग्निसन्निधौ,
शरत्सरिन्नीरसुशीतले स्थितः।
पुनर्घनासारमपास्तवल्कल–
श्चकार चान्तेऽपि च दारूणं तपः।।20।।

हिन्दी अनुवादः– उन महर्षि गौतम ने गर्मी की ऋतु में जलती हुई अग्नि के पास वैठकर तथा शरद ऋतु में नदियों के शीतल जल में खड़े होकर। वर्षा काल में वल्कल वस्त्रों को भी उतारकर मुनि नें अन्त में भी नितान्त कठोर तपस्या की।

ततो विनिर्माप सुवालुकामया–
न्यनेकलिङ्गानि स्वयं कपर्दिनः।

ततश्चं संपूज्य मुनिः सुश्रद्धया,

मुमोच नित्यं सतु गौतमीजले ।।21।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद महर्षि गौतम शिवजी के बालू से अनेक शिवलिङ्ग बनाकर तथा उनकी श्रद्धापूर्वक पूजा करके उन शिवलिङ्गों को नित्यप्रति गौतमी गंगा में विसर्जन कर दिया करते थे।

ततोऽपि लेभे न शमं महर्षिणा,

महामुनीनाभिव योग साधनैः।

निधाय चान्तःकरणे जगत्पतिं,

पुन प्रदध्यौ वृषभध्वजं रहः।।22।।

हिन्दी अनुवादः– फिर भी महर्षि गौतम को शान्ति न मिल सकी। तव उन्होंने महर्षियों के समान विभिन्न योग के साधनों द्वारा अपने हृदय में शिवजी को अध्यासित करके फिर उन भोलेनाथ का नितान्त एकान्त में घ्यान किया।

स वीतनिद्रः तनुताप मज्जिमः,

नितान्त जर्जर तनुरुद्वहन् मुनिः।

ततः प्रपेदे सजगन्नियामकः,

विलोक्य सद्यः ननुदारूणं तपः ।।23।।

हिन्दी अनुवादः– वह महर्षि गौतम निद्रा विहीन, शरीर संताप के कारण मंजिष्ठ रंग वाले नितान्त जर्जर अथवा क्षीणकाय शरीर को धारण करते हुये जव अपनी तपस्या में दत्तचित्त हो गये। तव संसार के स्वामी भगवान् भोलेनाथ उनकी कठोर तपस्या देखकर ऋषि गौतम के पास सहसा उपस्थित हुये अथवा पधारे।

विलोक्य तं ध्यानमुपाश्रितं मुनिं,

विचिन्तयन्तं सततं जगत्पतिं।

जगन्निवासः जगदान्तरात्मना,

जगत्त्रयैकस्थपतिर्जगादतम।।24।।

हिन्दी अनुवादः– उस ध्यान की मुद्रा में अवस्थिति मुनिराज गौतम को देखकर, जो लगातार संसार के स्वामी शिव का दत्त चित्त होकर ध्यान कर रहे

थे।उनसे विश्व के संरक्षक एवं स्वामी, जगन्नियन्ता भगवान् भोलेनाथ स्वयं आकर वोले।

तथापि तेनात्र श्रुतं न तद्वचः,
न चक्षुरून्मील्य ददर्श तं शिवं।
ततः जगद्धाम स्वयं शिवापति
र्ननाम चान्ते निजभक्तमद्भुतं।।25।।

हिन्दी अनुवादः— फिर भी महर्षि गौतम ने शिवजी की कोई वात नहीं सुनी। और न आखें खोलकर उन्होंने शिवजी को देख ही पाया। इसके वाद संसार के एकमात्र अधिनायक भगवती पार्वती के स्वामी भगवान् भोलेनाथ ने अपने अद्‌भुत भक्त गौतम को स्वयं ही प्रणाम किया।

ततः चकम्पे जगदम्विका पतिः,
मुखाव्ज नेत्राम्वुगलत्प्रमार्जयन्।
नमन्ति यं विश्वपतिं सुरासुराः,
स भक्त शोकेन रूरोद संततम्।।26।।

हिन्दी अनुवादः— इसके वाद गौतम के न देखने पर अपने कमल स्वरूपी मुख पर गिरनें वाले आंसुओं को पोछते हुये जगज्जनी जगदम्वा के स्वामी शिवजी कांपनें लगे। जिस संसार के एकमात्र स्वामी भोलेनाथ जी को सभी देवता एवं दैत्य नित्य ही नमस्कार किया करते हैं। वह स्वयं अपने भक्त के शोक या चिन्ता में अनवरत रो रहा हैं। अथात् वे शिवजी रो पड़े।

हतप्रभं चात्र विमूढ चेतसं,
सुनिंस्वसन्तं सहसा मुहुर्मुहुः।
स्वभक्तदेहेननितान्त विह्वलम्
शिवं समालक्ष्यजगाद पार्वती।।27।।

हिन्दी अनुवादः— अपने भक्त के शरीर के कारण अत्यंत वेचैन, निस्तेज एवं किंकर्तव्य विभूढ हो जाने वाले, वार वार गरम गरम आहें या श्वासें भरते हुये। शिवजी को देखकर जगज्जननी पार्वती अपने प्राणेश्वर शिवजी से वोली।

अहो! जगन्नाथ! जगत्कृते शुचम् –
निधाय चान्ते न विचिन्तितं त्वया ।
ममापि चिन्ता न कृता जगत्त्रये,
जगन्नियन्ता कथमाशुखिद्यसे ।।28।।

हिन्दी अनुवादः– हे चराचार के स्वामी! शिवजी संसार के लिये अपने हृदय में शोक धारण करके आप कुछ भी न सोच सकें। आपने तीनों लोको में मेरी भी परवाह न की। हे संसार का नियमन करनें वाले आप दुःखी क्यों हो रहे है।

सदा वसन्तं गिरिगह्वरे पुन,
दिंगम्वरत्वेन व्यपेतमम्वरम् ।
विलोक्य त्वामत्र विपन्नमानसं,
विडम्वयिष्यन्ति दिवः दिवांड्गनाः ।।29।।

हिन्दी अनुवादः– कैलाश पर्वत की गुफा में रहने वाले, तथा वस्त्र विहीन दिगम्वर के स्वरूप में अवस्थित, दुःखी हृदय वाले आप को देखकर स्वर्ग की अप्सरायें आप की जरूर निन्दा करेगी। अतः समाहित होकर विचार किजिये।

अहो! त्रिलोके प्रचलत्सुपन्नगं
स्वभक्तहेतोः हि विपन्नमन्ततः ।
सशेषशय्यासन सस्थिता रमा,
विडम्वयित्यनिशं च मामपि ।।30।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी! तीनों लोकों में प्रसिद्ध चंचल सर्पो वाले तथा अपने भक्त के निमित्त इतने दुःखी देखकर, शेषनाग की शय्या पर अवस्थित लक्ष्मी जी मेरी हँसी उड़ाया करेगी। अतएवं आप शान्त हो जॉये। अन्यथा आपके कारण मेरा भी अपमान होगा।

विचिन्त्य किंचिज्जगतीपतिः स्वयं,
जगाम भूयोऽपि मुनेरथान्तिकं ।

जगाद तं नैव तपोधनं शिवः,
तदस्यलावण्यमसौ समैच्छत् ।।31।।

हिन्दी अनुवादः– संसार के स्वामी शिवजी कुछ सोचकर फिर महर्षि गौतम के पास गये। किन्तु शिवजी उस तपस्वी से कुछ कह न सके। केवल उस ब्रह्मर्षि की तपोमयी प्रतिमा का सौन्दर्य देखते रहे।

निमीलिताक्षं जपव्यग्रमानसं,
नितान्त संताप समन्वितं मुनिं।
विलोक्य भूयो वृषकेतनस्तदा,
जगाद सौम्यं सरसं भृशं बचः।।32।।

हिन्दी अनुवादः– आखें वन्द करके शिवजी का जय करने में तल्लीन हृदय वाले, एवं भीषण वेदना से युक्त उन मनिवर गौतम को देखकर शिवजी ने फिर दूसरी वार भी वड़े सरल वचनों से कहा।

तमाहस्वस्थैकपदे समाश्रितं,
दधत्करे कांचन कंकणं रहः।
सुदक्षिणेनात्मकरेण मालिकां–,
जपन्तमत्यंत श्रमेण गौतमं।।33।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद अपने एक पैर पर खड़े हुये, एवं हाथ में स्वर्ण कंकण धारण करने वाले, अपने दाहिने हाथ से रूदाक्ष की माला से परिश्रम पूर्वक जाप करने वाले ऐसे गौतम मुनि से शिवजी ने कहा।

अहो मुने! नैव विलोकिंत त्वया ,
धृतं वृतं यस्य कृते परंतप ।
स एव त्वामद्य शमं हि याचते ,
न दुर्लभं किंचिदहो! महात्मनाम्।।34।।

हिन्दी अनुवादः– हे मुनिवर! परम तपस्वी! तुमने अव तक नहीं देखा। जिसके लिये तुमने इतना कठोर वृत धारण किया है, वही आज तुमसे शान्ति की याचना कर रहा है। क्योंकि महान् आत्मा वाले व्यक्तियों को संसार

में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं होती। अर्थात् वे लोग परिश्रम के द्वारा संसार की वस्तु प्राप्त कर लिया करते है।

अलंश्रमेणाङ्ग! विहाय तं वृतं,
तथा समक्षं समुपस्थितं शिवं।
विलोक्य नूनं सहसा क्षमष्व मां,
सदैव संतोषधनाः हि साधवः।।35।।

हिन्दी अनुवादः– हे परम प्रिय मुनिवर! अव अधिक परिश्रम करने से क्या लाभ। उस वृत को त्यागकर अपने सामने उपस्थित शिव को देखकर, मुझे आज क्षमा कर दो। क्योंकि सज्जन लोग संतोष रूपीधन से धनवान् हुआ करते हैं।

वृणीष्व मे तात! वरं सुवाञ्छितं ,
पदं धनं वाथ बलं च वैभवं।
यदीच्छसे ब्रूहि शनैः सुशासनं,
ददामि ते चाद्य दिवौकसामिव।।36।।

हिन्दी अनुवादः– हे वत्स! जो तुम्हें अच्छा लगे वह वरदान मॉग लो। मेरा उत्तम पद, धन, अथवा वैभव या अद्भुत शक्ति या देवताओं के समान सुन्दर शासन, जो चाहो वह मुझे बताओ। मैं आज तुम्हें सव कुछ दे दूँ।

अहो! मुनीनां पदपद्म पद्धति–,
र्विलोकनीया न विलोकितात्वया।
विवेक बुद्धया श्रुणु मे प्रियं बचः,
विहाय नूनं वृतमद्य मानद!।।37।।

हिन्दी अनुवादः– हे मान को प्रदान करने वाले ! मुनियों के चरण कमलों से चिंन्हित आचार परंपरा का तुम्हें पूर्ण ध्यान रखना चाहिये। जिसे तुम कुछ भी नहीं सोच रहे हो। तुम अपने ज्ञान एवं वुद्धि के द्वारा भली प्रकार सोच विचार कर मेरी वात सुनो। तथा यह वृत समाप्त कर दो।

महेन्द्र मन्दाकिनि मध्यचारिणः,
गजेन्द्र गण्डस्थल भिन्न संततं।

तपोज्वलज्ज्वालतदर्चिभिः स्वयं,
ज्वलत्यहो ! चात्र मदं चतुर्दिगम्।।38।।

हिन्दी अनुवादः– हे मुनिवर! इन्द्र की आकाश गंगा में विचरण करने वाला जो ऐरावत हाथी, उसके गण्डस्थल से प्रस्फुटित मदजल आज भी तुम्हारी तपस्या रूपी अग्नि की लगातार जलने वाली चिन्गारियों के द्वारा निरन्तर चारों दिशाओं में जल रहा है। यह विचित्र वात है।

समीक्ष्य मध्येऽपि मुनिः जर्गत्पतिं,
ननाम चान्तर्मनसा जितेन्द्रियः।
तथापि तं नैव जगाद गौतमः,
नकिंचिदिच्छन्ति हि मानिनोजनाः।।39।।

हिन्दी अनुवादः– महर्षि गौतम ने शिवजी को देखकर भी उस जितेन्द्रिय ने अपने मन में कई वार प्रणाम किया। किन्तु वह तपस्वी शिवजी से फिर भी नहीं वोला क्योंकि मानी पुरूष कभी किसी से कुछ भी कामना नहीं करते ।

ततः पराधीन इवाति विक्लवः,
तमीक्ष्य तस्थौ विवशो जगत्पतिः।
करैस्तदास्यं ननु संस्पृशन्मुहु।।
यथा ध्रुवं वीक्ष्य जगाद केशवः।।40।।

हिन्दी अनुवादः– उसके वाद शिवजी पराधीन प्राणी के समान व्याकुल होकर उसे देखकर भी विवश होकर खड़े रहे। अपने हाथों से उस गौतम के मुख का वार वार स्पर्श करते हुये इस प्रकार वोले जैसे ध्रुव को देखकर भगवान विष्णु ने निवेदन किया था।

ममाड्.ग! यद्वाज्छसि मे जगत्त्रये,
वृणीष्व सम्यग् सुविचार्य सत्वरं।
तपोवृतेनाद्य पुनर्दिवौकसाः,
प्रपीड्.यमानाः भुवनं प्रयान्ति ते।।41।।

हिन्दी अनुवादः– हे अंग! तीनों लोकों में सर्वोत्तम वरदान जो तुम चाहो, भली प्रकार सोच समझकर मुझसे शीघ्र मांग लो। आज तुम्हारी तपस्या

एवं वृत से पीड़ित होते हुये स्वर्ग में रहने वाले समस्त देवता इस भूतल की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। अतः अव विलम्व मत करो।

ततः शिवं चाति विचार्य विह्वलम्,
विचिन्त्यमानः सहसा तपोधनः।
सरोजरक्ताक्षियुगं प्रमील्य सः,
जगाद तं विश्वपतिं हसन्निव।।42।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद शिवजी को वेचैन समझकर तथा अपने मन में कुछ सोचता हुआ वह तपस्वी गौतम, अपनी लाल कमल के समान दोनों आंखें खोलकर संसार के स्वामी भोलेनाथ से हँसता हुआ सा वोला।

अहो! जगत्कारण! कोटि जन्मनः–,
स्तपःफलेनात्र च ध्यानमुद्रया।
विदन्ति त्वां नैव सुरा महर्षयः,
नवेद्मि रूपं न वलं जगत्प्रभो!।।43।।

हिन्दी अनुवादः– हे संसार के प्रर्वतक! करोड़ो जन्मों की तपस्या के फल से एवं ध्यानमयी मुद्रा के द्वारा देवतागण एवं मुनिजन आपका परिज्ञान एंव साक्षात्कार नहीं कर पाते तो हे संसार के स्वामी भोलेनाथ! मै आपके स्वरूप एवं आपकी अद्‌भुत शक्ति को कैसे जान सकता हूँ। अथार्त मैं भी नहीं जानता।

विलोक्य किंचित्करूणार्द्रया दृशा,
ततः परं देहि! वरं समीहितं।
सुहृत्समारव्ध सुसाधकाः सतां
विदन्ति सर्व हिवुधाः विवेकिनः।।44।।

हिन्दी अनुवादः– हे भोलेनाथ! आप अपनी करूणा कलित दृष्टि से मुझे भली प्रकार देखकर, इसके वाद जो आप चाहें, अथवा जो मेरे लिये परम हितकर हो, वही वरदान दे दें। क्योंकि मित्रों का हित करने वाले वुद्धिमान एंव ज्ञानी पुरूष सज्जनों के हृदय की हर प्रकार की वात पहले ही समझ लेते या जान लेते हैं। अर्थात् उन्हें कुछ भी वताना नहीं पड़ता।

तवात्म वत्सेन विनायकेन नो,
कृतं त्वया नाथ! स्वयं समीक्षितं।
अघौघ विध्वंस पटुः तपोवृतं,
तदा समारव्धमिदं मया प्रभो!।।45।।

हिन्दी अनुवादः— हे स्वामी! तुम्हारे परम प्रिय वालक गणेशजी ने मेरे प्रति जो भी कपट का व्यवहार किया। वह आपने स्वयं ही देखा था। तब मैने पापों का विनाश करने में समर्थ आपके इस तपस्या रूपी वृत को इसीलिये प्रारम्भ किया था।

पुरा प्रसादेन स्ववत्सदुष्कृतान्,
सुमर्षयन्तीह च ज्ञानिनो जनाः।
त एव सर्वत्र पराभवं वृथा,
शुचं सहन्ते विफलं तरोरिव।।46।।

हिन्दी अनुवादः— हे स्वामी! पहले प्रसन्नता के कारण ज्ञानी लोग अपने वालकों के दुष्कर्मों को हँसकर क्षमा कर दिया करते है। वे ही सज्जन हर जगह उसी प्रकार अपमान के साथ–साथ फलहीन वृक्ष के समान शोक एवं पश्चाताप को व्यर्थ में ही सहन किया करते हैं।

बृजन्ति वालाः सहसाविवेकतां,
रूदन्ति पश्चाद्गुरवः शनैः शनैः।
तथाभवद्वालकृता प्रबज्चना,
दुनोति नित्यं सहसा द्वयोरपि।।47।।

हिन्दी अनुवादः— हे नाथ! लड़के विना सोचे समझे अज्ञानवश मूर्खता पूर्ण कार्य किया करते हैं। किन्तु उनके गुरूजन बाद में धीरे धीरे रोया करते हैं। उसी प्रकार आपके बालक गणेशजी के द्वारा ठगविधा का आचरण मुझे तथा आप को दोनों को ही नित्य पीड़ा पहुँचा रहा है। अर्थात् पीड़ित कर रहा है।

निशम्य तन्नीतिसमान्वित बचः,
सुसस्मितश्चाह पुनर्जगत्पतिः।

त्यजाशुनूनं वृतमद्य दारूणं,
ततः परं मानद! श्रूयतां वराः।।48।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार महर्षि गौतम के नीति सम्मत वचनों को सुनकर, संसार के स्वामी भोलेनाथ मुस्कराते हुये वोले । हे मान प्रदान करने वाले मुनिवर गौतम! पहले इस कठोर वृत को समाप्त करो , इसके वाद मेरे वरदान कानों से सुनों।

भक्त्या कृतैस्त्वद्व्रतैश्च तपोमिरद्य,
प्रीतोस्मि संप्रति वरः प्रथमो ददामि।
भूयात्समस्तभुवने सहसात्मतेजः,
प्रायः खेरिवद्युतिः ध्रुवमम्वरस्य।।49।।

हिन्दी अनुवादः– हे मुनिवर! तुम्हारे द्वारा भक्ति पूर्वक किये गये वृतों एवं तपस्याओं से आज मैं वहुत प्रशन्न हूँ। अतएवं इसी के फलस्वरूप मैं तुम्हें वरदान देता हूँ कि तुम्हारा आत्मिक तेज संसार में उसी प्रकार फैल जाये जैसे आकाश मण्ड़ल के सूर्य की तेजोमयी आभा समस्त विश्व में फैल जाती है।

दत्वा वरं मुनिवरस्य च शूलपाणिः,
वव्रे क्षणं गुणनिधिंजगदान्तरात्मा।
पापं त्वया न विहितं मुनिराज! किंचित,
छद्मस्त्वया सह कृतं पुनरंड्गनामिः।।50।।

हिन्दी अनुवादः– उस मुनिवर गौतम को वरदान देकर शिवजी फिर गुणों के आगार ऋषिवर गौतम से बोले। हे मुनिराज! तुमने किंचित मात्र पाप नहीं किया था। किन्तु तुम्हारे साथ यह कपट का आचारण उन नागरिक स्त्रियों ने किया था। जिसे तुम आज तक गौ हत्या समझ रहे हो।

गोरूपधृग्गणपतिः स्वयमागतस्ते,
पार्श्वे मुनीद्र! ननुजर्जर धेनुरेषा।
शष्पादिभिश्च प्रविहाय तनुस्तदन्ते,
लोकं जगाम सहसा तव ताप हेतोः।।51।।

हिन्दी अनुवादः— हे मुनिवर! यह वुड्डी गाय वही गणेश थे। जो तुम्हारे पास गाय का रूप धारण करके आयें थे। वही तुम्हारे सन्ताप का कारण वनकर तुम्हारी घास की मुष्टि मात्र प्रहार से अपना शरीर त्याग कर स्वर्गवासी वन गये थे। यह सव कपट का आचरण था । इसे सत्य मानकर सन्ताप मत करो।

भवन्ति देवाः वहुवेष धारिणः,
नृसिंह वेषेण यथा रमापतिः।
हरन्ति भक्तार्ति विपत्क्षणे क्षणे,
नरास्तु मह्यन्ति तदीय मामया।।52।।

हिन्दी अनुवादः— हे मुनिवर! देवतागण विभिन्न वेषधारी होते हैं। जैसे नरसिंह भगवान् का वेष भगवान् विष्णु ने धारण किया था। किन्तु वे अपने भक्तों का क्लेश प्रतिक्षण दूर किया करते हैं। लेकिन मनुष्य उनकी माया के द्वारा वशीभूत होकर मोहजाल में पड़कर सव कुछ भूल जाते हैं।

इत्थं निवेद्य सहसा ननु भूतनाथः—,
श्चान्तें समीक्ष्य नभमध्य स्वरूपमेतत्।
तत्त्रयम्वकं करतलेन भुवं निधाय,
प्रातिष्ठयत्स भगवान्नव मन्दिरेऽसौ।।53।।

हिन्दी अनुवादः— शिवजी ने इस प्रकार सारा रहस्य महर्षि गौतम से निवेदन करके, अन्त में आकाश मण्डल के मध्य भाग में अवस्थित अपने अद्वितीय तेज युक्त त्रयम्वकेश्वर स्वरूप को देखकर तथा अपनी हथेली से पृथ्वी पर रखकर उन भगवान भोलेनाथ ने एक नव निर्मित मन्दिर में उसे प्रतिष्ठित करवा दिया।

विलोक्य सद्यः गिरिराज नन्दिनी,
भविंदयच्चात्र सुखं पिनाकिना।
उवाच तां सर्वजगद्धितैषिणीं,
यथा चं सीतां विपिने हि राघवः।।54।।

हिन्दी अनुवादः— शिवजी ने भगवती को देखकर अत्यधिक आनंद का अनुभव किया अर्थात् अकस्मात् वहां उपस्थित पार्वती जी को देखकर शिवजी वहुत प्रशन्न हुये अन्त में वे संसार का हित करने वाली जगज्जननी पार्वती जी से उसी प्रकार वोले जैसे दण्डकारण्य वन में रघुवंश नन्दन भगवान् रामचन्द्रजी ने सीता जी से कहा था।

प्रवर्तितव्यं गृहिणां गृहे यथा,
सुपल्वले भिन्नमिवैक पंकजम्।
जलाविले तज्जलजं विवर्धते,
त्यजत्यहो! नैव विशुद्धिमन्ततः।।55।।

हिन्दी अनुवादः— हे प्रिये! गृहस्थ धर्मपालन करने वाले व्यक्तियों को अपने घर में रहकर उसी प्रकार वर्ताव करना चाहिए। जैसे कमल कीचड़ से युक्त तालाव में उत्पन्न होता है। किन्तु उस कमल में जल एवं कीचड़ का स्पष्ट दोष एवं जल का संसर्ग नही दिखायी देता। अर्थात् गृहस्थी में रहकर भी प्राणी को सदैव निर्मुक्त भाव से व्यवहार करना चाहिए। जो व्यक्ति गृहस्थी में रहकर माया से मुक्त नहीं रह पाते वही मायावी एवं सांसारिक दोष के कारण मुक्त नहीं हो सकते।

इत्युक्त्वा शशिशेषरः निज करैः संवाह्यमानो हरः,
ज्योतिर्लिङ्गमसौ प्रपूज्य मनसा देव्यासमं भूयसा।
साक्षात्सूर्यसहस्र दिव्यप्रतिभा विद्योतमानं च तत्,
सद्यः प्रेक्ष्य पुनस्तथा समभवद्गौरी गिरीशः स्वयं।।56।।

हिन्दी अनुवादः— ऐसा कहकर शिवजी अपने हाथों से उस ज्येतिर्लिंड्ग को सहलाते हुये तन्मयतापूर्वक पार्वती के साथ उसकी दुवारा पूजा करके, हजारों सूर्यों के समान अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न उस त्रयम्वकेश्वर शिवलिंग को फिर से देखकर वे भोलेनाथ पार्वती जी से फिर वोले।

अघौघ विध्वंस करं जगत्त्रये,
मयाप्तमेतच्छिवत्रयम्वकेश्वरं।
पुनन्ति ध्यानेन स्वतः मनीषिणः,
विमुक्तिमेष्यन्ति जनाः भवात्यये।।57।।

हिन्दी अनुवादः– हे देवी! समस्त पाप समूह को नष्ट करने वाला यह त्रयम्वकेश्वरं नामक ज्योतिर्लिङ्ग तीनों लोकों में सर्वोत्तम मैने प्राप्त किया है। जिसके ध्यान करने मात्र से वुद्धिमान लोग पवित्र हो जाया करते हैं। किन्तु सामान्य लोग मृत्यु के पश्चात् इसके दर्शन से अवश्य ही मोक्ष प्राप्त करते रहेगें।

अहो! भवोद्भाविनि त्रयम्बिके शिवे!,
तवात्मकल्याणकरं महेश्वरी।
पतिर्विहीनाः गतभर्तृकास्त्रियः,
सदैव विंदन्ति पतींश्च दर्शनाद्।।58।।

हिन्दी अनुवादः– हे संसार का कल्याण करने वाली त्रिनयने पार्वती! यह त्रयम्वकेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग तुम्हारा भी आन्तरिक कल्याण करने वाला है। क्योंकि पतियों से रहित या पतियों के द्वारा त्याग दी जाने वाली नारियाँ इसके दर्शन मात्र से ही अपने पतियों को शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त कर लेती हैं।

विपत्तियोगाद्विवशाः हि दुर्भगाः,
तदस्य पाठेन पुनर्दिने दिने।
ध्रुवं हि विंदन्ति च भाग्यमद्भुतं,
यथा त्वया लब्धमहं भवात्यये।।59।।

हिन्दी अनुवादः– हे देवी! किसी बिपत्ति के कारण पराधीन एवं दुर्भाग्य शालिनी स्त्रियाँ इस कथा का नित्य प्रति पाठ करने मात्र से ही वे शीघ्र ही अपने अद्भुत सौभाग्य को उसी प्रकार प्राप्त कर लेती है। जैसे तुमने सती का शरीर त्याग कर दूसरे जन्म में भी मुझे प्राप्त कर लिया था।

सुहृद्विहीनाः ननु मित्रवान्धवाः,
पठन्ति ध्यायन्ति च त्र्यम्वकेश्वरं।
त एव मित्रैः सह संततं भुवः,
सुखं लभन्ते नितरां सुहृज्जनाः।।60।।

हिन्दी अनुवादः– अपने भाई वान्धवों अथवा मित्रों से विहीन भाई वान्धव एवं मित्रगण, जो लोग इस त्रयम्वकेश्वरं शिवलिंड्ग का नित्य प्रति ध्यान करते हैं या इसके कथानक का नित्य पाठ करते हैं। वे अपने भाई वान्धवों या मित्रों के साथ निवास करते हुये पृथ्वी के समस्त सुखों को आजीवन ही प्राप्त किया करते हैं।

इति विविध वचोभिः तं मुनिं तोषयित्वा,
पुनरपि शिवलिंड्ग प्रेक्ष्यमाणो गिरीशं।
सकल विगत पापान् वन्हिवद्दह्यमानं,
सुरपति भुवनेशं तं मुनिः संवभाषे।।61।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार अनेक वचनों से मुनिवर गौतम को सन्तुष्ट करके तथा एक वार शिवलिंड्ग को देखते हुये, मुनि गौतम के समस्त जीवन के पापों को अग्नि के समान जला देने वाले संसार के स्वामी भोलेनाथ से महर्षि गौतम ने फिर कहा।

याचन्ते नहि चातकाः खलुजलं प्रायः पिपासातुराः,
मेघाडम्वरमंम्वरेऽपि विमुखाः संप्रेक्ष्यमाणा इव।
स्वातौ तत्र पयोद सीकर पयः पीत्वा चतेमानिनः,
नित्यं जीवनरक्षणं विद्धतश्चान्तेलभन्तेमुदं।।62।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी! चातक पक्षी कितने भी प्यासे क्यों न हों किन्तु वे मेघों के समूहों को भली प्रकार देखकर भी उन से विमुख ही रहा करतें है। वे मानी चातक स्वाति नक्षत्र में बादल के जल की कुछ बूंदें पीकर अपना जीवन यापन करते हुये अन्त में प्रशन्नता ही अनुभव किया करते हैं। तात्पर्य यह है कि मानी पुरुष केवल सन्तोष करके ही जीवन व्यतीत किया करते हैं।

तएव सौभाग्यवतामधीश्वराः
भवन्ति येत्वत्कृतप्रीतिपावनाः।

सदैव ध्यानाम्वुपिपासवः पुनः–,
पतन्ति भूयोनजनाः भवार्णवे।।62।।

हिन्दी अनुवादः– हे नाथ! वे ही सौभाग्यशाली प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ हैं जो आपसे स्नेह करते हुये पवित्र हुआ करते है। हमेशा आपके ध्यान रूपी पावन गंगा जल का पान करने वाले प्राणी दुवारा इस संसार सागर में पतन को नहीं प्राप्त करते।

अहो जगन्नाथ! जगत्त्रयेऽपिते,
तिरोहितं रूपमिदं प्रभासते।
कथं च संध्यारूण तिग्मदीधिति,–
र्विभाति प्रातः शिशुवद्धि तादृशः।।63।।

हिन्दी अनुवादः– हे जगदीश्वर! तीनों लोकों में तुम्हारा अव्यक्त स्वरूप अन्तर्निहित ही प्रतिभाषित हो रहा है क्योंकि यदि ऐसा नहीं है, तो सन्ध्याकाल के समान तेज किरणों वाला सूर्य लाल रंग का होकर प्रातः काल के समय वच्चे के समान वैसा ही लाल वर्ण होकर क्यों सुशोभित हुआ करता है।

कुतः सुगन्धिर्हि कुरङ्गकुण्डले,
कथं च भुक्ताः गजगण्डयोः स्वतः।
परागपीतद्रवगन्धजं मधु,
सरोरूहान्तर्गत कोनिधीयते।।64।।

हिन्दी अनुवादः– हे देव! हिरन के नाभिकुण्डल में सुगन्धित कस्तूरी कहाँ, तथा हाथी के दोनों गालो में स्वयं मोती कैसे । कमलों के अन्दर पीले पराग से युक्त सुगन्धित एवं मधुर शहद आखिर कौन धारण कर देता है। मुझे केवल इसी से आपकी सत्ता का स्वयं आभास हुआ करता है।

कथं हि स्वर्णाभ पतत्रि पक्षतिः,
पिकस्य कंठे मधुरं रुतं कुतः।

नजातुकेकीकलकंठस्वच्छविः,

बसन्तपुष्पर्धिकथं ऋतुं विना।।65।।

हिन्दी अनुवादः– हे नाथ! सोने के समान पक्षियों के सुनहरे पंख कैसे तथा कोयल के गले मे वाणी का माधुर्य कहां से आया। मोर की गर्दन की में इतना सौन्दर्य कैसे हुआ एंव उस अव्यक्त ब्रह्म की सत्ता के विना बसन्त ऋतु में फूलों की इतनी निराली शोभा स्वाभाविक तो हो ही कैसे सकती है।

तवैव रूपं निहितं भुवस्तले,

नमस्तले चापि मयंक चारुता।

प्रचण्डताचण्डकरैः प्रतीयते,

तथा नचेन्दौ पुनरत्र मार्दवं।।66।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी! तुम्हारा प्रत्यक्ष अव्यक्त रूप पृथ्वी तल पर हर जगह प्रतिभाषित हो रहा है। आकाश मण्डल पर चन्द्रमा का सौन्दर्य एवं सूर्य की किरणों में तीक्ष्णता, कैसे किन्तु चन्द्रमा में कोमलता भी तो नहीं प्रतीत हो रही है। अर्थात् हर जगह आपका ही तेज विध्यमान है।

इति विविध विधानैश्चिन्तयन् शूलपाणिं,

मुनिगण महनीयः गौतमेऽसौ महर्षि :,

स च निविड निशायां वन्द्यमानः गिरीशं,

धवलनवशिलायामन्ततश्चावतस्थे।।67।।

हिन्दी अनुवादः– मुनियों में सर्वश्रेष्ठ महर्षि गौतम इस प्रकार अनेक रूपो में भगवान भोलेनाथ का चिन्तन करते हुये, भयंकर अंधेरी रात में शिवजी की बार बार प्रार्थना एवं वन्दना करते हुये सफेद पत्थर की शिला पर वे अन्त में चुपचाप बैठ गये।

नितान्त शान्तं प्रसमीक्ष्य तं मुनिं,

जगाद शम्भुः सहसा जगत्पतिः।

मुनीश! किंचात्र विलोकितं त्वया,
विदन्ति रूपं न पुनर्दिवौकसाः।।68।।

हिन्दी अनुवादः— मुनिवर गौतम को अत्यधिक शान्त मुद्रा में बैठे देखकर, संसार के स्वामी भगवान भोलेनाथ उनसे फिर वोले। हे मुनिवर तुमने यहां अभी देखा ही क्या है। मेरे वास्तविक एवं अव्यक्त स्वरूप को तो स्वर्ग वासी देवगण भी नहीं जानते।

सदैव भक्तार्तिभिदं च विग्रहम्,
नमन्ति शेषादि सुरेश शारदाः।
विदन्ति भक्ताः हि स्वरूपमद्भुतं,
गतिर्न ज्ञातुं भुवि योगगिनापि।।69।।

हिन्दी अनुवादः— हे मुनिवर! भक्तों के कष्टों को निवारण करने वाले मेरे इस भौतिक शरीर को ही शेषनाग, इन्द्र, एवं सरस्वती आदि सभी प्रणाम किया करते हैं। किन्तु मेरे वास्तविक स्वरूप को तो एक मात्र मेरे भक्त ही जान सकते हैं। इस स्वरूप का परिज्ञान करने की सामर्थ्य इस धरती पर योगियों को भी प्राप्त नहीं हो पाती।

रूदन्ति भक्ताः ममयत्र विह्वलाः,
वृजामि तत्रैव ध्रुवं परंतप।
सदैव रक्षामि जले स्थले पुनः,
पुनर्महानसे काननगह्वरेषपि।।69।।

हिन्दी अनुवादः— हे मुनिवर गौतम! जहाँ मेरे भक्त मेरे लिये व्याकुल होकर रोने लगते हैं। वहाँ मैं हर स्थिति में अवश्य ही उपस्थित होता हूँ। और अपने भक्तों की जल, में धरती पर, अग्नि युक्त रसोई अथवा जंगलों की गुफाओं के अन्दर भी पहुँच कर उनकी रक्षा किया करता हूँ।

इत्युक्त्वा शशिशेषरः हि मुनये दत्वा सुदिव्यं पदं,
निर्वर्त्य तं त्रयम्वकम्।
देव्यासार्धमसौ पुनश्च शतधाः

पश्चादत्र सुगौतमीसुरसरिन्नीरं समाचम्य सः,
सद्यः मन्दिरमध्यभूतलतले तत्रैव चान्तर्दधे।।70।।

हिन्दी अनुवादः– ऐसा कहकर चन्द्रमा को सिर पर धारण करने वाले भगवान् भोलेनाथ महर्षि गौतम को अपना अलौकिक पद प्रदान करके, भगवती पार्वती के साथ उस त्रयम्बकेश्वर शिवलिङ्ग को फिर से सैकड़ो वार देखकर फिर गौतमी गंगा के जल का आचमन करके तुरंत उसी मन्दिर में पृथ्वी के अन्दर अन्तर्ध्यान हो गये।

फलकपुर निवासी विप्रवंश प्रदीपः,
द्विजगुरूजनसेवी शम्भुसन्नामधेयः।
सकलजगद्वन्द्यंदर्पणचातिश्रेष्ठं,
लिखितमिहपुरारेः प्रीतिमाप्तुं मयैव।।71।।

हिन्दी अनुवादः– उत्तर प्रदेश में फर्रूखाबाद जिले के निवासी ब्राह्मणों एवं गुरूजनो के सच्चे सेवक, ब्राह्मण वंश में उत्पन्न होने वाले "आचार्य शम्भू दयाल अग्निहोत्री" ने संसार में वंदनीय "द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणं" नामक ग्रंथरत्न की रचना भगवान् शिव का सत्य स्नेह प्राप्त करने के लिये की है।

इति द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्पणस्य
अष्टमः सर्गः समाप्तः
इति त्रयम्बकेश्वर निरूपणम्
इतिशम्

श्रीवैद्यनाथम्

अथ द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणस्य – नवमः सर्ग–
–वैधनाथ निरूपणम्–

भक्त्या यं सुप्रसाद्य राक्षसपतिः लंकेश्वरः रावणः,
मध्ये सोऽपि वलावलेप विवशः लंकां च रिक्तो : ययौ।
ध्यानेनैव विदन्ति यं च सहसा देवाः महेन्द्रादय–,
स्तं वन्दे गिरिजा पतिं च सुखदं श्रीवैद्यनाथेश्वरम्।।1।।

हिन्दी अनुवादः– लंकापति एवं राक्षसों का स्वामी रावण जिसको अपनी भक्ति के द्वारा प्रशन्न करके तथा बीच में अपनी शक्ति के घमण्ड के कारण पराधीन होकर खाली हाथ लंका गया था। अर्थात् सशरीर शिवजी को लंका नहीं ले जा सका। जिसे ध्यान के द्वारा भी इन्द्र आदि देवता नहीं जान पाते। ऐसे पार्वती जी के स्वामी, एवं सभी को सुख प्रदान करने वाले भगवान् वैद्यनाथेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग की मैं वन्दना करता हूँ।

यंध्यात्वा भवसिन्धु गोपदनिभं पश्यन्त्यमीः सूरयः,
प्रायः ध्यान परायणाः हि मुनयेः विन्दन्ति यस्याश्रयं।
मायामोहवलावलेपमखिलंहर्तुं क्षमः यः स्वयं,
दातुं विश्व समृद्धिदिव्यकृपया तं वैद्यनाथं भजे।। 2।।

हिन्दी अनुवादः– जिसका ध्यानकरके कविजन संसार सागर को गाय के खुर के समान देखा करते हैं। लगभग सभी मुनिजन जिसके ध्यान में मग्न होकर साक्षात् जिसका सानिध्य प्राप्त कर लिया करते हैं। जो संसार की माया एवं प्राणी के मोह ममता एवं शक्ति का घमण्ड इत्यादि वौद्धिक विकारों को हरण करने में स्वयं सक्षम है। एवं जो अपनी अलौकिक कृपा से संसार की समृद्धि प्रदान करने में भी समर्थ है। उन भगवान् भोलेनाथ वैद्यनाथेश्वर शिवजी का मैं भजन कर रहा हूँ। अथवा प्रणाम कर रहा हूँ।

क्षणे प्रपन्न हि क्षणे विपन्नः,
क्षणे समृद्धिश्च क्षणे दरिद्रता।
ददाति प्रीणाति हरत्यघं क्षणे,
नमामि तं विश्वपतिं क्षणे क्षणे।।3।।

हिन्दी अनुवादः– जो एक ही क्षण में प्रशन्न हो जाते हैं। तथा एक क्षण में नाराज भी हो जाते हैं। क्षण भर में अपार संपत्ति, एवं एक ही क्षण में भीषण गरीबी प्रदान कर देने वाले, अतएव क्षण में ही जो दे देता है, एक ही क्षण में ही प्रशन्न हो जाता है, तथा एक क्षण में पाप भी हरण कर लेता है। ऐसे संसार के स्वामी भगवान् भोलेनाथ को मैं हर क्षण प्रणाम करता हूँ।

अथैकदा विश्वपतिं समर्चितुं,
समाययौ दैत्यपतिः स रावणः।
प्रपूजयन् चात्र समग्रसाधनैः,
प्रसादयामास न तं महेश्वरं।।4।।

हिन्दी अनुवादः– एक समय लंकापति राक्षस राज रावण शिवजी की पूजा करने के लिये कैलाश पर्वत पर आया। वह अनेक साधनों से शिवजी की पूजा करते हुये भी उन्हें प्रशन्न न कर सका।

सवेधसा लव्धवरः दशाननः,
नितान्त दुर्दान्त दुरन्त साहसः।
चचार चाऽन्ते सहि दुश्चरं तपः,
प्रसाद सौम्याः हि भवन्ति देवताः।।5।।

हिन्दी अनुवादः– वह ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त करने वाला एवं दशमुख वाला रावण अद्‌भुत् शक्तिशाली एवं महान् साहसी था। उस रावण ने शिवजी को प्रशन्न करने के लिये कठोर तपस्या प्रारम्भ कर दी। क्योंकि देवता लोग प्रशन्न हो जाने पर सरल हो जाते हैं।

चरवानगर्त स तदा भुवस्तले,
जजाप मृत्युंजय नाम केवलं।
कदापि सुष्वाप न सोऽप्यहर्दिवं,
दिगम्वरं ध्यानपथे समादधे।।6।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद रावण ने पृथ्वी के अंदर एक गड्‌ढा खोदा उसी में वह शिवजी का केवल नाम जपने लगा। वह रात दिन कभी भी सोता नहीं था। अन्त में उसने शिवजी का दिगम्वर स्वरूप अपने ध्यान मार्ग में निहित अथवा आवासित कर रखा था।

ज्वलत्सु पंचाग्नितपश्चरन्मुहु--,
स्तपर्तुरन्तर्गतएव रावण।
उवाह किंचिन्नमयं कदापि सः,
सुसाहसः संयमवान् जितेन्द्रियः।।7।।

हिन्दी अनुवादः-- नितान्त साहसी संयमी एवं इन्द्रियों को जीतने वाला वह रावण ग्रीष्मकाल की भयंकर लपटों में अपने चारों ओर जलती हुयी पंचाग्नियों के मध्य तपस्या करता हुआ कभी भी तनिक भयभीत नहीं हुआ। वस्तुतः वह वड़ा ही साहसी था।

अशेष शीतर्तुरहर्दिवं पुन--
श्चलत्सुवाताधिक धैर्यवानसौ।
सुपल्वले नील पयस्सु संस्थित,--
श्चचार तत्रापि च दुश्चरं तपः।।8।।

हिन्दी अनुवादः-- भयंकर शीतऋतु के समय वायु के भीषण झकोरों में तालावों के नीले जलसमूह के अन्दर खड़े होकर धैर्यवान् उस रावण ने रातदिन भगवान् भोलेनाथ का कठोर वृत किया अर्थात् अवाध गति से शिवजी की उसने तपस्या की।

पुनर्धनासार प्रवर्षणेऽपि तत्
अपावृताकाशतले मदान्वितः।
दिगम्वरं चात्रजपन्नयं मुहु--
र्ददर्श ध्यानेन तमत्र केवलम्।।9।।

हिन्दी अनुवादः-- इसके वाद वरसात के दिनों में बादलों से लगातार पानी बरसने पर खुले आकाश के नीचे वस्त्र विहीन होकर केवल उन शिवजी का जाप करते हुये उस मतवाले रावण ने सिर्फ अपने ध्यान के द्वारा केवल शिवजी का ही दर्शन किया। अन्य किसी का उसने ध्यान तक नहीं किया।

समाः सहस्रं चरतत्तपोवृतं,
प्रसादयामास न तं महेश्वरं।
ततोऽपि तत्याज न सः सुदुश्चरं,
त्यजन्ति नूनं न वृत मनास्विनः।।10।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार हजारों वर्षों तक तपस्या का वृत करते हुये रावण ने शिवजी को फिर भी प्रशन्न नहीं कर पाया। फिर भी उसने कठोर तपस्या का परित्याग नहीं किया। क्योंकि वुद्धिमान लोग अंगीकार किये गये वृत का कभी भी परित्याग नहीं करते। अर्थात् उसका अन्त तक निर्वाह किया करते हैं।

सुचन्द्रहांस स्वकरे निधायत–,
च्चकार तत्रादद्भुत् कौतकंतदा।
मुहुःपरिभ्राम्य सुचक्रवच्छनैः,
स कर्तयामास शिरांसि केवलम्।।11।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद वह रावण अपनी चन्द्रहास नामक तलवार अपने हाथ में लेकर सहसा अद्‌भुत कौतूहल युक्त कार्य करने लगा। उस तलवार को बार–बार चक्र के समान धीरे धीरे घुमाता हुआ उसने अपने सिर काटना प्रारम्भ किया। अर्थात् क्रम से एक एक सिर काटने लगा।

विलोक्य तत्कृत्यमिंद सुदुष्करं,
प्रशन्नतामेत्य क्षणे महेश्वरः।
जगाद तं नैव तथापि संयमी,
वदन्ति नान्तेऽपि कदापि देवताः।।12।।

हिन्दी अनुवादः– रावण के द्वारा अनवरत किये जाते हुये ऐसे अद्‌भुत एवं कठोर कृत्य को देखकर शिवजी एक ही क्षण में प्रशन्न होकर फिर भी उस रावण से कुछ नहीं बोले। अर्थात् संयम धारण करके चुपचाप देखते रहे। क्योंकि देवता लोग अन्त तक कभी बोलते नहीं हैं।

छित्वाशेषसमस्तशीर्षनिकरं लंकापतिःरावणः,
दध्रेतत्करवालमन्त्यसमये छेत्तुं शिरश्चांतिमं।
भक्तानां हितचिंतकः परमहो! सद्यः चकम्पेशिवः,
साक्षदस्य पुरःस्थितः स भगवान्जग्राह खड्‌गं शनै।।13।।

हिन्दी अनुवादः– लंका का राजा रावण अपने अन्य समस्त सिरों को काटकर, जव उसने अन्तिम अर्थात् दशवें सिर को काटने के लिये हाथ में

तलवार पकड़ी। उसी समय शिवजी कॉप उठे। क्योंकि वे भक्तों के परम हितचिंतक है। इसके बाद शिवजी उसके सामने खड़े होकर, उन भोलेनाथ ने उसके हाथ से वड़े धीरे से तलवार ले ली।

ततः समक्षं प्रसमीक्ष्य शंकरं,
ननाम तं विश्वपतिं दशाननः।
जगाद भूयो विधिवद्विवेकवा,–
न्नताननः नीतिवतां विशारदः।।14।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद शिवजी को अपने सामने देखकर वह रावण विश्व के स्वामी शिवजी को प्रणाम करने लगा। तत्पश्चात् नीतिज्ञ पुरूषों में चतुर एवं अद्‌भुत ज्ञानी वह रावण अपना सिर झुकाकर शिवजी से भली प्रकार फिर वोला।

अहो! जगन्नाथ! नते विचिन्तितं,
सुदुश्चरं चात्र तपोवृतं मया।
उवाह नैष्ठुर्यमितोकथं प्रभो,
सदैव भक्तार्तिहराः हि देवताः।।15।।

हिन्दी अनुवादः– हे संसार के स्वामी शिवजी! आपने मेरे कठोर किये गये तपोवृत पर जरा भी ध्यान नहीं दिया। हे प्रभु! आपने मेरी तरफ से इतनी कठोरता किस लिये धारण की है। क्योंकि देवतागण तो सदैव भक्तों की वेदना को दूर करने वाले हुआ करते हैं। आप फिर इतने कठोर क्यों हो गये।

न प्रत्ययं चात्र विभन्यसे कथं ,
किमन्य दुष्कर्म वशाज्जगत्प्रभो।
विहाय शून्येऽपि च विस्मृतोकथं,
विपत्तिकालेहि त्यजन्ति बान्धवाः।।16।।

हिन्दी अनुवादः– हे चराचर के स्वामी शिवजी! क्या आप मुझ पर विश्वास नहीं करते, अथवा किसी अन्य विशेष दुष्कर्म हो जाने के कारण मुझे आप शून्य निर्जन स्थान में छोड़कर कैसे भूल गये। अथवा आप ने मुझे क्यों भुला दिया। वास्तव में यह सत्य है कि विपत्ति के समय भाई वान्धव भी व्यक्ति को अकारण ही छोड़ दिया करते हैं।

त्यजाशु योगीश्वर! मां निशाचरं,
वृजामि तत्रैव पुनश्चतुर्मुखं।
भजन्तिनस्थाणुमहो! च मादृशाः,
न चाति शुष्काः हि फलन्ति भूरुहाः।।17।।

हिन्दी अनुवादः– रावण बोला– हे योगीराज शिवजी! अब आप मुझे छोड़ दीजिए। क्योंकि मै राक्षस हूँ। मैं फिर ब्रह्माजी की शरण में जाऊँगा। क्योंकि वे तो चार मुख वाले हैं। हम लोग रसहीन ठूँठ की सेवा नहीं करते। क्योंकि अधिक सूखे पेड़ कभी फल नहीं देते। अर्थात् उनका परित्याग कर देना ही उचित है।

भवांस्तु पंचानन एव श्रूयते,
वदन्ति वेदाः विविधाः दिवौकसाः।
तथापि नो वक्तुमलंन सक्षमः,
कथं विधेयं शरणं पिनाकिनः।।18।।

हिन्दी अनुवादः– हे शिवजी! आप तो पांच मुखवाले सुने जाते हैं। ऐसा सभी वेद एवं सभी देवगण भी कहा करते हैं। फिर भी आप बोलने में हम लोगों से तो नितान्त असमर्थ हैं। तो भला मैं शिवजी की शरण कैसे स्वीकार कर लूँ। अर्थात् चुप्पी साधने वाला व्यक्ति सबसे खतरनाक ही माना जाता है।

विदन्ति सर्वं न वदन्ति कर्हिचित्,
सतां सदैवादृतचित्तवृत्तयः।
परं च सन्ताप सहाः न सज्जनाः,
भवन्ति लोके न नितान्त निष्ठुराः।।19।।

हिन्दी अनुवादः– परम आदरणीय चित्त वृत्तियों वाले सज्जन लोग जानते सब कुछ हैं किन्तु वे बोलते कभी नहीं। लेकिन सन्तापों को चुपचाप सहन करने वाले सज्जन लोग संसार में इतने कठोर कहीं नहीं हुआ करते जैसे आप हैं।

स्वयं चलच्चक्रमिवातिचंचलं,
न चात्रजग्राह कृपाणमन्ततः।
शिरांसि चोत्कृत्य नवानिभूतले–,
गृहीतमन्तेऽपि समीक्ष्यकिंप्रभो! ।।20।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी! चंचल चक्र सुर्दशन के समान स्वयं चलने वाली मेरी चन्द्रहास नामक तलवार को आपने अन्त तक नहीं पकड़ा जब उसके द्वारा कटे हुये मेरे नौ सिर जमीन पर आपने देखकर आखिर अन्त में इसे आपने क्यों पकड़ लिया। तात्पर्य यह है कि आप मुझे दशानन के स्थान पर एकानन देखना चाहते थे।

दशाननं प्रेक्ष्य नताननं च मां,
विलोक्य किं नैव मनः हृणीयते।
सदासुहृच्चिंतन तत्पराः वुधाः,
तुदन्ति पश्चात्सततं सुरैरपि।। 21।।

हिन्दी अनुवादः– हे शिवजी! पहले मुझे दशमुख वाला देखकर, आज केवल एक झुके हुये मुख वाला देखकर क्या आपका मन लज्जित नहीं होता। क्योंकि मित्रों अथवा अपने व्यक्तियों का हित चिन्तन करने वाले वुद्धिमान लोग बाद में उसी के आन्तरिक शोकों के द्वारा सदैव दुःखी हुआ करते हैं।

इतीह प्रायः समुदीरयन्‌शिवं,
स्रवत्स्वयं चक्षुविलोलविन्दुभिः।
करेण क्लिन्नं परिमार्जयन् मुखं,
नचाह तं रक्तमुखः जितेन्द्रियः।।22।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी से इस प्रकार कहते हुये, आंखों से स्वयं वहने वाले आंसुओं से व्याप्त अपने मुख को हाथ से पोंछता हुआ एवं लाल मुख वाला वह जितेन्द्रिय रावण फिर शिवजी से नहीं बोला अर्थात् वह चुपचाप हो गया।

सगद्गदं तं प्रसमीक्ष्य रावणं,
जगाद कैलाशपतिस्त्रिलोचनः।
दयासमुद्रे विनिमग्नमानसः,
तरस्तरंगेष्विवहंसवद्धरः।।23।।

हिन्दी अनुवादः— गद्गद कंठ उस रावण को देखकर कैलाशपति शिवजी दयारूपी सागर में डूबे हुये मन वाले एवं तंरगों में तैरते हुये हंस के समान वे भगवान् भोलेनाथ अन्त में उससे बोले।

सगद्गदं त्वामवलोक्य भूतले,
वलावलेपं प्रविहाय रावण!।
चलद्विलोलाक्षिस्रवद्दधन्मुखं,
वदामिकिंचित्सहसा सतामिव।। 24।।

हिन्दी अनुवादः— हे रावण! शक्ति के घमण्ड को त्यागकर, गद्गद कंठ वाले तथा अनवरत चंचल नेत्रों से वहने वाले आंसुओं से मुख जिसका भीग गया है, ऐसे क्लिन्न मुख को धारण करने वाले तुम्हें देखकर अकस्मात् सज्जनों के समान मैं कुछ कह रहा हूँ । तुम ध्यान देकर सुनों।

शिवाय सर्वं शिव एव रोचते,
ततः परं सत्यमिदं परंतप!।
द्वयोर्फलं चात्र स्वयंहि सुंदरं,
विदन्ति सर्वं न वृजन्ति तत्पदम्।।25।।

हिन्दी अनुवादः— हे परम तपस्वी रावण! शिवजी को कल्याण सवसे प्रिय है। इसके वाद सत्य परमप्रिय है। इन दोनों का फल तो स्वयं सुन्दर ही हुआ करता है। यद्यपि इसे जानते सभी लोग है किन्तु जानते हुये भी इस मार्ग का अनुगमन नहीं करते। वे ही सदैव विपत्तियों के कारण परेशान भी रहा करते हैं।

य इत्थमाराधनकारणं च मां,
नमन्ति नित्यं नियमादहर्दिवं।

नते चतुर्भिश्च भवायुधैर्जुधाः,
पुनः पुनर्जन्मभुवः दधत्यहो!।।26।।

हिन्दी अनुवादः– हे रावण! जो लोग विश्व के परम आराध्य एवं प्रार्थनीय मुझे नित्य नियम पूर्वक रात दिन प्रणाम किया करते हैं। वे इस संसार के चार (काम, क्रोध, लोभ, मोह) अस्त्र शस्त्रों के द्वारा वुद्धिमान व्यक्ति दुवारा इस धरातल के पुनर्जन्म को धारण नहीं करते। अर्थात् उन प्राणियों का इस संसार में पुनर्जन्म नहीं होता।

वृजन्ति चान्ते सहसा च मत्पदं,
सदैव मे ध्यान परायणाः जनाः।
परंप्रसादं च समेत्य मे वुधाः,
स्वयं समर्जन्ति समृद्धि वैभवं।।27।।

हिन्दी अनुवादः– हे रावण! मेरे सदैव ध्यान में तल्लीन रहने वाले वुद्धिमान व्यक्ति अन्त में मेरे अलौकिक पद को प्राप्त किया करते हैं तथा संसार में मेरी प्रशन्नता को प्राप्त करके वे स्वयं ही संसार की समस्त समृद्धियों एवं ध
न धान्य को प्राप्त कर लिया करते हैं।

इत्युक्त्वा शशिशुभ्र सौम्य वदनस्त्रैलोक्य लीलाधरः,
सद्यश्चास्य शिरांसि सम्यग्तया कृत्वा पुर्नपूर्वबत्।
पश्चात्सौम्य दृशा विलोक्य विधिवल्लंकापतिं रावणम्,
कृत्वा पूर्णप्रशन्नपुष्पसहशं वब्रे मुनीनामिव।।28।।

हिन्दी अनुवादः– ऐसा कहकर चन्द्रमा के समान निर्मल मुख वाले एवं तीनों लोकों में अपनी लीला का प्रदर्शन करने वाले शिवजी, तुरन्त उस रावण के कटे हुये शीशों को पहले के समान जोड़कर, वाद में अपनी सरल दृष्टि से उन्हें देखकर तथा रावण को भी फूलों के समान प्रशन्न करके, शिवजी मुनियों के समान फिर वोले।

अहो विशालाक्ष! ममात्मगौरवं,
न वेत्सि नूनं जगतः वृहत्तरं।
त एव वृण्वन्ति हि सिद्धिसाधकाः,
प्रसादयन्तीह च मांनिरन्तरम्।।29।।

हिन्दी अनुवादः– हे बड़ी आंखों वाले रावण! संसार से विस्तृत तुम मेरे निजी गौरव को वस्तुतः नहीं जानते। वे ही सिद्धियों द्वारा साधना करने वाले भक्तगण इसका वरण किया करते हैं। जो मुझे अपनी तपस्या के द्वारा नित्य प्रशन्न किया करते हैं।

वृणीष्व यत्ते मनसा विचिन्तितं,
ददामि नूनं सहसा परंतपः!।
महाजनाचार परंपराममीः,
विदन्ति लोके स्वयमेव साधवाः।। 30।।

हिन्दी अनुवादः– हे तपस्वी रावण तुमने अपने मन से जो कुछ भी सोचा हो वह मांग लो । मैं निश्चित रूप से उसे अवश्य दे दूँगा क्योंकि महान् पुरूषों की आचार पद्धति सज्जन लोग स्वयं ही जान लेते हैं। अर्थात् उत्तम श्रेणी के लोग कभी झूठ नहीं बोलते।

धात्रा समर्जितवलेन विवर्धितोऽसि,
लंकेश! वेत्सि नहि भूतपतिंशिवंमां।
दग्धः मयैव हरि मन्मथवालसूनु–,
स्तस्मद्विदन्ति मुनयः खलुमन्मथारिः।।31।।

हिन्दी अनुवादः– हे रावण! ब्रह्मा के द्वारा प्राप्त शक्ति से तुम इतने बढ़ चुके हो कि तुम वास्तव में समस्त प्राणियों के स्वामी मुझ शिव को अब तक नहीं जान सके। मैंने ही विष्णु भगवान् के छोटे से वालक कामदेव को भस्म किया था। इसलिये सभी मुनिजन मुझे 'मन्मथारि' नाम से आज भी जानते हैं।

इति निशम्य वचः दशकंधरः,
भुवनवंदित कारणमीश्वरं।
पुनरसौ प्रसमीक्ष्य त्रिलोचनं,
तमवदत् व्यथितातुरमानसः।।32।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार शिवजी की बातें सुनकर वह रावण संसार के द्वारा पूज्य एवं विश्व के एक मात्र कारण त्रिनेत्रधारी शिवजी को देखकर वेदना से व्यथित हृदय से फिर कहने लगा।

धरणि धामधनं च कुलांङ्गनाः,
पुनरहो! सुतवैभवमद्भुतं।
न च भवन्ति सुखानि जगत्त्रये,
जगदिदं सुवलं हि महीयते।।33।।

हिन्दी अनुवादः— धरती, सुन्दर मकान, धन, एवं चरित्र वाली नारी तथा संसार का सर्वोत्तम धन पुत्र आदि यह तीनों लोकों में सर्वोत्तम नहीं होते। हे स्वामी! इन सभी सुखों से संसार में शक्ति सवसे महत्वपूर्ण सुख है। इसके विना मनुष्य किसी वस्तु की रक्षा नहीं कर सकता।

खलुवलेन समर्जित शासनं,
जनयतीह समृद्धिरलं भुवः।
तदपि शक्तिमतां हि सुशोभते,
स्रजमिवात्मशिरोजगतीतले।।34।।

हिन्दी अनुवादः— हे स्वामी! शक्ति के द्वारा अर्जन किया गया शासन पृथ्वी की समस्त समृद्धियों को उत्पन्न किया करता है। किन्तु वह शासन भी शक्तिशाली लोगों को ही शोभा देता है। जैसे अपने गले में पड़ी हुई माला मनुष्य की शोभा बढ़ाया करती है।

इत्युक्त्वा दशकंधरः शशिधरं विस्मापयन्भूयसा,
नीत्वा सव्यकरेण खड्गमतुलं तस्थौ समक्षं पुनः।
प्रायः कालकरालसदृशममुं निर्वर्ण्य सद्यः शिवः,
शीर्षं चात्र विकर्तितुं दृढवृतं वव्रेच तं सान्त्वयन्।।35।।

हिन्दी अनुवादः— ऐसा कहकर वह रावण शिवजी को आश्चर्य चकित करता हुआ, अपने दाहिनें हाथ से अपनी प्रसिद्ध चन्दहास नामक तलवार लेकर शिवजी के सामने फिर खड़ा हो गया। साक्षात् काल के समान दानव को देखकर शिवजी ने फिर अपने सिरों को काटने को तैयार देखकर उसे शान्त करते हुये कहा।

क्षमष्व मां भक्त! परीक्षितो मया,
सुभक्ति प्रीत्या प्रददामि ते वराः।

वृणीष्व किं किं भुवनेऽपि रोचते,
धनं वलं वैभवमात्मनोवद।।36।।

हिन्दी अनुवादः– हे भक्त ! अब मुझे क्षमा कर दो । मैंने तुम्हारी हर प्रकार से परीक्षा ले ली है। तुम्हारी भक्ति से प्रशन्न होने के कारण मैं तुम्हें बरदान दे रहा हूँ। मांगो तुम्हे संसार में क्या–क्या रूचि कर है। धन,बल अथवा अपना अद्भुत वैभव। बताओ जो अच्छा लगे वह मांग लो ।

प्रसाद्य तं विश्वपति त्रिलोचनं ,
जगाद लंकाधिपतिः स रावणः ।
वृणोमि यद्यद्भगबन्नभीप्सितं,
प्रदेहि मे देव! कमेण संततम्।।37।।

हिन्दी अनुवाद :– संसार के स्वामी त्रिनेत्रधारी शिवजी को प्रशन्न करके वह लंका का स्वामी रावण शिवजी से बोला । हे देव! जो–जो मुझे पसन्द है, वही वरदान मैं आपसे मांग रहा हूँ। आप कृपा करके मुझे क्रम से देते जायें।

धनं च विद्यां च बलं महोत्तमं,
कृपा त्वदीयाबिरतं महेश्वर!।
वृणोमि त्वामत्र वरेण्यमद्भुतं,
बदामि नैवान्यवरः कथंचन।।38।।

हिन्दी अनुवादः– हे महेश्वर! धन, विद्या और सर्वोत्तम बल एवं आपकी लगातार अद्भुत कृपा यही सबसे अद्भुत वरदान मांगने योग्य हैं, सो मैं मांग रहा हूँ। इसके अलावा कोई दूसरा वरदान मैं नहीं कहना चाहता क्योंकि संसार में यही चीजें हर व्यक्ति को लाभकारी और हितकर हैं।

इत्युक्त्वास कंपर्दिनापुनरसौ संप्राप्य सर्वेवराः,
दध्रे सव्यकरेण सौम्यमनसापादं शिवस्याद्भुतं।
व्याहर्तु नवमन्य वांछितवरं सद्यः चकम्पे शिवः,
सर्वेदेवगणाः तदैव सहसा भूयोमयंभेजिरे।।39।।

हिन्दी अनुवादः– ऐसा कह कर वह रावण शिवजी से सभी वरदान प्राप्त करके, उसने अपने दाहिने हाथ से बड़ी प्रशन्नता के साथ दूसरा बरदान निवेदन करने के लिए जैसे ही शिव जी का अलौकिक पैर पकड़ा उसी समय शिवजी कांप उठे। साथ ही सभी देवगण भी अकस्मात् दुबारा भयभीत हो गये। देवताओं ने सोचा अब न जाने ये कौन सा बरदान मांगेगा।

तथा समक्षं सहसात्मचिंतितम् ,
विलोक्य सद्यः वृषकेतनं शिवा।
जगाद कान्तं सदयेन चेतसा,
सुरक्षणीयाः हि सतां सुयोषिताः।।40।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार सामने खड़े हुए एवं नितान्त चिन्तित शिवजी को देख कर पार्वती जी अपने स्वामी से दयालुतापूर्ण हृदय से बोलीं । हे स्वामी! सज्जनों को अपनी स्त्रियों की अवश्य रक्षा करनी चाहिए।

विषं ददौयेन समुद्र मंथने,
स्वयं गृहीता कमला मधुद्विषा।
सशेषशस्यासनमद्य सेवते,
बिपश्चिताः द्यूतक्रियाः विशारदाः।।41।।

हिन्दी अनुवादः–हे स्वामी! समुद्र मंथन के समय जिन विष्णु ने आपको जहर दिया था, और चौदह रत्नों में सर्वोत्तम लक्ष्मीजी को स्वयं ग्रहण कर लिया इसके बाद आज भी शेषनाग के आसन का सेवन कर रहें हैं। वास्तव में चतुर लोग जुआँ खेलने की क्रियाओं में बड़े दक्ष हुआ करते हैं।

भवांस्तु योगीव चरत्यहो ! गिरिं,
वृषाधिरूढ़ः बिपिने भवान्तक!।
तथापि यद्वा सहसा हरिप्रिया ,
दिगम्बरं वीक्ष्य शनैः हसत्यहो ।।42।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी! आप तो योगियों के समान बैल पर चढ़कर जंगलों या पर्वतों पर बिचरण किया करते हैं। उसी समय संसार के विनाशक, हे भोलेनाथ! भगवान् विष्णु की पत्नी कमला आपको दिगम्बर या वस्त्रहीन

देखकर मन में हंसी बनाया करती है।

कथं मदीया न दया न चेतना ,
न चात्र चिन्ता गृह वालयोरपि ।
विषप्रभावों पुनरद्य दूयते ,
तथापि वृद्धत्वमहर्दिवं प्रभो!।।43।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी! आप को मुझ पर दया क्यों नहीं आती । मेरा आपको कुछ भी ध्यान नहीं रहता है। आपको घर एवं दोनों बच्चों की भी परवाह नहीं है।क्या उसी जहर का प्रभाव आज भी पीड़ित कर रहा है। अथवा रात दिन बुढ़ापे के कारण आप बेहोश रहनें लगे हैं। मेरी समझ यह नहीं आता है।

तच्चादौ जगदम्ब कोपविहितं श्रुत्वा प्रतीपं वच,
स्तत्राकाशपथेन प्रेत्य सहसा धातुः सुतो नारदः।
पूर्वं तां गिरिजां प्रणम्य मनसा पश्चाद्भवानी पतिं,
वव्रे किं वद कारणं भगवती ! कोपं वृथामा कृथाः।।44।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार प्रारम्भ से भगवती पार्वती के क्रोध से युक्त उल्टे सीधे बचनों को सुनकर ब्रह्माजी के सुपुत्र नारदजी आकाश मार्ग से वहां अकस्मात् उपस्थित होकर उन्होंने सर्वप्रथम भगवती पार्वती जी को, तदनन्तर शिवजी को प्रणाम करके कहा। बोलो देवी क्या कारण है आप क्रोध क्यों कर रहीं हैं। कृपया आप मुझे बतायें। अब आप क्रोध न करें ।

शनैः समायान्तमबेक्ष्य नारदं ,
जगाद कैलाशपतिः हसन्निव।
स्वयं विधाता व्यथते नताननः,
गतिश्च ज्ञातुं गृहयोषितामपि।।45।।

हिन्दी अनुवादः– नारद जी को धीरे–धीरे आते हुए देखकर भगवान् शिवजी उनसे हंसते हुए बोले। हे नारद ! ब्रह्मा जी घर की औरतों की गति जानने के लिए स्वयं अपना सिर झुकाकर दुखी हुआ करते हैं। किन्तु वे भी घर की औरतों से सदैव परेशान ही दिखायी पड़ते हैं।

परं प्रशन्नं समबेक्ष्य शंकरं,
जगाद कैलाशपतिं स नारदः।
निधायवीणाड्गमतः महोत्तमां ,
मनोरथोपात्त सुसंयतंबचः।।46।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी को अत्यधिक प्रशन्न देखकर, अपनी अलौकिक वीणा को गोद में रखकर, मनोकामना से तुरन्त उपस्थित होने बाले संयत शब्दों में नारद जी ने शिव जी से सरल वाणी में निवेदन किया।

न वेत्सि देवेश ! दशाननः कथं,
वदन्ति स्वार्थाय सदैव दानवाः।
प्रपूर्य कामान् हि वृजन्ति संततं,
यथाहि दीनं खलु मित्रव्रान्धवाः।।47।।

हिन्दी अनुवादः– हे देवेश ! आप नहीं जानते यह रावण कैसा है। राक्षस लोग अपने स्वार्थ के कारण मधुर भाषण किया करते हैं। ये लोग अपने कार्य पूर्ण करने के बाद प्राणी को उसी प्रकार परित्याग कर दिया करते हैं। जैसे गरीब आदमी को उसके मित्र एवं भाई वान्धव त्याग दिया करते हैं।

पदं गृहीतं कथमद्य तेनत्वत्–,
स याचितुं नाथ! बरं भवानपि ।
समीक्ष्य सर्वं सततं हिताहितं,
वदन्ति प्रायः बिबुधाः हितैषिणः ।। 48 ।।

हिन्दी अनुवाद– हे स्वामी! उस राबण ने आज आपका पैर क्यों पकड़ा था । अगले बरदान में आपको मांगने के लिए उसकी इच्छा थी । अर्थात् उसका अभिप्राय आप नहीं समझ सके। वह आपको सशरीर लंका ले जाना चाहता है। अतएव बुद्धिमान लोग अपना हर प्रकार से हित एवं अहित सोच कर हितैषीजन मुख से बोला करते हैं। कहने का तात्पर्य है कि आप अब सोच समझकर वरदान दें।

निबेद्य सम्यक् सहसा शिवं ततः,
जगाम तेनैव पथेन नारदः।

तदा जगज्जीवन ज्योतिषां पति–
र्विचारयामास क्षणं जितेन्द्रियः ।। 49 ।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार शिवजी को भली प्रकार सब कुछ बताकर देवषि नारद उसी मार्ग से बापस चले गए । तब संसार के जीवन प्रदान करने बाले , समस्त प्रकाश के स्वामी एवं इन्द्रियों को जीतने वाले शिवजी ने एक क्षण नारद की बातों पर सहसा बिचार किया।

तदाह भूयोऽपि शिवं दशानन–,
श्चिरायसे नाथ! कथं त्रिलोचन !।
बिचिन्तितं देहि बरं जगत्पते !
बिचारमूढ़ाः न भवन्ति साधवः ।। 50 ।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद राबण शिवजी से फिर बोला। हे स्वामी! आप देर क्यों कर रहें है। कृपया जल्दी कीजिए। मेरे द्वारा सोचा हुआ बरदान हे चराचर केस्वामी! मुझे अवश्य देदें । क्योकि सज्जन लोग बिचार करने में किंकर्तव्यबिमूढ़ नहीं होते अर्थात् वे हर बात को शीघ्र तय कर लिया करते हैं।

समीक्ष्यस्वार्थोपहितं दशाननं,
निशम्य निस्निग्धवचांसि भूयसा।
जगत्त्रयैकस्थपतिस्त्रिलोचनः
स्तमाहसद्यः ननु सस्मितं वचः।।51।।

हिन्दी अनुवादः– रावण को नितान्त स्वार्थी समझकर, तथा उसके वचनों को नितान्त स्नेह शून्य सुनकर, संसार के एकमात्र स्वामी त्रिनेत्रधारी शिवजी उस रावण से तुरंत मुस्कराते हुए वचनों से वोले।

ग्रहाण मे ज्योतिमयं परिष्कृतं,
प्रसादमेतन्नव सिद्धिदायकं।
निशम्य लंकेश! गुणानपरेतरान्,
भवन्ति सिद्धाः स्वयमेव साधकाः।।52।।

हिन्दी अनुवादः– हे लंकेश! स्वर्ग में प्रकाशमान् एवं विशुद्ध किया हुआ, तथा नवीन सिद्धियों को प्रदान करने वाला, मेरा सुप्रसाद है। जिसके अन्य

अनेकों गुण सुनकर साधना करने वाले मनुष्य स्वयं सिद्ध पुरूष वन जाते हैं। अतएव इसे ग्रहण कर लो।

ददामि ते प्रस्तरमद्य मंत्रितं,
तदाशुनीत्वा वृज मंदिरं स्वकं।
निधाय भूमौ नपुनस्तथा कथं ,
नवा समुत्थापयितुं त्वमर्हसि।।53।।

हिन्दी अनुवादः– हे रावण! आज मैं मंत्रों से अभिमंत्रित जो पत्थर तुम्हें दे रहा हूँ। उसे लेकर तुम अपने घर चले जाओ। किन्तु इसमें यही एक विशेषता है कि इसे जमीन पर रखकर, दुवारा उठाने में तुम समर्थ नहीं हो सकते अर्थात् जहां रख दोगे, वहां से दुवारा उठा नहीं सकोगे।

इत्युक्त्वा शपथैर्पुनः शशिधरः दत्वास्य तत्प्रस्तरं,
प्रीत्या सोऽपि निधाय दक्षिणकरे लंकापुरीं चावृजद्।
पूर्वं तां जगम्विकां पुनरसौ पश्चातदन्ते शिवं,
मन्ये! शम्भुवलावलेपविवशश्चाऽन्ते न सिद्धिं ययौ।।54।।

हिन्दी अनुवादः– ऐसा कहकर शिवजी शर्तों के द्वारा उसे वह पत्थर देकर, वह रावण भी प्रेम से उसे अपने दाहिने हाथ पर रखकर लंकापुरी को चल दिया। पहले उसने जगज्जननी माता पार्वती को बाद में शिवजी की वन्दना की। किन्तु मैं समझता हूँ कि शिवजी के द्वारा प्राप्त शक्तियों के घमण्ड के कारण व्याकुल हो जाने से वह रावण अन्त में सिद्धि को प्राप्त न कर सका। अर्थात् उसे लंका नहीं ले जा सका। वस्तुतः ईश्वरीय शक्तियाँ प्राप्त करके जो व्यक्ति घमण्ड किया करते हैं। वे लोग उस वैभव को स्थायी नहीं रख पाते।

पदातिरन्तर्द्विपवन्मदोद्धतः,
ययौपुरीं भूमिपथेन रावणः।
ददर्श मार्गे वृषकेतनं पुन–
र्ननाम भूयोऽपि न स्वर्थिनामिव।।55।।

हिन्दी अनुवादः– धरती के रास्ते से पैदल, मदान्ध हाथी के समान झूमता हुआ वह रावण अपनी नगरी लंकापुरी को वहां से चल दिया। उसने मार्ग

में शिवजी को फिर देखा किन्तु स्वार्थी पुरूषों की तरह दुवारा उन्हें प्रणाम तक नहीं किया।

विचारयामास क्षणे जगत्पति–,
श्चचार लीलाचरितं स्वमायया।
विभाव्य दूनः मनसासतीवचः,
मुनेर्वचोभिः सहसा हसन्निव।।56।।

हिन्दी अनुवादः–संसार के स्वामी शिवजी ने रावण का आचरण देखकर पहले सती के वाक्यों को सोचकर कुछ दुखित होकर तथा वाद में महर्षि नारद की वातों पर अकस्मात् हँसते से हुये एक क्षण विचार किया। तत्पश्चात् उन्होंने रावण के साथ अपनी माया के द्वारा अद्भुत लीला का खेल प्रारम्भ कर दिया।

ततश्च सद्यः लघुशंकयातुरः,
क्षणे स गोपालक बालकं ह्रिया।
जगाद क्रीडन्तममुं दशाननः,
ग्रहाण भोः! प्रस्तरमत्र सौभगम्।।57।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद वह रावण लघुशंका से व्याकुल होकर उसने वहीं खेलते हुए एक ग्वाल के वालक से लज्जित होकर तुरंत कहा। हे वालक! मेरे इस परम पूज्यनीय पत्थर को पकड़ लो। मै अभी लघुशंका करके आ रहा हूँ।

ततश्च लोके विजयी महावलः,
निधाय हस्ते सहसा सुप्रस्तरं।
गतः स्वयं नित्यक्रियां प्रवर्तितु,
क्षणे स गोपाल सुतोऽवदत्पुनः।।58।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद उस वालक के हाथ पर वह पत्थर रख कर संसार में विजय प्राप्त करने वाला, वलशाली रावण नित्यक्रिया करने चला गया। इसी वीच में वह ग्वाल वालक एक ही क्षण में फिर वोला।

ततश्च यावन्न समागतः पुन,
स्तदा स भारेण वभूव विक्लवः।

अनागतं वीक्ष्य महीपतिं सुत--

स्त्वभूमुचत्तत्र तदा स भूतले।।59।।

हिन्दी अनुवादः-- जव तक वह रावण लघुशंका करके न लौट पाया। तव तक वह वालक उस पत्थर के भार से व्याकुल हो गया। इसके वाद राजा को न आता हुआ देखकर उसने उस पत्थर को विवश होकर जमीन पर रख दिया।

महन्ति कूटानि स्वयं जगन्ति यः,

सदा विधत्ते हृदये जगत्पतिः।

तमत्र को धारयितुं प्रवर्तते,

अनिच्छया सिंहकरीन्द्रयोरिव।।60।।

हिन्दी अनुवादः-- बड़े बड़े पर्वतों की चोटियों, एवं अनेक भुवनों को जो संसार का स्वामी सदैव अपने हृदय में धारण किया करता है। उस सर्वजगन्नियंता शिवजी की विना इच्छा से सिंह एवं गजराज के समान कौन धारण करने में समर्थ हो सकता है।

समाययौ तत्र यदा दशाननः,

समीक्ष्य तद्भूमितले सुप्रस्तरं।

अदूयदन्तः करणे भृशं तदा,

मणिर्विहीनःभ्रमणादिवोरगः।।61

हिन्दी अनुवादः-- जव रावण वहॉ वापस आया। तो उसने उस सुन्दर पत्थर को जमीन पर रखा हुआ देखा। उसे देखकर वह इस प्रकार अपने हृदय में दुःखी होने लगा। जैसे मणि से विहीन सर्प घूमने फिरने से दुःखी हो जाता है।

ततः समाचम्य महावली नृपः,

स्वयं समुत्थापयितुं सुप्रस्तरं।

इयेष सः विंशतिभिः करैस्तदा,

रुरोद पश्चान्नवयोषितामिव।।62।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद आचमन करके, वह शक्तिशाली रावण, उस पत्थर को उठाने के लिये वीसों हाथों से प्रयास करता रहा। किन्तु जव वह पत्थर नही उठा सका। तव वह आज कल की नवीन औरतों के समान वहीं रोने लगा।

चंचाल सद्यः धरणी समन्ततः,
विशेषशेषाधिगतं युगक्षमं।
वलावलेपाद्वलवान्बलेन तं,
ह्रिया समालोक्य न सः मुदंदधे।।63।।

हिन्दी अनुवादः-- उस शिवलिड्ग को उठाते समय समस्त धरती हिलने लगी। शेषनाग ने भी विशेष रूप से प्रलय का स्वरूप ही समझ लिया। उस वलवान् रावण ने शक्ति के घमण्ड से चूर होकर जवरदस्ती उन शिवजी को देखकर, लज्जा के कारण कोई प्रशन्नता का अनुभव नहीं किया।

ततः भुजोच्छिन्नमपाड्गदं भुवः,
क्षणे समुत्थाप्य स्वयं दशाननः।
पुनः परिश्रान्त इवाति प्रस्तरं,
चकर्ष मन्द्राद्रिपयोनिधाविव।।64।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद भुजा से गिरे हुये वाजूबंद को पृथ्वी से उटाकर, वह रावण नितान्त थके हुये के समान उस पत्थर को फिर से उसी प्रकार खीचनें लगा। जैसे समुद्रमंथन के समय देवताओं ने मन्दराचल पर्वत मानों समुद्र से खींचा हो।

विदन्ति यस्याद्भुतकौतुकं पुन–
र्नशेष ब्रह्मादि स्वयं दिवौकसाः।
कथं चरित्रं पुनरस्य रावणः,
वलावलेपादपि वेत्तुर्महति।।65।।

हिन्दी अनुवादः– जिसके अलौकिक कृत्यों को शेषनाग तथा ब्रह्मा सरीखे देवता तक नहीं जान पाते। ऐसे भोलेनाथ के गोपनीय चरित्र, भला रावण अपनी शक्ति के घमण्ड से कैसे जान सकता है। वस्तुतः शिवजी को घमण्ड से घृणा है।

अशक्तमात्मानमवेक्ष्य दुर्मतिः,
समाह्वयच्छम्मुमनेकधाः नृपः।
ततः प्रपेदे शरणं शिवाग्रतः,
वलं विवेकेन सदा स्थिरीयते।।66।।

हिन्दी अनुवादः– उस दुर्वुद्धि रावण ने अपने को असमर्थ समझकर शिवजी को अनेक वार वुलाया। अन्त में वह शिवजी के आगे शरण में आ गया अर्थात् उसका घमण्ड चूर हो गया। क्योंकि शक्ति सदैव ज्ञान के द्वारा ही स्थिर रहती है।

निशम्य भक्तस्य वचो दयापरः,
जगाम तत्राशु स्वयं जगत्पतिः।
निसर्गगोपाल सुवेषधारिणं,
ततः परं नारदमित्यवोधिसः।।67।।

हिन्दी अनुवादः– वह दयालु शिवजी अपने भक्त की आवाज सुनकर वहाँ शीघ्र ही स्वयं पहुँच गये। प्राकृतिक ग्वालवाल का वेष धारण करने वाले नारदजी को उन्होंने जाते ही दूर से पहचान लिया। अर्थात् शिवजी के अलावा नारदजी को रावण नहीं पहचान सका।

विलोक्य तं विश्वपतिं त्रिलोचनं,
ननाम लंकापतिरेष रावणः।
ततः मुखं वीक्ष्य रूरोद सत्वरं,
सगद्गदं मन्त्रपदादिवोरगः।।68।।

हिन्दी अनुवादः– उन संसार के स्वामी त्रिनेत्रधारी शिवजी को देख कर इस लंकापति रावण ने उन्हें सस्नेह प्रणाम किया। इसके बाद शिवजी का मुख्ख देखकर वह कुवुद्धि रावण गद्गद् कंठ से उसी प्रकार तुरंत ही रो पड़ा जैसे मंत्र के प्रकोप से सर्प सिर पटककर एक क्षण में वेचैन होने लगता है।

पुनस्तमालिङ्गनमात्र विह्वलः,
वभूव सद्यः जगतीपतिः स्वयं।
त्रिभिःश्रवच्चक्षुनिषेक विन्दुभि,
स्ततोऽभिषिक्तं स्वमुखं च ममृजे।।69।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद रावण के दृढ़ आलिंगन करने के कारण संसार के स्वामी भगवान् भोलेनाथ स्वयं विह्वल हो उठे। तदन्तर तीनों नेत्रों से लगातार वहने वाले ऑसुओं से भीगे हुए अपने मुख को शिवजी ने कई वार अपने हाथों से साफ किया। अर्थात् पोंछा।

ततो वभाषे करूणार्त विह्वल–,
श्चराचरोद्यान सुरक्षकः शिवः।
नवेत्ति लंकेश! लवंगवज्जनो,
वलावलेपात्स वलं तरोरिव।।70।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद इस चराचर संसार रूपी बगीचे के माली अथवा रक्षक भोलेनाथजी! दयालुता से विह्वल होकर रावण से वोले! हे लंकेश! लौंग के समान नितान्त लघुकाय प्राणी उसी प्रकार अपने वल के घमण्ड से चूर होकर अपनी शक्ति को नहीं पहचान पाता। जैसे छोटी सी लौंग तीखेपन के कारण अपने पेड़ की उँचाई का अनुभव नहीं कर पाती

इत्युक्त्वा सरलैर्वचोमिरनिशं चाश्वासयन्तं शिवः,
पश्चादत्र करैश्च निर्मितगृहे संस्थाप्य तत्प्रस्तरं।
सर्वैः सार्धमसौ प्रपूज्य विधिवज्ज्योतिर्मयं तं पुनः,
स्तंसंप्रेष्यचरावणं पुनरहो! सायं प्रतस्थे गिरिम्।।71।।

हिन्दी अनुवादः– ऐसा कहकर अपने सरल वचनों से रावण को शांत करके, अथवा आश्वस्त करते हुये। तदनन्तर अपने हाथों से निर्मित मंदिर में उस पत्थर की स्थापना करके, तथा सभी देवताओं के साथ उस वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग की विधिविधान पूर्वक पूजा करके, रावण को भी लंका भेजकर, वे शिवजी संध्या के समय अपने कैलाश पर्वत पर प्रस्थान कर चले गये।

फ़लकपुर निवासी विप्रवंशप्रदीपः,
द्विजगुरूजनसेवी शम्भुसन्नाम धेयः।
सकलजगद्वन्द्यं दर्पणं चातिश्रेष्ठं,
लिखितमिह पुरारे प्रीतिमाप्तुं मयैव।।72।।

हिन्दी अनुवादः– उ0 प्र0 में फर्रूखाबाद जिले के निवासी, ब्रह्मणवंश में उत्पन्न होने वाले, ब्राह्मणों तथा गुरूजनों के सेवक आचार्य शम्भूदयाल अग्निहोत्री ने समस्त संसार में वन्दनीय "द्वादश ज्येतिर्लिङ्ग दर्पण" नामक ग्रंथरत्न की रचना, भोलेनाथ का सच्चा स्नेह प्राप्त करने के लिए की है।

इति द्वादश ज्योतिर्लिंडग दर्पणस्य
नवमः सर्गः समाप्तः
इति श्री वैद्यनाथ निरूपणं
इति शं - इति

अथ द्वादशज्योतिर्लिङ्ग दर्पणस्य दशमः सर्गः

– नागेश्वर निरूपणम्–

भक्तानां भववन्धनं विदलितुं यैनाशु दिव्यं वपु–,
दुष्टाना दमनाय सम्यग्तया प्रत्यक्ष लीलाधरः।
धत्ते कालकराल शुभ्रवदनं रक्तं च कृष्णं क्वचि–
त्तं वन्दे त्रिपुरान्तकं त्रिनयनं नागेश्वरं शंकरम्।।1।

हिन्दी अनुवादः– भक्तों के सांसारिक वन्धनों को दूर करके, तथा दुष्टों के विनाश के लिये जो अलौकिक संसार में प्रत्यक्ष लीलायें करने वाले, एक क्षण में विभिन्न प्रकार के शरीरों को धारण कर लिया करते हैं। वही कभी करालकाल, कभी शुभ्र, कभी काला, कभी लाल मुखों को धारण करने वाले, त्रिपुरासुर के विनाशक एवं तीन नेत्रों को धारण करने वाले '' श्री नागेश्वर'' ज्योतिर्लिङ्ग शिवजी की मैं वन्दना करता हूँ।

पुरा पुरारेर्गिरिजां प्रसाद्य या,
सुसेवया लव्धवरा निसाचरी।
ययौ प्रसिद्धिं भुवनेऽपि सुंदरी,
यथा सतीनां गिरिजापतिवृता।।2।।

हिन्दी अनुवादः– वह राक्षसी पहले शिवजी की धर्मप्रिया भगवती पार्वतीजी की सेवा से उन्हें भली प्रकार प्रशन्न करके, वरदान प्राप्त करने वाली, वह समस्त संसार में उसी प्रकार परम प्रसिद्धि को प्राप्त हो गयी। जैसे सती स्त्रियों में भगवती जगदम्वा विख्यात हैं।

पतिश्च तस्याः सततं जिघांसया,
चचार दुष्कर्मरतः वनेष्वपि।
स दारूकः दारूवदेव दुर्मनः,
दुरन्त दुःशासन वद्दुराग्रहः।।3।।

हिन्दी अनुवादः– उसका पति दारूक सदैव दुष्कर्मों में दत्तचित होकर प्राणियों की हत्या करने की इच्छा से अनवरत जंगलों में विचरण किया करता

श्रीनागेश्वरम्

था। वह लकड़ी के समान कठोर हृदय, एवं दुश्शासन के समान दुराग्रही एवं पापी था। तात्पर्य यह है कि जैसे दुश्शासन स्त्रियों का अपमान किया करता था। उसी प्रकार वह भी स्त्रियों का अपमान किया करता था।

अथैकदा दिव्यप्रभावमीहया,
चचार दिव्यं खलु दारूणं तपः।
त्रिमासमभ्यंतर एव दारूका,
ददर्श रूपं सहसा मनोहरं।।4।।

हिन्दी अनुवादः— इसके वाद उस दारूका ने, अलौकिक प्रभाव प्राप्त करने की इच्छा से, भगवती जगदम्वा की कठोर तपस्या की। तीन महीने के अन्दर उसने देवी के अद्‌भुत एवं मनोहर रूप को अकस्मात् देखा।

विलोक्य तां विश्वप्रभा समन्बितां,
विवस्वतः दिव्य दिगन्त सुन्दरीं।
अनन्तशक्तिं जगतीतलेस्थितां,
नवौषसाभिन्नमिवाम्वुजप्रियाम्।। 5।।

हिन्दी अनुवादः— संसार की अद्‌भुत कान्ति से युक्त, सूर्य की दिगन्तव्यापिनी किरण के समान अत्यंत सुंदरी, अद्‌भुत शक्तियों से सम्पन्न, ऊषा के द्वारा विकसित कमलिनी के समान सुन्दरी उस जगज्जननी को प्रथ्वी तल पर अवस्थित उस दारूका ने देखा।

चलच्चकोरायत कृष्ण चक्षुषीं,
नवेन्दुकान्तामिव तां मुखश्रियां
करारविंदैर्दधतीं नवायुधां।
नगेन्द्रसिंहासन सस्थितां शिवां।।6।।

हिन्दी अनुवादः— चकोर के समान काली एवं वड़ी वड़ी चंचन नेत्रों वाली, चन्द्रमा की नवीन विकसित चन्द्रिका के समान मुख की अलौकिक शोभावाली, अपने हाथों में नवीन चमकते हुए समस्त अस्त्र शस्त्रों को धारण करने वाली तथा हिमालय से प्रदत्त सिंह की पृष्ठ पर विराजमान उस जगज्जननी को देखा।

विलोक्य दिव्याभरणां सती ततो–
विलोलविम्वाधरदिव्यभूषितां।
जगाद चान्ते सरसं प्रियं वचः,
विदन्ति सर्व सहसा सतीजनाः।।7।।

हिन्दी अनुवादः– सती दारूका ने अलौकिक आभूषणों वाली एवं चंचल तथा बिम्वाफल के समान ओठों से अलौकिक शोभावाली उस जगदम्वा से नितान्त सरस एवं मधुर वचनों से कहा। क्योंकि सती नारियॉ सतियों की सभी इच्छायें अकस्मात् ही समझ लिया करती हैं।

त्वमेव साक्षाज्जगदम्विका सती,
त्वमेव शक्तिः सततं पिनाकिनः।
त्वयाहि विश्वं विधिवत्सुरक्ष्यते,
प्रसूयते चात्र जगन्महेश्वरि!।।8।।

हिन्दी अनुवादः– हे महेश्वरी! तुम्हीं जगज्जननी जगदम्वा हो! तथा तुम्हीं शिवजी की आदि शक्ति हो। तुम्हारे द्वारा ही समस्त संसार की उत्पत्ति हुआ करती है। अर्थात् तुम्ही संसार की सृष्टि करने वाली हो तथा तुम्हारे द्वारा ही समस्त संसार की रक्षा भी की जाती है।

विनिन्हुतं चाति मनोहरं वपु–
र्नवा विदन्तीह वुधाः विशारदाः।
परं प्रशन्नं वदनं विलोक्य ते,
सदैव जीवन्ति हि मादृशाः जनाः।।9।।

हिन्दी अनुवादः– हे जगदम्वे! तुम्हारा शरीर नितान्त गोपनीय एवं परं रमणीय तथा मनोहर है। इसलियं बुद्धिमान एवं चतुर लोग भी इसके वास्तविकता का परिज्ञान नहीं कर पाते। आपके प्रशन्न मुखारविंद को देखकर हम जैसे प्राणी जीवित रहा करते हैं।

रजोऽपि त्वच्चात्र पदारविंदयो–
र्विभाति विज्ञान प्रदं मनीषिणाम्।

धनार्थिनो बैभववित्तमन्विताः,
भवन्ति नूनं कृपया क्षणे क्षणे।।10।।

हिन्दी अनुवादः– हे माता! तुम्हारे चरणों की धूल भी विद्वानों को ज्ञान प्रदान करने वाली प्रतीत हो रही है। तथा धन को चाहने वाले लोग तुम्हारी कृपा से नितान्त धनवान् एवं राजा हो जाते हैं। तात्पर्य यह है कि जो जिस भावना से आप का ध्यान करता है। वह वही प्राप्त कर लेता है।

मातानूनं त्वमरि सरले कुत्रयामो वयं नो
वित्तं ज्ञानं विभवमपरं सर्वदा चात्र मन्ये।
अज्ञानंवा जगति हृदये नान्यदीयं त्रिनेत्रे।
तस्माद्वन्दे चरणकमलं देहिसर्व यथेष्टम्।11।

हिन्दी अनुवाद :-- हे सरले! आप ही हम लोगों की माता हैं। तो हम लोग कहाँ जायें। हे त्रिनयने धन,ज्ञान,वैभव जो कुछ संसार में विद्यमान अज्ञान यह सब मैं तो आपका मानता हूँ। दूसरे किसी का नहीं है। इसीलिए मैं आपके चरण कमल की वन्दना करती हूँ। मेरे लिए जो अनुकूल एवं हितकर हो आप वही प्रदान करें।

सरस्वती त्वं गिरिनाथ वैष्णवी ,
प्रचण्डरूपासि स्वयं सुरेश्वरि।
त्वमेव पद्मा कमला त्रिलोचना ,
नमन्ति त्वामेव सदा दिवौकसा :।12।

हिन्दी अनुवादः-- हे महादेवी! तुम्हीं सरस्वती हो ,तुम्हीं गिरजा हो, तुम्हीं वैष्णवी हो, तथा तुम्हीं भयंकर रूपधारण करने वाली महाचण्डी हो। तुम्हीं महालक्ष्मी एवं राजलक्ष्मी हो, तुम्हीं तीन नेत्रों को धारण करने वाली हो। तुम्हें ही देवतागण सदैव नमस्कार किया करते हैं।

इत्येवं बहुभिस्तवैर्भगवतीं सम्पूजयन्ती सती ,
वक्तुं नैन शशाक सौम्यमनसा भूयोववन्दे शिवा।
ध्यानावस्थित मुद्रया पुनरियंध्यात्वा पुनर्दारुका ,
बब्रेतां जगदम्बिकां भगवतीं प्रायः सतीनामिव।13।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार अनेक स्तुतियों के द्वारा भगवती जगदम्वा की पूजा करती हुई वह सती दारूका,अपने सरल मन से कुछ भी न कह सकी। उसने फिर माता की वन्दना की। ध्यान की मुद्रा से उसने माता का फिर ध्यान करके जगज्जननी जगदम्वा से अन्त में सती नारियों के समान कहा।

मनोगतं वेत्सि स्वयं सुरेश्वरि !
वदामि किं देवि! मनोरथं पुनः।
विदन्ति प्रायः सुहृदां सुहृज्जनाः ,
सदैव यांचा हृदयं ह्रणीयते।।14।।

हिन्दी अनुवादः– हे महादेवी! आप मेरे मन की सारी अभिलाषायें जानती हैं। अतएव हे देवी! मैं अपना मनोरथ तुम्हें क्या बताऊँ। क्योंकि मित्र लोग मित्रों के हृदय की सारी बातें स्वयं ही जान लिया करते हैं। बस्तुतः हमेशा माँगने की आदत हृदय को लज्जित करती रहती है।

वसामि यस्मिं स्तद्यातु मे वनं,
मनोरथोपात्त धरातलं स्वतः।
समस्तस्वामित्वमाप्य संततं,
भवेद्भवस्यात्मगिरेरिवायतं।।15।।

हिन्दी अनुवादः– हे देवी! जिस वन में मैं रहती हूँ। वही मेरा वन मेरी इच्छानुसार जमीन के साथ आवासित हो जाये। तथा इसका समस्त स्वामित्व प्राप्त कर यह उसी प्रकार वृद्धि को प्राप्त करे जैसे शिवजी का हिमालय पर्वत इतना विशाल है।

इत्येवं खलु दारूका निगदितं श्रुत्वा च दिव्यं वचः,
पश्चात्साजगदम्विका भगवती तस्याशुदत्वावरं।
प्रीत्या तामभिवीक्ष्य चन्द्रवन्दना सद्यस्त्रिनेत्रैः पुनः–
र्दिव्यालोकभिवाम्वरे पुनरियं प्रायः प्रतस्थे दिवम्।।16।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार दारूका के द्वारा कहे गये वचनो कें अनुसार वह जगदज्जननी जगदम्वा उसे वरदान देकर, वाद में उसे अपने तीनों नेत्रों से भली प्रकार देखकर वह चन्द्रवदना दुर्गा आलोकित आकाश में स्वर्ग को प्रस्थान कर गयी।

ततः परं सापिप्रसाद्य चाम्विकां,
दददर्श भूयोऽपि वनं ह्ययहर्निशं।
यथा श्रमेणात्तधनाः महोत्तमाः,
फलन्ति नित्यं खलु शाखिनामिव।।17।।

हिन्दी अनुवादः— इसके वाद वह दारूका भगवती जगदम्वा को प्रशन्न करके फिर उस वन को नित्य प्रति देखा करती थी। क्योंकि परिश्रम के द्वारा धनार्जन करने वाले व्यक्ति उसी प्रकार नित्य प्रति सफल हुआ करते हैं। जैसे पेड़ सदैव फल दिया करते हैं।

वनं समद्धं सततं समीक्ष्य सा,
चचार भूयोऽपि वृतं वनान्तरे।
सदैव प्रीत्या पतिसेवया स्वयं,
सतीवृतं नैव मुमोच चान्ततः।।18।।

हिन्दी अनुवादः— उस दारूका ने वन को हर प्रकार से सम्रद्ध देखकर उसने दुवारा उसी वन में फिर वृत करना प्रारम्भ किया। अपने प्रेम से एवं पति की सेवा के द्वारा अपना सती वृत अन्त तक नहीं छोड़ा। अर्थात् सतीत्व का निर्वाह आजीवन करती रही।

तदीय भर्तातु महानिसाचरः,
प्रपीड्यमानः सततं मुनीश्वरान्।
विलोक्य हन्तुं यतते स्म संततम्—
महाभिमानी खलु हन्यते परैः।।19।।

हिन्दी अनुवादः— उसका पति दारूक नितान्त राक्षस था। वह सदैव मुनिजनों को देखकर उन्हें पीड़ित करता हुआ सदैव मारने का प्रयत्न किया करता था। क्योंकि महा घमंडी सदैव दूसरे के द्वारा अवश्य मारा जाता है। अथवा विनाश को प्राप्त होता है।

सदादुराचाररतः परिभ्रमन् ,
वलावलेपादनिशं निशाचरः।

जिघांसया दुर्गमपादपेष्वसौ,
जहार नित्यं खगशावकानपि।।20।।

हिन्दी अनुवादः– वह दारूक नाम का निशाचर सदैव दुराचार में तल्लीन होकर नित्य अपने घमंड़ से चूर होकर घूमता हुआ ऊँचे पेड़ों पर हत्या करने की इच्छा से पक्षियों के वच्चों को प्रतिदिन पकडने लगा। अर्थात् उसकी वुद्धि क्रूर पापी के समान सदैव वध करने में ही रमण करने लगी।

सैन्यं विवर्धनपरः स विशालवाहुः,
लंकेशवुद्धिरिव दुष्टमतिर्वभूव।
प्रायः वनेषु मुनिमौन वृतीन विलोक्य ,
हत्वा सदैव मुदमाप कृतान्तवत्सः।।21।।

हिन्दी अनुवादः-- वड़ी वड़ी भुजाओं वाला वह दारूक प्रतिदिन अपनी सेना का विस्तार करता हुआ रावण की बुद्धि के समान वुद्धिहीन हो गया। लगभग नित्य जंगलों के अन्दर मौन वृत धारण करने वाले मुनिगों को देखकर यमराज के समान उनका संहार करके वहुत प्रशन्न हुआ करता था।

दुर्वोधदम्भविवशः निशि राक्षसानां,
क्रीडागृहेषु विचरन् मदपानमत्तः।
तेषां सुयोषिद्विलोक्य विवेकहीनः,
रन्तुंवलाद्यतते स्म स वालबुद्धिः।।22।।

हिन्दी अनुवादः– वह दारूक अज्ञानतावश पाखंड से विवश होकर रात में राक्षसों के सुन्दर घरो में शराव पीने से मदान्ध होकर विचरण करता हुआ तथा उनकी सुन्दर स्त्रियाँ देखकर वह ज्ञानशून्य लड़कपन में जवरदस्ती रमण करने का प्रयत्न किया करता था।

क्रूरात्मनः निसिचरस्य विलोक्य कृत्यं,
त्यक्त्वा वनं मुनिजनाः वहिरध्यगच्छन्।
केचिद्विरोधविवशाः गिरिगव्हरेषु,
प्रायः पतत्रिरिव सौम्यतया विलीनाः।। 23।।

हिन्दी अनुवादः– उस क्रूर आत्मा वाले राक्षस के कार्यो को देखकर अधिकांश मुनिजन उस वन को छोड़कर वाहर चले गये। कुछ मुनिजन उससे शत्रुता करने से विवश होकर पक्षियों के समान साधारण रूप में पर्वतों की गुफाओं मे छिप गये।

ततो मुनीन्द्रा शतशः महर्षयः,
समेत्य चौर्वं मुनिराजमन्तिकम्।
निवेदयामासुरलं स्ववेदना,
पुनश्च हिंसाचरणं हि रक्षसाम्।।24।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद सैकड़ो मुनिजन एवं महर्षिगण, मुनिवर और्व ऋषि के पास अपनी अपनी परेशानी एवं राक्षसों के द्वारा किये गये हिंसा युक्त आचरण का निवेदन करने लगे। और्व ऋषि से सभी राक्षस भयभीत रहते है।

इत्यं शोक समन्वितः च सदया श्रुत्वा मुनीनांगिरा,
क्रोधोद्रेकज्वलत्समस्त तनुना चण्डांशुवद्भूयसा।
दत्वा शापमसौ सरोष कुपितैस्तेभ्यो वचोभिस्ततः,
वब्रे स्थाणुरिवाचलः पुनरहो! नश्यन्तु ते दानवाः।।25।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार शोक एवं दयालुतापूर्ण मुनियों की वाणी सुनकर वे और्व नामक महर्षि क्रोध के वढ़ जाने से अपने शरीर से सूर्य के समान जलते हुये एवं अपने क्रोध युक्त वचनों से उन राक्षसों को शाप देकर तथा ठूँठ के समान निश्चल खड़े होकर उन्होंने कहा कि जो भी राक्षस हैं वे शीघ्र ही नष्ट हो जायें।

अनेन शापेन समस्त दानवाः ,
वनं परित्यज्य गताः पराभवं।
मुनीन्द्रहिंसामपहाय संततं,
भयं तदीयुः तपसः निरन्तरं।।26।।

हिन्दी अनुवादः– महर्षि और्व के इस शाप के द्वारा समस्त राक्षस उस वन को छोडकर अपमानित हो गये। अतएव वे मुनियों की हिंसा का परित्याग करके उनकी तपस्या से अनवरत भयभीत हो गये।

ततो हि सा कान्तवियोगविह्वला,
सुदारूकानाम सती निसाचरी।
समीक्ष्य चिन्तातुरमात्म वल्लभं,
जगाद लंकेशप्रियेव तं वचः।।27।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद अपने स्वामी के वियोग से व्याकुल वह दारूका नाम की सती राक्षसी अपने स्वामी को प्रवास के कारण चिन्तित देखकर अन्त मे मन्दोदरी के समान उसनें परमप्रिय शब्दों में उससे कहा।

पापाचारपरायणाः परमहो! लोके स्वयं पीड़िताः,
पापेभ्येऽपि न विभ्यतीह भुवने सिंहादिवद्राक्षसाः।
साक्षान्मानुष रूपिणो हि दनुजा नश्यन्ति मे संस्कृतिं,
हिंसाकर्मविहाय कान्त! सदयं सत्यं पथं त्वं वृज।।28।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी! पाप कर्म करने वाले पापी लोग इस संसार में स्वयं दुःखी रहते हैं किन्तु वे सिंह इत्यादि हिंसक जीवों के समान राक्षस पापों से फिर भी नहीं डरते। वस्तुतः मनुष्य के रूप में निशाचर मेरी भारतीय सभ्यता को सदैव नष्ट किया करते हैं। इसलिये हे प्रियतम्! तुम हिंसा का घृणित कार्य छोड़कर, दयालुता युक्त सत्य मार्ग का सदैव अनुशरण करो।

त्यजन्ति लोके न महात्मनां पदं,
महाजनाचार परंपरेद्वशी।
विहाय दुष्कर्भ वृजाशु सत्पथं,
वृजन्ति यं कान्त! सदैव सज्जनाः।।29।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी ! सज्जन पुरूष महान् पुरुषों की प्रतिष्ठा का कभी परित्याग नहीं करते क्योंकि यही महान् पुरुषों की आचार पद्धति है। इसलिये दुष्कर्म को छोड़कर सदैव सन्मार्ग का अनुशरण करो क्योंकि सज्जन सदैव वही मार्ग अपनाया करते हैं।

नितान्तचिन्ताचकितं भवन्मनः,
न वेद्यि किं नाथ! कथं हि खिद्यते।

यथालवालेनवनीर सिंचितं,

तथापि शुष्कं सततं तरोरिव।।30।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी! मै नहीं जानती कि सदैव चिंता से आक्रान्त आपका मन जल से परपूरित थलहे में नित्य सिंचित सूखें पेड़ के समान प्रतिदिन क्यों खिन्न होता जा रहा है। अर्थात् इसका कारण आप कृपा करके मुझे वतायें।

भवन्ति लोके न च ताः सतीवृताः,

पतिवृताः नैव वुधै समादृताः।

हितं स्वभर्तुर्न वृजन्ति संततं,

न चात्र वंशस्य मताः कुलस्त्रियः।।31।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी! इस लोक में वे सती एवं पतिवृता नारियां नहीं होती जो अपने स्वामियों का हित नहीं करतीं तथा वह वुद्धिमानों द्वारा आदर नहीं पातीं। उन्हें लोग वंश की कुलांड्गना नारी भी नहीं मानते। अतएवं सती नारियां वे ही मानी जाती हैं। जो वस्तुतः अपने स्वामियों का सदैव हित करती हैं।

इत्येवं निजभार्यया निगदितं श्रुत्वात्मश्रेयं वचः,

सद्यः सोऽपि विभुच्य वासभवनं सायंतने दारूकः।

पश्चादत्र समस्त वान्धव सुहृत्कान्ता समं दानवः,

वस्तुं नील पयोनिधौ पुनरसौ चक्रेमतिंचान्ततः।।32।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार अपनी प्रियतमा दारूका के परम हितकारक वचनों को सुनकर, वह दारूक नामक राक्षस, संध्याकाल के समय अपना आवास छोड़कर समस्त भाई – वान्धवों एवं मित्रों तथा अपनी धरमपत्नी के साथ नील सागर में रहनें के लिये उसने विचार किया।

सतीवरेणैव वनं च दारूका,

निनाय सार्द्धं मुमुदे मुहुर्मुहुः।

यथा समृद्धि वृणुते निरंतरम्,

सुखेन सार्धं सततं पतिवृता।।33।।

हिन्दी अनुवादः– सती पार्वती के वरदान के अनुसार वह सती दारूका जव अपने वन को भी साथ लेकर चल दी तव उसे ऐसी खुशी हुई जैसे पतिव्रता नारी सुख के साथ अनेक प्रकार की धन सम्पत्ति को पाकर सदैव प्रशन्न हुआ करती है।

उवास तत्रापि सुखेन सागरे,
मुमोच दुष्कर्ममतिर्न मन्दधीः।
वलावलेपाच्च समस्त भूतले,
तथापि बभ्राम सदा जिघांसया।।34।।

हिन्दी अनुवादः– वह राक्षस दारूक सुखपूर्वक उस सागर मे रहनें लगा किन्तु उस दुर्वद्धि वाले नींच राक्षस ने दुष्कर्म करना नहीं छोड़ा। वह फिर भी अपने वल के घमंड से चूर होकर सदैव हिंसा करने की इच्छा से पृथ्वी पर घूमा करता था।

नराधमाः नैव त्यजन्ति तत्पथं,
सदैव दुष्कर्मरता मदान्विताः।
यथा घनासारपथे जलाविले,
मलाश्रयं नैव त्यजन्ति सूकराः।।35।।

हिन्दी अनुवादः– नींच लोग अपने मद से मत वाले होकर वे अपने दुष्कर्म करने का मार्ग कभी भी उसी प्रकार नहीं छोड़ पाते। जैसे सुअर वरसात में गंदे जल से भरे हुये मार्ग पर दौड़ते हुए टट्टी का आश्रय नहीं त्याग पाते। अर्थात् वे उस वरसात के समय भी दौडते हुए चारों ओर घूमते रहते हैं।

क्वचिद्वने सोऽपि तपोवने क्वचि–
महर्षिणामत्र वनाधिवासिनां।
स्वयं समुज्झित्य सदा तपोवृतं,
चकार पश्चादशनादिकाः क्रियाः।।36।।

हिन्दी अनुवादः– वह पापी राक्षस कभी जगलों में, कभी वन में रहने वाले महर्षियों के तपोवन में स्वयं उनकी तपस्या का वृत भंग करके ही वाद में नित्य प्रति भोजन आदि अपनी दैनिक क्रियायें पूर्ण किया करता था। अर्थात् जव तक

तपस्या भंग नहीं कर देता था। तव तक उसे खाना भी अच्छा नहीं लगता था।

दशाननस्येव महादुराग्रहः,
सदूषणस्येव महाविदूषकः।
दुरन्त दुश्शासन सदृशो वली,
वलावलेपाद्विचचार भूतले ।।37।।

हिन्दी अनुवादः– वह राक्षस रावण के समान हठी था। एवं दूषण नामक राक्षस के समान विदूषक (मजाकिया) था। वह दुश्शासन के समान वलवान् होने के कारण अपनी शक्ति के घमंड मे चूर होकर सदैव पृथ्वी पर नित्य विचरण किया करता था।

सकुम्भकर्णात्समधीत्य चापलं,
दिगंङ्नासार्धमसौ रतीच्छया।
चचार नित्यं निसि नन्दनं ततः,
सुखं लभन्ते नहि कामिनो जनाः।।38।।

हिन्दी अनुवादः– वह निशाचर कुम्भकरण से चंचलता सीखकर, दिग्पालों की स्त्रियों के साथ आनंद प्राप्त करने की इच्छा से प्रतिदिन रात्रि के समय नन्दन वन में विचरण किया करता था। क्योंकि कामी लोग कभी सुख नहीं प्राप्त कर पाते। वे रात दिन वेचैन अवस्था में चारों ओर भ्रमण ही किया करते हैं।

यथा परेषां प्रसभं प्रपीडना ,
द्दुनोति प्रायःसततं भृशं मनः।
तथैव सः दुर्जनसंगसेवना,
न्मुदं न लेमे कथमत्यहर्दिवम्।।39।।

हिन्दी अनुवादः– जैसे दूसरों को जबरदस्ती पीड़ा पहुँचाने से पाप सदैव मन को पीड़ित क्रिया करता है। उसी प्रकार वह दैत्य दारूक दुष्ट लोगों की संगति का सेवन करने से रातदिन कभी भी आनंद का अनुभव नहीं कर पाता था। अर्थात् उसकी आत्मा सदैव दुःखी रहती थी।

यावन्नैव वलापलेप पटलं वध्नाति स्वीयं मनः,
तावन्नैन दुनोति पातकफलं लोके च पापात्मनां।
ज्ञाते सत्यनिशंदहत्यपि क्षणं वन्हीव सद्यः मतिः,
पश्चात्सर्वशरीरतन्तुसनिशं क्षीणः क्षणे क्षीयते।।40।।

हिन्दी अनुवादः– जब जब मनुष्य की शक्ति से उत्पन्न घमण्ड समूह पर मन कन्ट्रोल नहीं करता । तव तक संसार में पापियों को पाप का परिपक्व प्रतिफल पीड़ा नहीं पहुँचाता। पाप का परिज्ञान होने पर वुद्धि अग्नि के समान पहले ही जलने लगती है। वाद में समस्त शरीर के तन्तुओं को अनवरत क्षीणं करती हुई एक क्षण में घमंडी के समान जलाकर भस्म कर देती है।

ततः क्षणे सः सहसा पयोनिधौ,
ददर्श पोतं शतसः जनैर्युतं।
बवन्ध सर्वान् विनिगृहय रज्जुभिः,
र्धनंच तल्लुंठितवानशंसयः।।41।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद एक ही क्षण में उस नीच राक्षस ने सैकड़ों ल़ोगों से भरा हुआ समुद्र के अन्दर एक जहाज देखा । उसने जहाज के सभी पुरूषों को रोक कर रस्सियों से वांध दिया। तथा उनका जो कुछ धन था वह भी निः सन्देह उस पापी राक्षस ने लूट दिया।

अथान्तरे भक्तवरोहि सुप्रियः,
धृतात्मकंठे शिवरूद्रमालिकः।
तथाहि भीतिं न ययौ मनागपि,
यथा मृगेन्द्रः न विभेति वारणात्।।42।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद सुप्रिय नाम का शिव भक्त अपने गले में रूद्राक्ष की माला धारण किये हुए उस राक्षस से उसी प्रकार भयभीत न हो सका जैसे सिंह हाथी से तनिक भी भयभीत नहीं होता ।

यदा स तं धर्षयितुं कृतं मनः,
तदा शिवं सः प्रथमेहि सुप्रियः।

क्षणे प्रदध्यौ सुविवेकवानयं ,
यथा गजेन्द्रः मधुसूदनं पुरा।।43।।

हिन्दी अनुवादः– जब उस राक्षस ने सुप्रिया नामक शिव भक्त को पीड़ित करने का मन बनाया उसी समय सुप्रिया ने अपने परम आराध्य शिवजी का एक क्षण उसी प्रकार ध्यान किया। जैसे गजेन्द्र ने (मधुसूदन) भगवान कृष्ण का बिपत्ति के समय ध्यान किया था।

क्षणं समभ्यर्च्य द्विजः पिनाकिनं,
ननाम सद्यः समनन्तरं तदा।
स दीनवन्धुः सदयः समाययौ,
विलोक्य भक्तं व्यथितं मुहुर्मुहुः।।44।।

हिन्दी अनुवादः– उस बाह्मण सुप्रिय ने एक क्षण शिवजी का पूजन करके तुरन्त उन्हें प्रणाम किया। वह गरीवों की रक्षा करने वाले शिवजी अपने भक्त को वार वार व्याकुल देखकर दयालुता पूर्वक वहॉ तुरन्त उपस्थित अथवा प्रकट हो गये।

चतुर्दिशं द्वारमयं सुमन्दिरं,
चिदात्मशक्तया सुप्रतिष्ठितं पुनः।
तदेकदेशे गणनायकं दध–,
त्तथापरे षड्मुख संयुतं ततः।।45।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद चारों दिशाओं में दरवाजों वाला, जिसमे चिदात्म शक्ति अर्थात् शिव एवं पार्वती दोनों प्रतिष्ठित थे। उसके एक तरफ गणेशजी विराजमान थे। तथा दूसरी ओर शिवजी के ज्येष्ठ पुत्र स्वामि कार्तिक से युक्त मन्दिर देखा।

विलोक्य सद्यः शिवमन्दिरं द्विजः,
सुविस्मितः नैव पुरा मुदं ययौ।
पिनाकपाणिंच त्रिशूलधारिणं,
समीक्ष्य पश्चात्स ननाम तं पुनः।।46।।

हिन्दी अनुवादः– उस बाह्मण ने तुरन्त उस शिवमन्दिर को देखकर उसे

आश्चर्य होने के कारण पहले उसे विल्कुल प्रशन्नता का अनुभव न हो सका। जव उसने धनुष धारण करने वाले, एवं त्रिशूलधारी शिवजी का दर्शन किया तो शिवजी को सशक्त समझकर वाद में उसने शिवजी को वार वार प्रणाम किया।

अरक्षितं रक्षतियः जले स्थले,
विनाशयत्याशुद्विषं त्रिलोचनः।
न वक्तुमर्हन्तिगतिः सुरादयः,
तमादि शक्तिं च भवं नमाम्यहम्।।47।।

हिन्दी अनुवादः— जो रक्षा विहीन प्राणी की जल एवं स्थल में भी रक्षा करता है तथा जो त्रिनेत्रधारी अपने शत्रु को एक क्षण में तुरन्त नष्ट भी कर देता है। जिसकी गति का विवेचन देवतागण भी नहीं कर सकते। उस संसार की आदि शक्ति भगवान् भोलेनाथ को मैं नमस्कार करता हूँ।

प्रशन्नतां याति क्षणे वृतादिभिः,
विवेकहीनं तनुते महत्कविः।
धनं वलं वृत्तमहो!विवर्धते,
तमादिभूतं सततं नमाम्यहं।।48।।

हिन्दी अनुवादः— जो वृत एवं पूजन आदि कार्यो से ही एक क्षण में प्रशन्न हो जाता हैं। तथा जो नितान्त वुद्धिहीन व्यक्ति को महान् कवि वना देता है, जो धन, वैभव, चरित्र तथा शक्ति को क्षण – क्षण बढ़ाता रहता है। उस आदिकारण भगवान् भोलेनाथ को मैं सदैव ही क्षण क्षण नमस्कार करता हूँ।

मनोगतं वेत्तिजनस्य यः स्वयं,
तदेव सद्यः वितनोति नान्यथा।
हिताहितं तत्प्रसमीक्ष्य चक्षुभि–,
र्ददाति प्रीणाति नतोऽस्मि तं शिवम्।।49।।

हिन्दी अनुवादः— जो अपने भक्त के मन की वात स्वयं ही जान लेता है। तथा उसके अनुसार ही किया करता है अर्थात् उसके विपरीत नहीं करता। वह प्राणी के हित एवं अहित को अपने नेत्रों से स्वयं देखकर सव कुछ दे देता है।

तथा अन्त में प्रशन्न भी हो जाता है। उस सर्व शक्तिमान् भगवान् भोलेनाथ को मैं प्रणाम करता हूँ।

बिपन्नभक्तं भुबने समीक्ष्य यः,
द्रुतं च धाबत्यपि धेनु हुकृतैः।
शरासनं संदधतोऽपि शूलवान्
असौ क्षणे रक्षतिचात्मबत्सुतं।।

हिन्दी अनुवादः– जो इस संसार में अपनें भक्त को दुःखी देखकर गाय के समान हुंकार भरता हुआ तुरन्त दौड़ पढ़ता हैं। तथा अपने धनुष का सन्धान करते हुये भी त्रिशूल को धारण करने वाला है वही शिव अपने आत्मीय पुत्र के समान एक क्षण में तुरन्त ही रक्षा करने वाला है अर्थात् अपने वच्चे के समान रक्षा करता है। उसी भोलेनाथ को मैं प्रणाम करता हूँ।

इति स्तवैः तं प्रसमीक्ष्य शंकरं,
ननाम भूयोऽपि शिवं ततो द्विजः।
अजस्रनेत्रोद्गतनेत्र विन्दुभिः ,
समर्चयामास यथा हरिं ध्रुवः।।51।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार शिवजी को सामने उपस्थित देखकर उस ब्राह्मण ने अनेक प्रकार की स्तुतियों से उन्हें प्रणाम किया। इसके वाद नेत्रों से लगातार प्रवाहित आंसुओं से उसने शिवजी की उसी प्रकार पूजा की जैसे भगवान् विष्णु को देखकर ध्रुव ने उनकी पूजा की थी।

इति विविधविधानैः शंकरं तोषयित्वा,
खलवधमपिनूनं सम्यगन्तर्दधानः।
शिवशरण निषण्णः सुप्रियोऽसौ पुरारेः,
कुटिलभ्रकुटिभावं वीक्ष्य सद्यः शशाम।।52।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार अनेक युक्तियों से शिवजी को संतुष्ट करके तथा उस राक्षस का वध निशचित रूप से हृदय में धारण करता हुआ , शिवजी की शरण में विद्यमान वह सुप्रिय नामक ब्राह्मण, शिवजी की तिरछी भ्रकुटियों के भावों को भली प्रकार देखकर तुरन्त शान्त होकर वैठ गया।

तथा समक्षं प्रसमीक्ष्य दानवं,
स दानवारिः सहसा ज्वलन्निव।
तदाशुसंधाय कराल कार्मुकं,
जगाद तं विश्वपतिः हसन्निव।।53।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार सामने खड़े उस राक्षस को देखकर तुरन्त क्रोध के कारण जलते हुये से, राक्षसों के शत्रु शिवजी ने अपने धनुष को जो नितान्त विकराल एवं भयंकर था। उसकी डोरी चढ़ाकर वे संसार के स्वामी भोलेनाथ उस दानव से हंसते हुये से वोले।

भवान्तकं नैव विवेद किं त्वया,
वलावलेपाद्विनिहंसि प्राणिनः।
ददामिमोक्षं खलु ते दुरात्मने,
वृजाशुचैकेन शरेणतत्पदम्।।54।।

हिन्दी अनुवादः– हे दानव! संसार का विनाश करने वाले शिवजी को तूने क्या कभी जान भी नहीं पाया। तू अपने वल के घमंड से चूर होकर समस्त प्राणियों का वध कर रहा है। हे पापी तुझे मैं अभी मुक्ति प्रदान कर रहा हूँ। मेरे एक ही वाण से तू उस परम धाम को शीघ्र प्राप्त कर।

क्षणे प्रदध्यौ सहसा जगत्पतिः,
स्ततः शरं मोक्तुमसौ तमैक्षत्।
निशम्यदेव्यः वचनं सगद्गदं,
विलोक्य खं सः विरराम तत्क्षणं।।55।।

हिन्दी अनुवादः– संसार के स्वामी शिवजी ने एक क्षण ध्यान किया। इसके वाद तीव्र वाण का प्रहार करने के लिये उस राक्षस पर निशाना लगाया। इसी वीच में भगवती पार्वती के करूणाकलित वचनों को सुनकर वे शिवजी

आकाश की ओर देखकर उसी समय रूक गये।

ततः परं वीक्ष्य प्रियंचसुप्रियं,
विवेश भूयोऽपि शिवः पयोनिधिं।

निसाचरं हन्तुमियेष धूर्जटिः,
यथाहिरण्याक्षमितो रमापतिः।।56।।

हिन्दी अनुवादः-- इसके वाद उस परम प्रिय सुप्रिय नामक अपने भक्त को देखकर शिवजी उस निशाचर का वध करने के लिये सागर में दुवारा घुस पड़े और उसे मारने की फिर से उसी प्रकार इच्छा की जैसे हिरण्याक्ष का वध करने के लिये भगवान् विष्णु ने यही से उपाय किया था।

धृतं महाकाल इवात्म तद्वपुः,
करे त्रिशूलं समधत्त धूर्जटिः।
कराल कौदण्डमतो निधायसः,
रराज विश्वान्तकवत्त्रिलोचनं।।57।।

हिन्दी अनुवादः-- शिवजी ने महाकाल के समान अपना शरीर धारण किया। इसके वाद एक हाथ में त्रिशूल ले लिया तथा दूसरे हाथ में भयंकर धनुष धारण करके वे भोलेनाथ ऐसे सुशोभित हुये मानों सम्पूर्ण संसार का विनाश करने के लिये वे महाप्रलय करने वाले महाकाल हों।

विलोक्य तं कालकराल भीषणं,
शिवं समायान्तमसौ निसाचरः।
विभेत्य भूयोऽपि शुचिरस्मितः शनै–,
श्चचार मायाचरणं मुहुर्मुहुः।।58।।

हिन्दी अनुवादः-- उस निसाचर ने भयंकर काल के समान भयानक वेष धारण करने वाले शिवजी को आता देखकर तथा उनसे भयभीत होकर आन्तरिक वेदना से मुस्कराता हुआ वह वार वार माया का अजीव प्रकार से आचरण करने लगा अर्थात् उसने शिवजी से वनावटी खेल खेलना प्रारम्भ कर दिया।

निधाय रूपं वृषमस्य दानवः,

स्वयं समक्षं सहसा समाययौ।
विलोक्य तं चात्र शिवः सुविस्मितः,
व्यचिन्तयत्कुत्र गतः निसाचरः।।59।।

हिन्दी अनुवादः– वह दानव वैल का रूप धारण करके स्वयं शिवजी के सामने आ गया। उसे देखकर शिवजी आश्चर्य में पड गये तथा अन्त में उन्होंने विचार किया कि आखिर वह निशाचर कहाँ चला गया।

सुविस्मितं वीक्ष्य शिवं स दुर्मदः,
जहास पश्चातत्सुगभीरयागिरा।
चकर्षहन्तुं निशितं शरं यदा,
तदावतस्ये सहसा स्वयं शिवाः।।60।।

हिन्दी अनुवादः– उस घमंडी दानब ने जब शिवजी को आश्चर्यचकित देखा तब वह बड़ी तेज आवाज से हंसने लगा। जब शिवजी ने उसे मारने के लिए तेज धारवाला बांण खीचा उसी समय भगवती पार्वती साक्षात् शिवजी के सामने आकर खड़ी हो गयी।

विचारयामास तदीय मायया,
विनिर्मिता चात्र शिवाप्रतीयते।
पिनाकिना तामवलोक्य निस्पृहः,
जगाद भूयोऽपि न जीवतेश्वरीं।।61।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी ने बिचार किया कि यह पार्वती भी सकी माया के द्वारा ही बनायी गयीं प्रतीत हो रही हैं। इसी लिए शिवजी ने उन्हें देखकर भी अनिच्छा के कारण अपनी प्रियतमा जगदम्बा से दुबारा बात भी नहीं की अर्थात् उसी दारुक की माया समझकर वे पार्वती जी से कुछ भी न बोल सके।

बिचिन्त्य भ्रान्तं खलुस्वामिनं शिवा,
जगाद तं श्रान्तममुं शनैः शनैः।
विधाय सर्बहि जगद्धितैषिणः,
त्यजन्ति लोके न पदं मनीषिणां।।62।।

हिन्दी अनुवादः— पार्वती जी ने शिवजी को भ्रमित सोचकर या समझकर नितांत थके हुए अपने स्वामी से धीरे–धीरे कहा। संसार के हितैषी नर सब कुछ करके संसार में विद्वानों की परम्परा का कभी परित्याग नहीं करते अर्थात् अतिथि सत्कार तो महान् पुरूषों का परम धर्म है।

तथापि तां नैव ननन्द चेतसा,
विशंकमानः सहसा जगत्पतिः।
तमन्विषन्नेव विलोलया दृशा,
ददर्शभूयो मृगसिंहयोरिव ।।63।।

हिन्दी अनुवाद :— संसार के स्वामी शिवजी ने फिर भी पार्वती जी का सशंकित होने के कारण हृदय से अभिनंदन नहीं किया। केवल अपनी चंचल दृष्टि से उसी राक्षस को खोजते हुए अन्त में फिर भी उसे सिंह एवं हिरण के समान देखा।

तमीक्ष्य सम्यक् सहसाहि कार्मुकं,
पुनः समावर्ज्य च मण्डलीकृतं।
निधाय भूयो निशितं शरं ततः,
विमोक्तुमैच्छत्सततं पिनाकिना।।64।।

हिन्दी अनुवादः— उस राक्षस को भली प्रकार देखकर शिवजी ने अपनें धनुष को कुछ झुकाकर गोलाकार बना दिया। इसके बाद उस पर तेज धारबाला बांण चढ़ाकर फिर से लगातार बांण छोड़ना चाहा। अर्थात् राक्षस पर निशाना लगाकर बांण छोड़ना प्रारम्भ किया।

ततः शरव्यं समधीत्य तं शिवा,
निगृह्यतद्वामकरेण कार्मुकं।
जगाद तं कोपसमन्विताः सती,
भजन्ति कोपं न विमृश्यकारिणः।।65।।

हिन्दी अनुवाद :— इसके बाद उसी पर शिवजी का निशाना भली प्रकार समझकर, पार्वतीजी ने अपने बायें हांथ से धनुष पकड़ करके नितान्त क्रोध से युक्त होकर वे शिवजी से बोलीं हे स्वामी ! बिचार करके कार्य करने

वाले प्रांणी कभी क्रोध का आश्रय नहीं करते अर्थात् क्रोध को त्याग कर कुछ बिचार करो।

मया सदैवात्तबराहि दारूका,
बनेन सार्धसुभगा भविष्यति।
पतिवृताधर्मपरायणाः स्त्रियः,
बृजन्ति सर्वत्र सदैव सत्पदम्।।66।।

हिन्दी अनुवाद :- हे स्वामी ! दारुका नाम की राक्षसी मेरे द्वारा सदैव ही बरदान प्राप्त है। यह अपने बन के साथ आजीवन सौभाग्यवती ही रहेगी। क्योंकि पतिव्रता धर्म का पालन करने वाली नारियां हमेशा हर जगह सम्मान को ही प्राप्त किया करती हैं।

याः लोके प्रपठन्तिदिव्यं चरितं नित्यं च मे संततं,
ताः नित्यं पतिसंयुताः हि भुवने जीवन्ति प्रायः स्त्रियः।
सौभाग्येन समं च वित्तविभवं संप्राप्य सर्व सुखं,
चाऽन्ते दिव्यपदं प्रयान्ति ह्यनिशं साक्षात्सतीनामिव।।67।।

हिन्दी अनुवादः-- जो स्त्रियां संसार में मेरे (नागेश्वर) चरित्र को नित्य पढ़ती है, वे सदैब अपने पतियों के साथ इस भूतल पर जीवित रहती हैं। सौभाग्य के साथ धन वैभव आदि सभी प्रकार के सुख प्राप्त करके वे अन्त में सती नारियों के समान हमेशा शिवजी के अलौकिक परम धाम को प्राप्त किया करती हैं अर्थात् मेरे प्रभाव से उनको आजीवन कभी पति वियोग एवं संतान हीनता का सामना नहीं करना पड़ता है।

सतीजनानां शरणं सदाशिवा,
वदन्ति वेदा सततं दिवौकसाः।
वसामि नित्यं हृदयेष्वहं तथा,
यथा यतीनां प्रणवं निधीयते।।68।।

हिन्दी अनुवादः- हे स्वामी! सती स्त्रियों की शरण पार्वती के अलावा दूसरा कोई देवता नहीं होता। ऐसा ही वेद एवं समस्त देवगण बताया करते हैं। मैं उन नारियों के हृदयों में उसी प्रकार निवास किया करती हूँ। जैसे मुनियों

एवं सन्यासियों के हृदयों में ओंकार का प्रत्यक्ष प्रतिविम्व सदैव अध्यासित रहा करता है।

सतीमिमां स्वागिसदैव संश्रयां,
क्षमष्व नूनं कृपया जगत्प्रभो!।
निशम्य मे नाथ! परं प्रियं वचः,
शरं विमुच्याशु क्षणं विलोक्यताम्।।69।।

हिन्दी अनुवादः— हे ससार के स्वामी शिवजी! अपने पति के सहारे जीवन व्यतीत करने वाली यह सती दारूका है । आप कृपा करके इसे क्षमा कर दे। हे स्वामी! मेरे परमप्रिय वचनों को सुनकर तथा अपने धनुष पर चढ़े हुये वाण को हटाकर एक क्षण मेरी तरफ देखिए।

ततः शिवायाः वचनं निशम्य सः,
मुमोच तं दारूक दानवं शिवः।
विलोक्य चाऽन्ते निजभक्त सुप्रियं,
ददौ पदं दिव्यमहो! जगत्पतिः।।70।।

हिन्दी अनुवादः— इसके वाद शिवजी ने पार्वती की वात सुनकर उस दारूक नामक राक्षस को छोड़ दिया अर्थात् उसका वध नहीं किया। अन्त में शिवजी ने अपने परम प्रिय भक्त सुप्रिये नामक ब्राह्मण को देखकर, उसे सवसे उत्तम शिवलोक अर्थात् ब्रह्मलोक प्रदान कर दिया। वस्तुतः शिवजी सभी देवताओं में सरल हैं।

देव्या समं पुनरसौ जगदान्तरात्मा,
सद्यः विनेश निजमंदिरमध्यमेषः।
नीलाम्वुचंचलपयोधितरंस्तरंगै—,
र्भूयोरराजहरिवदगृहिणी सहायः।।71।।

हिन्दी अनुवादः— उसके वाद शिवजी ने अपनी देवी पार्वती के साथ उस मंदिर में प्रवेश किया। नीले जल वाले चंचल सागर की लहरों में तैरते हुये दोनों ऐसे सुशोभित होने लगे जैसे भगवान् विष्णु अपनी धर्मपत्नी लक्ष्मीजी के साथ क्षीरसागर में सुशोभित हुआ करते हैं।

ये नित्यं श्रण्वन्ति सज्जनजनाः दिव्यं चरित्रं रहो,
तेषां सर्वभयं प्रयाति सततं नागेश्वरं कीर्तनैः।
ये ध्यायन्ति जपन्ति भूतलतले नागेश्वरीं सर्वदा,
ते नित्यं धनधान्य वैभवयुताः विंदन्ति चाऽन्ते पदं।।72।।

हिन्दी अनुवादः– जो सज्जन लोग इस "नागेश्वर" ज्योतिर्लिड्ग का चरित्र नित्य पढतें या सुनते हैं। उन्हे देवी नागेश्वरी का कीर्तन करने से कभी सर्प का भय नहीं हो सकता। तथा जो नागेश्वर भगवान् का ध्यान एवं जप किया करते हैं। वे सज्जन भी सदैव धन धान्य से परिपूर्ण होकर इस लोक में अन्त समय में भगवान् शिवजी के परम धाम को प्राप्त किया करते हैं।

इत्युक्त्वा वृषकेतनः सहचरीं निर्वर्ण्य भूयः शिवां,
चक्रे चंक्रमणच्छलेन सहसा नीराजनं भूयसा।
पश्चान्नील पयोधिमध्यप्रथितं नागेश्वरं मंदिरं,
चाऽन्ते वीक्ष्य पुनः प्रियासहचरः सद्य प्रतस्थे गिरिं।।73।।

हिन्दी अनुवादः– ऐसा कहकर शिवजी ने अपनी प्रियतमा पार्वतीजी को देखकर चक्कर लगाने के वहाने उस मंदिर की आरती की। वाद में नीलसागर के मध्य में स्थित एवं परम प्रसिद्ध उस नागेश्वर मंदिर का भली प्रकार अवलोकन करके अपनी देवी उमा के साथ अपने कैलाश पर्वत को प्रस्थान कर दिया।

फलकपुर निवासी विप्रवंश प्रदीपः,
द्विजगुरूजन सेवी शम्भु सन्नामधेयः।
सकलजगन्द्यं दर्पणं चातिश्रेष्ठं,
लिखितमिह पुरारे प्रीतिमाप्तुं मयैव।।74।।

हिन्दी अनुवादः– उत्तर प्रदेश में फर्रूखाबाद जिले के निवासी "आचार्य शम्भूदयालु अग्निहोत्री" जो सदैव ब्राह्मणों एवं गुरूजनों के सच्चे भक्त हैं, उन्होंने समस्त संसार के वन्दनीय द्वादश ज्योतिर्लिड्ग दर्पण् नामक ग्रन्थरत्न की शिवजी की सच्ची भक्ती प्राप्त करने की कामना से रचना की है।

इति द्वादश ज्योतिर्लिड्ग दर्पणस्य दशमः सर्गः समाप्तः

इति नागेश्वर निरूपमं— इति शं–
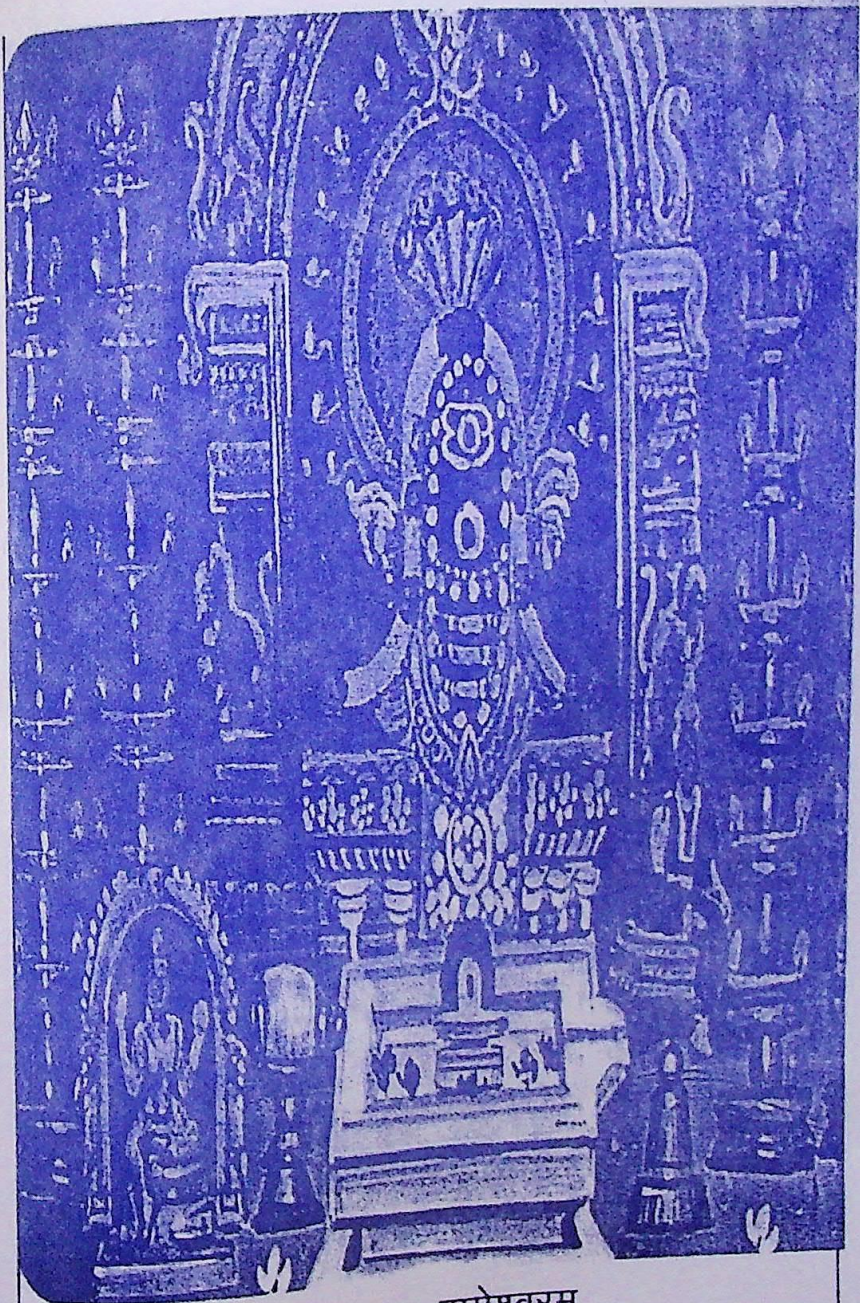
श्रीसेतुबन्ध रामेश्वरम्

अथ द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणस्य एकादशः सर्गः–

अथ रामेश्वर निरूपणम्–

यं सम्पूज्य शिवं चराचरगुरं सीतापतिः राघवः,
हन्तुंरावणराक्षसं परमहो! सेतुस्तटे निर्ममौ।
मन्ये! चात्र प्रतिष्ठितं सुललितं रामेश्वरं मन्दिरं,
भाले शम्भुशशांक मध्य कलुषं सिन्धोर्जले पश्यति।।1।।

हिन्दी अनुवादः– जिस चराचर के स्वामी शिवजी का पूजन करके सीतापति श्री रामचन्द्र जी ने परम भयंकर रावण राक्षस को मारने के लिये समुद्र के किनारे पुल वांधा था। वहीं किनारे पर रामचन्द्र जी के कर कमलों से प्रतिष्ठित रामेश्वर नामक ज्योतिर्लिङ्ग से युक्त यह मंन्दिर ऐसा प्रतित होता है कि मानो शिवजी के मस्तक पर विराजमान चन्द्रमा के मध्य चमकने वाली कालिमा को यह नित्यप्रति सागर के जल में देखा करता है।

ज्योतिर्लिङ्गमिदं शिवस्य कृपया लोके स्वयं विश्रुतं,
विभृद्विश्वविभूति कूपविविधैः संशोभितं सर्वदा।
रामस्यापि दिगन्तभक्तिमहिमा संवर्ध्यमानं तटे,
विश्वाधार यशस्तनोति भुवने रात्रिंदिवं धूर्जटेः।।2।।

हिन्दी अनुवादः– यह रामेश्वरम् नामक ज्योतिर्लिङ्ग शिवजी की कृपा से संसार में स्वयं परम प्रसिद्ध है। वस्तुतः यह संसार की समस्त समृद्धियों एवं अनेक कूपों के कारण सदैव शोभायमान प्रतीत हो रहा है। यह श्री रामचन्द्र जी की दिगन्त व्यापिनी भक्ति की महिंमा को सिन्धु तट पर फैलाता हुआ तथा संसार के परम कारण भगवान् भोलेनाथ के यश को संसार में रात दिन सव ओर फैला रहा है।

मन्ये! भारतभूतलस्य शरणं रामेश्वरं मन्यते,
अत्रैवास्ति स्वदेश संस्कृतिपुरावीजं चगुद्वयं शिवं।
रामेणात्र प्रपूजितः शशिधरः श्रीशूलिना श्रीपतिः,
स्तस्मात्तत्वद्वयं विलक्षणपरं रामेश्वरं तं भजे।।3।।

हिन्दी अनुवादः– मेरा अनुमान है कि भारत की धरती को शरण प्रदान करने वाला एकमात्र ज्योतिर्लिङ्ग रामेश्वर ही माना जाता है। यहां हमारे देश की सभ्यता का पुराना बीज जो वस्तुतः शिव रूप में अवस्थित होकर कल्याणकारी होकर भी छिपा हुआ है। यहाँ श्री रामचन्द्र जी ने शिवजी की पूजा की थी। तथा शिवजी ने लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु के रूप में अवस्थित रामचन्द्र जी का पूजन किया था। इसीलिये इन दोनों तत्वों से नितान्त ही विलक्षण शक्तिशाली होने के कारण मैं श्री रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग की सदैव वन्दना करता हूँ।

काले गते वहुतिथे रघुनन्दनोऽपि,
भार्यावियोगमुपलभ्य नितान्त खिन्नः।
सद्यस्तटेजलनिधिंवहुयाचमानः,
पारंप्रयातुमनिशं न जगाद सिन्धुः।।4।।

हिन्दी अनुवादः– अपनी धर्मपत्नी के वियोग से अत्यधिक खिन्न होकर श्री रामचन्द्र जी सागर के किनारे उस पार जाने के लिये वहुत दिनों तक समुद्र से प्रार्थना करते रहे। किन्तु राम की विनम्रता पर ध्यान न देकर सागर ने उनसे कुछ भी नहीं कहा।

सद्यश्चकर्षनिशितं शरमेकमेषः,
दध्रेधनुर्गुणगिवान्तकवत्करालं।
लक्ष्यं विधाय विससर्ज समक्षमेतत्,
यान्चा च लाधवकरीखलु दुर्धराणाम्।।5।।

हिन्दी अनुवादः– तव श्री रामचन्द्र जी ने तुरन्त ही एक तेज धार वाला वाण अपने तरकस से खींचा फिर उसे यमराज के समान अपनी धनुष की डोरी पर शीघ्रता पूर्वक चढाया। फिर निशाना लगाकर सागर के विल्कुल सामने प्रहार किया। क्योंकि शक्तिशाली प्राणियों एवं वीरों को भीख मांगना लघुता का प्रतीक ही माना जाता हैं।

रूपं निधाय सहसा धरणीश्वरस्य,
वव्रे पुनर्जलनिधिः रघुनन्दनं सः।

क्षन्तव्य एव भगवन्न! ममापराधः,
जाड्यं तनोति महतां खलुवित्तलाभः।।6।।

हिन्दी अनुवादः– वह सागर ब्राह्मण का रूप धारण करके तुरन्त उपस्थित होकर श्री रामचन्द्र जी से बोला हे स्वामी! आप मुझे क्षमा कर दें क्योंकि इसमें मेरा कोई अपराध नहीं हैं। वस्तुतः सम्पत्ति का लाभ महान् पुरूषों को जड़ता का प्रवर्धन किया करता है। अर्थात् सम्पत्ति मिल जाने पर महान् लोग भी वुद्धिहीन हो जाया करते है।

सेतुं विधाय जगदीश! ममाम्वुमध्ये,
सैन्येन सार्धमनिशं वृज कार्यहेतोः।
कृत्वापिं पूजनमितो शिवशंकरस्य,
नूनं भविष्यति प्रभो! तव कार्यसिद्धिः।।7।।

हिन्दी अनुवादः– हे जगदीश! मेरे जल के अन्दर पुल वांधकर सेना के साथ निश्चित होकर आप अपना कार्य करने के लिये प्रस्थान करे। किन्तु यहाँ शिवजी का विधि विधान पूर्वक पूजन करने के वाद ही आप के कार्य की सिद्धि भी होगी। तात्पर्य यह है कि शिवजी का पूजन करने से पहले आप रावण का वध नहीं कर सकते। रावण स्वयं ही शिवजी का परम भक्त है।

इत्यालोच्य पयोनिधेः मृदुवचः श्रीजानकी वल्लभः,
तीरे तत्र शिवस्यलिड्गंमभितः संस्थाप्य रामः स्वयं।
पश्चात्तं च प्रपूज्य सम्यग्तया पंचोपचारैः पुन–,
श्चान्ते हन्तुमसौ जगाम सहसा लंकापुरी रावणम्।।8।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार रामचन्द्र जी ने समुद्र के मधुर वचन सुनकर किनारे पर शिवजी का लिंग स्थिापित करके, वाद में उसका भली प्रकार पंचोपचार से पूजन करके अन्त में शत्रु रावण का वध करने के लिये लंकापुरी को अकस्मात् प्रस्थान कर दिया।

संस्थाप्य लिंगमथ सोऽपि जगन्निवासः,
नीत्वाजलं जलनिधेः रघुनन्दनोऽपि।
नत्वाशिवं मनसि मानवतां महात्मा,
तस्थौ निशम्य नभसाविमला च वाणी।।9।।

हिन्दी अनुवादः– वे चराचर के स्वामी श्री रामचन्द्र जी शिवलिंड्ग की स्थापना करके तथा समुद्र का जल लेकर, इसके वाद शिवजी को प्रणाम करके वे महान् पुरूषों के पूज्य राम जैसे ही चले, वैसे ही आकाश से निर्मल वाणी सुनकर वे रुक गये।

तुष्टोऽस्मि ते रघुपते! शिवपूजनेन,
पूर्ण मनोऽभिलषितं ननुस्यात्तवैतत्।
त्वद्वांन्छितं रिपुनिषूदनमत्रकार्य,
नूनं भविष्यति पुनर्कृपया ममैव।।10।।

हिन्दी अनुवादः– हे रघुनन्दन! तुम्हारे इस शिव पूजन से मैं वहुत प्रशन्न हूँ। तुम्हारा मनोरथ अवश्य ही पूर्ण होगा। तुम्हारे द्वारा परम अभिलषित कार्य रावण का वध है। वह भी मेरी कृपा से अवश्य होगा। इसमें कोई संदेह करने की आवश्यकता नहीं है।

दिवः निशम्याशुगिरंरघूद्वहः,
प्रशन्नतामाप ततो मुहुर्मुहुः।
ह्रदिस्थितं दैन्यमतः व्यपोह्य सः,
पुनर्ववन्दे सहसा हरं हरिः।।11।।

हिन्दी अनुवादः– श्री रामचन्द्र जी आकाशवाणी सुनकर बार बार प्रशन्न हुये। इसके वाद उन्होंने अपने हृदय की आन्तरिक ग्लानि दूर करके, भगवान् भोलेनाथ को फिर वड़ी तन्मयता के साथ कई वार प्रणाम किया। वस्तुतः अभिलाषा सिद्ध हो जाने पर श्रद्धा स्वयं वढ़ जाया करती है।

विलोक्य साक्षाद्वृषकेतनं पुनः–,
र्जगाद रामः सहसा जितेन्द्रियः।
प्रभो! तवावासमिहैव भूतले–,
भवेज्जगज्जीवनहेतवे सदा ।।12।।

हिन्दी अनुवादः–श्री रामचन्द्र जी ने शिवजी को साक्षात् देखकर शिवजी से उन जितेन्द्रिय राम ने निवेदन किया। हे स्वामी! आपका निवास स्थान संसार को जीवन प्रदान करने के लिये अब यहीं इसी भूतल पर होना चाहिये।

ज्योतिर्लिङ्ग विनिर्मितं खलु मया देवेश! रामेश्वरं,
भूयाद्भारतभूतले पुनरिंद लोकोत्तरं विश्रुतम्।
आयुष्यंहयुपलभ्य शत्रुदमने सम्यक् स्वयं प्रस्तुतः,
याम्यद्यैव पुरीं निसाचरपतेः हन्तुं च तं रावणम्।।13।।

हिन्दी अनुवादः– हे महेश! इस रामेश्वरं ज्योतिर्लिङ्ग की स्थापना मेरे द्वारा की गई है। इससे इसकी प्रसिद्धि हमारे भारत की धरती पर पूर्णतया हो। आपका आशीर्वाद प्राप्त करके अपने शत्रु का संहार करने के लिये मैं पूर्णतया समर्थ हो गया हूँ। अतएव मै आज ही रावण का वध करने के लिये लंकापुरी को प्रस्थान कर रहा हूँ।

इत्युक्त्वा रघुवंशभूषणमणि लंकापुरीं प्रस्थितः,
हत्वा तं दशकंधरं खलु स्वयं दत्वा पदं ब्रह्मणः।
देव्या सार्धमसौ निवृत्य सहसा भूयोऽपि तं भारतं,
प्रायः सिन्धुतटे शिवस्य शरणंप्रागेव रामः ययौ।।14।।

हिन्दी अनुवादः– रघुवंश मणि श्री रामचन्द्र जी ऐसा कहकर लंकापुरी को चले गये वहां रावण का वध करके तथा उसे स्वयं ब्रह्म पद प्रदान कर, अपनी देवी सीता के साथ अपनी जन्मभूमि भारतवर्ष को लौटकर सागर के किनारे वे रामचन्द्र जी शिव की शरण में सवसे पहले गये अर्थात् वहां से लौटकर उन्होंने सवसे पहले शिवजी का दर्शन किया।

ततो मुनीनामपि चाश्रमं ययौ,
स्वयं च राजीव विलोचनो हरिः।
पप्रच्छ सः ब्रह्मवधात्त पातकं ,
व्यपेतुमन्ते यत्नानि सर्वथा।।15।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद वे कमलों के समान नेत्र वाले श्री रामचन्द्र जी विभिन्न मुनियों के आश्रमों में गये। वहां उन्होंने ब्रह्महत्या के पाप से छुटकारा प्राप्त करने के लिये अनेक उपाय भी उन मुनियों से पूंछे।

प्रियासमं तत्र च गन्धमादनेः
उवास रामः रघुवंश नन्दनः।

ततः समाहूय पुनर्महर्षयः
पप्रच्छभूयोऽप्यघमर्षणं विधिः ।।16।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद रघुवंश का आनंद बढ़ाने वाले श्री रामचन्द्र जी ने अपनी धर्मपत्नी सीताजी के साथ गन्धमादन पर्वत पर विश्राम किया। वहीं दुबारा अनेक ऋषियों एवं मुनियों को बुलाकर पाप से छुटकारा पाने का फिर से विधान पूंछा।

नूनं पाप निवारणं रघुपते! यत्नं वदामों वयं
लिङ्गं चात्र शिवस्य सम्यग्यतया संस्थापनीयंत्वया।
इत्येवं मनसा प्रपूज्य विधिवत्यं चोपचारै पुन–
र्पापेभ्यो निष्कल्मषः पुनरहो! लोके ध्रुवंयास्यसि।।17।।

हिन्दी अनुवादः– ऋषियों ने कहा हे राम! निष्चय ही पाप को दूर करने वाला प्रयत्न हम तुम्हें बता रहे हैं। तुम्हें शिवलिंग की दुबारा स्थापना करनी चाहिए। उसकी स्थापना करने के बाद उस शिवलिंग का पंचोपचार से हार्दिक पूजन करो तो आप निसन्देह संसार के सभी पापों से शीघ्र ही छुटकारा पा जायेंगे। इसके अलावा पापों से छुटकारा तुरन्त प्रदान करने वाला कोई दूसरा उपाय नहीं है।

अधौघविध्वंसकरं च साधनं
निशम्य रामः शरदेन्दुवद्युतिः।
क्षणे समाहूय प्रभंजनात्मजं
निवेदयामास मनोगतं रहः।।18।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार मुनियों द्वारा बताये गये पापों का निवारण करने वाले साधन को सुनकर शरद ऋतु के चन्द्रमा के समान कान्ति वाले राम ने तुरन्त वायु पुत्र श्री हनुमान जी को एकान्त में अपना मनोरथ बता दिया।

निशम्यतद्वायुसुतः प्रभोर्वचः
प्रमोदसिन्धौसहसा तरन्निव।
पतत्त्रिवच्चात्रययौ प्लवंगमः
प्रणम्य रामं खलु कोशलधिपम्।।19।।

हिन्दी अनुवादः– वायुपुत्र हनुमान जी अपने स्वामी राम की बात सुनकर वे तुरन्त मानवानन्द के सागर में पक्षी के समान तैरते हुए श्रीरामचन्द्रजी जो कौशल के राजा हैं, को प्रणाम करते हुए वानरराज तुरन्त चल दिये।

प्रभन्जनेनैव यथा विशालधीः
नभश्चलच्चंचलबालधीस्फुरन्।
ददर्श कैलाशगिरौ समास्थितम्
क्षणेस कैलाशपतिं प्रियासमम्।।20।।

हिन्दी अनुवादः– विस्तृत बुद्धि वाले हुनमान जी वायु के मार्ग आकाश मण्डल पर अपनी पूंछ इधर उधर चमकाते हुए चले जा रहे थे। इसी बीच में उन्होंने कैलाश पर्वत पर अपनी प्रियतमा पार्वतीजी के साथ विराजमान भोलेनाथ को देखा।

स्वयं चलत्पन्नगभूषितं शिवं
विलोक्य सद्यः मुमुदे महाबलः।
प्रणम्य पूर्वं जगदम्बिकां सतीं
ततोववन्दे बृषकेतनं पुनः।।21।।

हिन्दी अनुवादः– महाबलशाली हनुमानजी स्वयं चलने वाले सर्पों से बिभूषित शिवजी को देखकर बहुत प्रशन्न हो गये। उन्होंने सर्वप्रथम संसार की माता जगज्जननी जगदम्बा को प्रणाम करके, फिर भगवान भोलेनाथ की वन्दना की।

नभस्तले पर्वत सन्निभंपुन–
र्पतत्रिवच्चात्र विलोक्य तं कपिं।
जगाद कैलाशपतिः कपीश्वरम्,
महाहनुं वायुसुतं हसन्निव।।22।।

हिन्दी अनुवादः– आकाश मार्ग पर एक पहाड़ के समान, तदनन्तर एक पक्षी के समान स्वल्पकाय उस वानर को देखकर, भोलेनाथ वे कैलाशवासी शिवजी बड़ी ठोडी वाले वायुपुत्र एवं वानरों के सेनानायक हनुमान जी से हसते हुए से बोले।

कथं किमेतत्स्वल्पं बृहद्वपु–
विधाय लीलाचरितं प्लवंगम;।
इतः किमभ्यागमनप्रयोजनमं,
वदाशु, नूनं बृषभो विभेति मे।।23।।

हिन्दी अनुवादः– हे वानर! तुम अत्यधिक छोटा तथा नितान्त भयंकर शरीर बनाकर क्या जादूगरी का कार्य करते हो। बोलो–तुम्हारा यहां आने का तात्पर्य क्या है? वास्तव में मेरा बैल(नन्दीगण) भयभीत हो रहा है। इसीलिए तुम्हारा उद्देश्य पूंछना चाहता हूं।

प्रदर्शनेनैव विदन्ति मादृशं,
समस्त वेदाः विविधाः दिवौकसा।
तथापि लीलाचरितं चरन्नहो!
वदाशुकिंतेन मनः ह्वणीयते।।24।।

हिन्दी अनुवादः– इसी विद्या का प्रदर्शन करने मात्र से ही समस्त वेद एवं देवतागण सभी हम जैसे व्यक्तियों को भली प्रकार पहचान लेते हैं। फिर भी तुम उसी जादूगरी का प्रदर्शन करते हुए धूम रहे हो। क्या यहां आकर तुम्हारा मन लज्जित नहीं होता।

भ्रमन्ति सर्वत्र भवादृशाः गिरिं,
प्लवंगमाः कृष्णमुरवाः हि वानराः।
विभेसि किं नैव तपोवनादितो,
वदाशुवृतं सहितं कपीश्वरः!।।25।।

हिन्दी अनुवादः– हे वानरराज! तुम्हारे जैसे काले मुख वाले तथा उछल कूद करने वाले बन्दर बहुत से हमारे हिमालय पर्वत पर घूमते रहते हैं, किन्तु तुम हमारे तपोवन से क्यों नहीं डरते। इसका वृतान्त आप हमें प्रेमपूर्वक बताऐं।

इत्थं चात्र निशम्य शम्भुबचनं वातात्मजोऽयंद्विजः,
वव्रेऽहं रघुनन्दस्यपरमः भवतोऽस्मि दूतः प्रभो!।

हत्वातं दशकंधरं पुनरसौ रामः स्वयं प्रेषितः,
नेतुं लिंङ्गमितो शिवस्य ह्यनधं तत्सौभगंदेहिमे।।26।।

हिन्दी अनुवादः— इस प्रकार शिवजी के बचनों को सुनकर ब्राह्मण का रूप धारण करने वाले वायुपुत्र हनुमान जी बोले। हे स्वामी! शिवजी मैं श्रीरामचन्द्र जी का दूत हूं। राम ने रावण को मारकर शिवलिंग लेने के लिए आपके पास मुझे भेजा है। अतएव आप कृपा करके पापों को नष्ट करने वाले एवं नितान्त मनोहर शिवलिंग देने का कष्ट करें।

निशम्य भक्तस्यवधं तथात्मनो,
ऽप्यदूयदन्तःकरणे भृशं शिवः।
जयं च रामस्यतदायुषा पुन–
र्ययौ न तस्यौ सहसा जगत्पतिः।।27।।

हिन्दी अनुवादः— हनुमान जी के मुख से अपने भक्त रावण का वध सुनकर वे शिवजी अपने ह्रदय में बहुत दुःखी हो गये। किन्तु अपने आशीर्वाद के द्वारा राम की विजय सुनकर वे संसार के स्वामी न हिल ही सके और न खडे ही रह सके अर्थात् असमंजस में पड़ गये।

क्वचित्प्रदध्यौ बहुनिश्वसन् क्वचित्,
क्वचित्तुखिन्नात्ममुखेन चिन्तयन्।
तरंस्तरंगेष्विवतत्पयोनिधौ,
प्लवंगवच्चात्र तटं न ददृशे।।28।।

हिन्दी अनुवादः— वे शिवजी कभी–कभी ध्यानमग्न हो जाते थे। तो कभी लम्बी–लम्बी गर्म–गर्म आहें भरने लगते थे। कभी–कभी कुम्हलाए हुए मुखमण्डल से सोचते हुए उन्होंने अपना सहारा उसी प्रकार नहीं खोज पाया जैसे बन्दर सागर की लहरों में तैरते हुए अपना किनारा नहीं देख पाता।

शुशोच किंचद्विललाप चात्मना,
पदातिरन्तर्गिरि गह्वरं चरन्।
चतुर्दिगं वीक्ष्य विलोलया दृशा,
बभूव दूनः सहसा क्षणे–क्षणे।।29।।

हिन्दी अनुवादः— वे शिवजी कभी कुछ शोकमग्न हो जाते थे। कभी अपने हृदय में विलाप करने लगते थे। कभी पैरों से पर्वत की गुफाओं में विचरण करते थे। कभी चंचल दृष्टि से चारों दिशाओ को देखकर अकस्मात् क्षण--क्षण दुःखी होने लगते थे अर्थात् उनकी दशा नितान्त सोचनीय हो गयी।

जहास किंचित्करुणार्तिविह्वलः,
बभूव भूयः सहसा जगत्पतिः।
विलोक्य चिन्ताचकितं शिवं पुन--
र्जगाद तं नाथमनाथवच्छिवा।।30।।

हिन्दी अनुवादः— कभी--कभी वे हंसने लगते थे तो कभी करुणा से दुखित होकर वे बार--बार व्याकुल हो जाते थे। ऐसे संसार के स्वामी शिवजी को चिन्ता के कारण महाबेचैन देखकर नितान्त असहाय स्थिति में उन भोलेनाथ से भगवती पार्वती जी ने निवेदन किया।

अहो! जगन्नाथ! स्वभक्तचिंतया,
क्षणे–क्षणे देव! कथं विदूयते।
चराचरस्यात्र विमोहवन्धनं
भवद्भिरेवात्र कथं स्थिरीयते।।31।।

हिन्दी अनुवादः— हे चराचर के स्वामी शिवजी! अपने भक्त की चिन्ता के कारण आप क्षण–क्षण इतने क्यों दुःखी हो रहे हैं। इस चर एवं अचर संसार का मायाजन्य बन्धन क्या आप लोगों के द्वारा स्थिर किया जा सकता है अर्थात् आप लोग तो योगी हैं। फिर भला आपके पास मोहमाया कैसे रह सकती है।

अहो! भवाम्भोधिनिवृत्ति कारणं,
वदन्ति त्वामेव सदा दिवौकसा।
नमन्ति नित्यं शुकशौनकादय–
स्तथापिखिन्नः गृहयोषितामिव।।32।।

हिन्दी अनुवादः— हे शिवजी! आपको सभी देवगण संसार का निवारण करने वाला कहा करते हैं। तथा शुकदेव एवं महर्षि शौनक जैसे मुनिजन आपको नित्य ही नमस्कार किया करते हैं फिर भी आप घरेलू औरतों के समान खिन्न अथवा सिसकियां भर रहे हैं।

मदेकदन्तस्य विषाणमुद्धृतं,
जहार येनाशु दिवः सुरांग्नाः।
तदा हसन्नाथ! कथं विलोकित,
म्रते कथं चात्र मनः विदूयते।।33।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी! मेरे पुत्र गणेशजी का जिसने दाँत उखाड़ लिया था एवं जिस रावण ने स्वर्ग की समस्त अप्सराओं का हरण भी कर लिया था। उस समय उसका कृत्य आपने हंसते हुये देखा था। उसके मरने पर आज आपका मन खिन्न क्यों हो रहा है।

पुरा प्रदत्तेन वरेण मामपि,
विहाय त्वांनेतुमसौ समुत्सुकः।
तदा समागत्य च नारदेन वः,
ररक्ष स्वामिन्! ननु विस्मृतोसि किं।।34।।

हिन्दी अनुवादः– हे स्वामी! पहले दिये हुये वरदान के अनुसार मुझे भी छोड़कर वह रावण आपको लंका ले जाने के लिये उत्सुक हो उठा था। किन्तु उसी समय तुरन्त नारदजी ने आकर आपकी रक्षा की थी। क्या आप उस वात को भूल गये अर्थात् उसने आप के साथ भी जो जो छल किये थे। आप उन्हें भी भूल गये।

जहार सीतां प्रसभं कुलांड्गना ,
सभिक्षुवेषेण पुरा जगत्प्रभो!।
तदा कथं नाथ! न खेदितंमनः,
विलोक्य त्वामद्य हसन्ति देवताः।।35।।

हिन्दी अनुवादः– हे संसार के स्वामी! पहले जिस रावण ने भिखारी का भेष धारण करके राम की धर्मपत्नी एवं कुलवधू सीता का हरण कर लिया था। तव आपका मन तनिक भी खिन्न नहीं हुआ था। इसीलिये आज आपको दुःखी देखकर देवता उपहास कर रहे हैं।

इति विविध प्रयत्नैस्तोषयन्ती गिरीशं,
मनवचनक्रियानभिः संततं दक्षकन्या।

तदपि च जगदीशं शम्भुमुत्थाप्य सद्यः,
शिव शयन शिलायां तत्र संस्थाप्य तस्थौ।।36।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार अनेक प्रयत्नों से शिवजी को मन वाणी तथा कार्यो से संतुष्ट करती हुई, दक्ष प्रजापति की वेटी जगज्जननी जगदम्वा फिर भी शिवजी को वहां से उठाकर उनकी शयन कक्ष की शिला पर वैठाकर स्वयं वैठ गई।

ततः समक्षं हिप्रभंजनात्मजं,
विलोक्य मम्ले सहसा त्रिलोचनः।
कृतानि कृत्यानि रहस्त्वनेकधा,
नु ह्रेपयन्तीहजन मुहुर्मुहुः।।37।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद वायु पुत्र हनुमान् जी को सामने देखकर शिवजी अकस्मात् कुंठित हो गये। क्योंकि एकान्त में किये गये कार्य प्राणी को विभिन्न प्रकार से वार वार लज्जित कर दिया करते हैं। तात्पर्य यह है कि उनकी लज्जा का कारण रावण की मृत्यु पर दुख प्रकट करना था।

निशम्य वृतं सततं दयापरः,
तदानयल्लिंङ्गमहद्विनिर्मलं।
पुनश्चमंत्रैरभिषिच्य धूर्जटि–,
र्ददौ सतस्मै प्रणयेन हर्षितः।।38।।

हिन्दी अनुवादः– वे दयालु भोलेनाथ रामचन्द्र जी का समाचार सुनकर एक सर्वोत्तम शिवलिंङ्ग खोजकर ले आये। इसके वाद उसे शिवजी ने दुवारा मंत्रों से अभिषिक्त करके वड़े प्रेम से प्रशन्न होकर हनुमान् जी को दे दिया।

ततोऽवृजद्वायुसुतः समुत्पतन्,
निधाय हस्ते शिवलिंङ्ग सौभगं।
समाययौ यावदसौ महोदधिं,
ददर्श तावन्त्वपरं प्रतिष्ठितम्।।39।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद अपने हाथ पर सुन्दर शिवलिंङ्ग रखकर हनुमानजी उड़ते हुये आकाश मार्ग से चल दिये। किन्तु जव तक वे समुद्र के

किनारे तक नहीं आ सके। तव तक वहाँ उन्होंने दूसरा शिवलिंड्ग प्रतिष्ठित हुआ देखा। अर्थात् वह शिवलिंड्ग मुहूर्त के अनुसार देवताओं एवं मुनियों ने तव तक प्रतिष्ठित करा दिया।

संस्थापितं समपरं शिवलिंड्गमेतत्–,
सद्यः विलोक्य ननु वायुसुतश्चुकोप।
वव्रे हरिं विकलकोपकषाय दृष्टिः–,
धैर्यं कदापि भुवने न महेश्वराणाम्।।40।।

हिन्दी अनुवादः– हनुमान जी वहाँ पहले से स्थापित शिवलिंड्ग देख कर वे वहुत नाराज होने लगे। अन्त में वे व्याकुलता के कारण क्रोध से लाल आंखे करके श्री रामचन्द्र जी से वोले। इस संसार में उत्तम कोटि के देवताओं को धैर्य नहीं होता। अर्थात् देवगण वड़ी जल्दी अधीर हो जाया करते हैं।

विलोक्य तं कोप समुन्वितं पुन,
र्जगाद सद्यः रघुवंश नन्दनः।
कपीश! किं चात्र वृथैव खिद्यसे,
परार्थसेवाहि वृतं महात्मनां।।41।।

हिन्दी अनुवादः– हनुमान जी को क्रोध की मुद्रा में देखकर, श्री रामचन्द्र जी ने उनसे धैर्य पूर्वक कहा। हे वानरराज ! तुम व्यर्थ में नाराज क्यों हो रहे हो। दूसरों की निः स्वार्थ सेवा करना महापुरूषों का नियम हुआ करता है। क्योंकि महान् पुरूषों की यह परम्परा होती है कि वे सदैव ही दूसरों की निःस्वार्थ सेवा किया करते हैं।

अलंहि कोपेन!प्रभज्जनात्मज!,
अथापरं लिड्गमिदं कपर्दिनः।
स्वयं समस्थाप्य समीपमन्ततो,
प्रपूजयिष्यामि तथैव भूतले।।42।।

हिन्दी अनुवादः– हे पवनपुत्र! क्रोध मत करो, मैं इस शिवलिंड्ग को जो स्वयं शिवजी द्वारा अभिमंत्रित है। इसको उसी शिवलिंड्ग के पास स्थापित करके उसी प्रकार इसकी पूजा करूँगा। जैसे मैंने अपने द्वारा संस्थापित शिवलिंड्ग की पूजा की थी।

इत्यालोच्य पयोधिचंचलतटे लिंड्गं परं धूर्जटेः,
पार्श्वे तस्य निधाय भूतल तले सद्यः समस्थापयत्।
पश्चाद्वायुसुतेन विश्रुतमिमं पंचोपचारैः स्वयं,
संपूज्याथ प्रियासमं रघुपतिश्चक्रे च नीराजनं।।43।।

हिन्दी अनुवादः– ऐसा विचार करके, चंचल सागर के तट पर शिवजी का दूसरा शिवलिंड्ग उसी के पास जमीन के अन्दर स्थापित कर दिया। इसके वाद श्री हनुमान जी के नाम से प्रसिद्ध इस शिवलिंड्ग की अपनी धर्मपत्नी सीता के साथ उसकी पूजा करके श्री रामचन्द्र जी ने उसकी आरती की।

विधाय तत्रैव विशाल मंदिरं,
समर्च्य भूयोऽपि त्रिलोचनं हरिः।
चकार यानेन प्रयाणमन्ततः
प्रियासमंतत्रपुरीं रघूद्वहः।।44।।

हिन्दी अनुवादः– उसी स्थान पर रघुवंश भूषण श्री रामचन्द्रजी ने एक विशाल मन्दिर का निर्माण करके, तथा शिवजी का फिर से पूजन करके, अपनी प्रियतमा सीताजी के साथ अपनी नगरी अयोध्यापुरी को पुष्पक विमान के द्वारा प्रस्थान किया।

अत्रान्तरे च नमसा सुगभीर शब्दै–
सद्यः वभूव ननु दिव्य दिगन्त वाणी।
अश्रुयदत्रभुवने सह वन्धुवर्गै–
रन्यैश्चराचरजनै र्भुवि चान्तरस्था।।45।।

हिन्दी अनुवादः– इसी बीच में गंभीर शब्दों में आकाश के मध्यभाग से आकाशवाणी हुयी। जो समस्त भूमण्डल पर निवास करने वाले प्रत्येक प्राणिमात्र, तथा राम के इष्टमित्रों एवं भाई वान्धवों आदि सभी ने उसे सुना।

येकुर्वन्ति जनाः सदैव मनसा पूजामितो धूर्जटे,
ध्यायन्तीह शिवं विशुद्ध मनसा नित्यंचरामेश्वरम्।
तेषां नैव भवाब्धिक्लेशजगतः सम्वाधते प्राणिनां,
लभ्यन्ते विमलं पदं हि भुवने प्रायः भवानीपतेः।।46।।

हिन्दी अनुवादः— जो लोग सदैव ध्यान पूर्वक शिवजी की नित्य पूजा करेगें, एवं विशुद्ध मन से शिवजी एवं रामेश्वरं ज्योतिर्लिङ्ग का ध्यान एवं दर्शन करेगें, उन्हें इस भवसागर के क्लेश कभी कष्ट नहीं पहुँचा सकते। अन्त में प्राणी सांसरिक मोह मायां से सदैव के लिये छुटकारा प्राप्त करके शिवजी के परमधाम को प्राप्त करेंगे।

मायामहोदधिपतंगइवात्म जन्तुः,
प्रायः नमस्यपि चरन् निजवुद्धिहीनः।
निर्मीयते शिवपथं शिवदर्शनेन,
मुक्तिं प्रयाति सततं सहितं हि सद्यः।।47।।

हिन्दी अनुवादः— माया से आप्लावित इस भवसागर में पतंगे के समान पड़ा हुआ प्राणी, अथवा वुद्धिहीन होने के कारण आकाश मण्डल पर विचरण करने वाला पक्षी, शिवजी के दिव्यधाम रामेश्वर के शिवजी का दर्शन करके अपना कल्याणकारी मार्ग चुना करता है। अन्त में वह वड़े प्रेम के साथ सदैव के लिये मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

कल्पान्त कोटि कलिकाल करालपाशै–
र्मुक्तो भवत्यनुदिनं शिवदर्शनेन।
कूपेष्वशेषविधिवच्च कृताभिषेकः,
नूनं प्रयाति स पदं सततं मनुष्यः।।48।।

हिन्दी अनुवादः— करोड़ों जन्मो के कलियुगी पापों से वह प्राणी केवल शिवजी के दर्शन मात्र से ही छुटकारा पा लेता है। एवं समस्त कुओं में संविध स्नान करने वाला मनुष्य, शिवजी के सर्वोत्तम मोक्षधाम को अवश्य ही प्राप्त करता है।

ये मे लिखन्ति चरितं च पठन्ति नित्यं,
तेषा कदापि भुवने न प्रियावियोगाः।
चान्ते भवन्ति न विपत्ति वियोगदग्धाः,
लोके प्रयान्ति पदवीं ममदर्शनेन।।49।।

हिन्दी अनुवादः— जो लोग इस संसार में मेरे इस 'रामेश्वरं' ज्योतिर्लिङ्ग के

मनोरम चरित्र को नित्य लिखते या पढ़ते हैं। उनका कभी भी अपनी गृहणी से वियोग नहीं होता। वे कभी अन्त में भी विपत्तियों अथवा वियोग रूपी अग्नि में नही जलते। अन्त में वे लोग दर्शन करके परमधाम को वड़ी सरलता से प्राप्त कर लेते हैं।

भक्ताः विदन्ति सततं मम दिव्य रूपं,
लोके तथापि च द्विषन्ति मदान्धमत्ताः।
ध्यायन्ति ये सकल शान्तविवेक बुद्धया,
सद्यस्तरन्ति तरणीव भवाब्धिमध्ये।।50।।

हिन्दी अनुवादः– भक्त लोग मेरे इस आलौकिक रूप को भली प्रकार जानते हैं। फिर भी वे धन एवं वैभव के मद में मदमस्त होकर मुझसे विरोध किया करते हैं। किन्तु जो लोग शान्त मन एवं वुद्धि से मेरा ध्यान किया करते हैं। उन लोगो को इस लोक में भय नहीं होता । वे इस संसार सागर को उसी प्रकार पार कर जाते हैं। जैसे नौका सागर में तैर कर उस पार सरलता पूर्वक चली जाती हैं।

नित्यं नमन्ति शिवलिङ्गमितो मनुष्याः,
भक्त्या हृदिस्थितमनागपि प्रीतियोगात्।
तेषां सदैव सुतवत्करवाणि नूनं,
साहाय्यमात्यकरजैर्जगदम्बिकेव।।51।।

हिन्दी अनुवादः– जो लोग मेरे शिवलिंग को नित्य ही प्रणाम किया करते हैं अथवा हृदय में अवस्थित मेरे प्रति विशेष प्रेम हो जाने के कारण मेरा ध्यान किया करते हैं। उनकी मैं अपने नाखूनों से पुत्र के समान रक्षा एवं सहायता किया करता हूँ। जैसे जगदम्वा पार्वती भक्त की रक्षा एवं सहायता करती हैं।

इत्युक्त्वा शशिशेषरः पुनरसौ साक्षाद्भवानीपतिः,
सद्यःप्रेक्ष्य सुमन्दिरं वहिरतो पस्पर्श रामेश्वरं।
पश्चात्सिन्धुजलेन सम्यग्तया सर्वं समभ्युक्ष्य सः,
वव्रे तं रघुवंशभूषणमणिं प्रायः मुनीनामिव।।52।।

हिन्दी अनुवादः— ऐसा कहकर वे साक्षात् भोलेनाथ, उस मन्दिर को वाहर से देखकर उन्होंने रामेश्वरं, ज्योतिर्लिंग् का स्पर्श किया। इसके वाद सागर के जल से वह समस्त स्थान छिड़ककर, वाद में मुनियों के समान रघुवंश के कुलदीपक एवं मणि के समान सुंदर श्री राम चन्द्रजी से वोले।

त्वदीय रूपं सशरीरमीक्षितुं,
कृतं तपो भक्तिकृते दशाननः।
त्वदीय हस्तेन वधं हयवाप्य सः,
गतोऽथ मुक्तिं सहसा परंतप!।।53।।

हिन्दी अनुवादः— हे परम तपस्वी राम! तुम्हारे सशरीर स्वरूप को देखने के लिए दशकन्धर (रावण) ने विशेष रूप में भक्ति प्राप्त करके, वह रावण सदैव के लिये इस संसार से मुक्त हो गया।

वलावलेपात्प्रविहाय सत्पथम्—
चकार तेनात्र त्वदम्दुतं द्विषं।
तथापि वंशेन समं विवेकवान्,
ययौ तदन्तेऽपि ह्ययधोक्षजं पदम्।।54।।

हिन्दी अनुवादः— वह रावण अपने घमण्ड के कारण सत्य मार्ग को छोड़कर उसने तुम्हारे साथ भंयकर वैर किया था। किन्तु वह वुद्धिमान होने के कारण अपने वंश के साथ पुनर्जन्म से रहित परंब्रह्म के अलौकिक एवं अविनाशी पद को प्राप्त हो गया है।

अहो! परब्रह्म! सनातनं च त्वां,
निरीहमव्यक्तमनादिकारणं।
विदन्ति वेदाः न पुनर्दिवौकसाः,
नमाम्यहं विश्वपतिं ततोपुनः।।55।।

हिन्दी अनुवादः– हे परंब्रह्म! आप सनातन, इच्छाओं से रहित, नितान्त गूढ रहने वाले, संसार के प्रारम्भिक तत्व हैं। आपको चारों वेद, एवं समस्त देवगण भी नहीं पहचान पाते। इसलिये संसार के स्वामी आपको मैं वार वार नमस्कार करता हूँ।

चलद्विलोलाक्षिपथेन संततं,
निरीक्ष्यमाणः निपुणं त्रयम्वकम्।
वभौ सलंकेशरिपुस्तथा क्षणं,
यथाम्वरे भाति शशिः रबेःकरैः।।56।।

हिन्दी अनुवादः– अपने चंचल एवं लगातार चलने वाले नेत्रों के मार्ग से शिवजी को भली प्रकार देखते हुये वे रावण के शत्रु रघुवंशभूषण रामचन्द्र जी एक क्षण के लिये ऐसे सुशोभित हुये। जैसे आकाश में सूर्य की देदीप्यमान किरणों से चन्द्रमा सुशोभित हुआ करता है।

परं प्रसादोपहितं जटाधरं,
शशांड्क संक्रान्तद्युतिं मनोहरं।
चलत्स्वयं पन्नगभूषणं शिवं,
विलोक्यमम्ले सदयः दयानिधिः।। 57।।

हिन्दी अनुवादः– परम प्रशन्नता से युक्त, लम्वी लम्वी जटाओं को धारण करने वाले, चन्द्रमा का प्रकाश पड़ने से अत्यधिक सुन्दर लगने वाले, स्वयं नितान्त चंचल सर्परूपी गहनों से युक्त, ऐसे शिवजी को देखकर , वे दयानिधान एवं दया के सागर श्री रामचन्द्र जी दया से आप्लावित हो दुःखी हो गये अर्थात् राम का हृदय भी गदगद हो गया।

ततः गलन्नेत्रनिषेक बिन्दवः
निवार्यमाणः सहसा जगत्पतिः ।

जगाद तं विश्वपतिं त्रिलोचन,
चराचरात्मा स निमीलितेक्षणः।।58।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद अपने नेत्रों से लगातार बहने बाले एवं नेत्रों में भरे हुए आंसू पोंछते हुए संसार के स्वामी एवं चर एवं अचर संसार की आत्मा वे रामचन्द्र जी अपनी आंखें बन्द करके संसार के स्वामी त्रिनेत्रधारी शिवजी से बोले ।

त्वदीयरूपं प्रणिधाय चान्तरे,
बिलोक्य मां सम्यगसौ दशाननः।
मुरवैः समग्रैरपि त्वां जपन्नहो ।
ससर्ज चाऽन्तेस्वतनुर्मुनेरिव ।।59।।

हिन्दी अनुवादः– हे शिवजी आपके अनन्य भक्त उस रावण ने आपके स्वरूप को हृदय में अवस्थित करके, तथा मुझे भी भली प्रकार देखकर इसके बाद अपने सभी मुरवों से आपके नाम का जप करते हुये उसने अन्त में अपना शरीर एक ऋषि के समान छोड़ा था ।

ततो मया दत्तमिदं प्रभोर्पदं,
ब्रजन्ति यंभक्तजनाः महर्षयः ।
अहो! त्रिकालज्ञ! क्षमष्व मेऽप्यघं,
दयार्दचेताः हि भवन्ति साघवः ।।60।।

हिन्दी अनुवादः– हे तीनों लोकों एवं तीनों कालों का परिज्ञान करने वाले शिवजी इसीलिए मैंने उसको अलौकिक परमधाम प्रदान कर दिया है। जिस लोक को आपके भक्तगण एवं मुनिवर प्राप्त किया करते हैं। अतएव आप मेरे इस पाप को क्षमा कर दें ।

इति विविधवचोभिस्तोषमन् शूलपाणिं,
रघुकुलमणिरेषः संततं रामचन्द्रः।

पुनरपि जगदीशं वीक्ष्य खिन्नं पुरारिं,
सकलजगद्वन्द्यः चान्ततस्तं ववन्दे।।61।।

हिन्दी अनुवादः– रघुवंश के कुलपति श्री रामचन्द्रजी इस प्रकार विभिन्न शब्दों से भगवान् भोलेनाथ को संतुष्ट करते हुये, तथा फिर भी उन शिवजी को कुछ खिन्न देखकर संसार के द्वारा वन्दनीय राम ने अन्तिम समय शिवजी को फिर से प्रणाम किया।

विश्वं विहाय सकलार्तिहरो पुरारिः,
संदृश्यते सकल लोककृताधिवासः।
तं सर्वभूतह्वदयं जगजीवनं वा,
त्यक्तुं नचार्हति मनो ममतामयं मे।।62।।

हिन्दी अनुवादः– समस्त संसार को छोड़कर , समस्त क्लेशों का शमन करने वाले, शिवजी समक्ष दिखायी दे रहे हैं। ऐसे समस्त लोकों में विद्यमान रहने वाले, तथा समस्त प्राणियों की अन्तरात्मा, इन शिव को मेरा ममत्व में फॅसा हुआ मन कभी छोड़ना नहीं चाहता।

इत्येवं शशिशेषरं वहुविधैः संस्तूद्यमानः प्रभुः,
प्रायः मंदिरमन्तरे शशिधरं नीरजनं कुर्वतः।
सीतालक्ष्मण संयतः पुनरसौ सीतापतिः राघवः,
सार्धं तत्र सुहृम्दिरेव सहसा सद्यः प्रतस्थे पुरीम्।।63।।

हिन्दी अनुवादः– इस प्रकार अनेक प्रकार से शिवजी की स्तुति करते हुये वे सीता जी के स्वामी श्री रामचन्द्रजी ने मंदिर के अंदर शिवजी की आरती करते हुये सीता, लक्ष्मण, एवं अपने समस्त मित्रगणों के साथ तुरंत अपनी नगरी अयोध्यापुरी को प्रस्थान कर दिया।

यं लोके प्रणमन्ति सिद्ध मुनयः देवाः महेन्द्रादयः,
दिग्पालाः दिग्दन्तिनः पुनरहो! नित्यं नराः सूरयः।

प्रायः सिन्धु तंरग तीर विलसद्विश्वेश लीलाधरं,
वन्दे विश्वविभूति कारणपरं रामेश्वरं संततम्।।64।।

हिन्दी अनुवादः— जिसे संसार के सभी सिद्ध मुनीश्वर, इन्द्र आदि सभी देवगण, दिग्पाल एवं दिशाओं की रक्षा करने वाले दिग्पालों के हाथी, मनुष्य एवं कविगण नित्य ही नमस्कार किया करते हैं। समुद्र की उछलती हुई तंरगों के समीप सुशोभित होने वाले एवं संसार की लीला करने वाले उन रामेश्वर ज्योतिर्लिंग् शिवजी को मैं सदैव प्रणाम करता हूँ। क्योंकि वे समस्त संसार की सम्पत्ति को धारण करने वाले हैं।

फलकपुर निवासी विप्रवंश प्रदीपः,
द्विजगुरुजनसेवी शम्भुसन्नामधेयः।
सकलजगद्वन्द्यं दर्पणं चातिश्रेष्ठं,
लिखितमिह पुरारेर्प्रीतिमाप्तुं मयैव।।65।।

हिन्दी अनुवादः— उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद जिले में रहने वाले, ब्राह्मण वंश में उत्पन्न होने वाले, "आचार्य शम्भूदयाल अग्निहोत्री "जो ब्राह्मणों एवं गुरूजनों के सच्चे सेवक हैं। उन्होंने सम्पूर्ण संसार में वन्दना करने योग्य "द्वादश ज्योतिर्लिंग्दर्पणं " नामक ग्रंथरत्न की शिवजी का सच्चा प्रेम प्राप्त करने के लिए रचना की हैं।

इति द्वादशज्योतिर्लिंग दर्पणस्य एकादशः
-ःसर्गः समाप्तः-
इति रामेश्वर निरूपणं
- इति शं -

अथ द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पणस्य द्वादशः सर्गः ---

अथ घुश्मेश्वरनिरूपणम्–

ज्योतिर्द्वादशधाविमज्य सहसा यत्तेजसः कारणं,
दध्येयेन वपुःस्वयंनवनवं त्रैलोक्य लीलाधरः।
कल्पान्तेऽपि च विश्ववीज सदृशश्चाव्यक्तमन्तर्हित,
स्तं वन्दे सुरनायकं सुरगुरूं घुश्मेश्वरं शंकरम्।।1।।

हिन्दी अनुवादः– जिसने समस्त संसार के तेज का एकमात्र कारण आन्तरिक प्रकाश को वारह रूपों में विभक्त करके प्रत्येक में नवीन नवीन शरीर धारण किया । जो तीनों लोकों में अपनी लीला का नित्य प्रति खेल किया करता है। प्रलय के वाद भी जो संसार की सृष्टि के वीज के समान अव्यक्त रूप में अन्तर्हित रहने वाला है। उस देवताओं के स्वामी एवं सभी देवों के द्वारा पूज्यनीय घुश्मेश्वर महादेव की मैं वन्दना करता हूँ।

ध्यायन्ती यमशेषकारणपरं घुश्मा सती संततं,
पुत्रं चापि भृतं पुनः कृतवती संजीवितं सेवया।
भक्त्या नित्यवृतेन संयम वशात्संस्थापितं पल्वले,
तं वन्दे वृषकेतनं पुनरहो! घुश्मेश्वरं सर्वदा।।2।।

हिन्दी अनुवादः– जिस संसार के परम कारण शिवजी का ध्यान करती हुई घुश्मा नाम की सती ने अपनी अनवरत सेवा के द्वारा अपने मरे हुये पुत्र को पुनः जीवित कर लिया तथा अपनी अनन्य भक्ति के द्वारा एवं अपने नियम संयम के कारण जिसको तालाव के अन्दर स्थापित किया था। उन घुश्मेश्वर भोलेनाथ की मैं सदैव वन्दना करता हूँ।

सुदक्षिणस्या दिशि देवपर्वत,
स्यधस्थितो वेरूतनामधेयकः।
विशाल ग्रामो विरराज भारते,
यथा च नक्षत्रपतिः नभस्तले।।3।।

हिन्दी अनुवादः– दक्षिण दिशा में देव पर्वत की तलहटी में एक वेरूत नाम का ग्राम हमारे भारतवर्ष में उसी प्रकार सुशोभित हुआ जैसे आकाश में

श्रीघुश्मेश्वरम्

तारों के मध्य चन्द्रमा सुशोभित हुआ करता है।

तदन्तरे सः द्विजराज विश्रुतः ,
सतां सुधर्मोऽप्यवसत्परं वशी।
स वेद वेदाङ्ग विशारदोद्विजः,
सरस्वती सूनुरिवाभवत्सुधीः।।4।।

हिन्दी अनुवादः— उस ग्राम के अन्दर श्रेष्ठ ब्राह्मणों में प्रसिद्ध सज्जनों में परम धार्मिक अपनी इन्द्रियों को वशीभूत करने वाला एक सुधर्मा नाम का ब्राह्मण रहता था। वह समस्त वेदों में तथा उनके अंगभूत शास्त्रों में उसी प्रकार चतुर था। जैसे ब्रह्मा के पुत्र नारद जी समस्त शास्त्रों में परम प्रवीण थे।

द्विजस्य भार्या नितरां पतिवृता,
समाचरन्ती सततं सतीवृतं।
स्वयं सुदेहा मणिदीपवच्च सा,
ततश्च ख्यातिं प्रययौ भुवस्तले।।5।।

हिन्दी अनुवादः— उस ब्राह्मण की धर्मपत्नी सती नारियों के समान पतिव्रता थी। वह अपने पतिव्रत धर्म का नित्य पालन करती हुई तथा मणियों एवं दीपकों के समान अपने शरीर से सुन्दर होनें के कारण उसका सुदेहा नाम भी था। इसीलिये वह समस्त पृथ्वी तल पर परम विख्यात हो गई।

तथापि सां पुत्रविहीन जीवनं,
सुयापयन्ती सततं दिने दिने ।
विलोक्य कस्यापि सुतं सुवत्सलं,
रूरोद शून्ये सदने स्वयं सती।।6।।

हिन्दी अनुवादः— फिर भी वह सुदेहा पुत्र विहीन अपना जीवन व्यतीत करती हुई, तथा किसी का सुन्दर वालक देखकर वह वेचारी सती अपने शून्य घर में वैठकर प्रति दिन रोती रहती थी।

अथैकदा सा निजगाद ब्राह्मणं,
सुतं विना कान्त! मनः विदूयते।
शतैर्प्रयत्नैश्च सुतो न लभ्यते,

कुलांङ्गनांडकाभरणंहि संततिः।।7।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद एक दिन उस देवी ने अपने स्वामी उस व्राह्मण से कहा कि हे पतिदेव! पुत्र के विना अव मेरा मन वहुत खिन्न होता जा रहा है। सैकड़ों प्रयत्नों के द्वारा भी पुत्र प्राप्त नहीं हुआ । क्योंकि कुलीन वंश की नारी की गोद का भूषण सन्तान ही मानी जाती है।

अथान्यभार्या परिणीय सुन्दरीं,
विधीयतां यत्नमतः परंप्रभो! ।
सुतेन वंशोऽपि प्रवर्धते स्वयं,
प्रयाति चाऽन्तेऽपि सुखेन जीवनम्।।8।।

हिन्दी अनुवादः– इसलिये हे स्वामी! दूसरी सुन्दर पत्नी से विवाह करके आप सन्तान प्राप्ति का अन्य उपाय करें । क्योंकि पुत्र से वंश की अनुदिन वृद्धि होती रहती है। और व्यक्ति का जीवन भी सुखपूर्वक व्यतीत हो जाता है अर्थात् संसार में सन्तान होना नितान्त आवश्यक है।

निशम्यकान्तावचनं प्रियंवद,
स्ततः सुधर्मः निजगाद सस्मितः।
स्वयं विधाता व्यथते नताननः,
गतिश्च ज्ञातुं गृहयोषितामपि।।9।।

हिन्दी अनुवादः– अपनी धर्मपत्नी सुदेहा की वात सुनकर वह सुधर्मा नाम का ब्राह्मण कुछ मुस्कराता हुआ उससे वोला वस्तुतः ब्रह्मा जी भी घर वाली औरतों की गति जानने के लिये सिर झुकाकर वेदना का अनुभव किया करते हैं। क्योंकि घर की औरतें कुछ कहा करती हैं। तथा कार्य उसके विपरीत किया करती हैं।

वदन्ति किंचित्प्रहसन्ति संततं,
रूदन्ति पूर्वहिं ततः प्रियं वचः।
क्षणे स्वयं ताः परिहास विह्वलाः,
तुदन्ति कान्तं मृगसिंहयोरिव।।10।।

हिन्दी अनुवादः– वे स्त्रियाँ वोलती कम हैं। किन्तु हँसती अधिक हैं।

पहले रो लेती हैं। वाद में मीठी मीठी बातें करती हैं। एक ही क्षण में वे हँसी के कारण व्याकुल भी हो जाती हैं। वास्तव में घरेलू औरतें अपनी आदत से अपने स्वामी को हिरन और सिंह के समान पीड़ित किया करती हैं। हिरन जैसे सिंह को देखकर सहम जाता है। वैसे पतिजन औरतों को देखकर डर जाते हैं।

कदापि ताः प्रीति वियोगविह्वलाः,
विहाय कान्तं सहसापितुर्गृहम।
सुनिश्वसन्त्याः भ्रमरीव विभ्रमात्,
प्रयान्ति प्रायः प्रसभं गृहस्त्रियः।।11।।

हिन्दी अनुवादः– कभी–कभी प्रेम के वियोग से विह्वल होकर वे घरेलू औरतें ,अपने स्वामी को छोड़कर, भ्रम बस भ्रमरी के समान लम्बी–लम्बी आहें भरती हुई अपने पिता के घर लगभग जबरदस्ती ही चली जाती हैं। अर्थात् अज्ञानता बस उन्हें अपने पतियों की परवाह भी नहीं रहती।

कदाचिदौत्सुक्य वशाद वशीकृताः
विदन्ति वंशस्य कुलकमं न ताः।
भजन्ति दुर्दान्तकवत्पतीनिमाः,
रूदन्ति पश्चान्निभृतं दिने दिने।।12।।

हिन्दी अनुवादः– कभी–कभी तो उत्सुकतावश बशवर्ती होने बाली ये स्त्रियां अपने वंश की मर्यादा का भी ध्यान न रखकर यमराज के समान राक्षस पतियों का बरण कर लेती हैं। जिसके कारण वे एकान्त में प्रतिदिन रोया करती हैं। अर्थात् वे भावुकता बस अपने भले या बुरे पति का ध्यान नहीं रख पातीं।

निशम्य सा कान्तपरं प्रियं वचः,
ससर्ज भूयो न तया दुराग्रह।
चकार पश्चात्परिणीतवंधनं,
बिचिन्त्य विप्रः परवानिबान्ततः।।13।।

हिन्दी अनुवादः– वह सुदेहा अपने स्वामी के सुन्दर बचन सुनकर भी अपनी हठबादिता नहीं छोड़ सकी। अन्त में उस ब्राह्मण सुधर्मा ने पराधीन के समान उसके बार–बार कहने पर अपना विवाह कर लिया।

ततस्तदीर्ष्याविषवल्लरी स्वयं ,

प्रवर्धयन्ती सततं दिनेदिने।

अवाप तन्नाशतरोरिवायता ,

ग्रहं विनष्टुं हृदये निरन्तरं।।14।।

हिन्दी अनुवादः-इसके वाद उस सुदेहा के हृदय में ईर्ष्या रूपी विष की वेल लगाातार प्रतिदिन बढती हुयी विनाश रूपी पेड़ को प्राप्त करने के लिये तथा समस्त घर को नष्ट करने के लिये पूर्ण बढ़कर तैयार हो गयी अर्थात् अब वह उस सौत से अनुद्रिन ईर्ष्या करने लगी।

स्वभावजन्या खलुयोषितां गति ,,

दुर्नोति नित्यं निज स्वामिनामपि।

परं प्रपन्नार्तिविलोलचापलम् ,

दहत्यशूनाशु वनं यथाग्निना।।15।।

हिन्दी अनुवादः-स्त्रियों की गति स्वभाविक ही ज्वलनशील होती है। वह सदैव स्वामियों को भी वरवश पीड़ित किया करती हैं। किन्तु बुद्धि की विशेष चतुरता उनके प्राणों को भी उसी प्रकार नष्ट करके जला डालती है। जैसे जंगलों को दावाग्नि जला डालती है।

यथा सुदेहा भगिनी तथैव सा,

सुनाम घुश्मा शरदेन्दुवच्छविः।

सुकोमलांगी वचनेन शारदा,

पतिवृता धर्मपरायणा सती।।16।।

हिन्दी अनुवादः- जैसी सुदेहा थी वैसी ही उसकी वहिन भी नितान्त सुन्दरी एवं शरद् ऋतु के चन्द्रमा के समान शोभा सम्पन्न थी। उसके समस्त अंग प्रत्यंग नितान्त कोमल थे। वाणी में सरस्वती के समान थी। तथा पतिव्रता धर्म का पालन करने वाली ब्राह्मण की दूसरी पत्नी का नाम घुश्मा था।

निशान्त कालेऽपि दिवात्यये चसा,

समर्चयामास शिवं सपर्यया।

ततः परं कान्तनितान्त सेवया,
चकार पश्चादशनादिकाः क्रियाः।।17।।

हिन्दी अनुवादः— वह सती घुश्मा प्रातः काल एवं सायंकाल के समय नित्य प्रति शिवजी की पूजा किया करती थी। इसके वाद स्वामी की सेवा करने के पश्चात् ही अपने दैनिक भोजन इत्यादि सभी कार्य किया करती थी।

ततः सुदेहा क्रमशः शनैः शनैः,
सदा प्रजज्वाल कृशानुवत्तदा।
चुकोप तस्यै विवशा क्षणे क्षणे,
स्वकान्त प्रीत्या परयोषितामिव।।18।।

हिन्दी अनुवादः— इसके वाद सुदेहा धीरे धीरें उससे अग्नि के समान नित्य प्रति जलनें लगी तथा वह पराधीन होकर उससे अपने पति से स्नेह करने के कारण उसी प्रकार नाराज होकर नाक भौहें सिमेटने लगी जैसे परायी स्त्रियों को अपने पति से स्नेह करते हुये देखकर घर की औरतें नाराज होने लगती हैं।

स्वभावजन्या प्रमदामनोदशा,
विदन्ति चान्तेऽपि मर्हषयः ध्रुवं।
अतस्तु ते योगवलेन संततं,
प्रयान्ति प्रायः ह्यभयं पदं हरेः।।19।।

हिन्दी अनुवादः— स्त्रियों की स्वाभाविक मनोवृत्ति अन्त में महर्षि लोग अवश्य ही जान लेते होंगे। इसीलिये वे अपनी योग क्रिया के वल से ईश्वर के निर्भय परम पद को प्राप्त कर लिया करते हैं। अन्यथा यदि उन्हें स्त्रियों के स्वाभाव का परिचय न होता तो वे भी संसार का कभी परित्याग नहीं कर पाते।

विवेद तेनात्र कदापि वेधसा ,
स्वयं मनोवृत्ति रहो! नच स्त्रियां।
ननिर्मितिश्चादधते भ्रमादसौ,
भवन्ति नार्यः मधुमक्षिका इव।।20।।

हिन्दी अनुवादः— ब्रह्मा जी भी स्त्रियों की मनोवृत्ति से वास्तव में परिचित नहीं थे। नहीं तो नारी का निर्माण वे इस संसार में कभी नहीं करते क्योंकि नारियां

तो मधुमक्खियों के समान हुआ करती है।

राज्ञां राजगृहेष्वपीह विवशाः सर्वत्र नारीजनाः,
सर्वानन्द पयोधिमध्यविलसच्चेर्ष्यन्ति द्रुह्यन्ति च।
कामं वैभववित्तपूरितमनाः सन्तोष रूपं धनं,
हित्वा ताः वृण्वन्ति केवलमहो! स्वार्थ पशूनामिव।।21।।

हिन्दी अनुवादः— राजाओं के रनिवासों में भी स्त्रियां, आनन्द रूपी सागर के मध्य विलास करती हुई हर जगह ईष्या एवं वैर ही किया करती हैं। यद्यपि धन धान्य से हर तरह परिपूर्ण हृदय होकर भी वे स्त्रियां सन्तोष रूपी धन को छोड़कर केवल पशुओं के समान स्वार्थ को ही एकमात्र वरण किया करती हैं। इसके अलावा उन्हें कहीं कुछ भी नहीं दिखायी देता।

अवाप घुश्मा पति सेवया फलं,
ततोहि सद्यः समये स्वयं सती।
असूत पुत्रं सुदिने पतिव्रता,
नवौषसा भिन्नभिवैक पंकजम्।।22।।

हिन्दी अनुवादः— उस पतिव्रता सती घुश्मा ने अपने पति की निरन्तर की गयी सेवा के फलस्वरूप सुन्दर दिन के समय एक पुत्र को उसी प्रकार सहसा जन्म दिया, जैसे उषा काल के समय सूर्य का प्रकाश पड़ने से कमल खिल जाता है।

विलोक्य तं वालसुतं मनोहरं ,
प्रसाद पूर्णाश्रुमुखी पतिवृता।
जगाद सद्यः भगिनी हितेन सा,
कुलंहि पण्येन सदैव वर्धते।।23।।

हिन्दी अनुवादः— उस छोटे से अपने पुत्र को देखकर वह पतिव्रता घुश्मा अपनी सगी वहन सुदेहा से प्रशन्नता के आसुओं को नेत्रों में धारण करके वड़े प्रेम से वोली हे वहन! वंश भी सदैव पुष्पों के फलस्वरूप ही अनवरत वृद्धि को प्राप्त हुआ करता है।

ततः क्षते क्षारनिवात्म पीडया,
जगादकिंचिन्न ययौ सहोदरी।
सुनिःश्वसन्ती गृहचत्वरेपुन--,
र्महोरगीवात्ममुदं न सादधे।।24।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद वह सुदेहा घाव पर छिड़के हुये नमक के समान अपनी आन्तिरिक वेदना के कारण वह न तो वहां गयी और न उससे वोल भी सकी वह अपने घर के चवूतरे पर सर्पिणी के समान गरम गरम श्वासें भरती हुई वैठी रही अर्थात् उसे उस वालक के जन्म से कोई आनंद प्राप्त न हो सका ।

अहो विधातः! कठिनीकृतं मनः,
कथं च लोकस्य सुयोषितामपि।
सदैव चेर्ष्यन्तिं मुधा परस्परं,
द्विषन्ति भाग्येष्वपि ताः निरंतरम्।।25।।

हिन्दी अनुवाद :– हे विधाता ! तुमने संसार की सुन्दर स्त्रियों के भी मन को इतना कठोर कैसे बनाया होगा। जो वे आज भी आपस में सदैव ईर्ष्या किया करती हैं। तथा हर प्रकार से सम्पन्न होने पर भी दूसरे के बढ़ते हुए सौभाग्य पर अकारण द्वेष भाव क्यों करती हैं अर्थात् स्त्रियों के स्वभाव को तुमने प्राकतिक रूप में ईर्ष्यालु क्यों बनाया।

भवन्ति लोके विवुधां न शत्रवः,
न चापि हिंसापि मनः प्रवाधते।
तथापि धीराः प्रमदासुखं पुन–
र्विहाय गच्छन्ति वनं मर्हषयः।।26।।

हिन्दी अनुवाद :– इस लोक में विद्वानों के शत्रु भी नहीं होते तथा न हिंसा ही उनके मन को कष्ट पहुंचा सकती है। फिर भीं धैर्यवान् महर्षि लोग स्त्रियों के सुख को त्याग कर बन को चले जाते हैं। अर्थात् स्त्रियों के स्वभाव से पीड़ित होकर सज्जन लोग अपना घर बार स्वयं छोड़ दिया करते हैं।

विलोक्य तस्याः दुरितं भृशं मनः,
शुशोच पश्चादपि सः महीसुरः।
प्रवोध्य तामत्र प्रियामनेकधाः,
ददर्श चान्तेऽपि न तां प्रहर्षिताम्।।27।।

हिन्दी अनुवादः– उस ब्राह्मण सुधर्मा ने अपनी स्त्री के मन को अत्यधिक दूषित देखकर बाद में उसने भी पश्चाताप किया। किन्तु उसे अनेक बार समझाने बुझाने के बाबजूद भी उसने उसे कभी प्रसन्न मुद्रा में नहीं देख पाया अर्थात् उस सुदेहा की ईर्ष्या एवं जलन दिनों दिन बड़ती ही गयी।

द्विजोऽपि नित्यं बृतपूजनांदिभि–
स्तुतोष प्रायः सहसाशिवं सदा।
ततश्च नीराजनयाऽप्यहर्दिवं,
चकार सन्ध्यासमये विसर्जनम्।।28।।

हिन्दी अनुवादः– वह ब्राह्मण सुधर्मा नित्य ब्रत एवं पूजन आदि के द्वारा सदैव शिवजी को प्रशन्न किया करता था। इसके बाद वह धनवान् ब्राह्मण संध्या के समय नित्य प्रति शिवजी की आरती किया करता था। इसके बाद बिसर्जन कर देता था।

ततः सुदेहा गृहदीपमर्भकं ,
विलोक्य नित्यं च वभूवविह्वला ।
रूरोद शून्ये गृहचत्त्वरे स्थिता,
यथा वियोगे मृतभर्तृकावधू।।29।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद वह सुदेहा घर के प्रकाशवान् दीपक के समान उस बच्चे को देखकर नित्यप्रति व्याकुल होती रहती थी। वह शून्य घर के वाहरी चबूतरे पर बैठी हुई उसी प्रकार रोती रहती थी जैसे पति के मर जाने पर कोई वहू एकान्त में बैठकर रोया करती है।

पुपोष वृद्धि कमशः शनैःशनैः,
स्तथा शरीरावयवैः द्विजांकुरः।
यथा रबेरंशुभिरद्भुतद्युतिः,
प्रवर्ध्यमानः खलु बालचन्द्रमाः।।30।।

हिन्दी अनुवादः— वह ब्राह्मण का बालक धीरे—धीरे नित्य प्रति अपने शरीर के अंग प्रत्यंगों से उसी प्रकार बृद्धि को प्राप्त होने लगा। जैसे सूर्य की किरणों से अलौकिक कान्ति बाला चन्द्रमा प्रतिदिन बढ़ता हुआ पूर्णता को प्राप्त कर लेता है।

तमीर्ष्यन्ती सततं व्यथातुरा,
स्वकान्तसेवापि मुमोच सर्वथा।
निवास शैय्यासनभोजनादिकं,
चकार गेहाव्दहिरेव संततम्।।31।।

हिन्दी अनुवादः— वह सुदेहा अपनी आन्तरिक वेदना के कारण उस पति से भी ईर्ष्या करने लगी। अब उसने अपने पति की सेवा करना भी छोड़ दी। उसने अपना निवास ,सोना, उठना, बैठना तथा खाना पीना भी घर से वाहर रह कर प्रारम्भ कर दिया।

युवासुतं वीक्ष्य तथा महीसुरः,
विचारयामास गृहे मुहुमुर्हुः।
विदन्ति यूनां सततं मनोगतं,
त एव विन्दन्ति परं सुखं वुधाः।।32।।

हिन्दी अनुवादः— जवान बालक देखकर उस ब्राह्मण ने अपने घर में बार—बार विचार किया जो लोग युवकों की मानसिक भावनाओं का भली प्रकार परिज्ञान करते हैं,वे ही बुद्धिमान् लोग सदैव ही सुख के भागी हुआ करते हैं।

निवृत्य सद्यश्चविवाह कौतुकं,
ततः परं तत्र विवेकवान्द्विजः।
अविन्ददन्तेऽपि कुलाङ्गना वधूः,
यथान्धकारे विमला शशिप्रभा।।33।।

हिन्दी अनुवादः— उस बुद्धिमान ब्राह्मण ने उस वालक का विधिविधान पूर्वक विवाह संस्कार कर दिया । इसके वाद उसनें अपने वंश के अनुसार चरित्रवती वधू उसी प्रकार प्राप्त की जैसे अन्धकार के समय चन्द्रमा की चाँदनी दिखायी पड़ती हैं।

गता न सा तस्य महोत्सवे क्वचि–,
न्ननन्द नान्तेऽपि सुतं न वा वधूं।
परं सुदेहा वृष भानु वदह्वदि–
दधौ शुचं नैव मुदं मनागपि।।34।।

हिन्दी अनुवादः– वह सुदेहा उस वालक के विवाह संस्कार में भी वहां नहीं गई तथा अन्त तक उसने पुत्र तथा पुत्रवधू किसी का भी अभिनन्दन नहीं किया। इसके अलावा सुदेहा वृष राशि के सूर्य के समान जलती हुई केवल शोक ही हृदय में धारण कर सकी। परन्तु उसे अन्त तक उस वालक के विवाह से प्रशन्नता का अनुभव नहीं हुआ।

अभीर्ष्ययन्ती सततं सुतं पुनः,
स्तथैव सा पुत्रवधूमियं वृथा।
अमन्यदन्तः करणे द्वयोःसुखं,
यथावियोगे धनहीनजीवनम्।।35।।

हिन्दी अनुवादः– वह सुदेहा जैसे पुत्र से लगातार व्यर्थ ही ईर्ष्या कर रही थी। उसी प्रकार नवागत वहू से भी उसने ईर्ष्या करना प्रारम्भ कर दिया। उसने उन दोनों के सुख को अपने हृदय में उसी प्रकार स्थान दिया जैसे वियोग के समय गरीवी के कष्ट का अनुभव होता है।

अहो विधात! स्तव हस्त कौशलं,
नमामिनित्यं मनसा क्षणे क्षणे।
विनिर्मितं चात्र कथं सुयोषितां,
मनस्त्वया बज्रसमं क्व दारूणम्।।36।।

हिन्दी अनुवादः– हे ब्रह्माजी! तुम्हारे हाथ की कारीगरी को मैं क्षण क्षण हृदय से नमस्कार कर रहा हूँ। तुमने इस संसार में सुन्दर स्त्रियों के हृदय की रचना वज्र के समान इतनी कठोर कैसे कर पाई होगी। वस्तुतः स्वरूपवती नारियां हृदय से नितान्त कठोर हुआ करती हैं।

पुरस्त्वया शुष्कमनः मरूस्थले,
चकार चेर्ष्या वृततिः समन्ततः।

तदन्तरे विल्वफलान्वितौ तरू,
न्यधायिषातां सहसा कथं विधे!।।37।।

हिन्दी अनुवादः– हे ब्रह्माजी ! पहले तुमने नारी के शुष्क मन वाले मरूस्थल में ईर्ष्या रूपी वेल चारों ओर से लगा दी। इसके वाद वेल जैसे फलदार दो कटीले पेड़ कैसे लगा पाये अर्थात् बगीचे में इन कठोर वेल के दो पेड़ों का क्या काम था।

घृणान्त कौटिल्य निरीहता त्रपा,
प्रवंचना दम्मदुराग्रहादिभिः।
लताभिरन्तः प्रतिवेश्य क्रूरता –
रसेन नारी हृदयं विनिर्मितम्।।38।।

हिन्दी अनुवादः– हे ब्रह्माजी! घृणा से उत्पन्न कुटिलता, नीरसता, लज्जा तथा ठगी, करना, कपट, दुराग्रह आदि समस्त प्रकार की वेले लगाने के वाद तुमने कठोरता रूपी लता के रस से स्त्री का हृदय वनाया था। अन्यथा इतना कठोर हृदय कैसे होता।

क्रमेण तस्या हृदये प्रवर्धिनी,
ववर्धहिंसाविषवल्लरी सदा।
फलं समक्षं ह्ययधिगत्य भीषणं ,
शशाम चाऽन्तेऽपि नसा द्विजांड्गना।।39।।

हिन्दी अनुवादः– क्रम से उस सुदेहा के हृदय में अनुदिन वढ़ने वाली हिंसा की विष वेल दिनों दिन वढ़ती गई । यद्यपि इसका फल भी प्रत्यक्ष ही समझकर भी वह ब्राह्मण की धर्म पत्नी किसी तरह शान्त न हो सकी।

अथैकदा विप्रसुतं वधू समं,
नितान्त सुप्तं सहसा द्विजांड्गना।
समीक्ष्य सद्यः ननु स्रस्तरे तदा,
जघान खड्गेन द्रुतं पशोरिव।।40।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद एक दिन वहू के साथ विस्तर पर सोते हुये उस ब्राह्मण वालक को देखकर, उस सुदेहा ने प्रातःकाल उठकर तलवार से उसकी

पशु के समान हत्या कर दी। अर्थात् तलवार से उसकी हत्या करके मार डाला।

ततः परं तस्य शवं द्विजाङ्गना,
पटेन संवेष्टय तदाशु पल्वले।
द्रुतं हि चिक्षेप तथा निसाचरी,
यथा सुवित्तं परयोषितामिव।।41।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद उस सुदेहा ने उस वालक के शव को कपड़े में लपेटकर तुरन्त तालाव में उसी प्रकार फेंक दिया जैसे चरित्रहीन व्यक्ति अपना धन परायी स्त्रियों को लुटा देता है अर्थात् उसे उस वालक से विल्कुल मोह नहीं हुआ।

तथापि माता न विवेद तत्क्षणं,
सुतस्यवृत्तान्तमहो! कथंचन।
तदा समुत्थाय वधू च स्रस्तरे,
ददर्श रक्तं न पतिं पतिंवरा।।42।।

हिन्दी अनुवादः– फिर भी इस पुत्र वध के बृतान्त को माता घुश्मा किसी तरह नहीं जान पाई । तव वहू ने उठकर प्रातःकाल के समय अपने विस्तर पर अपने स्वामी को न देखकर केवल उसका खून देखा।

रूरोद सद्यः सहसाति विह्वला,
मृगीव सा चाश्रुमुखी मुहुर्मुहुः।
ददर्श शून्येऽपि न तं पतिं पुनः,
सतीजनानां सततं प्रियो पतिः।।43।।

हिन्दी अनुवादः– वह ब्राह्मण वधू तुरन्त आंखों में आंसू भरे हुये मुख वाली हिरनी के समान व्याकुल होकर सहसा रो पड़ी। उसने शून्य में भी अपने पति को नही देख पाया। क्योंकि सती नारियों को पति सवसे अधिक प्यारा होता हैं।

तथापि घुश्मा शिव पूजने रता,
शुचं तदन्तर्नविवेश दारूणं।

दृढ़वृतानां न भवत्यधोगतिः,
सदैव रक्षन्ति तदाशु देवता।।44।।

हिन्दी अनुवादः– फिर भी सती घुश्मा शिवजी के पूजन में नितान्त तल्लीन होकर वैठी रही । पुत्र का शोक कठोर होते हुये भी उसके हृदय में प्रवेश न कर सका। कठोर एवं दृण प्रतीज्ञा वाले प्राणियों की कभी अधोगति नहीं होती। उनकी रक्षा देवतागण स्वयं ही तुरन्त ही किया करते हैं।

शतैकलिंङ्गान्शिवमृत्तिकामयान्,
समर्च्य नित्यं सहसा द्विजांङ्गना।
प्रपूज्य भूयोऽपि विभिन्न साधनैः,
ससर्ज सायं खलु पल्वले सती।।45।।

हिन्दी अनुवादः– वह ब्राह्मण की धर्म पत्नी सती घुश्मा मिट्टी के एक सौ एक शिवलिङ्ग वनाकर तथा उनकी विभिन्न साधनों में प्रतिदिन पूजा करके, फिर प्रार्थना करके उन शिवलिंङ्गों को संध्या के समय तालाव में विसर्जन किया करती थी।

वृतेन सानित्यमियं कपर्दिनं,
प्रसादयामास सदैव सुन्दरी।
तथैव विप्रोऽपि ग्रहे पिनाकिन –,
श्चकार नित्यं नियमेन पूजनम्।।46।।

हिन्दी अनुवादः– वह ब्राह्मणी घुश्मा प्रतिदिन इसी प्रकार ब्रत से शिवजी को सदैव प्रशन्न किया करती थी। उसी प्रकार वह सुधर्मा नामक ब्राह्मण अपने घर में ही नित्य नियम पूर्वक शिवजी का ध्यानपूर्वक पूजन किया करता था अर्थात् दोनों ही शिवजी के परम भक्त थे।

विभेति यस्मात्सहसा स्वयं भयं,
तदस्यभक्तं न भयं प्रवाधते।
स्वतः महाकालकराल कान्तिनः,
पिनाकिनः मृत्युरितो विदूयते।।47।।

हिन्दी अनुवादः–जिस शंकर से डर स्वयं डरता रहता है। इसीलिये

शिवजी के भक्त को भय कभी भी पीड़ित नहीं कर पाता। महाकाल की साक्षात् आकृति धारण करने वाले शिवजी से यमराज सदैव दुःखी रहता है अर्थात् शिवजी के भक्त से मृत्यु भी डरती रहती हैं।

विधाय घुश्मा शिवलिंड्ग पूजनं ,
विसर्जितुं सा च ययौ सुपल्वले।
ददर्श सद्य सहसा समास्थितं,
शिवस्यचाग्रे प्रणताननं सुतम्।।48।।

हिन्दी अनुवादः– इसके वाद सती घुश्मा शिवजी के मिट्टी के शिवलिंड्गों का पूजन करके, उनका विसर्जन करने के लिये जव तालाव पर पहुंची तव उसने अपने समक्ष वैठे हुये तथा शिवजी के आगे सिर झुकाये हुये उस पुत्र को देखा।

विलोक्य तां विप्रप्रियां दृढ़वृतां,
जगाद साक्षाज्जगतीपतिः शिवः।
परं प्रशन्नोऽस्मि वृणीष्व मे वरं,
मदीय विश्वासजुषां न व्याधयः।।49।।

हिन्दी अनुवादः– कठोर वृत करने वाली उस ब्राह्मण की धर्म पत्नी घुश्मा को देखकर संसार के स्वामी शिवजी सविग्रह उपस्थित होकर उससे कहने लगे हे देवी! मैं तुमसे परम प्रशन्न हूँ। अतएव तुम मुझसे वरदान मांग लो क्योंकि मुझ पर विश्वास करने वाले प्राणियों को संकट नहीं आते।

निशम्य वाणी सहसा पिनाकिनः,
जगाद सा विप्रवधू ततः परं।
वृणोमि किं नाथ! वरं प्रदेहि मे,
भवन्ति भक्तार्तिहराः हिदेवताः।।50।।

हिन्दी अनुवादः– शिवजी की वाणी सुनकर वह ब्राह्मण की पत्नी घुश्मा नितान्त विनम्रता पूर्वक उनसे वोली। हे स्वामी! मैं क्या वरदान मांगू । आप मुझे इच्छानुसार स्वयं ही वरदान दे दें । क्योंकि देवतागण स्वयं ही भक्तों की वेदना दूर करने वाले हुआ करते हैं।

मम्मैव नाम्ना शिवधाम संततं ,
प्रसिद्धिमीयाद्भुवने समन्ततः।
नमामि नित्यं भवसिन्धु मुक्तये,
भवच्छिदं त्वां नितरा जगत्पते! ।।51।।

हिन्दी अनुवादः— हे संसार के स्वामी शिवजी ! मेरे ही नाम से यह आपका धाम समस्त पृथ्वी तल पर प्रसिद्धि को प्राप्त हो तथा संसार सागर से मोक्ष प्राप्त करने के लिये संसार के बन्धनों को नष्ट करने वाले आपको मैं सदैव नमस्कार या प्रणाम करती रहूँ

त्वमादिदेवः भगवन्! जगत्त्रये,
भजन्ति त्वामेव सदा महर्षयः।
नतोऽस्मि भूयो करूणालयं चत्वां,
नमन्ति नित्यं श्रुति शेषशारदाः।।52।।

हिन्दी अनुवादः— हे देव! आप तीनों लोकों में प्रारम्भिक देवता हैं। आपका सभी मुनीगण हमेशा ही भजन किया करतें हैं। आपको समस्त वेद, शेषनाग तथा सरस्वती व सभी देवगण सदैव प्रणाम किया करते हैं। इसीलिये मैं आपको वार वार प्रणाम कर रही हूँ।

दत्वास्यैः वृषकेतनः शुभवरं प्रायः मनोवांछितं,
भूयस्तं च सुतं सुपल्वलमिदं चालोक्य नेत्रैः पुनः।
पश्चाद्विप्रवधूं विपन्नवदनां लिंड्गं च ज्योतिर्मयं,
वव्रे तत्र च तां जगत्त्रयपतिः सद्यः यतीनामिव।।53।।

हिन्दी अनुवादः— भगवान् भोलेनाथ ब्राह्मण वधू घुश्मा को मनोवांछित वरदान देकर, फिर दोवारा उस वालक एवं तालाव तथा कुम्हलाये हुये मुख वाली उस घुश्मा एवं उस शिवलिंड्ग को अपनी आंखों से कई वार देखकर तीनों लोकों के स्वामी शिवजी उससे योगीजनों के समान फिर वोले।

पठन्ति श्रण्वन्ति कथाश्च ये जनाः,
नितान्त भक्त्या सततं पिनाकिनः।

त एवं सर्वत्र विमुच्य वन्धनाद्,
भवाधि सिन्धौ न पतन्ति मानवाः।।54।।

हिन्दी अनुवादः– हे पुत्री! जो लोग इस ज्योतिलिंड्ग की कथाओं का श्रद्धा पूर्वक पठन पाठन अथवा श्रवण तन्मयता पूर्वक एवं मेरा ध्यान लगाकर किया करते हैं। वे संसार के वन्धनों से छुटाकारा प्राप्त करके, दुवारा संसार में जन्म नहीं लेते अर्थात् उनकी निश्चय ही मुक्ति हो जाती हैं।

ज्योतिर्द्वादशलिंड्ग दर्पण कथाः मच्छम्मुनोदीरिता,
ध्यानावास्थित मुद्रया पुनरहो ! श्रण्वन्ति ये तेवुधाः।
तेषां नैव भयं कदापि विपिने गेहेऽपि वा भूतले,
चाऽन्ते ब्रह्मपदं प्रयान्ति सततं लोके सतां संगतिः।।55।।

हिन्दी अनुवादः– हे पुत्री! द्वादश ज्योर्तिलिंग दर्पण की समस्त कथायें मेरे द्वारा कही गयी हैं। जो वुद्धिमान् प्राणी इन्हें ध्यान की मुद्रा में अबस्थित होकर केवल सुन भी लेते हैं। उन्हें घर वन एवं धरती पर कभी किसी प्रकार का भय नहीं होता। अन्त में बे लोग व्रह्म पद को बड़ी आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। इसके अलावा जब तक बे इस संसार में रहते हैं तब तक उन्हें सदैब सज्जनों का सत्संग प्राप्त हुआ करता है। तात्पर्य यह है कि मेरी कृपा से उन भक्तों को कहीं कोई कष्ट नहीं होता।

शिवेन संप्राप्य वरं द्विजागना,
जगाद चाऽन्ते वृषकेतनं पुनः,
अहो जगन्नाथ ! वरं प्रदेहि में,
वृणोमि चान्ते कृपया महेश्वर !।।56।।

हिन्दी अनुवाद :– शिवजी से सभी बरदान मांगने के बाद वह ब्राह्मण प्रिया घुश्मा शिव जी से बोली। हे संसार के स्वामी शिवजी मैं अन्तिम बरदान आपसे मांग रही हूँ। आप कृपा करके मुझे अवश्य दे दें।

यथा वियोगे प्रमदा प्रियं प्रिया,
प्रियां प्रियः जीवनबत्प्रतीयते।

तथैव त्वामद्यवृणोमि संततं,
प्रियः प्रियाया इव मे प्रियोभव ।।57।।

हिन्दी अनुवादः– हे शिवजी! वियोग की अवस्था में जैसे प्रियतम को प्रियतमा प्यारी लगती है तथा प्रियतमा को प्रियतम अपने जीवन के समान नितान्त प्रिय प्रतीत होता है। उसी प्रकार मैं आपको सदैव के लिए मांग रही हूँ। अतएव आप मुझे प्रियतमा एवं प्रियतम के समान सदैव प्रिय लगते रहें।

निधाय चान्तः करणे जगत्पते!,
भजामि नित्यं तब पादपंकजम्।
तवैवरूपंबिमलं ह्वधोक्षजं,
सदैव पश्येयमहं त्वहर्दिवम्।।58।।

हिन्दी अनुवादः– हे संसार के स्वामी शिवजी ! आप के चरण कमलों को मैं अपने हृदय में धारण करके आपका सदैब भजन करती रहूं। तथा आपके निष्कलंक एवं संसार के अध्यापतन को नष्ट कर देने बाले स्वरूप को मैं रात दिन अपनी आखों से देखती रहूँ।

तवैव ध्यानेन सदा जगत्प्रभो !,
विहाय संसार दुरन्तबन्धनं।
वृजामि चाऽन्तेऽपि च तेऽमलंपदं,
यथा वृजन्त्याशु सदा महर्षयः।।59।।

हिन्दी अनुवादः– हे संसार के स्वामी शिवजी ! तुम्हारे ध्यान के द्वारा मैं संसार के समस्त कठोर बंधनों से रहित होकर आप के उस अलौकिक एवं निर्मल पद को प्राप्त करूं। जैसे मुनिजन आपके ध्यान द्वारा बड़ी सरलता से आपके पद को प्राप्त कर लेते हैं।

विदन्तिरूपं न च मादृशाः जनाः,
न वा सपर्या विधिवद्विधानतः।
तथापि मे नाथ ! निवार्य दुगुर्णान्,
प्रदेहि नूनं शरणं जगत्पते !।।60।।

हिन्दी अनुवादः– हे संसार के स्वामी भोलेनाथ! हम सरीखे संसारीजन आपके वास्तविक स्वरूप को नहीं जानते। तथा विधि विधानपूर्वक आपकी पूजा भी न जान सके। अतएव आप फिर भी मेरे शारीरिक दुर्गणों को दूर करके अपनी अलौकिक शरण अवश्य प्रदान कर दें।

ततश्च घुश्मा तरूवत्समाश्रिता,
ययौ न तस्थौ सहसाभुवस्तले।
निधाय चान्तः करणे जगत्पतिं,
रूरोद भूयोऽपि वियोगविह्वला।।61।।

हिन्दी अनुवादः– इसके बाद वह घुश्मा वृक्ष के समान अवस्थित होकर न प्रथ्वी पर चल सकी और न खड़ी ही रह सकी। शिवजी को अपने अन्तःकरण में समाहित करके शिवजी के वियोग की सम्भावित चिन्ता के कारण वह व्याकुल होकर रो पड़ी।

समीक्ष्य भूयोऽपि शिवं जटाधरं,
मुहुर्मुहुः विश्वसितान्तरात्मना।
सुनिश्वसन्ती सहसा द्विजाङ्गना,
तमाह प्रीत्या वृषभध्वजं तदा।।62।।

हिन्दी अनुवादः– उन जटाधारी शिवजी को फिर से देखकर बार–बार विश्वस्त हृदय से गरम–गरम श्वासें लेती हुयी वह व्राह्मण की धर्मपत्नी घुश्मा बड़े प्रेम के साथ फिर उन भोलेनाथ से बोली ।

कृतं त्वयानाथ! यथा जगत्त्रये ,
तथान कुर्वन्ति पुनर्दिवौकसाः।
स्वभक्त हेतोःकरूणा कथं प्रभो!
त्वदीयचान्तःकरणेऽपिमार्दवम्।।63।।

हिन्दी अनुवादः–हे स्वामी तीनों लोकों में तुमने जो भी कार्य किया। वह स्वर्ग में निवास करने वाले देवता नहीं कर सकते। हे प्रभुवर!आप के हृदय में अपने भक्त के लिये कितनी कोमलता एवं करूणा कैसे उत्पन्न हुई।

यथाश्रुतंतत्सततं विलोकितं ,
विलोचनाभ्यां चरितं च ते प्रभो!
नचान्यदीहा ह्वदयेऽवशिष्यते ,
भवन्ति सर्वार्तिहराः हि साधवः।।64।।

हिन्दी अनुवादः—हे स्वामी! मैंने आपके विषय में जैसा अबतक सुना था। वैसा ही नेत्रों से प्रत्यक्ष रूप से देख भी लिया है अर्थात् आपका चरित्र प्रत्यक्ष रूप में मुझे आज ही दिखार्द पड़ा। अब मेरे ह्वदय में कोई अभिलाषा शेष नहीं है।क्योंकि सज्जन लोग स्वयं ही दूसरों के कष्टों को हरण करने वाले हुआ करते हैं।

अहो! महामोहनिशा हरः शिवः
कराल कोदण्डधरःप्रजापतिः।
क्षणे महाकालकराल सदृशः
त्वमेव सर्व जगदीश!मे प्रभुः।।65।।

हिन्दी अनुवादः— हे संसार के स्वामी शिवजी! तुम्हीं मोहरूपी निशा (रात्रि) के विनाशक हो। तुम्हीं भयंकर धनुष को धारण करने वाले बृह्मा हो। एक ही क्षण में भयंकर काल के समान वन जाते हो । अतएव आप ही हमारे सब कुछ हो।

नतास्मि त्वामेव पुनर्जगत्पतिं ,
भवान्तकं चापिमरवान्तकं प्रभो!।
महेश्वरं वा जगदीश्वरं शिवं ,
नमन्तिनित्यं दिवि देवदानवाः।।66।।

हिन्दी अनुवादः— मैं संसार के स्वामी , संसार का विनाश करने वाले ,तथा दक्ष प्रजापति के यज्ञ का विध्वंस करने वाले तुम को नमस्कार करती हूँ। हे स्वामी! देवाधिदेव शिवजी अथवा संसार के स्वामी भोलेनाथजी को स्वर्ग में देवता एवं दैत्यगण सभी नमस्कार करते हैं।

विलोक्य किंचित्प्रणयेन मामहो!
निवार्यसंसार समस्तव्याधयः।

प्रदेहि नूनंशरणं दयानिधे!

नमामि भुयस्तव पादपंकजम्।।67।।

हिन्दी अनुवादः–हे दयानिधान् शिवजी! मुझे तनिक स्नेह से देखकर एवं संसार की समस्त व्याधियों को दूर करके, अपनी शरण प्रदान करो। इसीलिये मैं आपके चरण कमलों को नमस्कार कर रही हूँ।

इत्युक्त्वा विरराम साद्विजप्रिया नत्वा शिवंभूयसा,

दत्वा चात्रवरं पुनः पुनरहो! गत्वा स्वयंपल्वले।

ज्योतिर्लिङ्गमसौ करेण विधिवत्संस्थाप्य घुश्मेश्वरं,

पश्चादत्र प्रपूज्य चोत्तरदिशं सद्यः प्रतस्थे शिवः।।68।।

हिन्दी अनुवाद:–ऐसा कहकर शिवजी को बार–बार प्रणाम करके वह ब्राह्मण की प्रियतमा घुश्मा रूक गयी। शिवजी ने भी उसे वार–बार वरदान देकर तथा उस तालाव में जाकर उस घुमेश्वर नामक ज्योंतिर्लिंग् की स्थापना करके, तथा बाद में अपने हाथ से उसकी पूजा करके उत्तर दिशा की ओर रवाना हो गये अर्थात् चले गये।

ज्योतिर्द्वादशलिंङ्ग दर्पमिदं शम्भोः कृपायाः फलं,

वैशिष्ट्यं न कदापि मे पुनरहं मन्ये गुरूणां कृपा।

वीणापाणि कृपा कटाक्षमथवा सारस्वतं वैभवं,

शास्त्री शम्भुदयाल शब्दललितैस्तन्निर्मितं नूतनम्।।69।।

हिन्दी अनुवादः–यह द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पण नामक ग्रन्थ रत्न वस्तुतः शिवजी की कृपा का प्रत्यक्ष फल है। इस रचना में मेरी कोई भी विशेषता नहीं है। मैं तो इसे अपने गुरूजनों की कृपा का प्रत्यक्ष परिणाम ही स्वीकार करता हूँ। यह साहित्यिक रचना भगवती सरस्वती की कृपा का कटाक्ष मात्र है। केवल इसकी रचना मैंने (रचनाकार) आचार्य शम्भूदयाल अग्निहोत्री ने नवीन रूप से अवश्य की है।

वन्धूनां ह्रदयं पुनश्च फलदं कल्याणकल्पद्रुमं,

ज्योतिर्द्वादशलिंङ्ग दर्पणमिदं लोकोपकारक्षमं।

मन्ये!शम्भुचरित्र शम्भुलिखितं निर्वर्ण्य लोकेशिवा ,
मातापुत्रवदेव मामशरणं सन्मानयिष्यहो!।।70।।

हिन्दी अनुवादः– यह द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्पण हमारे साथियों का हृदय है। तथा अत्यधिक फल देने वाला है। कल्याण प्रदान करने वाला कल्पवृक्ष है। तथा संसार का प्रत्यक्ष हित करने वाला है। मैं समझता हूँ कि शिवजी का चरित्र आचार्य शम्भूदयाल अग्निहोत्री के द्वारा लिखा हुआ देखकर माता पार्वती अपने पुत्र के समान मुझ असहाय बालक का बड़े प्रेम से आदर करेगीं। इसी में मैं अपना सबसे अधिक गौरव समझूँगा।

फलकपुर निवासी विप्रवंशप्रदीपः,
द्विजगुरूजन सेवी शम्भुसन्नामधेयः।
सकलजगद्वन्ध्यं दर्पणं चातिश्रेष्ठं ,
लिखितमिह पुरारेः प्रीतिमाप्तु मयैव।।71।।

हिन्दी अनुवादः– उत्तर प्रदेश में फर्रूखाबाद जिले के निवासी , बाह्मण वंश में उत्पन्न हाने वाले , ब्राह्मणों तथा गुरूजनो के सच्चे सेवक अथवा भक्त आचार्य शम्भूदयालु अग्निहोत्री ने समस्त संसार में पूज्यनीय शिवजी के द्वादशज्योतिर्लिङ्ग दर्पणमं नामक ग्रन्थरत्न की रचना शिवजी का सत्य स्नेह प्राप्त करने के लिये की है।

इति द्वादशज्योतिर्लिङ्ग दर्पणस्य द्वादशः सर्गः समाप्तः
इति घुश्मेश्वर निरूपणम् समाप्तोऽयं ग्रन्थः
– इति शं–

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग स्तोत्रम्

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये त्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम्।
भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये।।1।।
श्रीशैलश्रृङ्.गे विबुधातिसङ्.गे तुलाद्रितुङ्.गेऽपि मुदा वसन्तम्।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसारसमुद्रसेतुम्।।2।।
अवन्तिकायां विहितावतारं मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम्।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्दे महाकालमहासुरेशम्।।3।।
कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जनतारणाय।
सदैव मान्धातृपुरे वसन्तमोङ्.कारमीशं शिवमेकमीडे।।4।।
पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसन्तं गिरिजासमेतम्।
सुरासुराराधितपादपद्मं श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि।।5।।
याम्ये सदङ्.गे नगरेऽतिरम्ये विभूषिताङ्.गं विविधैश्च भोगैः।
सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये।।6।।
सुरासुरैर्यक्षमहोरगाद्यैः केदारमीशं शिवमेकमीडे।
महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः।।7।।
सह्याद्रिशीर्षे विमले वसन्तं गोदावरीतीरपवित्रदेशे।
यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे।।8।।
सुताम्रपर्णीजलराशियोगे निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यैः।
श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि।।9।।
यं डाकिनीशाकिनिकासमाजे निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च।
सदैव भीमादिपदप्रसिद्ध तं शंकरं भक्तहितं नमामि।।10।।
सानन्दमानन्दवने वसन्तमानन्दन्कदं हतपापवृन्दम्।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये।।11।।
इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन् समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम्।
वन्दे महोदारतरस्वभावं घुश्मेश्वराख्यंम शरणं प्रपद्ये।।12।।
ज्योतिर्मयद्वादशलिङ्.गकानां शिवात्मनां प्रोत्तमिदं कमेण।
स्तोत्रं पठित्वा मनुजोऽतिभक्त्या फलं तदालोक्य निजं भजेच्च।।13।।

(इति श्रीद्वादशज्योतिर्लिंङ्गस्तोत्रं सम्पूर्णम्)

कवि परिचय

आचार्य शम्भूदयाल अग्निहोत्री, संस्कृत साहित्याकाश को देदीप्यमान करने वाले कवि कुल मणि भुवनभाष्कर कहे जाते हैं। आधुनिक संस्कृत साहित्य में इनकी अब तक लगभग दस रचनायें उपलब्ध हुयी हैं। संस्कृत साहित्य के अलावा हिन्दी साहित्य में भी इनका वेजोड़ योगदान रहा है। आचार्य जी महाकवि होते हुए, नितान्त सरल व्यक्तित्व सम्पन्न कवि हैं। इनकी रचनाओं में आधुनिकता का सर्वत्र दर्शन होता है। नारी शिक्षा, वृक्षारोपण, दहेजप्रथा, आतंकवाद, जातिवाद, राष्ट्रवाद, इत्यादि विभिन्न विषयों पर आधुनिकता का पुट देकर सफल प्रयोग किया गया है। वर्तमान युग में सामाजिक कुरीतियों का निवारण करने के लिए आचार्य जी ने सामाजिक परंपराओं पर करारा व्यंग्य किया है। आधुनिक संस्कृत साहित्य के रचनाकारों में आचार्य जी का व्यक्तित्व हर जगह उभर कर सामने आया है। इन्होंने अपनी कवित्व प्रतिभा से सभी रचनाओं में अपनी अमिट छाप छोड़ रक्खी है। सरलता के कारण इनके काव्यों में लोकप्रियता को स्वयं स्थान प्राप्त है। आचार्य जी की सभी रचनायें आधुनिक विषयों पर आधारित हैं। राष्ट्रीयता की झलक इनकी सभी रचनाओं से कभी दूर नहीं की जा सकती । अतः भारतीय मनीषियों ने इनकी सभी रचनाओं की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। आचार्य जी की साहित्यिक सेवा से हमारे देश को ही नहीं अपितु अन्य विदेशी पाठकों एवं मनीषियों को भी लाभ होता रहेगा।

– डा0 कमलेश चन्द्र पाण्डेय
भारतीय महाविद्यालय
फर्रुखाबाद (उ0प्र0)